सागर की लहरों पर

भगवतशरण उपाध्याय

• भारतीय ज्ञानपीठ, काशी •

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला
हिन्दी ग्रन्थाङ्क–९९

सागरकी लहरोंपर

भगवतशरण उपाध्याय

भा र ती य ज्ञा न पी ठ, का शी

आदरणीय मित्र
श्री सीताराम सेकसरियाको—
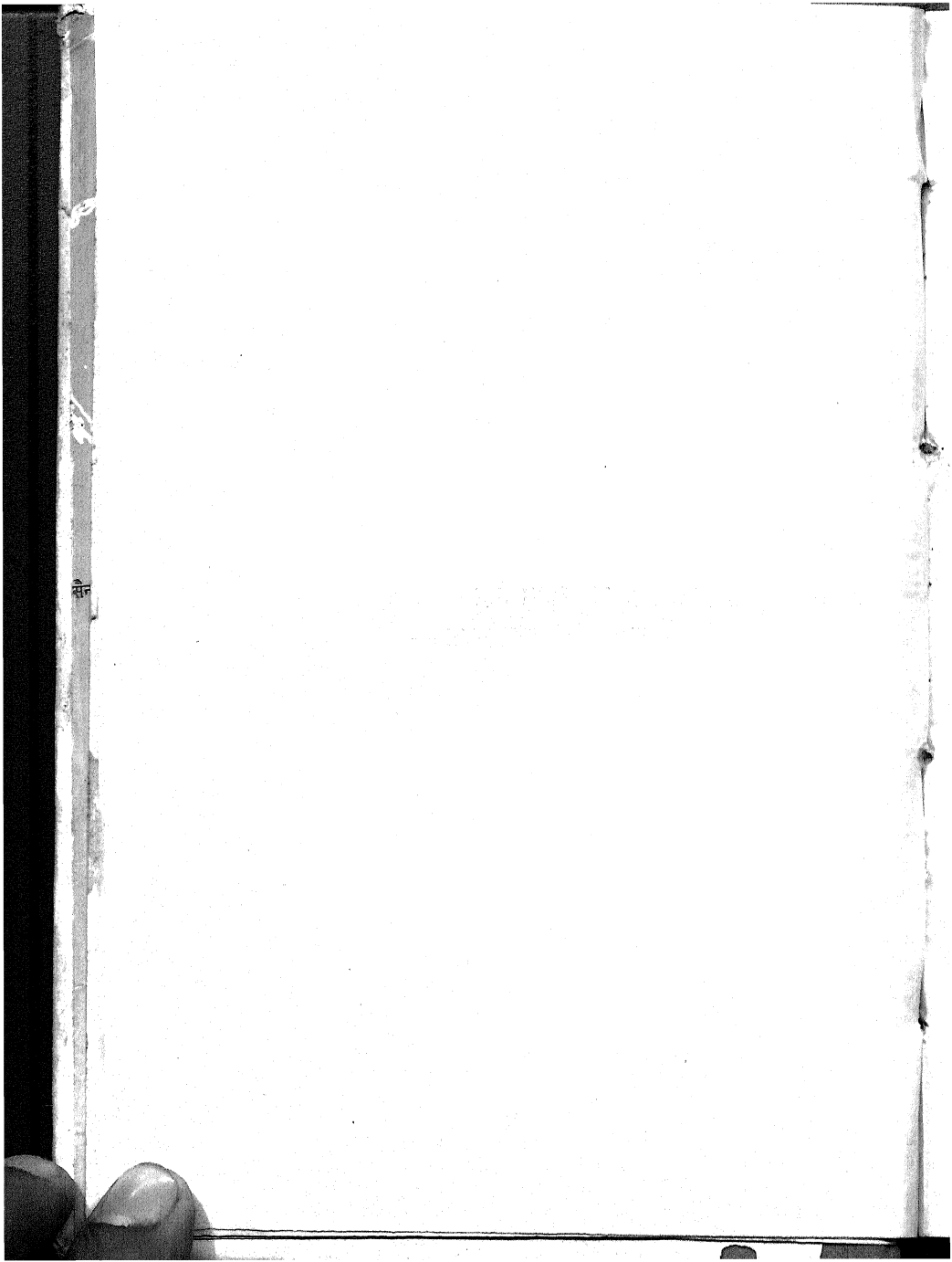
मेरी यात्राएँ—खण्ड १

सागरकी लहरोंपर

• विषय-सूची •

दो शब्द

मैं घुमक्कड़ नहीं हूँ। थोड़ी दूरकी यात्राकी आशंकासे भी पहले ही मेरा दिल बैठने लगता है, पर प्रायः जिन्दगी भर पैरोंपर ही रहा हूँ—देशमें भी, विदेशोंमें भी। कुछ ऐसा संयोग कि चलते ही रहना पड़ा है। पामीरोंके बाजूमें बदख़्शाँसे एशिया-यूरोप पार अमेरिका तक, फिर चीनसे नैपाल तक। उसी यात्राका यह विवरण छः खण्डोंमें प्रकाशित हो रहा है। यह—सागरकी लहरोंपर—उसका पहला खण्ड है। आशा करता हूँ, एकके बाद एक सारे खण्ड शीघ्र ही प्रकाशित हो जायँगे।

'सागरकी लहरोंपर' डायरीके रूपमें है, केवल भारतसे अमेरिका पहुँचनेके मार्गका वर्णन, जो नित्य लिखता गया था। इसमें कितना रस है कितना साहस, यह मेरे कहनेकी बात नहीं। मैंने तो यात्राका विवरण अपनी अनुभूतियोंके साथ यथातथ्य लिख दिया है। सम्भवतः इतने खण्डोंमें इस प्रकारका प्रकाशन भारतीय भाषाओंमें यह पहला ही है। यदि इससे स्नेही पाठकोंका मनोरंजन हुआ, तरुणोंको भ्रमणकी प्रेरणा मिली तो अपनेको कृतकृत्य मानूँगा।

भ्रमणमें विदेशी जनतासे मेरा सम्पर्क हुआ है, श्रीमानोंसे भी सर्वहाराओंसे भी, पण्डितोंसे भी गँवारोंसे भी, धूर्तोंसे भी ईमानदारोंसे भी—सर्वत्र मैंने मानव हृदयको अपने मूलमें उदार मानवीय पाया है। मुझे विश्वकी जनताका वह सौजन्य आमरण याद रहेगा। अपनी यात्राका यह विवरण लिखकर मैं वही याद अमर बना रहा हूँ।

यात्रामें मुझे कठिनाइयाँ भी मिली हैं आसानियाँ भी। पर ध्यान बराबर मार्को पोलो और इब्न बतूताकी कठिनाइयोंपर लगा रहा है, जिससे मेरी मुश्किलें आसान होती गई हैं। इस यात्राको विशेषतः विदेशी मित्रोंने,

विश्वविद्यालयों और अनुसंधान-संस्थानों, संस्थाओंने सुकर कर दिया है। अमेरिकाके पर्ल एस० बक, आर्थर उफ़म पोप, पोल रिशार, नार्मन ब्राउन आदिके, एशिया इंस्टिट्यूट, पेन्सिल्वेनिया, शिकागो (ओरिएँटल इंस्टि-ट्यूट) आदि विश्वविद्यालयोंके, नार्वेके मोर्गेनस्टेर्ने, पेरिसके दिवङ्गत जूल ब्लाख़ और रनूके, केंब्रिजके ई० जे० टामस के निमन्त्रण पुराने थे, उनसे भी पुराना एटम-वैज्ञानिक ज़ूलियो किरी का था, और इन सबका उत्तर मैंने अब सन् ५०–५१में इस यात्रा द्वारा दिया।

इस यात्राके आरम्भमें जहाज़की कठिनाइयाँ उन दिनों ख़ासी थीं, डालरकी कठिनाइयोंसे कुछ कम नहीं। दो-दो बार मुझे बम्बई जाना पड़ा। दूसरी बार तो प्रायः महीनेभर जहाज़के इन्तज़ारमें श्री श्रेयांसप्रसादजीके पास ठहरना पड़ा। उस थोड़े अरसेमें जो उन्होंने अपने सौहार्द और सौजन्यका परिचय दिया—उनके बच्चों, पत्नी और बहुओं सभीने—वह मेरी मधुर यादोंमें से है, सदा बनी रहेगी। उनके स्नेहसे मेरी कठिन यात्रा सुकर हुई।

इस खण्डकी पाण्डुलिपि मेरे मित्र पं० मंगलाप्रसाद पाण्डेयने प्रस्तुत की है, उनका ऋणी हूँ। विवरण प्रायः ९ वर्ष बाद छप रहा है। भारतीय ज्ञानपीठके प्रति अपना आदर प्रगट करता हूँ।

काशी,
१७–१०–१९५९

—भगवतशरण उपाध्याय

लेखक और सहयात्री

सागरकी लहरोंपर

— १ —

बम्बई और पोर्ट सैयदके बीच

वतनसे सैकड़ों मील दूर हूँ, बम्बईसे क़रीब सात सौ मील पच्छिम। और चला जा रहा हूँ दूर, पच्छिम, पच्छिम-उत्तर, अमेरिकाकी राह, सागरकी लहरोंपर।

आज चौथा दिन है जहाज़पर आनेका, १९५० के सितम्बरकी बाईसवीं तारीख़। उन्नीसवींको चढ़ा था और तबसे निरन्तर प्रायः दस मील घण्टेकी रफ़्तारसे चलता रहा हूँ। उन्नीसवींको १२० मील, बीसवींको २४० मील, इक्कीसवींको भी २४० मील, और आज बाईसवीं है, बाईसवींकी शाम, १२० मील और।

बाईसवींकी शाम और क़रीब ६ बजे हैं, पर बम्बईके ६ नहीं, अदनके रस्तेमें तीन दिनके बादके ६, प्रायः सात सौ मील पच्छिमके ६, यानी बम्बईके हिसाबसे क़रीब ७ बजे। मेरा जहाज़ बम्बईके अलेक्ज़ैंड्रा डाक नं० ७ से ६ बजे शामको रवाना हुआ था और यदि घड़ी अपनी राह छोड़ दी जाय तो जहाँ मैं आजकी शाम हूँ, अर्थात् ७२ घण्टे बाद, उसमें क़रीब साढ़े सात या कुछ कम बजें।

हुआ भी ऐसा ही। घड़ी जैसीकी तैसी छोड़ दी थी क्योंकि उसे सँभालनेका हौसला शरीरमें न था। तीन रातें और दो दिन लगातार बिस्तरमें ही बिताने पड़े और वह दयनीय दशामें, क़ै करते, हाथोंसे सिर पकड़े। आज जो कुछ राहत हुई और ऊपर डेकपर गया तो जाना कि बहुत जल्दी उठ आया हूँ, सभी अपने केबिनमें हैं। घड़ी मिलाई तो स्टिवार्डेसने कहा—'जनाब, घड़ी देखिए कहाँ जा रही है। पीछे कीजिए—बीसको

४५ मिनट, इक्कीसको १७ मिनट, बाईसको १५ मिनटके हिसाबसे ।' घड़ी मैंने सही कर ली ।

कठिनाइयों-मुसीबतोंके बाद, उन्हें थोड़ा-बहुत हल कर, आखिर मैं चल ही पड़ा और चला जा रहा हूँ । सालभरके भीतर कई बार विदेश-यात्रा जो स्थगित करनी पड़ी है तो कुछ ऐसा लगता है कि घर ही हूँ । और जो केबिनमें बिस्तरपर पड़ा रहा हूँ कुछ विश्वास ही नहीं होता—ऐसा कुछ लगता ही नहीं—कि चला जा रहा हूँ और बिस्तरसे लगी दीवारसे समुन्दर टकरा रहा है । ऐसा नहीं कि सिन्धुका गर्जन सुन न पड़ रहा हो पर कई दिनोंसे जो शरीरमें शिथिलता आगई है तो जैसे आँखोंकी तरह कान भी 'पथरा' गये हैं, या उनमें और दिमाग़के बीच सम्बन्ध टूट गया है ।

पड़े-पड़े पन्द्रह बरस पुरानी एक बात याद आई । मेरे पिताके एक वयोवृद्ध मित्र साधारणतः होशियार और अच्छे-खासे वकील हैं । एक दिन उन्होंने मुझसे दो बातें पूछीं और कहीं—एकसे एक बढ़कर अचरजमें डालनेवाली । पूछा—'क्यों भई क्या सच है कि ज़मीन गोल है ?' फिर कहा—'मैं तो इसे कहीं गोल नहीं देखता । मैं तो यह माननेको तैयार नहीं कि यह गोल है । हाँ, एक बात हैरतमें ज़रूर डालती है कि अगर यह गोल नहीं है तो जो कहीं इसके छोरपर पहुँच सकूँ और झाँकूँ तो नीचे क्या दिखाई देगा ?' अभी मैं उनकी समस्या हल करनेकी कोई जुगत सोच ही रहा था कि उन्होंने फिर कहा, जो उनकी दूसरी बात थी—'और न मैं यही माननेको तैयार हूँ कि ऐसे भी मुल्क इस दुनियामें हैं जहाँके सभी रहनेवाले सफ़ेद हैं, सफ़ेद ही पैदा होते और मरते हैं, काला आदमी एक पैदा नहीं होता । कभी-कभी तो, भई,' वे कुछ थके-हताशसे कहते गये, 'मुझे इसमें भी शक होता है कि लन्दन या न्यूयार्क नामके समुन्दर पार कोई ऐसे शहर भी हैं जहाँ खाली अँग्रेज़ रहते हैं !' मैं हार मान अपनी बगल खुजलाने लगा था और यह मेरा दावा है कि यदि उस हाकिमके सामने अपनी यह बात दुहरानेमें वे सहमते जिसके इजलासमें वे

रोज़ वकालत और बहस करते थे तो निश्चय इस कारण नहीं कि वह उसी लन्दनका रहनेवाला मुजस्सिम अँग्रेज़ था जिसकी हक़ीक़तमें उनको शुबहा था, बल्कि इस कारण कि साहब-आदमी ठहरा, कहीं उलटा-सीधा न समझ बैठे !

ख़ैर, मतलब यह कि शायद एक प्रकारकी दिमाग़ी स्थितिमें इस प्रकारकी बातें भी सोची जा सकती हैं और जब मैं इधर कई दिनों घहराते समुन्दरसे केवल दो अंगुलके फ़ासलेपर लेटा शिथिल पड़ा रहा तब कुछ ऐसी ही अजीब बातें मनमें उठती रहीं। कुछ ऐसी कि जब पहले मुझे इन वकील साहबकी बातें याद आतीं तब हँसी रोके नहीं रुकती थी और अब मैं हँसा तो नहीं ही, उनके तथ्यपर विचार तक करने लगा, बावजूद इसके कि मेरे बिस्तरकी दीवारसे समुन्दर टकरा रहा था और मेरा जहाज़—'जान बाके', जो स्वयं विदेशी जहाज़ है, नारवेका—दस मील प्रति घण्टेकी रफ़्तारसे चला जा रहा था।

मेरा दिमाग़ चक्कर खा रहा था, दिनों चक्कर खाता रहा था। इससे पहले मैं समुन्दर पार जानेवाले जहाज़पर नहीं चढ़ा था। सुना था कि समुद्री बीमारी हो जाती है, पेटमें कुछ टिक नहीं पाता, सब कुछ निकल जाता है, पानीकी एक बूँद तक। और इसीसे बम्बईमें उसके लिए दवाइयाँ भी बहुत ढूँढ़ी थीं, पर न 'मार्शल'के यहाँ मिलीं न 'कैम्प'के यहाँ। मुझे उनकी विशेष ज़रूरत थी क्योंकि पहाड़ोंमें, और कभी-कभी नीचे भी, पेट्रोलकी गन्धसे मोटर तकमें मेरा जी मिचलाने लगता है। इलाहाबादसे बम्बई आते समय गाड़ीमें एक सज्जनको जो सिर दबाये उंकडूँ बैठे देखा और पूछकर जाना कि ट्रेनकी चालसे उनका सिर चकरा रहा है तो डर कुछ और गहरा हो गया। यह सज्जन हाजी थे जो अदन तक जहाज़पर हो आये थे।

बम्बईमें जो दवा न मिली तो मैंने एक मित्रकी बातपर यक़ीन कर लिया था कि दवा खाओ या न खाओ समुन्दर तुम्हारे जिस्ममें कुछ दिनों कुछ टिकने न देगा, दवा तक नहीं, पानीकी बूँद तक नहीं, फिर अपने आप

हालत सँभल जायगी। यही बात सही निकली और अब मैं डेकपर लम्बा होकर खड़ा हो लेता हूँ, दौड़कर 'डेक गोल्फ़' खेलता हूँ। पर ऐसा भी नहीं कि तबीयत बिलकुल ठीक हो गई हो और अब मतली न आती हो।

पिछले दो दिनोंमें गुज़री हुई दुनिया, बिगड़ी–बसी सभी, आँखोंके सामने उठती-विलीन होती रही। बीमारीकी चुप्पी बीती बातोंको चित्रपटकी भाँति आँखोंके सामने मूर्तिमान् कर देती है। मेरा सारा पिछला जीवन साकार जैसे सजीव हो, लौट पड़ा। बचपन, गाँवका जीवन—ज़िला बलियाके ऊँजियारका, अनेक बार आँखोंके सामने उठ आया। भरापुरा परिवार, पण्डित कुटुम्ब, सुन्दर गौर वृद्धा चचेरी तीरनज़र दादीकी सख़्तीके बीच माँ का शान्त धीर जीवन और उसकी छायामें मेरा बालपन कलका बीता-सा सहसा झलक आया। फिर बलियाका, जब पिता वकालत करने लगे थे और हम सब वहाँ चले गये थे। सन् सोलहकी भयानक बाढ़की कुछ वैसी ही धुँधली याद हो आई जैसी तबकी 'जर्मनीकी लड़ाई' की।

और जीवन बढ़ चला था। सातवींमें पढ़ता था पर मन कुछ बहका-बहका-सा लगा और आख़िर एक दिन बहक ही तो गया, जब एक सम-वयस्क मित्रके साथ गंगा पारकर पैदल चल डुमराँव पहुँचा और मित्र द्वारा चुराये रुपयोंसे टिकट ख़रीद दोनों कलकत्ते जा उतरे। परन्तु वहाँ टिका नहीं, लौट पड़ा। और फिर स्कूलका जीवन पूर्ववत् चल पड़ा। आठवीं-में पहुँचा।

सन् इक्कीसका आज़ादीका आन्दोलन ज़ोरोंपर था—बाईसमें स्कूल छोड़ दिया। जेल गया। दो बार। पहली बार एक महीने बाद छूट गया, दूसरी बार सालभर रहना पड़ा। हिन्दुस्तानका सबसे छोटा क़ैदी था, शायद बारह बरसका। छूटा, काशी विद्यापीठ गया। पर वहाँकी पढ़ाईका आडंबर मुझे अखर गया, मैं फिर बलिया लौटा और फिर काशी-विश्व-विद्यालय, इलाहाबाद और लखनऊ।

कश्मीर और गिलगित। चित्रालके बाजूमें पामीरोंमें उतरते वक्षुनद (आमू दरिया) की केसरकी क्यारियाँ और बदख्शाका उत्तरवर्ती प्रदेश—एक-एककर आँखोंके सामने उठे और विचारोंमें बहते गये। बरबस ताँता जो लगा तो वास्ता क्या जो टूटे, लगा ही रहा।

बीबीकी बीमारी, पटनेका अस्पताल, इटकीका सैनेटोरियम, काशी विश्वविद्यालयकी मुलाज़मत, लखनऊ म्यूज़ियमकी नौकरी, मर्मपर चोटें, बीबीकी लौटी बीमारी, इस्तीफ़ा, लखनऊ छोड़ना, पटनेका कठिन दर्दभरा जीवन जो पत्नीकी मृत्युके साथ समाप्त हुआ—ज़िन्दगीके ये आँकड़े उलझे धागोंकी भाँति दिमाग़में अटके रहे और मैं उनके सिरे पकड़ सुलझाता रहा।

पिलानी—जो काँग्रेस नेताओंका स्वास्थ्यस्थल बन गई है—बिड़लाकी पिलानी पहुँचा, बीबीको जलाकर और फिर बच्चेको जलाने आया। दिन कटते गये, पहले महीने बनकर, फिर साल और अन्ततः जीवनका अंग बनकर। जैसे हम अन्नको पचाकर शरीरका अंग बना लेते हैं, ज़िन्दगी भी वैसे ही बीतते सालोंको गिन-गिन कोखमें धरती जाती है, उन्हें अपना अंग बना लेती है।

शादी और पिलानीके झगड़े, इन्सानियत और पैसेके परस्पर झगड़े, झगड़े जो एक ओर ईमान और इज़्ज़तके थे दूसरी ओर ऐंठके। फिर इस्तीफ़ा और प्रस्थान। बनारस और लेखकका जीवन और इसी बीच, इन बीते अनेक सालोंके बीच, पशु और देवताका जीवन। फिर विदेशोंकी तैयारी। पासपोर्टकी परेशानियाँ।

और इस परेशानीमें फ़्रान्सके वैज्ञानिक जूलियों क्युरीके 'शान्ति-काँग्रेस'में शामिल होनेके निमंत्रणसे और परेशानी। पासपोर्ट। डालर। इन्तज़ाम। प्रकाशकोंकी बेईमानी, विशेषकर एक की, जिसने यात्रा स्थगित करनेपर मजबूर कर दिया।

पर विदेश जाना ज़रूरी था। सारी ताक़तें उल्टा ज़ोर लगा रही थीं, पर मनपर क़ाबू था और मन अब रुकनेको तैयार न था। तीन महीनेमें पाँच हस्तलिपियाँ तैयार हो गईं। और भी, और बम्बईके लिए चल पड़ा था। तब तककी सारी बातें, पाँचवीं सितम्बर तककी, एक-एककर सामने आती गयीं और उनके तारतम्यने एक ऐसी दुनिया आँखोंके सामने खड़ी कर दी जिसकी आवाज़में समुन्दरकी गरज तक खो गई।

अस्तु। उठा, बाईसकी सुबह थी। डेकपर गया, बीचवाले डेकपर, अपनेसे ऊँचे वालेपर, कप्तानके-से नीचे वालेपर। सहयात्री अपने केबिनोंमें थे। समुद्रकी हवा जो लगी तो चित्त कुछ स्थिर हुआ। घड़ी मिलाई और देर तक डेकपर खड़ा रहा। खड़ा-खड़ा लहरोंका उठना-गिरना और जहाज़से टकरा-टकराकर टूट जाना देखता रहा।

जहाँ तक नज़र जाती है जल ही जल है, अथाह, अतल जल। जिधर देखिए नज़र क्षितिजपर ही जाकर रुकती है और क्षितिजपर आकाश और समुन्दर एक हो गये हैं। गोल अण्डाकर क्षितिज चारों ओरसे हमें घेरे हुए है। जहाज़के बिचले डेकसे यह घेरा सर्वथा वृत्ताकार नहीं अण्डाकार दीखता है, ब्रह्माण्ड नाम सार्थक करता है, पर शायद अण्डाकार यह इसलिए दीखता है कि हमारा जहाज़ नौकाकार है। जहाँ कहीं नजर नहीं टिकती वहाँके आकारका अनुमान अपनी ही छायासे होता है। इसीसे, जहाज़के नौकाकार होनेसे ही, शायद यह सारा विस्तार क्षितिज तक अण्डाकार ही दीखता है, जैसे उसकी पूरब-पच्छिम-उत्तर-दक्खिन कोई दिशाएँ न हों, जैसे नीचेके एक अण्डाकार कटोरेपर दूसरा अण्डाकार कटोरा औंधा रख दिया हो। ऐसा ही है यह हमारे चतुर्दिक्‌का क्षितिज मण्डल।

दूर तक, दृष्टिके परे पार, यह समुन्दर फैला हुआ है, गहरा हरा, हलका नीला, गहरा नीला, बैंजनी रंग बदलता। सुबह, बादलोंकी छाया तले उसका हरापन गहरा होता है, फिर जैसे-जैसे सूरज आसमानपर चढ़ता जाता है वैसे ही वैसे पानीका रङ्ग गाढ़ा नीला होता

जाता है। और उसकी लहरें ऊँची उठ-उठ निरन्तर बिखरती रहती हैं, अटूट, अनवरत।

विशेषकर हमारे जहाज़के मार्गमें उन लहरोंकी छटा देखने ही लायक है। उसके दोनों ओर नौकाके मस्तककी भाँति धाराएँ उठतीं और पीछेको हटती जाती हैं, एकपर एक, फिर एकपर ही एक टूटकर बिखर जाती हैं। उनकी नीली ज़मीनपर उजली, सर्वथा श्वेत, शुभ्र झाग साँपों-सी गुंजलक तोड़ फैल जाती है। टूटती लहरोंकी झाग जब फैलती है तब उनके शिखर निर्मल मोतियोंकी लड़ियों जैसे बिखर जाते हैं और छोटी नीहारिकाएँ हवाको भर देती हैं, हवाके साथ उड़कर बल्लियों ऊपर आ जाती है, मेरे पास तक, जो यहाँ इतना ऊपर, दूसरे डेकपर, खड़ा हूँ।

इस निःसीम जल-प्रसारपर, इसकी उठती-टूटती लहरोंपर, इस प्रबल महोदधिके विस्तृत उन्नत वक्षपर हलचलाता हमारा जहाज़ चला जा रहा है। दोनोंमें कितना अन्तर है, हमारे जहाज़में और व्यापक आकाशके नीचे उफनते-गरजते इस समुन्दरमें। उसकी दो लहरें इसे अपने बीचमें कर कितनी आसानीसे डकार जा सकती हैं। पर जब हम अपने चारों ओरका जल-प्रसार देखते हैं और उसके ऊपर आसमानका चँदोवा, तब लगता है कि तटपर पड़ी बालूका कण-सा भी तो इस जहाज़का आकार समुंदरपर नहीं है।

फिर भी जहाज़ निःशंक चला जा रहा है, समुन्दरकी छाती चीरता, उसकी गरजपर अपने डीज़ेल चालित यन्त्रसे व्यंग्य-पूर्ण अट्टहास करता। क्यों?

क्योंकि उसपर मनुष्य है, मनुष्य जिसने आज आकाश और समुद्र सबपर अधिकार कर लिया है, सबका वह स्वामी है। क्योंकि वह सीधा खड़ा हो लेता है, क्योंकि उसकी कमर सीधी है, बनमानुसकी तरह नहीं। क्योंकि उसकी चार उँगलियोंके आगे-सामने एक अँगूठा है। मैं सोचने लगा—इस अँगूठेकी बड़ी बिसात है। मनुष्यका यह सारा पराक्रम, जहाज-

का समुन्दरके हाहाकारपर अट्टहास, इसी अँगूठेकी बदौलत है। इसी कारण कि वह अँगूठा उँगलियोंकी कतारमें नहीं, उनके सामने है।

इसीके ज़रिये वह अपने हरबे-हथियार बनाकर शत्रुसे अपनी रक्षा करता रहा है, प्रकृतिकी विजय करता रहा है। प्रायः सौ करोड़ साल पहले पृथ्वीने अपना स्वतन्त्र रूप पाया था। तूफ़ान, धुआँ और वर्षाका राज था। पानी इतना बरसा कि ज़मीनपर समुन्दर बन गये, ज़मीन ठोस हो गई, उसपर जीव जनमे, पहले पानी फिर कीचड़में, फिर सूखी ज़मीनपर। और सबके अन्तमें आया बेचारा आदमी, जिसके पास दूसरों-की तरह न सींग थी न ख़ूंख़ार पंजे थे, न ख़ूनी दाढ़ी। निहत्था आया, जानवरोंमें सबसे कमज़ोर, सबसे कम उम्र! पिटा, गिरा, पर धूल झाड़-कर फिर उठ खड़ा हुआ। सीधा वह खड़ा हो सकता था, बनमानुससे भी सीधा और उसका अँगूठा उँगलियोंके सामने था जिससे वह अपनी रक्षाके साधन जुटा सकता था। उसने जुटाया और वह महान् हो गया। इतना कि आज उसीके कमालका सबूत और हुनरका जादू यह हमारा जहाज़ है जो इस तरह निर्भय वेगसे समुद्रके ऊपर दौड़ा चला जा रहा है।

मनमें यह विचारधारा जो चल पड़ी तो अँगूठेसे मनुष्यकी एकतापर भी गई। मनुष्य शेरके सामने अकेला निहत्था कमज़ोर ज़रूर था पर उसके दिमाग़ था, जुगत थी, और इन सबके ऊपर और इन्हींके कारण, वह प्रेरणा थी जिससे वह अपने-से औरोंको एकत्र कर सकता था, उनको रक्षाके लिए संगठित कर सकता था। उसने उनका संगठन किया भी पर यही संगठन अनियंत्रित स्वार्थपर और लंबोदर हो उसका घातक भी बन बैठा। क्योंकि इस अपनी एकताका प्रयोग, सामूहिक श्रमका उपयोग वह अपने-से औरोंको कुचलनेमें, उन्हें ग़ुलाम बना उनका शोषण करनेमें करने लगा। मनुष्यकी मेधा उसका अभिशाप बन गई!

विचारोंकी शृंखला, जो जलपानकी घंटीसे न टूटी थी, अब स्टिवार्डेस-की आवाज़से टूटी। नीचे जलपानके लिए गया। सहयात्री बैठे थे।

यात्रियोंके अतिरिक्त कप्तान और जहाज़के मुख्य इंजीनियर भी थे। परिचय हुआ, फिर जलपानका आरम्भ। खानेके पहले रेवरेण्ड (पादरी) जेम्सने मिनटभरकी प्रार्थना की और प्रार्थना करनेके पहले मुझसे पूछ लिया कि आपको कोई आपत्ति तो न होगी ? भला मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी ? उन लोगोंने सिर झुकाकर मिनटभर प्रार्थना की और हम खाने लगे। यह नित्यका रवैया था।

खाना तीन बार होता है—सुबहका नाश्ता साढ़े आठ बजे, दोपहरका खाना (लंच) साढ़े बारह बजे और शामका खाना (डिनर) ६ बजे। वक़्तपर घंटी बजती है, और दो मिनटके अन्दर सब ठीक समयसे भोजनागारमें मेज़पर पहुँच जाते हैं। सुबहके नाश्तेमें अण्डा और बेकन (सुअरका मांस) होता है, डबलरोटीके क़तरे और तोश, मक्खन, पनीर, जैम आदि और एक ग्लास नारंगीका रस। शुरू करते हैं बड़े मीठे नीबूसे। अन्तमें चाय या काफ़ी पी जाती है। चाय धीरे-धीरे कम होती जा रही है, काफ़ी ही लोग अधिकतर ले रहे हैं।

दोपहरके खानेमें डबल रोटीके क़तरे, तोश, अण्डा मिला हुआ साग, गोश्त और गोश्त मिली तरकारियाँ, मछली आदि होती है। ये लोग (अमेरिकन और अधिकतर पश्चिमी) अंडे और मछलीको मांसमें नहीं गिनते। खाना क़ाफ़ीसे समाप्त होता है।

शामके भोजनमें कुछ ऊपरकी चीज़ें, आमलेट, गोश्त आदि होते हैं। आरम्भ 'सूप' (गोश्त-अण्डा मिला सब्ज़ीका शोरबा) से करते हैं और समाप्त पुडिंग (एक प्रकारकी खीर), फल और काफ़ीसे। गोमांस और शूकर मांस दोनों ही मेजपर रहते हैं।

भोजनके समय सारी चीज़ें एक साथ न परसकर बारी-बारी परसीं जाती हैं और हरबार लाई नई चीजको 'कोर्स' कहते हैं। खाना काँटे, चम्मच और छुरीसे होता है और मेज़ और बर्तन चमकते रहते हैं। नित्यकी कुर्सीपर लोग बैठ जाते हैं और बाईं ओर (इस जहाज़पर) एक लम्बा

लिफ़ाफ़ा रखा रहता है जिसपर खानेवालेका नाम लिखा रहता है। उसमें एक रूमाल (नैपकिन) रहता है जिसे घुटनोंपर रख लिया जाता है। लिफ़ाफ़ेमें उसे इसलिए रखते हैं कि वह बदलकर दूसरेके पास न चला जाय। वह रोज़ धोया नहीं जाता।

भोजन बड़े क़ायदेसे होता है। वस्तुतः पश्चिमियोंका भोजन एक प्रकारकी प्रार्थना है। सभ्यता और सुरुचिकी परख अधिकतर खानेकी मेज़पर ही होती है। चम्मच और प्लेटकी आवाज़ समझदार कमसे कम होने देते हैं। पाश्चात्योंने जीवनके निचोड़ भोजनको उचित ही इतना महत्त्व दिया है।

ये तीन तो मुख्य खाने हैं पर इनके अतिरिक्त कुछ लोग सुबह बिस्तरमें या सात बजे चाय भी लेते हैं। फिर आठ बजे रातको काफ़ी भी। साढ़े दस बजे भी एक बार चाय मिलती है कुछ बिस्कुट और केकके क़तरों के साथ। ऐसे ही साढ़े तीन बजे तीसरे पहर भी एक बार।

खानेकी यहाँ हज़ार न्यामतें हैं, पर वे मेरे लिए नहीं हैं क्योंकि मैं गोश्त नहीं खाता। प्रसिद्ध दिवंगत पुराविद् और इतिहासकार डा० काशीप्रसाद जायसवाल कहा करते थे कि जब ख़ुदा मियाँने सबको अपनी-अपनी न्यामतें चुननेके लिए बुलाया तब हिन्दू और जैन सबसे पीछे पहुँचे, जब सारी न्यामतें बँट चुकी थीं। ईसाई सबसे पहले पहुँचे और उन्होंने गाय और सुअर दोनों चुन लिये। मुसलमानोंने पहुँचकर फिर गाय और दूसरे जानवर चुन लिये। जब अभागे हिन्दू-जैन पहुँचे तबतक सारी न्यामतें ख़त्म हो चुकी थीं और उन्हें बचे हुए अन्न, घास-पात मात्रपर ही सन्तोष करना पड़ा। मैं भी उन्हीं अभागोंमेंसे हूँ जो ख़ुदा मियाँके दरबार में सबसे पीछे पहुँचे थे। धर्मका संकट मुझे कोई न होने पर भी मैं मांस आदि नहीं खा पाया, नहीं खा पाता।

सुबह सात बजे एक प्याला दूध, नाश्तेमें कुछ तोश और एक ग्लास सन्तरेका रस, दोपहरमें तोश और बग़ैर मांसकी बनी मेरे लिए तरकारी और

बजाय शाम ६ बजेके आठ बजे दिनमें नाश्ता, एक सेव और एक ग्लास सन्तरेका जूस ले लेता हूँ।

अस्तु ! आजकी सुबह मैंने एक क़तरा पावरोटीका लिया, एक तोश मक्खनके साथ, और मीठा नीबू और सन्तरेका रस। अच्छा होता अगर मैंने मक्खन न लिया होता। चिकनाई जहाज़के हिलने-डुलनेके कारण मतली पैदा करती है। मुझे उसे खानेका फल भोगना पड़ा। तबसे मैंने मक्खन लेना छोड़ दिया है।

नाश्तेके बाद हम सब ऊपर पहुँचे। डेक-गोल्फ़ शुरू हुआ। यह एक प्रकारका गोल्फ़का ही खेल है। लकड़ीके चार फ़ुटके डण्डेमें चौकोन एक टुकड़ा सिरेपर लगा रहता है जिससे गोल-चिपटी गेंदको मारकर एक छोटे वृत्तमें डालते हैं। दो-दो साथी एक ओर हो जाते हैं। अच्छा खेल है और डेकपर मन बहलानेके लिए शतरंज आदिसे कहीं अच्छा है। ग्यारह बजे तक हम गोल्फ़ खेलते रहे फिर चाय पी। और मैं तो अपने कमरेमें चला आया क्योंकि पेट मुँहको आने लगा था और खेलके कारण भी कुछ थकान हो गई थी।

बिस्तरपर पड़ गया। नींद तो नहीं आई पर बड़ी सुस्ती थी और आँखें बन्द किये घंटों चुपचाप पड़ा रहा। पीयर लुईका अफ्रोदीती पढ़ने लगा। प्रायः पढ़ चुका था, थोड़ा बाक़ी था, पड़ा-पड़ा उसे ख़त्म करने लगा। अच्छा उपन्यास है। यौन-शृंगारिक है, पर मिस्रमें यूनानी जीवनका अच्छा भंडाफोड़ करता है। इस पुस्तकके छपनेपर भी, जेम्स ज्वायसके उलिसिज़की ही भाँति, बड़ा शोर मचा था, बड़े विरोध हुए थे, पर पुस्तक चल ही निकली थी। पुस्तकके उद्देश्यमें फिर भी जान नहीं है क्योंकि वस्तुस्थितिको खोल वह केवल उस प्राचीन स्थितिके प्रति एक प्रकारकी उदासीनता जनितकर मायूसी पैदा कर देती है। वह यौन-शृंगारिक जीवन न तो ग्राह्य हो सकता है न स्तुत्य। एक मायूसी ज़रूर मनमें पैदा करता है। स्वभावतः ही इससे मनमें प्रश्न उठता है—क्यों ? यह पुस्तक

क्यों ? पर्ल बकका "ड्रैगन सीड" एक दूसरा उपन्यास भी मेरे पास है, जिसे मैं दूसरी बार पढ़ रहा हूँ। उसमें भी अनेक स्थलोंपर यौन चित्रण हैं, पर परवशता-नृशंसताके, जिन्हें पढ़कर मनमें क्षोभ उत्पन्न होता है, अपने मनमें भी, पुस्तकके पात्रोंके मनमें भी, और स्थितिको बदल देनेका तक़ाज़ा मनको बेबस कर डालता है। अफ़्रोदीती निश्चय उद्देश्यहीन कृति है, सुन्दर पर लक्ष्यभ्रष्ट।

दोपहर या ग्गमके खानेमें शामिल न हो सका। पेटकी हालत अच्छी न थी। आँखें बन्द किये बिस्तरपर पड़ा रहा और बीच-बीचमें जब-जब कुछ मन हल्का लगा बैठकर यह आपबीती लिखा किया। चीफ़ स्टिवार्ड ने एक मेज़ यहाँ रख दी है जिससे लिखना सुगम हो गया है।

(बाईसवींकी रात)

आज सुबह ही उठकर शौचादिसे निवृत्त होकर डेकपर चला गया। डेक सूना था। देर तक चुपचाप क्षितिजकी ओर देखता रहा। देखनेको सिवा आसमान और समुन्दरके और कुछ नहीं, पर न जाने कैसे मन इनमें ही अटक जाता है। निरुद्देश्य आदमी देर तक दूर तक क्षितिजकी ओर देखता रहता है। क्षितिजसे जब-तब आँखें टकराकर लौट पड़ती हैं, जब-तब समुद्रकी लहरोंकी गरजसे ही होश आता है। मैं भी आँखें क्षितिज से लौटा लहरोंका अनवरत उमड़ना और टूटना देखता रहा। एकाएक पेटमें कम्पन हुआ और केबिनको लौटना पड़ा।

साढ़े आठ बजे नाश्तेकी घण्टी बजी। डाइनिंग-रूम (आहार-गृह) में पहुँचा, मुसकराकर सहयात्रियों, कप्तान और चीफ़ इञ्जीनियरका अभिवादन किया-लिया और उनमें जा बैठा। पर सिवा मीठा नीबू और सन्तरेके रसके कुछ ले न सका। नाश्ताकर फिर डेकपर पहुँचे और गोल्फ़ जमकर हुआ। कप्तान अभ्यस्त होनेके कारण सबसे आगे थे पर सभी अब तक खेलको समझ चुके थे। क़रीब साढ़े दस बजे, जब

चाय आगई, तब कहीं खेल बन्द हुआ और उसे बन्द करते समय सभीको जैसे झटका-सा लगा, उसमें हम सब इतने तन्मय हो गये थे ।

चायके बाद प्रायः सभी अपने-अपने कामोंमें लग गये, केवल मैं कप्तानके पास जाकर इस जहाज़के विषयमें पूछने लगा । जहाज़ 'जान बाके' नारवेकी क्नुत्सेन कम्पनीका है जो आजसे प्रायः इक्कीस साल पहले बनकर हागेसुण्डके बन्दरमें खड़ा हुआ । पहली समुद्र-यात्रा इसने सन् १९२९ के अप्रैलमें की और दक्षिण प्रशान्त महासारगरकी ओर रवाना हुआ ।

यह माल ढोनेवाला जहाज़ है ४०७ फ़ुट साढ़े सात इंच लम्बा, ५४ फ़ुट ६ इंच चौड़ा, और प्रधान डेकसे नीचे तले तक २८ फ़ुट ६ इंच गहरा । इसका मस्तूल प्रधान डेकसे चोटी तक ७२ फ़ुट ऊँचा है । इसकी खुराक नित्य १२ टन डीज़ल आयल (तेल) और रफ़्तार, अधिकसे अधिक, १२ 'नाट' प्रतिघंटा (१२ मील फ़ी घंटा) है, यदि मौसिम माफ़िक़ हुआ । इस समय इसकी चाल लगभग १० मील प्रति घंटा रही है, २४ घंटों, यानी रात दिन, में प्रायः २४० मील । 'जान बाके' न्यूयार्क (अमेरिकाके संयुक्त राज्य) से अतलान्तिक, भूमध्यसागर (मेडिटेरेनियन) आदि होता हुआ आस्ट्रेलिया फिर वापस जाता है, । इधर लगातार प्रायः बीस सालसे यह पानीपर रहा है । प्रति बीसवें वर्ष इन जहाज़ोंकी मरम्मत होती हैं और 'जान बाके' भी अबकी न्यूयार्कसे लौटकर मरम्मतके लिए नारवेके अपने बन्दरमें चला जायगा ।

इसके कुल कर्मचारियोंकी संख्या ३९ हैं जिसमें कप्तान भी शामिल है । कप्तानको 'मास्टर' कहते हैं । उसके अतिरिक्त मुख्य अफ़सर (चीफ मेट), दो और मेट, रेडियो-अफ़सर, बढई, ६ माँझी, ५ इंजीनियर, बिजली-मिस्त्री, चीफ़ स्टीवार्ड (जो भोजन आदिका इन्तज़ाम देखता है), दो रसोइये, तीन स्टीवार्डेसों (स्टीवार्डकी सहकारिणियों) के अतिरिक्त कुछ और कर्मचारी भी हैं, कुल ३९ । कप्तान टॉमस नोकलिंग अधेड़ आयुके बड़े ही

सज्जन हैं। मैंने आज उनसे जहाज़के सम्बन्धमें कुछ पूछ-ताछ की और उन्होंने तत्काल मुझे अपने कमरे, चार्ट रूम और रेडियो रूम आदिमें ले जाकर 'जान बाके' संबंधी सारी आवश्यक बातें बता दीं।

कप्तानका कमरा और चार्ट, रेडियो रूम आदि सबसे उपरले डेकपर हैं। चार्ट-रूममें नकशे, बड़े-बड़े चार्ट और समुद्र सम्बन्धी कुछ पुस्तकें हैं। उसके पीछे रेडियो-रूम है जहाँसे विपत्तिमें ख़बर भेजी और सुनी जाती है। जहाज़के ट्रैन्स्मिटर और रिसीवरका प्रयोगकर कप्तानने दिखाया। यह कमरा अनेक प्रकारके यंत्रोंसे भरा है।

इसके नीचे वाले यानी बीचके डेकपर ड्राइंग रूम (बैठक), लोंज या सैलून, कुछ अफ़सरों आदिके केबिन हैं। यही हमलोग दोपहर या रातमें जबतब बैठकर गपशप करते हैं, इसी डेकपर गोल्फ़ भी खेलते हैं। नीचेके डेकपर यात्रियोंके केबिन बने हैं, कुल ६, चार नीचे, दो ऊपर। प्रबन्ध कुल १२ यात्री ले जानेका है। पर हम सब केवल पाँच पैसेंजर हैं, दो पुरुष और तीन महिलाएँ। दो महिलाएँ ऊपर और शेष सब नीचे ही हैं। मेरे पड़ोसी एक अमेरिकन मिशनरी दंपति है—रेवरेण्ड जेम्स और उनकी सुसंस्कृत पत्नी। रेवरेण्ड अधेड़ हैं, अत्यन्त हंसोड, मझोले क़दके हट्टे-कट्टे शरीरवाले। पत्नी उम्रमें संभवतः उनसे कुछ बड़ी है और शरीरसे सुकुमार। दोनों झाँसी ज़िलेमें ललितपुरके मिशनमें प्रायः पाँच वर्षसे रह रहे हैं। दोनों संयुक्तराज्य-फ़िलाडेल्फ़ियाके हैं।

शेष दो महिलाएँ, जो ऊपरके केबिनमें हैं, अमेरिकन हैं। भारतमें मिशनका ही काम करती हैं। मिस मार्गरेट वण्डेबण्ड मैनपुरीमें, दूसरी मिस एलिज़ाबेथ वाल्टन, कठार, एलिचपुरमें। इनमें पहली वयस्का हैं, दूसरी युवती, सुघड़। ये दोनों भी सालोंसे इस देशमें हैं और भारतकी पिछड़ी जातियोंमें सेवाकार्य करती हैं। मिस एलिज़ाबेथ तो कुष्टपीड़ितोंका एक अस्पताल एलिचपुरमे चलाती हैं। मुझे छोड़ बाक़ी सब लोग छुट्टी

मनाने स्वदेश जा रहे हैं और कुछ काल बाद अपने कामपर भारत लौट आयँगे।

मैं अपने केबिनमें अकेला हूँ। अगर कोई जेनोआमें आ गया तब तो शायद उसे अपने साथ ही ठहराना पड़े। पर आशा है कि यदि कोई यात्री आया भी तो उसके ठहरनेका किसी और केबिनमें इन्तज़ाम हो जायेगा। यह मुझे बड़ा अच्छा लगा कि मैं अकेला ही हूँ, और शायद रहूँगा भी। दोनो तरफ़ दीवारोंसे लगे दो बंक (बिस्तर) हैं, सुन्दर लकड़ीके बने, जिनकी पालिशकी चमक में शक्ल देखी जा सकती है। बेड रेलगाड़ीके पहले दर्जेके बर्थसे कुछ ज़्यादा चौड़ा है। लम्बाई कोई ६ फ़ुट या कुछ इंच अधिक होगी। दोनोंपर इस समय मेरा ही अधिकार है और दूसरेपर मैंने दोनो सिरोंपर अपनी किताबें कागज़ आदि लगा रक्खा है। दोनोंके बीच पच्छिमी दीवारसे लगे दो वाश-बेसिन (हाथ-मुँह धोनेकी चिलम्ची जिसमें नल लगा है) हैं जिनमेंसे एकपर मेरे लिए एक जहाज़का साबुन रक्खा है। ऊपर कतारमें हजामतका सामान आदि रखनेके लिए निकलके फ़ुट-फ़ुटभर लम्बे और तीन-तीन इंच ऊँचे खानेदार सींकचोंवाले ताक़ बने हैं। उन्हींके पास दोनों ओर ग्लास रखनेके दो-दो ताक़ भी हैं। बिस्तरके पास ही दोनों यात्रियोंके लिए एक-एक घण्टी बजानेका बिजलीका बटन है और दोनोंके पास ही दीवारपर एक-एक चौखूँटी शीशा लगी दो प्रायः पौने दो फ़ुट ऊँची आल्मारियाँ हैं सफ़ेद क़लईसे पुतीं, चमकतीं। उनमें ऊपर एक बड़ा खाना है और नीचे दो छोटे। बंकोंका रुख़ पूरब-पच्छिम है। एक दक्खिनकी दीवारसे लगा है, जो मेरा है, दूसरा उत्तरकी दीवार-से। पैताने खूँटियाँ हैं। उत्तरकी दीवारपर बिजलीका एक छोटा पंखा लगा है जिसे मैं दिन-रात चलाता हूँ और दक्खिनकी दीवारपर एक फ़ुट व्यासकी गोल खिड़की जिसे दिन-रात खोले रखता हूँ। खिड़की ऊपर सिकड़ीसे लगाकर उठा दी जाती है और भारी होती है, लोहेकी परिधि-वाली शीशेकी। उसे बन्दकर ढक देनेके लिए पर्दे लगे हैं। बिस्तरोंके

सिरहाने पूरबी दीवारपर ऊपरसे ढकी बत्ती है जो सोते समय ठीक सिरके ऊपर पड़ती है और हाथ भरकी ऊँचाईपर है। स्विच भी उसका वहीं है जो मुझ जैसे आलसीके लिए एक बड़ा सुख है। एक बत्ती और है छतसे लगी, अधिकतर मेरी ओर।

मेरे बंकके पायतानेसे लगी छतको छूती प्रायः चार फ़ुट चौड़ी लकड़ीकी चमकदार बार्निशवाली कपड़ोंके लिए आलमारी है, वार्डरोब, जिसमें दो खड़े खाने हैं। उनमें एकमें खूँटियोंपर मेरे कपड़े टँगे हैं दूसरेमें शशी बाबूका एक सूटकेस है और एक हैट और शू-केस। मैं उन्हें उनके लिए न्यूयार्क लिये जा रहा हूँ। इसी महीनेकी दसवीं तारीख़को वे अमेरिका हवाई जहाज़से चले गये थे और वज़न ज़ियादा होनेसे मुझे उनकी यह चीज़ें 'जाने बाके'से ले जानी पड़ रही हैं। इस बड़ी आलमारीमें भी ऊपर नीचे दो-दो ख़ाने हैं। आलमारीके सामने केबिनका पतला दरवाज़ा है जो अन्दरको खुलता है। सामनेकी दीवारपर बीचमें नीचे कमरा गरम करनेके लिए लोहेकी ऊँची छड़दार बिजलीकी अँगीठी है जो अभी ठंडी है पर जिसकी आवश्यकता अतलान्तिक सागर पार करते समय पर्याप्त पड़ेगी। केबिन प्रायः १० फ़ुट लम्बा, १० फ़ुट चौड़ा, ८ फ़ुट ऊँचा है।

दाहिनी ओर सटा हुआ सहयात्री रेवरेण्ड जेम्सका केबिन है और हम दोनोंके बीचसे जो कारिडर जाता है उसमें दाहिनी ओर डाइनिंगरूम (भोजनालय), बाईं ओर ऊपरके डेक और सैलूनमें जानेका जीना है। सैलूनमें एक रेडियो है, कुर्सियाँ, मेज़ें, आदि हैं। मेरे केबिनके सामने एक छोटा-सा कमोडवाला कमरा (पाख़ाना) है और बाईं ओर एक बड़ा स्नानागार फिर उसकी बगलमें एक और कमोड-कमरा। कमोडवाले कमरे नितान्त साफ़ हैं, चमकते हुए। उनमें पानीकी व्यवस्था नहीं है, काग़ज़की है, टिश्शू पेपरकी। मैं वहाँ पानीसे शौच नहीं कर पाता क्योंकि पानी ले जानेके लिए पास कुछ नहीं है। इससे साहब लोगोंका आचार ही ग्रहण कर गुसलख़ानेमें चला आता हूँ, जहाँ स्नानादिसे भी साथ ही निवृत्त हो लेता

हूँ। पर नहीं जानता यह आचार-पद्धति कबतक क़ायम रह सकेगी। गुसलख़ानेमें एक टब है, वाश-बेसिन है, गर्म-ठंढे जलके नल हैं और साथ ही फ़ौवारेके लिए भी एक नल है। फ़ौवारा खोलकर जब टबमें सो जाता हूँ तब इधरकी समुद्री बीमारीसे बड़ी राहत मिलती है।

विदेशमें कहीं बिस्तर आदिकी आवश्यकता नहीं पड़ती, ओढ़ने-बिछानेके लिए धुली-धुलाई निष्कीट की हुई गद्दी और कम्बल सर्वत्र मिलते हैं। यहाँ जहाज़में भी आरामदेह बिस्तरपर दूधके फेन-सी चादर बिछी है और चमकती चादर ओढ़नेके लिए मिली है। दो तौलिये हैं, एक मुँह पोंछनेका, एक नहानेका। और चादर, तौलिये सब मैले होनेके पूर्व ही झट बदल दिये जाते हैं। अभी कल ही वे बदले गये हैं। स्टिवार्डेस नित्य कमरा, बिस्तर आदि ठीक कर जाती है, और एक थर्मस्की चमकती सफ़ेद हल्की सुराही, जो दीवारकी खूँटीपर टँगी है, पानीसे भर जाती है।

दोनों बिस्तरोंके नीचे मेरे एक-एक सूटकेस पड़े हैं जिनमेंसे एकमें किताबें भरीं हैं दूसरेमें कपड़े। बीचमें हल्की लकड़ीके पायोंवाली एक चौकोन मेज़ है जिसकी उपरली ज़मीन चमड़े और मख़मलसे मण्डित है। बीचमें जो मेरा ३६ इंचका बृहदाकार चमड़ेका बाक्स पड़ा है उसीके ऊपर मेज़ रखकर मैंने उसे ढक दिया है। मेज़ उसे चौड़ाईमें ढक लेता है। उसी मेजके पास कुर्सी रख, जो रात स्टिवार्डेसने कृपया दे दी थी, मैं पश्चिमकी ओर मुँह कर लिख रहा हूँ।

दोपहरका खाना समाप्त कर हम फिर डेकपर पहुँचे। सुबहका खेल अभी समाप्त नहीं हुआ था, उसे पूरा करने लगे। फिर डेकपर खड़े हुए, बीच वालेपर। कलसे ही निचले डेकपर तैरनेके लिए तालाब बन रहा था जो आज सबेरे ही तैयार कर समुद्रके जलसे लबालब भर दिया गया था। जहाजके ऊपर ये लोग अपने आराम, खेल और आनन्दके सारे साधन एकत्र कर लेते हैं।

खेलने-कूदने व्यायाम आदि करनेके तो सारे सामान इनके पास थे ही,

नहाने और तैरनेके लिए तालाब बना लेते भी इन्हें देखा। कल दोपहरसे ही खलासी उसे तैयार करनेमें लगे थे। पहले डेकके पिछले भागके उत्तरी हिस्सेमें प्रायः बीस फ़ुट लम्बा, दस फ़ुट चौड़ा एक लोहेका फ़्रेम खड़ाकर उसे डेककी ज़मीनमें कीलोंके ज़रिये गाड़ दिया। फिर उस फ़्रेमको लकड़ीके तख़्तोंसे चारों ओर खड़ा भरने लगे। तख़्तोंसे ही उन्हें वे एकके ऊपर एक रख ठोंकते और नीचे फ़्रेममें यथोचित बैठा देते। कल भी देर तक यह काम देखता रहा था। उनकी चतुराई, कुशलता और क्षमता देख दंग रह गया। कोई चीज़ 'काम चलाऊँ' मानकर उन्हें छोड़ते न देखा। एक-एक चीज़ सही और दुरुस्त कर उन्होंने फ़्रेम ठीक कर लिया, जहाँ कहीं कोई तख़्ता ढीला पड़ा झट बढ़ईने उसे काट तराशकर ठीक कर दिया और देखते ही देखते फ़्रेम दीवारोंसे घिर गया। हाँ, अभी तख़्तोंके बीचकी दरारें रह ही गई थीं कि मैं कल सोने चला गया था।

पर आज जो देखा तो सारा मुक़म्मल था। दरारें कनवससे बन्द हो चुकी थीं और तालाब लबालब भर रहा था। नहानेवाले उसमें कूद-कूद तैर रहे थे। भीतर दीवारोंके सहारे कनवसकी चद्दरें दौड़ रही थीं जिनके उपरले और निचले सिरोंके सुराख़ बाहरकी ओर डोरियोंसे कस दिये गये थे और यह उनका रस्सियोंका जाल भी ख़ूबसूरतीसे बुना गया था। बाहरकी ओरसे पानीकी सतह तक पहुँचनेके लिए एक छोटी सीढ़ी थी जो पानीके तले तक पहुँचती थी और उससे प्रायः दस फ़ुटकी गहराईमें जवान कूद और तैर रहे थे।

अधिकतर इनमें कर्मचारी थे जिनका खुला शरीर देखते ही बनता था। उनके शरीरपर पौरुष खेलता था। सुडौल शक्तिपरिचायक जब एक दूसरेपर रपट पड़ते थे तब लगता जैसे दो साँड़ टकरा पड़े हों। देर तक उनका तैरना, आपसमें खेलना, एक दूसरेको घर्षित करना देखता रहा। उनके शरीरपर सिवा एक जाँघियाके और कुछ न था; हाँ, स्टिवार्डेसने एक सँकरी अंगिया (बाडी) निश्चय पहन रक्खी थी। और वह स्वयं

भी किसी पुरुषसे कम न थी। वह भी उन्हींकी भाँति उछलती-कूदती, डूबती-डुबाती, सीढ़ीपर सुस्ताती और पानीमें फिर कूद पड़ती। एकाध उसके खुले अंगोंपर नज़र डाल चुहल भी करते और वह चुपकेसे मुसका देती। उसके छोटे स्तन स्तनांशुकके जलसे चिपक जानेसे साकार हो गये थे।

एक काला मोटा पाइप तालाबको निरन्तर सागरके जलसे भरता था जिससे उछल-कूदसे बाहर निकल जाने वाले जलकी क्षतिपूर्ति होती जाती थी। सहसा जलक्रीड़ाकी धूममें एक बार वह पाइप उठ पड़ा और उसकी धारा ऊपरके डेकको नहला चली, जहाँ हम सब खड़े वह जल-विहार देख रहे थे। हम सब भभक कर भागे। उधर पानीमें उछल-कूद चलती रही।

मैं लौटा तो केबिनमें आकर लेट रहा। थकावट थी, जी मतला रहा था। न तो खाना ही मुआफ़िक पड़ता था न पेट ही साफ़ हो पाता था। शाम तक पड़ा रहा। पड़ा-पड़ा कुछ पढ़ता रहा—पहले टाइम्सकी इण्डियन इयरबुक, फिर पर्ल बकको 'ड्रैगन सीड'।

६ बजे शामकी खानेकी घण्टी बजी, पर मैं गया नहीं। पड़ा-पड़ा उस टिनके डब्बेसे निकाल कर कुछ मटरी और नमकीन खाई जो ज्ञानकी पत्नी बद्रीविशालकी बहिनने साथ कर दी थी। नमकीन सूख चली थी पर अत्यन्त स्वादिष्ट लगी। खानेकी मेज़पर पश्चिमी स्वादके अनुकूल अन-गिनत खाद्य सामग्री प्रायः अनुपम रक्खी जाती थी पर मेरे लिए अखाद्य होनेसे वह नहींके बराबर थी, और उसके मुक़ाबिले यह नमकीन कितनी सुस्वाद लगी, लिख नहीं सकता। डाइनिंग रूममें नहीं गया। केबिनमें ही कुछ मटर, फल और सन्तरेके रसका एक ग्लास लेकर अब सोने जा रहा हूँ।

—(तेईसवींकी रात)

सुबह जो सोकर उठा तो जी भारी पाया, विशेषकर पेट। जो कुछ थोड़ा खाया था वह भी पचा न था। पड़ोसी जेम्स साहबने पिछली रात थोड़ा इनोज़ साल्ट भी दिया था पर यद्यपि उससे पेट कुछ हल्का जान पड़ा, सर्वथा हल्का न हुआ। सुबह कुछ पेटके भारीपनसे कुछ नींद न आनेसे तबीयत ख़राब जान पड़ने लगी। फिर भी शौचादि गया, स्नान किया और थोड़ा टहलनेका निश्चय किया।

ऊपरके डेकपर पहुँचा, घड़ी मिलाई और नीचे उतर पड़ा। लम्बे निचले डेकपर प्रायः पैंतालीस मिनट टहलनेके बाद कुछ जी ठिकाने हुआ। नाश्ताकी घण्टी बज गई थी। ऊपर जाने लगा तो एक सुन्दर अल्हड़ लड़कीको सामनेसे हाथमें कुछ सामान लिये जाते देखा। उसे पहले कभी देखा भी न था, कुछ झिझका पर अभिवादनका उत्तर अभिवादनसे दे डाइनिंग रूममें चला गया। पीछे मालूम हुआ कि वह भी स्टिवार्डेस है, आस्ट्रेलियाकी है और जहाज़के ही कर्मचारियोंमेंसे एकको ब्याही है।

आज रविवार है यह चौबीसवींकी सुबह, जब ख़ुदाने संसारकी सृष्टि कर विश्राम किया था। मुझ 'अदेवयु' को छोड़ जहाज़में बाक़ी सारे लोग ईसाई ही थे और यात्रियोंमें तो सभी मिशनरी थे। सैलूनमें सब लोग अपनी-अपनी बाइबिल लेकर बैठे। मैं भी वहाँ था। मिस बण्डेबण्डने मुझे गानोंकी एक पुस्तिका दी पर उसके गाने ऐसे थे जिनमें सर्वत्र यति-भंग था, कहीं मात्राओंका ख़याल नहीं किया गया था और कहीं भी ज़ोर देकर खींचकर कोई मात्रा बिठा ली जाती थी। दोनों मिशनरी महिलाओंने कुछ गाया भी।

प्रार्थनाके बाद सबने मिलकर (सिवा मेरे) एक स्वरसे एक धार्मिक गीत गाया, जिसमें कप्तान भी शामिल हुए। फिर रेवरेण्ड जेम्सने बाइ-बिलसे एकाध प्रसङ्ग पढ़कर उनपर भगवान्की दया, ईसाके प्रेम, उनकी पितावत् कृपा आदि पर एक संक्षिप्त वक्तृता दी। उनकी बातें अच्छी लगीं, यद्यपि मुझे यह स्वीकार न हो सका कि उस दया और प्रेमका हमें

स्वाद मिल चुका है, पर चूँकि अकेले उसका आनन्द लेना भला नहीं लगता समुन्दर पार इतनी दूर हम इसलिए आये है कि उस आनन्दका स्वार्थमय अकेला स्वाद न ले उसमें औरोंको भी हिस्सा दे सकें।

मेरा विश्वास है कि रेवरेण्डके वक्तव्यमें कुछ सच्चाई है। कमसे कम वह उनके व्यक्तिगत हृदयकी सच्चाई तो अवश्य है। संसार कितने कष्टमें है, रहा है, वहाँ जिस मात्रामें अन्याय, दारिद्रय, अत्याचार, शोषण, बेईमानी और निर्दयता होती रही है उसे देखते यह विश्वास करना असम्भव है कि कोई ख़ुदा अपनी प्यारी औलादको इस प्रकार पिसते देखकर भी चुप रह सकता है। आख़िर उसकी रहमत कहाँ बरसती है? श्रीमानों पर, अत्याचारियों और अन्यायियोंपर क्यों? ईमानदारों, ग़रीबों, सर्वहा-राओंपर भला क्यों नहीं? यदि तर्ककी युक्तियोंको अलग भी रख दें तब भी इन बातोंसे ही भगवानकी असिद्धि हो जाती है। और यदि ऐसा ख़ुदा कहीं हुआ भी तो वह इतना निर्मम, इतना उदासीन होगा कि उससे पुत्रत्वका संबंध जोड़ते हममेंसे कितनोंको आपत्ति होगी।

रेवरेण्ड जेम्स श्रद्धालु हैं, निश्चय परिस्थितियोंके शिकार। इस प्रकारके शिकार पहले भी अनेक यशस्वी ज्ञानी तक हो गये हैं। शंकर वैसे ही 'शिकार' थे, परिस्थितियोंके 'विक्टिम', वरन क्या यह सम्भव था कि इतने मतिमान् और तार्किक होकर भी मध्यवर्ती आधारभूत सत्यको ही वे छोड़ बैठते?

परन्तु हमें रेवरेण्ड जेम्स-से मिशनरियोंका आभार मानना है। यद्यपि इन लोगोंका एकमात्र उद्देश्य भारतीयोंको ईसाई बनाना और भारत आना अपने लिए विशेषतः अपनी रोज़ीका मसला हल करना है तथापि उनकी अपने सेवाओंसे हम उनका एहसान माननेको मजबूर हैं। समुन्दर पारसे आकर स्वजनोंको छोड़ ये हमारे घृणित समाजकी सेवा करते हैं। जिनकी छाया मात्रसे उनका—अपना—ब्राह्मण अपवित्र होता रहा है, अपने ही देशमें जिन्हें सनातन कालसे कष्ट और कठोरता 'दाय' के रूपमें मिलती

रही हैं, जो अछूत हैं और आज भी 'हरिजन' नामसे अपना पुराना कलेवर घसीटते जा रहे हैं, उनके बीच रेवरेण्ड जेम्स सरीखोंने काम किया है और करते हैं। हिन्दुस्तानके देहातकी आवश्यकताओं और जीवनको अंगीकार कर ये लोग उन सबके छोड़े अमार्गोंमें काम करते हैं, उनके सुख-दुःखमें शामिल होते हैं। और इनको अत्यन्त शान्तिपूर्वक यह काम करना पड़ता है, ईर्ष्या, निन्दा, सन्देह सबके बीच चुपचाप।

मेरा यह विश्वास है कि इनके सम्पर्कमें आ जानेसे जिन अछूतोंने प्रकाश देखा है उनकी स्थिति काफ़ी बदली है। हमसे उन्होंने दुर्गति पाई, इनसे वे इहलोकमें तो कमसे कम सद्गति पा ही जाते हैं। मेरा यह अनुभव और अनुमान दोनों है कि, इतना धर्मपरिवर्तनसे यद्यपि नहीं जितना शिक्षाका प्रचारकर, मिशनरियोंने सामाजिक चेतना जगाकर भारतके एक बड़े मानव परिवारको मनुष्य बनाया है और हम सवर्णोंको उसे मनुष्य माननेको बाध्य किया है।

अस्तु! प्रार्थनाके बाद बैठक समाप्त हुई। मैंने भी अपने सहयात्रियोंको बातों ही बातोंमें बताया कि बाइबिलकी 'प्राचीन पुस्तक' में मेरी भी बड़ी रुचि है क्योंकि भारतीय संस्कृतिके समझनेमें वहाँसे बड़ी सामग्री मिलती है। मध्यपूर्वका वह भाग जहाँ कभी सुमेरी, बाबुली, मिस्री, आसुरी, ख़ल्दी और ईरानी संस्कृतियाँ फलीं-फूलीं बार-बार उस पुस्तकके तलोंमें उठ आता है। यह तो हुई, ख़ैर, संस्कृतियोंके अन्तरावलम्बनकी बात जिसपर कुछ सालोंसे मैं लिखता-कहता आ रहा हूँ, उसमें सर्वहाराओंके लिए भी कुछ कम सामग्री नहीं है, विशेषकर नबियोंकी ललकारोंमें जो बार-बार दरिद्रों और बेबसोंको अपनी छायामें ले श्रीमानोंके मुँह मोड़ देते हैं, नेबूख़दनेज़्ज़ार द्वारा बन्दी हो जाना उनके लिए बरदान हो जाता है। क़ैद उनमें शक्ति भरती है तप निर्भीकता, और बाबुलके प्रवाससे लौट वे अपनी आवाज़से दुनियांको कँपा देते हैं। उन्हींकी तर्क-निर्भीकता और स्पादिष्टवादिताकी पराकाष्ठा ईसाके उस ऐलानमें होती है जिसमें
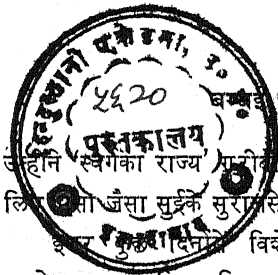
उन्होंने 'स्वर्गका राज्य' गरीबोंके लिए जन्मसिद्ध माना है और धनियोंके लिए वैसा जैसा सुईके सुराखसे ऊँटका पार हो सकना।

इधर कुछ दिनोंसे विशेषकर संस्कृतियोंके अन्तरावलम्बनसम्बन्धी अपने अध्ययनके लिए, जिसपर मुझे अमेरिका और यूरोपमें बोलना है, बाइबिल बराबर पढ़ता रहा हूँ। पर्ल बककी 'ड्रैगन सीड' दूसरी बाइबिल है जिसे इसके साथ ही पढ़ रहा हूँ। दोनोंसे पर्याप्त बल मिलता रहा है।

खाना खानेके पहले रेवरेण्ड जेम्सने इनोज़ साल्टका एक डोज़ और दे दिया था, रातसे काफ़ी बड़ा। अब साँझको जाकर कुछ आराम मिला। फिर स्नान किया। कुछ लिखा और शामके भोजनकी घण्टी बज गई। बड़े चावसे डिनरकी मेज़पर गया। कुछ भूख भी लग आई थी परन्तु अनुकूल भोजन न मिलनेके कारण कुछ खा न सका। बस डबलरोटीका एक टुकड़ा और फल खाकर सब्र कर लिया। मेरे लिए चीफ़ स्टिवार्डने आज विशेष कष्ट किया था। चावलकी खीर बनवा दी थी। खीर कुछ बुरी न होती अगर उसमें नमक न पड़ा होता। फिर भी बादमें जो उसे खाया तो बड़ा सुख मिला। और तृप्तिसे भी अधिक इस आशासे कि समयपर यह तो मिल ही सकती है। जबसे सुना था कि इस जहाज़पर गोआनी रसोइया नहीं है तबसे चावल-सागकी आशा छोड़ चुका था परन्तु अब खीर देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

—(**चौबीसवींकी रात**)

रातमें ऊपर सैलूनमें बैठे हमलोग देरतक गप-शप करते रहे, फिर मैं केबिनमें लौट आया। कुछ लिखा। अब सोने जा रहा हूँ। पढ़ता-पढ़ता सो जाऊँगा। थोड़ी देर पहले स्वदेशकी कुछ ख़बरें रेडियोपर सुनी थीं।

आज पच्चीस सितम्बर है। जहाज़पर प्रायः ६ दिन बीत गये। कलसे ही कप्तान कहते आये थे कि दाहिनी ओर ज़मीन दिखाई देगी। लगातार कई दिनों तक पानी पर ही चलते रहनेसे ज़मीन देखनेकी इच्छा प्रबल हो उठी थी। याद आया कि जब आजके सुरक्षित संसारमें स्थलके

लिए हमारी उत्कण्ठा इतनी है तब कोलम्बसके माँझियों और साथियोंकी तबकी डरावनी दुनियामें कितनी रही होगी।

स्नानादि कर बीचके डेकपर ऊपर जा पहुँचा। अभी सात बजे थे। पर कप्तान ऊपर थे। मुझे देखते ही वे उत्तरकी ओर ले गये और पूछा—'ज़मीन देखी ?' मैं क्षितिजकी ओर कुछ देर तक देखता रहा फिर धीरे-धीरे जब दृष्टि अभ्यस्त हो गई तब दूर सफ़ेद टीला सा कुछ धुँधला दीख पड़ा। कप्तानने बताया यह 'अरेबिया' का पहाड़ है। अरब आज पहले पहल मैंने देखा। कुछ देर बाद तट चमकती धूपमें बादलोंके हट जाने पर स्पष्ट दीख पड़ा, अपनी श्रेणीके साथ। धूपमें दो-एक मीलके ही अन्तरपर जान पड़ता था पर पूछनेपर मालूम हुआ कि वह हमारे जहाज़से कमसे कम दस मील दूर है।

देखता-देखता कुछ सोचने लगा। बालुकाकी एकता मुझे स्वदेशके राजपूत वीरोंकी याद दिलाने लगी। फिर अरबकी अपनी विभूति भी साकार हो उठी। सातवीं सदीमें उस कंगाल अनुर्वर देशमें एक चिनगारी फूट पड़ी थी और उसके बढ़ते आलोकसे एक बार जगत् चौंधिया गया था। हज़रत मुहम्मदके मरनेके प्रायः अस्सी सालके भीतर ही भीतर कास्पियन सागरसे नील नद तक एक ओर और चीनकी सीमासे अतलांतिकके तट तक दूसरी ओर अरबी तलवारके साथ ख़ुदाका नूर बरस पड़ा था।

कप्तानकी आवाज़से अन्तर्दृष्टि लौटी। वे हैं तो नारवेके पर अंग्रेज़ी प्रायः साफ़ बोलते हैं। उन्होंने पूछा—'जहाज़ नहीं देखे ? इधर आइए!' फिर हम लोग दक्खिनकी ओर जा खड़े हुए। एक पास ही पूर्वकी ओर दूसरा उससे परे पश्चिमकी ओर चला जा रहा था। एक फ़ारसकी खाड़ीको, दूसरा यूरोपको। इतने दिनों बाद पहली बार जहाज़ दिखाई पड़े, अपने ही जहाज़। देर तक उन्हें देखता रहा। कप्तानने बताया, कल तक जहाज़ ही जहाज़ दिखाई पड़ने लगेंगे, क्योंकि अदन पास ही है, प्रायः दो सौ मील दूर।

यानी हम अब तक प्रायः चौदह सौ मील चल चुके हैं, घरसे प्रायः तेईस सौ मील, और अब, चौथे पहर, जब मैं लिख रहा हूँ, अनेक मील तै हो गये। अदन बंबईसे १६६५ मील दूर है। और बंबई इलाहाबादसे ८४५ मील। हम अदनको अपनी दाहिनी ओर छोड़ते चले जायँगे क्योंकि वहाँका माल न होनेके कारण हमारा जहाज़ आगे बढ़ जायगा। और तब आँखें बाईं ओर टकटकी लगायेंगी क्योंकि उधर ही पोर्ट सैयद है, मिस्रकी ज़मीन पर, जहाँ हमें रुकना है, जहाँ हमारे पैर सूखे थलका स्पर्श करेंगे, अभी कई दिनोंकी यात्राके बाद, अदनसे प्रायः चौदह सौ मील दूर, बम्बईसे प्रायः तीन हज़ार मील दूर।

शामके साढ़े पाँच बजनेवाले हैं। अब लिखना बन्द कर रहा हूँ। थोड़ी देरमें खानेकी घण्टी बजेगी और भोजनके कमरेमें जाना होगा। आज अब नहीं लिखूँगा। कलके लिए बड़ी उत्कंठा है। आस-पाससे गुज़रते जहाज़ों के बीच होकर निकलना होगा। यह कुछ कम कुतूहलकी बात नहीं। कई दिनों समुद्रकी सतहपर ही चलते रहनेवाले यात्रीकी स्थिति बिलकुल बच्चोंकी-सी हो जाती है, जब प्रत्येक वस्तु उसकी जिज्ञासा जगा देती है।

आज छब्बीस है। सागर प्रशान्त है। जल-विस्तार फैली चादर सा लगता है, गंगा-जमुनाके जल-सा। नन्हीं-नन्हीं लहरियाँ उठ रही हैं। केवल जिस ओरसे हमारा जहाज़ अपनी राह बनाता जा रहा है फटती हुई लह-रियाँ फेनिल हो फैल जाती हैं। हाँ हल्के घहरानेका शब्द निरन्तर हो रहा है जैसे किसीने सागरका मुँह बन्द कर दिया हो और वह अन्दर ही अन्दर घुमड़ रहा हो।

सुबह प्रायः साढ़े चार बजे ही हम अदन लाँघ गये थे। अदनका प्रकाश-स्तभ और बत्तियाँ झिलमिल-झिलमिल चमकीं थीं। अदन बिलकुल तटपर नहीं है, खाड़ीकी मोड़में पहाड़ीके पीछे है। पर किनारा और पहाड़ियाँ लगातार दाहिनी ओर, जिसे जहाज़ी बोलीमें 'बन्दरकी दिशा' कहते हैं, दिखाई देने लगीं। हम देर तक बाइनाकुलर और दूरबीनसे तट देखते रहे।

कप्तानका बाइनाकुलर और दूरबीन दोनों ही बड़े ज़ोरदार हैं और तटको बिलकुल पास ला देते हैं।

अब हम बाबेलमण्डबके जलडमरूमध्यमें दाख़िल हो चुके हैं जो अरब सागरको लालसागरसे मिलाता है। अरबसागरसे हम आज पूर्वाह्नमें ही विदा ले चुके हैं। बाबेलमण्डबका जलडमरूमध्य प्रायः बारह मील चौड़ा है और दोनों तट साफ़ दीखते हैं। बाईं ओर मिस्रका और दाहिनी ओर अरबका देश है, दोनोंका तट रेतीला है और कप्तानसे सुना कि बाबेलमण्डब में बालूका तूफ़ान भी अक्सर आया करता है। पर यद्यपि हम मानसूनका मौसिम सर्वथा पार नहीं कर चुके, तूफ़ानसे जान बची। फिर भी अभी लालसागरकी मुसीबत आगे है। सुना कि जब तूफ़ान आता है तब बालूके बादलोंसे सागरका आकाश भर जाता है, जहाज़के डेकपर जाना असम्भव हो जाता है और दरवाज़े, खिड़कियाँ सब बन्द कर लिये जाते हैं। हम अब भी बाबेलमण्डबमें ही हैं, पर तट निर्वातिसे हैं, सागर शान्त है।

ऊपर उस डेकपर पहुँचा जहाँसे 'स्टियरिंग' होती है। एक पहिया है जिसे पकड़े एक आदमी निरन्तर खड़ा रहता है और अपने सामनेकी कुतुबनुमाको एक ख़ास डिग्रीपर चलाता रहता है। इसीसे जहाज़ अपने नियत मार्गपर चलता है। स्थलपर रास्ता पहचानना कितना आसान है पर जलकी सतहपर, उसके फैले विस्तारपर, कितना कठिन। पहचान अधिकतर घरों, खेतों, मैदानोंके मोड़ोंसे होती है। यहाँ वह कुछ नहीं। एकाकी निर्ज-नता है। इतने दिनोंमें एक चिड़िया तक न दिखाई पड़ी। और जहाज़ फिर भी अपने निश्चित मार्गपर चला जा रहा है, बीघा भर भी इधर-उधर नहीं हो पाता। कितना कठिन है उसका अपने मार्गको पहचानना, फिर कितना आसान भी है। कुतुबनुमा जो सामने है, मानव मस्तिष्कके वैज्ञा-निक यन्त्र जो सामने हैं, जो उस अंगूठेका अनूठा करतब है जो उँगलियोंके बराबर न होकर उनके सामने है। इसी कारण जहाज़का अपनी लीकपर चलना बड़ा आसान भी है।

देर तक दाहिनी ओरके उन गाँवोंको देखता रहा जो अरबकी भूमिपर हैं, झोपड़ों, छोटे मकानोंवाले गाँव। एक बड़ा-सा टिनका शेड दिखाई पड़ा और मकानोंमें बीच सागर तट तक उतरती पगडण्डियाँ। दोनों ओर आते-जाते अनेक जहाज़ आज दिखाई पड़े। इनमें कुछ माल ढोनेवाले थे, कुछ "टैंकर" (तेल ढोनेवाले), एक 'डेस्ट्रायर' फ़ौज़ी था।

अब हम बाबेलमण्डब लाँघ लालसागरमें दाख़िल हो चुके हैं। लाल-सागर जिसका बाइबिलमें इतनी बार ज़िक्र आया है। तीसरा पहर है और लहरियाँ वैसे ही जहाज़को थपथपा रही हैं जैसे अरबसागरकी थपथपाती थीं। किनारे अब भी दोनों ओर जब तब दीख जाते हैं। इसे लालसागर क्यों कहते हैं, समझ न सका। इसके जलका रंग अरब सागरकी ही भाँति गहरे हरेसे गहरे नीले तक है पर न जाने कैसे इसका यह नाम पड़ गया जो प्राचीनकालसे ही चलता आ रहा है—शायद इसलिए कि इसमें इब्रानी परम्पराके अनुसार, लाल सरपत या सेवार होती है, शायद इससे कि सागरके उत्तर-पूर्वमें 'ईदोम' नामका प्रदेश है जिसका शाब्दिक अर्थ 'लाल' है, शायद इसलिए कि इसके पश्चिमी तटके पहाड़ोंका रंग लाल है। जो भी हो, कमसे कम इस समुद्रका जल लाल हरगिज़ नहीं।

लालसागर प्रायः डेढ़ हज़ार मील लंबा है और स्वेज़ तथा अकाबा नामकी दो खाड़ियोंमें जाकर उत्तरकी ओर ख़त्म होता है। इन्हीं दो खाड़ियोंके बीच सिनाईका प्रायद्वीप है जहाँ सिनाईका पहाड़ सात हजार फ़ुटसे अधिक ऊँचा है। हम इधर बराबर लालसागरमें ही चले जा रहे हैं और ऐसा लगता है कि जीवित संसारमें पहुँच गए हैं। आने-जाने वाले जहाज़ोंने एक नया कुतूहल उत्पन्न कर दिया है। अब अरब सागर नितांत सूना नहीं लगता।

गर्मी बेहद है। इधर दो-तीन दिनोंसे गर्मी काफ़ी बढ़ती गई है। रात-तक, सुना है, असह्य हो उठेगी। सुबह बेहद पसीना निकला। पंखा पूरी रफ़्तारसे चलता रहकर भी बराबर बहनेवाले पसीनेको न सुखा सका था।

इस समय भी, जब रातमें मैं लिख रहा हूँ, पंखा पसीना नहीं सुखा पा रहा है। तटकी भला क्या दशा होगी ? और उन प्राचीन जहाजोंकी जिनमें पंखेका कोई प्रबन्ध न था ? हम पानीपर हैं, हवा ज़ोरसे चल रही है, पंखा अपनी सर्वाधिक गतिपर है फिर भी पसीना बहता ही जा रहा है। स्वेज़ लाँघ जब भूमध्यसागरमें पहुँचेंगे तब कहीं पसीना सूखेगा।

आज दिनमें जो थोड़ा लेटा तो गर्मीके मारे सो न सका और पड़ा-पड़ा बाइबिल पढ़ता रहा। वंशावली समाप्त कर जलप्रलयकी दिलचस्प कहानी पढ़ी। 'प्रतीक' में पिछले साल इसकी कहानी मैंने लिखी थी यद्यपि वह कहानी वस्तुतः मैंने बाइबिलसे नहीं उससे भी प्राचीन साहित्य बाबुली महाकाव्य 'गिलगमिश'से ली थी। 'गिलगमिश' संसारका सबसे प्राचीन महाकाव्य तो है ही शायद उसकी सबसे प्राचीन पुस्तक भी है, सम्भवतः ऋग्वेदसे भी प्राचीन। ऋग्वेदके कुछ ही स्थल उतने प्राचीन होंगे।

यह जलप्लावनकी कहानी बड़ी मनोरंजक है। बाबुल और दक्षिणी प्रदेशपर जनताके पापसे ख़ुदाका क़हर नाज़िल हुआ। उसने कोपकर दिनों-हफ़्तों-महीनों उस प्रदेशपर लगातार मूसलाधार वर्षा की। दजला और फ़रातका द्वाब था, दोनों नदियां भी उमड़ पड़ीं। गिलगमिशका पूर्वज ज़िउसुद्दू, जो साधु और जनताका नेता था, ख़ुदाके आदेशानुसार नाव बनाकर उसपर अपना कुनबा और जीवोंका एक-एक जोड़ा ले चढ़ गया। नाव महीनों पानीपर तैरती रही, तैरते-तैरते उत्तरी पहाड़ोंकी ओर बह गई। उधर दुनिया तबाह हो गई। प्रलय मची थी, जीव-जन्तु नष्ट हो गये। कोई न बचा। फिर ज़िउसुद्दूने काग और कबूतर (पण्डुक) उड़ाये जिससे स्थलका पता लगे। पर वे लौट आये, स्थलका पता न लगा। फिर उन्हें उसने उड़ाया फिर वे लौट आये। चारों ओर पानी ही पानी था, पैर टेकनेको कहीं ज़मीन तक न थी। उन्हें फिर नावपर ही शरण मिली। कुछ दिनों वाद जब वर्षा बन्द हो चुकी थी, वे फिर छोड़े गये पर अबकी बार वे न लौटे, जिससे अधिनायकने जाना धरती सूख चली है।

यही कहानी बाइबिल, मिस्री, चीनी, ग्रीक, भारतीय आदि परम्पराओंमें स्थानीय अन्तरके साथ मिलती है। बाइबिलमें ज़िउसुद्दुके स्थानपर हीरो हज़रत नूह हैं, चीनीमें चीनी और भारतीय पाठमें मनु। भारतीय साहित्य में पहले-पहल इस कहानीका वर्णन शतपथ ब्राह्मणमें हुआ है, फिर पुराणों-में। शतपथ ब्राह्मणका निर्माण-काल प्रायः आठवीं-नवीं सदी ईसवी पूर्व माना जाता है। वास्तविक जल-प्रलयका समय ईसा पूर्व चौथी सहस्राब्दी है, ३००० ई० पू० से पहले। महाकाव्यका समय २७०० ई० पू० के आस-पास है। इस प्रकार इस जल-प्लावनका सुमेरी, बाबुली पाठ ही प्राचीन-तम है। यह पाठ 'गिलगमिश' महाकाव्यके रूपमें कीलनुमा (क्यूनीफ़ार्म) लिपिमें अनेक ईटोंपर खुदा असुरबनिपालके संग्रह-भवनमें मिला है। और जल-प्लावन भी दज़ला फ़रातके द्वाबमें हुआ था ऐसा डा० लियोनार्ड वूलीने वहाँकी भूमि खोदकर सिद्ध कर दिया है। शतपथ ब्राह्मणके अपने पाठसे भी यही प्रमाणित होता है कि कहानी असूरी (अस्सीरी-बाबुली) आधारसे ली गई है क्योंकि जब जीवोंकी रक्षाके उपलक्षमें मनु यज्ञ करना चाहते हैं तब उन्हें किलात और आकुली नामके असुर-पुरोहितोंको बुलाना पड़ता है।

आज इस विषयकी चर्चा भोजनकी मेज पर भी रही और मिस एलिज़ाबेथ वाल्टनने इसमें बड़ी दिलचस्पी ली।

आज सुबह और शाम—प्रायः सारा दिन—समुद्र शान्त था और जहाज़ आते जाते रहे। आज सहसा एक पक्षीको भी उड़ते देखा।

शामके भोजनके बाद डेकपर गया। आज पूर्णिमा होनेसे सुदर्शन चन्द्र निकला। देरतक उसका प्रशान्त जल-विस्तार पर चमकना और पानीमें उसकी छायाका झिलमिल करना देखता रहा। चाँद छोटा ही दीख पड़ा। उठा भी प्रायः छोटा ही था धीरे-धीरे जलकी सतहसे, इसलिए कि उसे पूर्णता दिनमें ही प्राप्त हो गई थी। पर जलकी सतहसे उसका उठना सही-सही वैसे ही न देख सका जैसे तत्पर रहकर भी सूरजका निकलना

न देख सका था। क्षितिजपर प्राय: बादल मँडराते रहते हैं जो सूरजको ढक लेते हैं और बालारुणका वह अभिराम बिम्ब देखनेको नहीं मिलता।

—(२६–९–५०)

रातको ज़रा भी नींद नहीं आई। मारे गर्मीके बुरा हाल था। सो न सकने के कारण पढ़ता रहा था, लगभग साढ़े ग्यारह बजे तक। किताब रखकर बत्ती बुझा दी और सोनेके उपक्रम करने लगा पर नींद नहीं ही आई। एक बजे बिस्तरसे हारकर मेज़पर आगया, कुछ लिखने लगा, और जब दो बजेके क़रीब पलकें भारी लगने लगीं तब फिर 'बंक' पर लौटा। फिर भी नींद लगी नहीं। करवटें बदलता रहा। एक बार भी आँखें नहीं झपकीं यद्यपि मैं उन्हें बन्द किये रहा। चार बजे आख़िर उठ ही बैठा। गर्मी इस क़दर थी कि पसीना बहने लगा।

कुछ लिखा, फिर पढ़ने बैठा। पर्ल बक की 'ड्रेगनसीड' के कुछ पृष्ठ बाक़ी रह गये थे। उन्हें पढ़कर पुस्तक समाप्त कर दी। कितनी अभिराम पुस्तक है! चीनी जीवनका कितना सुन्दर जीवित चित्रण है। अनेक कारणोंसे राष्ट्र विजित हो जाता है परन्तु यह उसकी केवल राजनीतिक पराजय होती है। जबतक उसकी नैतिक पराजय नहीं होती, जबतक उसमें अपनी संस्कृति और सबसे क़ीमती अन्तरंगकी रक्षाके लिए तत्परता और उत्कण्ठा बनी रहती है तबतक वह राष्ट्र विजित नहीं हो सकता। कितनी भीषण नृशंसतासे जापानियोंने चीनियोंको सन् ३७ और ३९ के बीच दबा दिया था। पर चीनी क्या दब सके? उनकी ज़मीन छिन गई, नौनिहाल बच्चे नष्ट हो चले, जवान गाजर-मूलीकी भाँति काटे-मारे जाने लगे, नारियाँ भयानक अपमानकी शिकार हुईं, पर इन सबके बीच भी साहस, बलिदान और आज़ादीकी लड़ाई चीनियोंने जारी रक्खी। गोरिला-युद्ध पहाड़ी प्रदेशोंमें चलता रहा। मोर्चोंपर लड़नेके लिए हथियार न थे पर थके आराम करते सैनिकोंके हथियार लेकर नये सैनिक लड़ते, जब वे

थकते तो उन्हीं हथियारोंसे दूसरे लड़ते, पर जिन्हें चीनकी ज़मीनपर पैर रखनेका कोई हक़ न था उनके पैर वहाँसे उखाड़कर ही चीनियोंने दम लिया।

उपन्यास पढ़कर प्रचुर बल पाया। यशपालने पता नहीं यह पुस्तक पढ़ी है या नहीं। लिखकर पूछूँगा और यदि अभी पढ़ा न होगा तो पढ़नेको कहूँगा। यशपाल हिन्दीके यशस्वी और सफल उपन्यासकार हैं परन्तु वह लक्ष्यको पूरा-पूरा सामने नहीं रख पाते, अपनी कृतियोंमें अक्सर उद्देश्य-भ्रष्ट हो जाते हैं। आरम्भ अच्छा करते हैं परन्तु रोमानी प्रसंग जो धीरे-धीरे वस्तुको छूते लगते हैं तो उन्हें घेरकर उनपर पूरा-पूरा छा जाते हैं और कलाकार पथभ्रष्ट हो जाता है। फिर उसके पास सिवा रोमांचक प्रवृत्तियोंके, उनसे ओत-प्रोत प्रसङ्गोंके, और कुछ नहीं रह जाता। उपन्यास समाप्त करनेपर एक रोमानी आलस्य मनपर क़ाबू कर लेता है। पर्ल बकके इस उपन्यासमें ऐसी घटनाएँ एक नहीं अनेक हैं जहाँ मनुष्य नंगा हो पड़ा है—अपने जीवन-प्रसवक रोमानी विलासमें भी, अपने भूखे घृणित पशु-व्यापारमें भी—परन्तु उद्देश्य और उसका चित्रण इष्ट होनेके कारण, कलाकारकी समाधिस्थ एकाग्रचेतनाके कारण, हमारे स्मृति-पटलसे ये घटनाएँ मिट जाती हैं और याद रह जाता है घर्षित चीनी जातिका केवल बलिदानपरक 'आफलोदय' प्रयत्न।

सुबहका नाश्ता कर ऊपर डेकपर गया। जहाज़ोंका आना-जाना अब इतना स्वाभाविक लगता है कि प्रायः प्रत्येक दो-तीन घण्टोंमें एकाध जहाज़ इधरसे एकाध उधरसे निकलते दिखाई पड़ते हैं। अनेक फ़ारसकी खाड़ीको, अदनको, बम्बई और सुदूर पूर्वको जाते हैं, अनेक यूरोप और अमेरिका को। पर अधिकतर ये माल या तेल ढोनेवाले जहाज़ ही हैं, यात्री ढोने वाले नहीं।

देखा, सागर प्रशान्त था। एक लहर कहीं उठती-गिरती न थी। सागर जैसे सो रहा था। गर्मीके मारे उसके जलकण भी शिथिल हो गये हैं।

एक फैली हुई अपार जलराशि हैं जहाँ न स्पन्दन है, न प्रवाह। उसके एकान्त मौनको हमारा जहाज़ ही अपनी गतिसे प्रति पल छेड़ देता है जिससे छहर-छहर होने लगता है। अनेक पक्षी उड़ रहे हैं। उनकी मनोरम आवाज़ आज कई दिनोंपर सुन पड़ी। मनुष्य इतना जनप्रिय है कि नीरवता उसे काटने लगती है और अपनी बोली न समझ सकनेवाले प्राणीकी अगम्य वाणी भी उसे सार्थक लगने लगती है। पक्षी इतने हैं और उड़-उड़कर दूर चले जाते हैं, दूरसे पास आ जाते हैं। निश्चय स्थल बहुत दूर, अरब सागरकी तरह दूर नहीं हैं। लाल सागर कुछ छिछला-सा है ही, चौड़ाभी कम ही है और यद्यपि हम दोनों तट देख नहीं पाते, ऐसा लगता है कि कमसे कम एक ओर, पश्चिमकी ओर, तट पास ही है। है भी ऐसा ही क्योंकि उधर मिस्रकी भूमि है और पोर्ट सुदान आख़िर बहुत दूर न होना चाहिए।

आज अभी कमरेमें बैठा लिख ही रहा था कि देखा कमरेके भीतर-का कृत्रिम प्रकाश कुछ मन्द पड़ता जा रहा है और एक हल्की लाल रोशनी इस काग़ज़को रँग रही है। वृत्ताकार वातायनकी ओर जो नज़र गई तो क्या देखता हूँ कि सूर्यका लाल बिम्ब तेज़ीसे क्षितिजपर उठता आ रहा है। अनेक बार चाहा था कि सूर्यका जलराशिसे निकलना देखूँ पर बादलोंके मारे देख नहीं पाता था। आज भी वैसे देख नहीं ही पाया पर बादलोंके पीछे उठता हुआ वह बिम्ब जैसे उनके ऊपरी छोरपर रुक गया था। केबिनकी खिड़की गोल सुराख़ होती है। उसे जहाजी भाषामें 'होल' (सुराख़) कहते भी हैं। वह वृत्ताकार शीशेसे ढँकी होती है, वह शीशा मैंने उठा दिया है। उसका नाम 'गवाक्ष' उत्तम होगा यद्यपि वह बैलकी आँख-सी लम्बी न होकर सर्वथा गोल है। बैलकी आँख सी खिड़की प्राचीन कालके भारतीय मकानोंमें होती थी और उसे 'गवाक्ष' कहते भी थे।

ऊपरकी बैठकमें थोड़ी देर तक रेवरेण्ड जेम्सके साथ शतरंज खेलता रहा फिर लंच (दोपहरका खाना) का समय हो गया। लंच आजकल जहाज़पर साढ़े बारह बजे हो रहा है। घड़ीकी विधि भी आजकल कुछ बदल गई है क्योंकि हमारी गतिकी दिशा अब पूरा पश्चिम अथवा पश्चिमोत्तर भी न होकर प्रायः सर्वथा उत्तर है। जहाँ हम अपनी घड़ी प्रायः पन्द्रह मिनट पीछे कर लिया करते थे, वहाँ वह आज पाँच-सात मिनट ही पीछे करनी पड़ी।

लंचके समय आज काफ़ी चर्चा रही, गरम। बातें साधारण आधारसे ही उठीं। अन्धविश्वासोंकी बातें होने लगीं। मिशनरी लोगोंको भारतमें उनके सम्पर्कमें आनेके अवसर अधिक मिलते हैं। एक तो उनका कार्य भी अधिकतर ऐसे लोगोंके बीच है जो विद्या, ज्ञान और तर्कसे दूर हैं और जिनके पास कभी तर्कयुक्त या दार्शनिक धर्म भी न रहा, जो सब प्रकारसे शोषित और सर्वहारा रहे और जिनका धार्मिक जीवन प्रायः अन्धविश्वासों और तज्जनित कर्मकाण्डोंकी अटूट शृंखला है। इससे केवल उन्हींको देखकर इनकी यह भावना बनती है। उन्हें इसका गुमान भी शायद नहीं हो सकता कि उनके बीच उसी अन्धपरम्पराके मध्य पला एक ऐसा व्यक्ति भी बैठा है जो न केवल उन अंधविश्वासोंकी बेड़ी तोड़ चुका है वरन् उस ख़ुदाकी भी जो संसारका सबसे बड़ा झूठ और घनतम अन्धविश्वास है, जो पूर्वी-पश्चिमी सारी जातियोंमें अपने विविध रूपोंमें पूजा जाता है, और जो उस महान् ईसाके सर्वथा मानव धर्मके ऊपर भी घने कुहरेकी भाँति फैला हुआ है, जो इतना निर्मम और नृशंस है कि अपने पुत्रोंको लड़ाकर उन्हें रक्तसे लाल और लथपथ देखकर भी उन्हें एक दूसरेका गला काटनेको प्रेरित करता है, ललकारता है और भीषण नरयज्ञको देख उल्लसित और सन्तुष्ट होता है।

जब चुप न रहा गया तब मैंने कहा कि जहाँ तर्क है वहाँ अन्धविश्वास भी है। केवल बालकके पास अन्धविश्वास नहीं क्योंकि वहाँ तर्क भी नहीं

है। यह इतना सत्यकी पुष्टिमें नहीं वरन् एक 'पैरोडाक्स' सामने रखनेके लिए मैंने कहा। फिर कहा कि अन्धविश्वासोंको दूर करनेमें शिक्षाका प्रसार बड़ा सहायक होगा, यद्यपि ऐसा भी नहीं कि जहाँ विद्या है वहाँ अन्ध-विश्वास नहीं। मैंने बड़े-वड़े ऐसे हाईकोर्टके जज देखे हैं जो जीवनभर तो दूसरोंके मुक़दमे सुनते और उनपर अपना निर्णय देते रहते हैं पर घर आते ही अपने पुरोहितके सामने असहाय हो अत्यन्त निरर्थक विधिक्रियाओंके समक्ष भी घुटने टेक देते हैं। समझदार ईसाइयों और यूरोपियनोंको मैंने राहसे घोड़ेकी नाल उठाते या क्रूसका संकेत करते देखा है।

फिर मैंने संसारके उस घोर मिथ्यावाद भगवानपर आघात किया। मैंने सोचा तर्क और समझके आधारपर अपना धर्म और जीवन अवलम्बित समझनेवाले साधु मिशनरियोंको गुमान भी नहीं कि जब अपना सारा ज्ञान वे कृत्रिम और मिथ्या ईश्वरके चरणोंमें धर देते हैं तब उनका सारा तर्क विडम्बना बन जाता है। मैंने कहा—'संसारका सबसे बड़ा अन्धविश्वास सबसे पुराना भी है और सब जातियोंमें समान रूपसे हावी भी। और वह घोर अन्धविश्वास खुदा है।'

इसपर बड़ा दंगल मचा। किसीको यह गवारा न था कि इस प्रकार का वक्तव्य सर्वथा अविरोध चला जाय। सभी इसके विरुद्ध बोले, कप्तान और महिलाएँ तक बोलीं, सब एक साथ, पर रेवरेण्ड जेम्सका इस बहसमें हिस्सा पर्याप्त रहा। वे 'डायलेक्टिक्स्' तक पर उतर पड़े पर भगवान जैसे अन्धविश्वासके समर्थनमें डायलेक्टिक्सकी दुहाई ही तो उसकी नकारा-त्मिका विडम्बना है।

बड़ा मजा आया और लोगोंने समझा कि दंगल मार लिया। और क़हक़हे लग चले जब मैंने कहा कि 'पिताओं' अर्थात् कारणोंकी परम्परा कहीं नहीं टूटती, सबका कारण है और कारण अपने ही कार्यका निकटतम पूर्व, और चूँकि यह कार्य-कारणकी श्रृंखला, जो स्वतः पूरित है, नहीं टूटती, हम किसी मंज़िलपर नहीं पहुँच सकते जहाँ कारण उपस्थित न हो,

यानी जहाँ कारणोंकी गति रुक जानेसे इस संसारसे परेकी किसी शक्तिकी कल्पना करनी पड़े, यानी इस चराचर जगत्का अनादित्व नित्य-सत्य है। पर क़हक़हेका कारण तो यह था कि कारणका कारणका कारण और अन्ततः कारण ख़ुदा जो है। कैसे इन्हें समझा पाऊँ कि इसीलिए तो कि इन कारणोंकी शृंखला कहीं टूटती नहीं वस्तुओंकी अनादिता सिद्ध होती है और इसीलिए किसी ऐसे व्यक्तित्वकी कहीं आवश्यकता नहीं पड़ती जो दृश्य और अदृश्य जगत्का स्रष्टा हो। अस्तु, यह स्वाभाविक है कि जन्म और आचारजात पूर्वाग्रह मनुष्यको तब तक जकड़े रहे जब तक कि वह ज़ोर लगाकर उन्हे तोड़ न दे और आचार तथा व्यवहार द्वारा नई स्थितिको स्वाभाविक न कर ले। फिर भी मेज़ ऐसोंसे सर्वथा सूनी न थी जो इस तर्ककी शक्तिको समझे। चीफ़ इंजीनियरको मेरा तर्क अत्यन्त युक्तियुक्त लगा।

खाना समाप्तकर कुछ देर तक अमेरिकामें ख़र्च आदिके अनुमानपर उन्हींके कमरेमें देरतक खड़ा बात करता रहा फिर अपने केबिनमें चला आया। सो न सका और कुछ पढ़-लिखकर पाँच बजे संन्ध्याको ऊपर बैठकमें पहुँचा। मिस वाल्टन और मिसेज़ जेम्स मिलीं। रेवरेण्ड जेम्स भी आ गये। एक बाज़ी शतरंजकी हुई। आजकल एकाध बाज़ी शतरंजकी मेरे उनके बीच प्रायः नित्य ही हो जाया करती है। बाद कुछ देर तक हम सभी यहाँ-वहाँकी सामाजिक व्यावहारिकतापर बात करते रहे।

भोजनका समय हो गया था, शामके खानेकी घण्टी भी बज चुकी थी परन्तु सूरजका लाल गोला क्षितिजकी ओर अधोधः उतरता जा रहा था। पहले ही खिड़कीसे जब वह दूरकी आकाश-रेखासे उतरने लगा तब जान पड़ा जैसे उसका बिम्ब खिड़कीको भर रहा है, बड़ा मनोरम उसका रूप था। सब डेकपर चले आये और उस अद्भुत विभूतिका तिरोहित होना बड़े मनोयोगसे देखने लगे। पतन कितनी तीव्र गतिसे होता है! देखते ही देखते सूर्य पहले आकाश और समुद्र निर्मित सन्धिपर आया, फिर क्षितिजके

नीचे चला और देखते-ही-देखते आगका वह गोला प्रशान्त जलराशिमें डूब गया।

भोजन समाप्तकर जब ऊपर पहुँचे तब देखा अनेक जहाज़ चले जा रहे हैं और उनकी बत्तियाँ चमक रही हैं। हमारे जहाज़ने सिगनल दिया। दूसरेने सिगनल (संकेत) द्वारा ही उसका उत्तर दिया। जाना कि वह संयुक्तराज्य अमेरिकासे आने वाला 'टैंकर' (तेल ढोने वाला) है। देरं तक बिजलीकी रोशनीसे दोनों ओर संकेत होते रहे। सागर प्रशान्त था, लहर उसमें एक न थी। लगता था जहाज़ खड़ा है यद्यपि इस समय उसकी गति तीव्रतम, १२ नाट (सामुद्रिक मील), थी। शान्त तरंग-रहित सागरपर जहाज़की गति अच्छी रहती है। नीचे गया, और पड़कर सो रहा।

—(२७–६–५०)

आज अट्ठाईस है पिछली रात भी बड़ी गर्मी रही है, पर पहलेकी कई रातें जो सो न सका था कुछ शिथिलता आ गई थी, इससे सोया। नींद गहरी और पूरी तो नहीं आई फिर भी थोड़ी-थोड़ी देर करके कई बार सो सका। उठा तो देखा सूरजकी किरणें कमरेको भर रही हैं और चमकते छतमें उस प्रकाशके पड़नेसे समुद्रकी हलकी लहरोंका प्रतिबिम्ब पड़ रहा है। आजकल तो ख़ैर समुद्रमें लहरें ही नहीं हैं पर चार-पाँच दिन पहले जब लहरें थीं तब वे दोपहरके प्रकाशमें जब भीतरी छतपर अपनी छाया डालतीं ऐसा लगता कि कोई चला गया है। एकाध बार तो उठकर मैंने खिड़कीसे देखा भी, फिर जाना कि वह लहरियोंकी छाया मात्र है।

पोर्ट सुदान और पोर्ट सैयद पास आते जा रहे हैं। बम्बईसे ढाई हज़ार मीलसे प्रायः ऊपर पश्चिम आ गये हैं और निरन्तर उत्तर लालसागरमें बढ़ते जा रहे हैं। दो दिनमें, तीस–पहली तक, शायद पोर्ट सैयदमें दाखिल हो जायँगे। लालसागरका आधासे ऊपर भाग लाँघ चुके हैं और उसके उत्तरी प्रसारपर बारह मील प्रतिघण्टेके हिसाबसे चले आ रहे हैं। एक

समय था जब 'तीर' और जुरूसलमके जहाज़ इसी लालसागरकी राह, अरब, फ़ारसकी खाड़ी और भारत तक पहुँचे थे।

फ़िनीकी तो सदासे समुद्रसेवी रहे हैं और उनका प्रसिद्ध नगर 'तीर' समुद्री व्यापारका बड़ा केन्द्र भी रहा है। परन्तु जुरूसलमको भी सुलेमान (सालोमन)के शासनकालमें समुद्र-तरणकी लालसा लगी। 'तीर'के राजा हीरामने उसकी यह इच्छा पूरी की। उसकी सहायतासे सुलेमानने लालसागर के तटपर जहाज़ बनाये और सागरमें डाल दिये। जहाज़ लघु एशिया (एशिया माइनर), बाबुल आदिसे विक्रीकी वस्तुएँ लेकर भारतके पश्चिमी तट तक जाते और वहाँसे सिन्धकी प्रसिद्ध मलमल 'शिन्ता' लादकर लाते।

इस व्यापारसे सुलेमान मालामाल हो गया। उसके नगर और दरबार की रौनक़ बेहद बढ़ गई और मिस्रके सम्राट्-फ़राऊनने उसे अपनी बेटी तक ब्याह दी। परन्तु सुलेमान बुद्धिमान होता हुआ भी धन और ऐश्वर्यके गर्वमें मद गया। अपनी प्रजापर वह अधिकाधिक कर लगाने लगा और शीघ्र उसका ख़ज़ाना ख़ाली हो गया। बाइबिलमें उसकी बड़ी महिमा गाई गई है परन्तु उसीने अपने स्वभावसे जुरूसलमको बरबाद भी कर दिया। उसके मरते ही जूदियाका उत्तरी भाग जुरूसलमसे अलग होकर स्वतंत्र हो गया और इसराइल कहलाया। हीरामके मरनेपर जुरूसलमको तीरकी सहायता भी अप्राप्य हो गई और सुलेमानकी मृत्युके कुछ ही दिनों बाद मिस्रके बाईसवें कुलके पहले फ़राऊन शिशाकने जुरूसलमको लूट कर उजाड़ डाला।

जैसे-जैसे हम लालसागरके उत्तरी भागमें बढ़ते जा रहे हैं वैसे-ही-वैसे बाइबिलके वे स्थल याद आते जा रहे हैं जहाँ हज़रत मूसा आदिके प्रवास और कष्टमय पर्यटनका वर्णन है। जैसे-जैसे हम पोर्ट सैयदकी ओर बढ़ते जा रहे हैं वैसे-ही-वैसे जुरूसलम जाकर उस मानवविभूति ईसाका कार्य-स्थान देखनेकी इच्छा मनमें प्रबल होती जा रही है जिसने मानवताके

लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था परन्तु जिसके आजके अनुयायी उसी मानवताका ख़ून बहानेके लिए कमर कसे हुए हैं।

कप्तानसे मालूम हुआ कि पोर्ट सैयद और हैफ़ा दोनों बन्दरोंसे जुरूसलम जाया जा सकता है। पोर्ट सैयद स्वेज़ नहरके एक बाज़ूपर है हैफ़ा दूसरेपर। हैफ़ा वास्तवमें कुछ दूर हटकर पोर्ट सैयदसे एक दिनकी यात्रा की दूरीपर भूमध्यसागरके तटपर है। यदि संभव हो सका तो पोर्ट सैयद उतर कर वहाँसे जुरूसलम चले जायँगे और वहाँसे हैफ़ा लौटकर फिर जहाज़ पकड़ लेंगे। पर सुना इसमें झंझट होगी—सरकारी इजाज़त मिले, न मिले, फिर 'पीले बुख़ार' (जो मिस्रकी ज़मीनपर अक्सर विदेशियोंको हो जाया करता है) का टीका लेना पड़ेगा। इन झंझटोंके मारे कुछ लोगों की राय है कि हैफ़ासे ही चला जाय जहाँ जहाज़ दो तीन दिन ठहरेगा और जुरूसलम आने-जानेमें अधिक-से-अधिक दो दिन लगेंगे। वहाँ भी इजाज़तकी आवश्यकता तो पड़ेगी ही, जैसा सर्वत्र विदेशोंमें पड़ती है, पर सुना कि वहाँ इसमें कुछ आसानी होगी।

आज दिन मैंने काफ़ी लिखा और पढ़ा है। कुछ कपड़े धोये और कमरेको ठीकसे काम करने लायक़ बनाया। बड़े बक्सको उठाकर सामनेके 'बंक' (बर्थ, बिस्तर) पर रख दिया है और उसके ऊपर अपना टाइपराइटर। कलसे कुछ टाइप करूँगा न। अमेरिकन पत्रोंके लिए कुछ लेख तैयार करने हैं, कुछ पत्र टाइप करने हैं, इस यात्रा-विवरणका भी अंग्रेज़ी पाठ साथ ही साथ तैयार करना है। अमेरिकामें व्याख्यान लिखकर पढ़नेकी रीति है। ऐसा मैंने कभी किया नहीं है पर यदि करना ही पड़ा तो ऐसा करूँगा। इससे सोचता हूँ समझ बूझ-कर अमेरिका पहुँचकर ही लेक्चर लिखूँ।

—(२८-६-५०)

आज प्राय: तीन बजे सवेरे ही कुछ ठंढ मालूम होने लगी। बदनपर सिवा एक जाँघियाके कुछ और न था और एकाएक कुछ सिहरन जान

पड़ी। फिर भी पड़ा रहा, ऊँघता-जागता करवटें बदलता रहा। ठंडक बढ़ती-सी गई फिर खींचकर चादर बदन पर डाली और सो गया। फिर जो उठा तो ६ बज चुके थे।

सुबह होनेके बाद गर्मी बढ़ गई। देर तक टबमें पड़ा पानीसे भीगता रहा। बाबरने अपने संस्मरणमें हिन्दुस्तानकी गर्द, गर्मी और पसीनेकी बड़ी निन्दा की है। तीनोंकी एक दवा उसने बताई है—स्नान। मैं भी इधर गर्मी और पसीनेका शमन स्नानसे ही करता रहा हूँ। गर्मी बड़ी है, कारण कि हम अफ़्रीका और एशियाके बीचसे गुज़र रहे हैं, सुदान (मिस्र) और अरबके बीचसे। दोनों लम्बे-चौड़े रेगिस्तान हैं—सुदान भी, अरब भी।

आज प्रातः प्रायः पौनेचार बजे ही हम पोर्ट सुदान लाँघ गये थे। हवा तेज़ थी और लालसागरके नीले-बैंगनी जलमें लहरें उठने लगी थीं। रात होते-होते तो हवा और ज़ोरसे चलने लगी और डेकपर जाना तक कठिन हो गया। ऐसा लगने लगा कि शायद तूफ़ान आजायगा, पर आया नहीं। कोरलके ऊपर प्रकाशस्तम्भ अपने क्षण-क्षणके आलोक-मण्डलसे चमक रहा था।

आज दिनमें भोजनकी मेज़पर फिर बहस छिड़ गई, ईश्वर संबन्धी। गर्मागर्मी काफ़ी रही पर बहस नितान्त बौद्धिक थी, उसमें तनिक भी कहीं तलखी न आने पाई। उसके बाद मिस वाल्टनने मुझसे फिलिस्तीन आदिकी प्राचीन यहूदी और अन्य जातियोंके विषयमें पूछा। मैंने हज़रत नूहसे लेकर जल-प्रलय तक, जल-प्रलयसे नेबूखदनेज़ार तक, और दारासे सिकन्दर तकका हाल पुरातत्त्वके आधारपर सुना दिया, जूडियाका आरम्भ, फिनीकिया, तीर, सोदोम, जुरूसलम, इसराइल आदिका आरम्भ, विकास और अन्त लिये दिये। फिर रोम साम्राज्यका उत्थान और पतन, ईसाकी सूली और ईसाई धर्मके विकासकी कथा कही। निमरूद, हम्मुराबी, असुर,

हज़रत मूसा, दाऊद, हीराम, सुलेमान, की कथा उन्हें बड़ी मनोरंजक लगी।

लालसागर धीरे-धीरे दोनों ओर छिछला होता जाता है और प्रबाल (मूँगा) की श्रेणियाँ उठती आती हैं जिनपर खड़े आलोकस्तम्भ मीलों दूर तक जहाज़ोंका मार्ग प्रकाशित करनेके लिए अपना विद्युत्प्रकाश क्षण-क्षण फेंकते रहते हैं। लालसागर ही उत्तरकी ओर बढ़कर बाईं ओर स्वेज़ और अकाबकी खाड़ियाँ बन जाता है। दाहिनी ओर, दोनोंके बीच, सिनाई प्रायद्वीप है।

आज तीसरे पहर और रातमें अपनी यात्रा-विवरणके कुछ प्रारम्भिक पृष्ठ टाइप किये। देर, बारह बजेके बाद, सोया। —(२९–९–५०)

आज तीसकी सुबह कुछ टाइप करके ऊपर गया। मालूम हुआ कि हम स्वेज़की खाड़ीमें प्रवेश कर चुके हैं। दोनों ओरका ऊँचा तट दिखाई पड़ रहा है। बाईं ओर मिस्र है, दाहिनी ओर अरब। एकाध दिनमें ही हम अरबको पीछे छोड़ फ़िलिस्तीनके मेडिटेरेनियन (भूमध्यसागर) तट-पर जा पहुँचेंगे। दोपहर होते-होते बाईं ओर एक ऊँचा टीला-सा दीख पड़ा जो धीरे-धीरे बढ़ता हुआ पर्वत-श्रेणीकी भाँति और ऊँचा उठ आया। कप्तानसे जो पूछा तो मालूम हुआ कि यह स्वेज़की खाड़ीका प्रसिद्ध टापू शादवान है। इसकी मैंने दो तस्वीरें लीं, और उधर दाहिनी ओरके सिनाई पर्वत-श्रेणीकी भी, जो अरबकी ज़मीनपर है। सिनाई प्रायद्वीप का अधिकतर भाग स्वेज़की मोड़में होनेके कारण मिस्रके अधिकारमें है।

सिनाई पर्वत-श्रेणी सिनाई प्रायद्वीपके तटपर दीवारकी भाँति समुद्रके सामने खड़ी है। इसे जो बाइनाकुलरसे देखा तो बड़ा सुहावना दीख पड़ा। रास्ते वग़ैरह सभी साफ़ दिखाई पड़ने लगे। यहूदियों-ईसाइयोंके लिए यह पर्वत, विशेषकर सिनाई नामकी इसकी ऊँची चोटी (जो प्राय: ७००० फ़ीटसे अधिक ऊँची है), बड़ा महत्त्व रखता है। हज़रत मूसाने इसी पर्वतपर

संसार-प्रसिद्ध अपने दस नैतिक आदेशोंका उपदेश किया था जो ईसाई धर्मके भी महत्त्वपूर्ण अंग माने जाते हैं। हज़रत मूसाके बहुत पहले इब्राहिमके समयमें ही (हम्मुराबीके प्रायः समकालीन) १९०० ई० पू० और २१०० ई० पू० के बीच कभी, (सम्भवतः २००० ई० पू० के लगभग) इस्राइलकी सन्तानको मिस्र जाना पड़ा था। इस कालके यहूदी आदि, विशेषतः इब्राहिम और उनके वंशज अक्सर घुमक्कड़ थे और अपने मवेशी लिये एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाते रहते थे। वे जब ऊर और बाबुल की ओरसे मिस्रकी ओर गये तब, ईसाइयोंका विश्वास है, खुदा (यह्वा, वैदिक यह्वा महान्) ने भविष्यवाणी की कि जूदिया और आस-पासके प्रदेश इब्राहिमके वंशजोंको कालान्तरमें मिलेंगे। ये यहूदी लोग मिस्रमें जा बसे जहाँ हिक्सस् नामक विदेशी राजकुलका शासन था। हिक्ससोंसे स्थानीय प्रजा जली-भुनी थी परन्तु यहूदियोंने उन्हींकी नौकरी कर ली और उस देशमें प्रजासे बड़ी कठोरतासे राजकीय कर उगाहनेके कारण बहुत बदनाम हो गये। जनताने अपना संगठनकर आज़ादीका झंडा खड़ा किया और हिक्ससोंको भगाकर स्वदेशी राष्ट्र क़ायम किया। यहूदियोंपर उनका रोष कुछ कम न था और इनको मिस्रसे भागना पड़ा। ये अपने नेता हज़रत मूसाके नेतृत्वमें भागे। मिस्रियोंने इनका पीछा किया पर जैसे-तैसे कर ये भाग ही निकले। फिर भी इनका जीवन कुछ आसान न था। इन्हें बियाबाँमें प्रायः चालीस वर्ष भटकना पड़ा और अन्तमें इनमेंसे केवल एक-दो जूदिया पहुँच सके जहाँ कालान्तरमें इनके दो राष्ट्र क़ायम हुए—जूदिया और इस्राइल। इसी जूदियाकी राजधानी जुरूसलम था जहाँ हज़रत ईसाने प्रायः पन्द्रह सौ वर्ष बाद अपने उपदेश किये।

मूसा अपने यहूदी कुलोंके साथ १६०० ई० पू० और १३०० ई० पू० के बीच कभी मिस्रसे भागे थे और इसी स्वेज़की खाड़ीको पारकर (प्रायः वहीं जहाँ इस समय हमारा जहाज़ है, शादवान द्वीप और सिनाई पर्वत-श्रेणीके बीच) सिनाई प्रायद्वीपके तटपर उतर पड़े थे। तब स्वेज़की यह

खाड़ी प्रायः पचास मील और उत्तर तक फैली हुई थी। सिनाईकी पर्वत-माला तो सामने ही दाहिनी ओर है परन्तु वह चोटी, जहाँ मूसाने अपने दस आदेशोंका उपदेश किया था, दूर है, शायद पीछेकी ओर। इस पर्वत-मालाको देखकर इब्रानी और प्राचीन ईसाई दुनिया—बाइबिलकी दुनिया—की याद आई। ये दस आदेश मनुष्यकी क़ानूनी व्यवस्थामें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं क्योंकि यह मानवजातिकी कालक्रमसे दूसरी मंज़िल है। पहली व्यवस्था बाबुली सम्राट् हम्मुराबी (ख़म्मुराबी जिसे बाइबिलमें आम्रफ़ेल कहा गया है) ने ईसासे प्रायः दो हज़ार वर्ष पहले दी थी। वह व्यवस्था उसके चौकोर ठिंगने स्तम्भपर कीलानुमा लिपिमें खुदी है। मैंने पिछले साल हिन्दीमें उसका पहला अनुवाद किया था। तीसरी व्यवस्था सम्भवतः मनुकी है। मनुकी व्यवस्था आज मनुस्मृति या मानव धर्मशास्त्रके नामसे प्रसिद्ध है, ई० पू० २०० के आगे-पीछे की। धर्मशास्त्र अधिकतर धर्मसूत्रोंपर अवलम्बित हैं। यदि मनुकी व्यवस्था परम्परागत मानी जाकर और प्राचीन भी मानी जाय तब भी वह ईसासे सात-आठ सौ वर्षोंसे पहले नहीं रक्खी जा सकती, क्योंकि तब या उससे पहलेके भारतीय-साहित्य (वैदिक और उत्तर वैदिक) में कहीं उसका उल्लेख या संकेत नहीं मिलता। इससे भी मनुकी व्यवस्थाका विज्ञापन मानव-जातिके कालक्रमकी तीसरी मंज़िल ही ठहरता है। मूसा १३०० ई० पू० तक अपने दश आदेशोंका उपदेशकर निःसन्देह मर चुके थे। मूसा जूदिया तक नहीं पहुँच पाये। मार्गमें ही उनके प्राण छूट गये।

सिनाई नाम इस पर्वत अथवा पर्वतश्रेणीका कैसे पड़ा यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगोंका विचार है कि इस रेगिस्तानी प्रदेश और पर्वत दोनोंका 'सिन' नाम बाबुली चन्द्र-देवता सिनसे पड़ा। कुछ आश्चर्य नहीं यदि ऐसा हुआ हो। तबके संसारका केन्द्र बाबुल था। उसी दिशासे यहूदी मिस्र गये थे, वहीं पिछले दिनोंमें (सातवीं सदी ईस्वी पूर्वका उत्तरकाल—नेबूख़दनज़्ज़ारका शासन काल) उन्होंने अपना बन्दी

जीवन बिताया। यह स्वाभाविक है कि जहाँ मूसाने अपने सबसे महत्त्वपूर्ण उपदेश किये वहाँका नाम यहूदी या प्राचीन स्वदेशके देवताके नामपर पड़ गया हो। वैसे इसका नाम 'गेमेल-मूसा' भी है।

हम आजकी रातमें ही, प्रायः दो-तीन बजे तक ही स्वेज़की इस दस-बारह मील चौड़ी खाड़ीको पारकर स्वेज़के बन्दरमें पहुँच जायँगे, ऐसा कप्तान नोकलिंगका अनुमान है। परन्तु वहाँसे ही चूँकि स्वेज़की नहरका आरम्भ होता है, हमें उस बन्दरमें रुककर अपनी बारीका इन्तज़ार करना पड़ेगा। पहले यात्रियोंके जहाज़ोंके जानेका नियम है। नहर सँकरी है इससे यह नियम बनाना पड़ा है। कुछ आश्चर्य नहीं, वहाँ हमें एकाध रोज़ रुकना भी पड़ जाय।

दोनों तट धीरे-धीरे सँकरे होते जाते हैं। सिनाई पर्वत तटपर दीवार-सी खड़ी शृंखलाके पीछे पड़ जाता है पर जहाज़से एक बिन्दुसे दिखाई पड़ जाता है। मैंने इस पर्वत और शृंखलाके तथा शादवान द्वीपके अनेक चित्र लिये। दोनों तटोंपर शाम होते-होते देखा, सुन्दर पहाड़ी उठ आई है जो अपने सूखे कलेवरसे इस बालुका-प्रदेशपर सुन्दर लगती हैं। मिस्रकी पर्वत-श्रेणी कभी नीचे कभी ऊपर उठती जाती है और दृश्य सुहावना होता जाता है।

इन पहाड़ी शृंखलाओंमें अनेक प्राचीन शहर दबे सोये हुए हैं। इनकी याद प्राचीन मिस्रकी याद है। और बार-बार इस पिरेमिडोंके देशकी भूमि-पर उतर पड़नेकी इच्छा होने लगी। मिस्रकी ज़बान भी अरबकी ही भाँति अरबी है। वहाँ निवासी भी अधिकतर मुसलमान ही हैं। परन्तु इस समय इस देशकी चर्चा नहीं करूँगा। क्योंकि यहाँ आखिर लौटते समय आना ही है, तब मुझे काफ़ी अवकाश और अवसर होगा कि उसकी प्राचीन संस्कृतिपर कुछ लिख सकूँ।

शामको देर तक हमलोग डेकपर गोल्फ़ खेलते रहे और जब सूरज तेज़ीसे मिस्रके पहाड़ोंके पीछे उतर पड़ा तब हम भोजनागारमें गये।

भोजनके समय आहारके पदार्थोंपर, खाद्य-अखाद्यपर, आमिष-निरामिषपर भी कुछ चर्चा रही और परिणामतः इसपर भी कि दया और अहिंसामें किस मात्राका पारस्परिक सम्बन्ध है या कि हिंसक होकर अथवा हिंसामें प्रगट या अप्रगट रूपसे भाग लेकर भी कोई दयावान हो सकता है। स्वभावतः ही मैंने इस सिद्धान्तका प्रतिपादन किया कि यद्यपि मैं आमिष-निरामिष भोजनके अन्तरको व्यवहारतः जीवनमें महत्त्व नहीं देता—स्वयं मैं प्रायः पूर्णतः निरामिष हूँ—न्यायतः मैं यह मानता हूँ कि दयावान अनुपाततः अहिंसक भी होगा। इसी कारण अहिंसाकी तर्कतः व्यवस्था 'मनसा-वाचा-कर्मणा' उद्घोष हृदयंगम कर सकी और तर्कतः तीनों प्रकारकी हिंसासे विरत होनेवाला महाकाय निश्चय व्यापक हृदयका मानव होगा। यदि अन्यत्र महापुरुषोंने हिंसाको जायज़ कहा है या आमिष-भोजनकी व्यवस्था की है तो निश्चय इस कारण कि वहाँ मानवजातियोंमें उस खाद्यकी मान्यता इतनी रही है कि उसे स्वाभाविक मान वे उसके विरुद्ध आवाज़ नहीं उठा सके हैं। भारतने उसके विरुद्ध भी अहिंसाके न्याय्य दृष्टिकोणको पुष्ट किया है।

भोजनोपरान्त जो ऊपर डेकपर आया तो चारों ओर घना अँधेरा छाया हुआ था, परन्तु बाईं ओर नगर थोड़ी ही दूरपर अपने हज़ारों प्रकाशोंसे चमक रहा था। बम्बई छोड़नेके बाद सिवा जलके और कुछ नहीं दिखाई पड़ा था। इधर दो-एक दिनसे जल-पक्षी दीख पड़े थे जो जब-तब जहाज़पर भी मँडरा जाते थे। नगरकी तो हमलोग कल्पना भी अभी तक न कर सके थे। आज इस सन्ध्याको प्रायः सात बजे मिस्रका यह नगर हमारी नज़रोंमें चमक उठा। इसका नाम रास ग़रीब है और यहाँ तेलके सोते हैं जिन्हें एक अंग्रेज़ कम्पनी आजकल सम्हाले हुए है।

देर तक हम सब रास ग़रीबकी अनन्त बत्तियोंको अपने अँधेरेसे देखते रहे। सड़कोंकी बत्तियाँ भी दिखाई पड़ीं। ऊपर, ऊँचाईपर, आग-सी लगी थी। पूछनेपर मालूम हुआ कि गैस जल रही है, आग लग जानेके डरसे

उसको ऊपर कर देना आवश्यक है। पाइप-लाइनकी बत्तियोंकी कतार भी दिखाई पड़ी। धीरे-धीरे जहाज़ आगे बढ़ गया। —(३०–९–५०)

आज महीना बदल गया। अक्तूबरकी पहली है। सुबह जो नींद खुली तो घड़ीमें पाँच बजे थे। जहाज़ चुपचाप खड़ा-सा जान पड़ा। लगा, जैसे समुद्रमें एक भी लहर नहीं है। बात थी भी वैसी ही। लहरें न थीं क्योंकि समुद्र भी न था, स्वेज़की खाड़ीका सँकरा, प्रायः दो-तीन मील चौड़ा, प्रसार था। पर जहाज़ खड़ा न था। हाँ, उसकी गति इतनी मन्द थी कि मालूम ही न पड़ती थी।

स्नानादिसे निवृत्त हो जो ऊपर डेकपर पहुँचा तो देखा मिस वाल्टन और मिस वण्डेवाण्ड खड़ी हैं। बाईं ओर मिस्री तटपर कतारसे नीची बत्तियाँ जल रही थीं जिनका झिलमिलाना बड़ा मनोरम लग रहा था। उनका प्रकाश उषाके खुलते आलोकके सामने अब मन्द पड़ता जा रहा था। और दूर सामनेके स्वेज़ बन्दरकी उन बत्तियोंका भी जो वास्तवमें हमसे दूर न थीं।

नीचे आया। रातका लिखना कुछ बाक़ी था, उसे लिखा और फिर ऊपर चला गया। स्वेज़का बन्दर काफ़ी लम्बा-चौड़ा है। उसमें अनेक जहाज़ खड़े थे। एक साथ इतने जहाज़ोंके फैले पानीपर खड़े रहनेसे ऐसा लगता था, उनकी संख्या बड़ी है। मेरी एक सहयात्रिणी मिसेज़ जेम्सने कहा—अरे, ये तो करोड़ों हैं। (Oh, they are millions !) उनका वक्तव्य संख्या नहीं प्रभाव प्रगट करता है।

फैले जल-विस्तारपर अनेकानेक छोटे-बड़े जहाज़ खड़े थे। ये प्रायः सभी देशोंके थे, अमेरिकाके, इंग्लैण्डके, फ्रांसके, नार्वेके। दूर, कुछ दूरपर माल उतारनेके 'डाक' बने थे और उनके पीछे तेल, पेट्रोल आदिकी टंकियाँ चमक रही थीं। पीछे स्वेज़का बड़ा नगर था। सुना वहाँकी आबादी पाँच लाख है।

थोड़ी देर बाद दुगनी क़ीमत कह आधे दामपर चीज़ें बेच देने वाले मिस्री अरब छोटी-छोटी पाल वाली नावोंपर आने लगे और अपनी चीज़ें बेचनेका प्रयास करने लगे। हम लोगोंने कुछ नहीं ख़रीदा। अपनी नौकासे ये रस्सीकी सीढ़ी ऊपर फेंककर हमारे जहाज़में अटका देते और माल लेकर खटाखट चढ़ आते। काले (हबशी और नूबियाई) से लेकर सफ़ेद तक कई रंगोंके मिस्री देखे जो अरबी बोलते थे।

मिस्रकी भाषा अरबी है। मिस्रपर अरबोंका ही राज क़ायम है। वहाँ मामलुक-गुलामोंके बाद ही फिर अरबोंका अधिकार हो गया था। वास्तवमें अरबोंका शासन और प्रभाव मिस्रके दक्षिण अबिसीनियासे लेकर एक ओर तो तुर्कीकी सरहद तक है दूसरी ओर ईरानकी सीमासे लेकर अरब, ईराक लाँघता भूमध्यसागरतक। इस चतुर्दिक् विस्तारके बीच सर्वत्र अरबोंका राज्य है, सर्वत्र अरबी ही बोली जाती है। अपवाद केवल इसराइलका छोटा-सा यहूदियोंका अभी हालका बना स्वतंत्र राज्य है जिसका बड़े त्यागसे और लड़ाइयाँ लड़कर यहूदियोंने निर्माण किया है। अरबोंने अन्य राष्ट्रों द्वारा उसके स्वीकार कर लिये जानेपर भी उसे अंगीकार नहीं किया है और जले भुने बैठे हैं। पता नहीं कब आग भड़क उठे।

ईराक, अरब (सऊदी आदि) और मिस्रसे अलग मध्य-पूर्वमें चार राज्य हैं जो कभी-कभी फिलिस्तीन या पैलेस्टाइन राज्योंके नामसे जाने जाते हैं। ये हैं इसराइल, लेबनान, सीरिया और ट्रान्स्जार्डन। इनमेंसे यहूदी इसराइलको छोड़, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, सब अरबी राज्य हैं। इनको आपसमें, विशेषकर इसराइलके विरुद्ध, संगठित रखनेके लिए एक 'अरब-लीग' क़ायम है; जिसमें ईराक और अरब भी शामिल हैं और जिसका नेतृत्व मिस्रके हाथमें है। यहूदी सदियोंके सताये हुए हैं। वे दुनियामें अपने व्यापारके कारण काफ़ी धनी हैं। चारों ओर संसारमें बिखरे हुए हैं। बड़ी कठिनाइयों और बलिदानोंके बाद उन्होंने इसराइलके नये

राष्ट्रमें टिकने की जगह पाई है। उसपर भी अरब राहु बनकर उनपर मँडरा रहे हैं।

सुबह सात बजते-बजते बन्दरके मिस्री अफ़सर जहाज़पर आने लगे। कस्टम (चुंगी, ज़क़ात), पुलिस सभी आये। पुलिसने हमारे पासपोर्ट देखे और कहा कि वैसे तो बग़ैर 'वीसा'के उतरनेका हुक्म नहीं है पर अगर जहाज़के एजेण्ट यात्रियोंकी ज़िम्मेदारीका एक साधारण रुक्का लिख दें तो 'परमिट' मिल सकती है जिससे 'पिरैमिड' और मिस्रकी राजधानी क़ाहिरः देखी जा सकती है। पर चूँकि जहाज़ शामके चार बजे ही नहर होकर पोर्ट सैयद जाने वाला था हमलोगोंने इसपर विशेष ध्यान नहीं दिया। बादमें जब जाना कि हम रातसे पहले नहरमें प्रवेश नहीं पा सकते और कि क़ाहिरः और पिरैमिड बजाय पोर्ट सैयदसे ज़्यादा नज़दीक यहींसे हैं तब बड़ा अफ़सोस हुआ। पूछनेपर ज्ञात हुआ कि क़ाहिरःकी राह पोर्ट सैयदसे प्रायः ४ घंटेमें तै होती है पर स्वेज़से केवल डेढ़ ही घंटेमें। यानी हम सुबह जाकर तीसरे पहर तक आसानीसे लौट सकते थे। ट्रेन भी मिल जाती, मोटर भी। यात्रियोंके लिए वहाँ कम्पनियाँ भी हैं जो उन्हें दर्शनीय स्थानोंको ले जानेका प्रबन्ध करती हैं। ऐसा भी हो सकता था कि स्वेज़से क़ाहिरः चले जायँ और पोर्ट सैयदपर अपना जहाज़ पकड़ लें। पर इन सुविधाओंका पता वास्तवमें तब चला जब काफ़ी देर हो चुकी थी और जब जाया नहीं जा सकता था। मन तब और भी खिन्न हुआ जब जाना कि रातके दस बजेसे पहले जहाज़ लंगर नहीं उठा सकता।

अँधेरा होते ही स्वेज़के जल-विस्तारपर बत्तियोंके तारे सहसा जगमगा उठे। दूर और निकट, तटपर और पानीमें, नगरमें और जहाज़ोंपर सर्वत्र हज़ारों प्रकाश एक साथ चमक उठे। और बीच-बीचमें थोड़ी-थोड़ी देरमें जल उठने वाले आलोकस्तम्भोंके प्रकाशपुंज जैसे समुद्रकी सतहपर फिरकर उसके अंधकारको बुहार देते। उनके फैलते प्रकाश-मंडलमें इस मार्गका अन्तरंगतक चमक उठता। और जब उनका रश्मि-मार्ग क्षणमात्र सीधा

होता तो उसका विद्युत्प्रवाह आकाश-गंगाके स्रोत-सा लगता जिसमें आस-पासके बल्व नीहारिकाओंकी भाँति डूबते-उतराते-से धूमिल हो जाते। इस प्रकाश-पुंजसे ही हमें उस अनन्त अंधकारका बोध होता जो हमारे जहाज़के पीछे फैला हुआ था। प्रकाशसे ही अन्धकारकी गहनताका बोध होता है। पर मनुष्य इतना महान् है कि वह अन्धकारको भी जीत लेता है। मुहम्मद इक़बालकी उक्ति कितनी सुन्दर है—'ख़ुदा, तूने अन्धकार बनाया, हमने चिराग़ बना लिया!'

स्वेज़-नहर बहुत सँकरी है इससे एक साथ ही दोनों ओरसे जहाज़ आ-जा नहीं सकते। यातायात एक ही ओरसे एक समय होता है। अर्थात् एक बार पच्छिमसे पूरब जाने वाले जहाज़ निकलते हैं दूसरी बार पूरबसे पच्छिम जाने वाले जहाज़। सुबहसे ही पूरब जाने वाले जहाज़ोंका बेड़ा भूमध्यसागरकी ओरसे आने और नहरके मुँहसे निकलकर जैसे स्वेजकी खाड़ीमें पसरने लगा। जहाजोंका यह ताँता शामतक बना रहा। हमारा जहाज़ स्वेज़के बन्दरमें पीछे था। वास्तवमें स्वेज़ लाँघनेवाले एक ओरके जहाज़ोंमें भी आपसका एक सिलसिला होता है। पहले यात्रियों वाले जहाज़ निकलते हैं, फिर आधा यात्रियों आधा मालवाले, फिर टैंकर यानी तेल ढोने वाले, और अन्तमें फ़्रेटर (फ़्रेट या कारगो यानी माल ढोने वाले)। हमारा जहाज फ़्रेटर है।

साढ़े दस बजे हमारे जहाज़ने लंगर उठाया। दस बजेसे ही चलनेके उपक्रम होने लगे थे। दौड़-धूप, कुछ हल्ला-गुल्ला मचा हुआ था। मैं तो जहाज़ खुलनेकी राह देखता-देखता थककर केबिनमें नौ बजे ही सोने चला गया था। पर श्री जेम्सने जो दरवाज़ा खटखटाया तो आँख खुल गई। जो ऊपर गया तो देखा अनेक मिस्री नाविक-माँझी, जो दिनमें ही ऊपर आगये थे, इधर-उधर घूम रहे थे। ये, सुना पोर्ट सैयद तक साथ जायँगे। पाइलट भी आ गया था। वास्तवमें, सुना, नहर पार करना आसान नहीं और स्वेज़का मिस्री पाइलट ही उसका पथ-प्रदर्शन करता है। कप्तान

और उसके कर्मचारी रातमें स्वेज़ पार करते समय बराबर जागते रहते हैं। यह पाइलट, एक मिस्री अफ़सरने बताया, बड़ी तनख़्वाह पाता है। अस्तु।

स्वेज़की नहर और नहर बनानेवाले फ्रेंच इन्जीनियरका स्मारक बाईं ओर छोड़ते हुए प्रायः आध घंटेमें नहरके मुँहमें हमारा जहाज़ प्रविष्ट हुआ। बाईं ओर सुन्दर साफ़ छोटे-छोटे मकान बने हुए थे, दूर तक लगातार, नहरके किनारे। दोनों ओर बत्तियोंकी क़तार थी। हमारा बेड़ा पन्द्रह जहाजोंका था। ग्यारह हमारे आगे थे, तीन पीछे। 'जान बाके' का नम्बर बारहवाँ था। मन्थर गतिसे हमारा जहाज़ चला, शान्त जलमें, नीरव। हम चुपचाप डेकपर खड़े नहरको देखते और उसकी उपादेयतापर विचार करते रहे।

यदि यह नहर न होती तो यात्रा और माल ढोनेमें कितना कष्ट होता। हिन्दुस्तान पहुँचनेके लिए एक दुनिया सर करनी होती, अफ्रीकाके महाद्वीपका चक्कर करना होता। उसी राहसे स्पेन और सारे अफ्रीकाके पश्चिमी और दक्षिणी तट नापते गुडहोपका अन्तरीप होते जहाज़ महीनोंमें हिन्दुस्तान पहुँचते थे। पिछले महायुद्धमें भी स्वेजकी राह छोड़ उधरसे ही खतरेसे बचनेके लिए जाना पड़ता था। इस नहरसे यातायातकी कितनी सुविधा होगई।

जब मिस्रकी ग्रीक सुघड़ शौक़ीन मनस्विनी रानी क्लियोपात्रा हिन्दुस्तानके मोती, रत्न और माल भरे जहाजके जहाज़ ख़रीदकर अपने धन और वैभवको सार्थक करती तब उसे महीनों जहाज़ोंकी राह देखनी पड़ती थी। सिकन्दरिया के बन्दरमें पहुँचते एक ज़माना लग जाता था। रोमके नृशंस सम्राट् नीरोने एकबार भूमध्यसागर और लालसागरको एक नहर द्वारा मिलानेका प्रयत्न किया, मिला भी दिया, और कुछ दिनों भारत, मिस्र और रोमके बीच पहली-दूसरी सदी ईसवीमें उसी राह जहाज चले भी पर कुछ ही दिनोंमें वह पट गई और उधरसे यातायात बन्द हो गया। वह नहर कहाँ थी, नहीं कहा जा सकता।

'खुदा तूने अन्धकार बनाया, पर हमने चिराग़ बनाया !' निश्चय प्रकृति विराट है, बलवती है, भयावनी है, पर मनुष्य उसका विजयी है, शासक है, स्वामी है। मनुष्यने अपनी सूझ, अध्यवसाय और शक्तिसे फिर भूमध्यसागर और लालसागरके उपरले सिरे, स्वेज़की खाड़ी, को मिला ही दिया। और इस नहरसे मिस्रका अतुल लाभ भी हुआ। इस नहरको बनाया एक फ़्रेंच इंजीनियरने। अनन्त धनके व्ययसे यह खुदी। इसमें फ़्रेंच, अंग्रेज़ और मिस्री सरकार तीनोंके पहले हिस्से थे। अंग्रेज़ोंको कुछ काल बाद अलग हो जाना पड़ा। फ़्रांस और मिस्रके बीच अस्सी सालका एक राज़ीनामा क़ायम है जो अब सात साल बाद समाप्त हो जायगा और नहरकी सारी आमदनी केवल मिस्र लेगा। अंग्रेज़ोंने फिर अधिकतर मिस्री शेयर ख़रीद लिये।

फ़्रेंच कम्पनी इतनी धनी हो गई है कि पोर्ट सैयदके पास नगरके सामने, बन्दर पार, वह एक नगर बसा रही है। सुना, उसका नाम पेरिस होगा और उसमें समृद्धि बरसेगी। जो हो, स्वेज़को नहरसे बड़ी आमदनी है। नित्य प्रायः तैंतीस जहाज़ इससे होकर गुज़रते हैं और कम्पनीको सौ मिलियन पाउण्डकी सालाना आमदनी होती है। सौ मिलियन पाउण्ड—दस करोड़ पाउण्ड—प्रायः एक अरब तैंतीस करोड़ पचहत्तर लाख रुपया प्रतिवर्ष। और यह आमदनी सात वर्ष बादसे अकेली मिस्री सरकारको होगी।

मेरी मुग्ध चिन्तन-धारा न जाने कबतक चलती रहती यदि मिसेज़ जेम्स याद नहीं दिलातीं कि रात काफ़ी गुज़र चुकी है, सोनेका समय हो गया है। डेकसे केबिन चला गया और बिस्तरपर पड़कर सो रहा।

—(१-१०-५०)

थका हुआ था, नींद अच्छी आई। सोकर ज़रा देरमें उठा था फिर भी अभी सूरज पूरा निकला न था, दाहिनी ओर ज़रा-ज़रा धुँधला झाँक रहा था और हम उत्तरकी दिशामें बढ़ते चले जा रहे थे। स्वेज़के बादका

पानी गदला था, नीलाभ–हरिताभ गदला, नहरका पानी शुद्ध हरा। लगता था जैसे स्वदेशकी किसी नदीका हो, जमुनाका सा।

जब मैंने ऊपर डेकसे इधर-उधर नज़र डाली तो देखा नहर सँकरी है। दोनों ओर बालूके तट हैं जो दूर-सामने एक दूसरेसे मिलेसे लगते हैं। और दोनों ओर क्षितिज तक बालूका मैदान ही मैदान दीख पड़ने लगा। और कभी दाहिने कभी बायें खेतीके लायक़ ज़मीन भी दिखाई पड़ी, शायद बने खेत भी थे। पर क्षितिज तक दोनों ओर सपाट मैदान था। एक पहाड़ी तक कहीं न दिखाई पड़ी।

नहर जगह-जगह पक्की बँधी हुई भी थी। अनेक स्थलोंपर नौकाओं द्वारा घाट उतरनेकी भी व्यवस्था थी जिसके लिए स्टेशन बने थे। ये ही स्टेशन रेलके स्टेशनोंका भी काम करते थे। नगरके साथ ही साथ पक्की, मेटल्ड, काली सड़क थी जिसपर मोटरें दौड़ रही थीं और सड़कके पीछे पास ही रेलवे-लाइन थी। बम्बई छोड़नेके बाद पहले-पहल पाँच-छः डब्बोंवाली दौड़ती रेलगाड़ी देखी, भूरी-भूरी।

नहरमें छोटी-छोटी नावें पत्थर ढोती आती-जाती देखीं। पर जहाज़ एक ही ओरको चल रहे थे। और पहलेसे पूरब (दक्खिन) जानेवाले जहाज़ जो नहरमें आ गये थे वे चुपचाप बँधे खड़े थे। इन जहाज़ोंमें अनेक अमरीकी थे, अनेक ब्रिटिश, अनेक नारवेई, इतालीय, ग्रीक आदि। एक रूसी जहाज़ भी देखा जिसपर हँसिया-हथौड़ेवाला सोवियत झण्डा फहरा रहा था। उसका नाम सम्भवतः 'दिमत्री देस्क्वा' था। सर्वत्र शान्ति थी, जल नीरव था, सूरज दाहिने निकल चुका था और हम प्रायः पाँच मील फ़ी घण्टेकी रफ़्तारसे चुपचाप चले जा रहे थे।

स्वेज़की नहर सन् १८६९ ई० में बनकर तैयार हुई थी और नवम्बरमें ही यातायातके लिए खुल गई थी। इसमें संसारके सारे राष्ट्रोंके जहाज़ आ-जा सकते हैं। स्वेज़की खाड़ी और भूमध्यसागर तक नहरकी लम्बाई साढ़े

८७ मील है जिसमें साढ़े ७६ मील तो सीधी लम्बाई है और ११ मील घुमावदार है। बीचमें तीन झीलें भी पड़ती हैं—तिमसा और बड़ी छोटी तिक्त झीलें। नहर इनके भीतरसे होकर जाती है और स्वाभाविक ही जहाँ इनकी स्थिति है नहर चौड़ी फैल गई है। प्रायः २१ मीलकी दूरी नहर इन झीलोंके भीतर होकर तै करती है और साढ़े ६६ मील अपनी राह, मनुष्य द्वारा प्रस्तुत, अप्राकृतिक। नहरकी चौड़ाई इसी कारण जहाँ-तहाँ काफ़ी है पर साधारणतः यह २९५ और ३३० फ़ुटके बीच है। नहरकी गहराई प्रायः ३८ फ़ुट है और ३४ फ़ुट तकके गहरे पेंदे वाले जहाज़ इसमें आ-जा सकते हैं। हमारा जहाज़ निचले डेकसे तले तक प्रायः २९ फ़ुट है। कल ही स्वेज़के बन्दरमें ही कम्पनीका 'सरवेयर' आकर जहाज़की पैमाइश कर गया था, उसकी लम्बाई-चौड़ाई-गहराई सब फ़ीतेसे नाप गया था। नहर पार करनेके सम्बन्धमें जहाज़के वज़नका भी बराबर ध्यान रखा जाता है। नहरमें बालू न भर जाय इससे बराबर उसकी गहराई नापी-देखी जाती है और बालू निकाला जाता रहता है। यह निश्चय है कि सावधान मनुष्यकी देख-रेखमें रहने और उसकी वैज्ञानिक सूझके कारण इस नहरकी वह दशा नहीं हो सकती जो प्राचीन कालमें रोमन सम्राट् नीरो द्वारा खुदवाई नहरकी हुई।

दस बजेके लगभग दोनों ओर दूर-दूर तक जलका विस्तार दिखाई पड़ने लगा जो बराबर बढ़ता गया। यह समुद्रका जल था जो स्थलपर भीतर-ही-भीतर घुस आया था। मिस्रकी मुख्य नदी नील है। वह दक्षिणके पहाड़ोंसे निकलकर भूमध्यसागरमें डेल्टा बनाती हुई गिरती है। समुद्रमें गिरते समय उसकी कई शाखाएँ हो जाती हैं। एक शाखा इधर पोर्ट सैयद की ओर भी चली आई है।

आध घण्टेमें हम पोर्ट सैयदके बन्दरमें दाखिल हो गये, स्वेज़से ठीक बारह घण्टे चलकर। इस प्रकार हमारे जहाज़ 'जान बाके' की रफ़्तारका औसत प्रायः ७ मील फ़ी घण्टा रहा था। स्वेज़में गर्मी कुछ कम हुई थी

परन्तु नहरमें हवा काफ़ी सर्द हो गई थी और मिस वाल्टनने तो गर्म स्कर्ट और कोट भी पहन लिये थे। बन्दरका पानी नीचे गदला था।

पोर्ट सैयदका बन्दर काफ़ी बड़ा है। चारों ओर इधर-उधर विविध प्रकारके जहाज़ लंगर डाले खड़े थे। उनसे माल उतर-चढ़ रहा था। हमारा जहाज़ उनके पाससे निकलता प्रायः उत्तरी छोर तक चला गया और उसने वहाँ जाकर लंगर डाला। घण्टे भरके भीतर ही माल उतरने लग गया। बड़े क़रीनेसे माल उतरता है। उसके लिए ख़ास लम्बी-चौड़ी-गहरी और मज़बूत नावें होती हैं। तारकी रस्सियोंसे मज़बूत तख़्ता बँधा रहता है जिसपर जहाज़के तलेसे माल उठाकर रखते हैं और जैसे-जैसे रस्सी लिपटती जाती है वैसे-ही-वैसे तख़्ता उठकर जहाज़के लेबेल (बराबर) में आता है, फिर उसे एक ओर कर देते हैं जिधर नावें खड़ी होती हैं, प्रायः पचास फ़ुट नीचे। रस्सी फिर ढीली होने लगती है और तख़्ता नीचे नावोंपर पहुँच जाता है। कुली बड़ी सफ़ाईसे माल नावमें फेंकने लगते हैं। उसे फेंकनेमें वे ऐसे सधे रहते हैं कि बक्से यथास्थान गिरकर बैठ जाते हैं। आज देर तक मैं मज़दूरोंका काम करना और मालका उतारा जाना देखता रहा।

जहाज़के प्रायः लगते ही सामान बेचने वाले आ गये। कइयोंने छोटी-छोटी अनेक दुकानें लगा दीं। और एकने तो ख़ासा अच्छा बाज़ार ही सामनेके बिचले डेकपर लगा दिया। मैं उनके सुन्दर बैगोंमेंसे एक लेना चाहता थाँ। पर उनके दामोंका अन्दाज़ कुछ न होनेके कारण ठग जानेके डरसे नहीं लिया। फिर यह भी ख़याल आया कि आख़िर अभी लौटती राह मिस्रसे ही होकर जाना है तभी जो कुछ लेना है ले लूँगा। फिर भी वहाँका चमड़ेका माल बम्बई और इलाहाबादकी अपेक्षा अच्छा और सस्ता जान पड़ा। मैंने एक सुन्दर लेडीज़ पर्स लिया भी। पहले तो बेचने वालेने इसका दाम दो पाउण्ड यानी लगभग २६॥।) बताया परन्तु फिर वह ९) तक आ गया। ९) में वह उसे दे भी देता पर मेरे पास १०) का

नोट था और फेर-बदलको न समझ सकनेके कारण मैंने १०) पूरे देकर पर्स ले लिया। मैं बम्बईमें इसके बड़ी प्रसन्नतासे २०) दे सकता था।

थोड़ी ही देरमें चारों ओर नावें भर गईं, छोटी, बड़ी, मझोली सभी प्रकारकी। अनेकमें, जो हाथसे खेई जाती थीं, ४०–५० तक आदमी बैठे थे, सभी अरब, सभी मिस्री। ऊपर नीचे चारों ओर जहाज़ चीज़ें बेचनेवालों और जाने कैसे-कैसे आदमियोंसे भर गया। अनेक सिक्के बदलने वाले आये जो मिस्री सिक्कों या नोटोंके बदले डालर, पाउण्ड, रुपये आदि लेते थे। दुनियाके सारे सिक्के यहाँ इस जहाज़पर ही बदले जा सकते थे। ये निश्चय दरोंमें फ़र्क़ डालकर अपना कमीशन पाते होंगे। डालर पा जाना तो बड़ी बात है। पर मैंने डालर नहीं ख़र्च किये। मैं अपने डालर बराबर बचाता जा रहा हूँ। इतने थोड़े जो हैं, कुल ५००। मैंने अपनी ख़रीदारी रुपयों द्वारा ही की।

पुलिस आ गई थी और स्वेज़की ही भाँति यहाँ भी हमारे पासपोर्ट देखे गये। पूछकर जाना कि किनारे जा सकते हैं, कुछ घण्टोंके लिए। केवल पासपोर्ट गैंगवे (जहाँसे जहाज़से उतरकर तटकी ओर जाते हैं) में खड़े पुलिस कर्मचारीको बाहर जाते समय दे देना होगा जो लौटते समय वापस मिल जायगा। तटपर जाने और नगर देखनेकी बड़ी इच्छा थी परन्तु मेरे जहाज़ी साथी उस ओरसे अत्यन्त उदासीन जान पड़े। कोई बाहर नहीं जाना चाहता था फिर मैंने भी किनारे जानेका विचार छोड़ दिया विशेषकर इसलिए कि मुझे मिस्र लौटकर अभी आना है। यद्यपि मैं कह नहीं सकता कि यदि हवाई जहाज़ काहिरासे गया तब भी पोर्ट सैयद जा सकूँगा। जो हो, तटपर न जा सका और जहाज़पर ही अपने पत्रोंकी प्रतीक्षा करने लगा।

स्वेज़के बन्दरमें कप्तानकी बहुत-सी चिट्ठियाँ और दूसरी डाक आई थी। मालूम हुआ कि पोर्ट सैयदसे भी डाक वहीं भेज दी जाती है। पर शायद यह उस डाककी बात है जो समयसे जहाज़के एजेण्टके पास

पहुँच गई होती है। ये एजेण्ट यात्रा-एजेण्टोंसे भिन्न होते हैं। ये केवल जहाज़ यानी उसके माल आदिके एजेण्ट होते हैं। ख़ैर, मैं कप्तानकी डाक देखकर बहुत ईर्ष्यालु हुआ। मेरे लिए एक भी पत्र कहींसे न आया।

परन्तु पोर्ट सैयदमें कई पत्र एक साथ आ गये—पाँच। सभी घरके थे। केवल दो पत्र न थे, जिनकी आशा कर रहा था। पत्नी और चित्राके। मेरा विश्वास है कि उन्होंने अदनके पतेपर पत्र भेजा होगा पर हमारा जहाज़ जो वहाँ भी पहले जानेवाला था, वहाँ न रुक सीधा स्वेज़ चला आया था। इसीसे सम्भवतः उनके पत्र वहीं रह गये, मुझे न मिल सके। मैंने तत्काल अपने यात्रा-एजेण्ट टामस कूक ऐण्ड सनको अदनके पतेसे पत्र डाला और लिखा कि मेरे पत्र जेनोआके पतेपर भेज दिये जायँ। टामस कूकके ही पोर्ट सैयदवाले दफ़्तरसे मेरे पत्र जहाज़पर ही मुझे मिले थे। पत्रोंको पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। घरकी याद ताज़ी हो गई फिर भी उनको बार-बार पढ़ा। ऐसा लगा कि यदि वे लिपिहीन सादे भी होते तो अभितृप्ति उतनी ही होती। अपने लोगोंको स्पर्श कर वे आये थे, कितने क़ीमती थे भला।

इसीसे पत्नी और चित्राके पत्रोंका न मिलना विशेष निरुत्साहका कारण हुआ। ख़ैर, नीचे जाकर कुछ और पत्र लिखे। घरके लिए पत्र कल ही अधिकतर लिख लिये थे। सोचा था कि उनका मज़मून तो विशेष बदलना नहीं है, हाँ, यदि आये पत्रोंमें कोई विशेष जिज्ञासा मिली तो उसका उत्तर और जोड़ दूँगा। कुछ बातें ज़रूर बढ़ानी पड़ीं जो बढ़ाकर लिफ़ाफ़े बन्द कर दिये। टिकट किसपर कितना लगा यह न जान सका क्योंकि कप्तानने कहा कि टिकट एजेण्टके यहाँसे लगकर पत्र छोड़ दिये जायँगे फिर बादमें हिसाब हो जायगा। हाँ, लिफ़ाफ़ोंकी पीठपर भेजनेवाले का नाम ज़रूर लिख दिया गया जिसमें यात्री-यात्रीके व्यक्तिगत हिसाबमें कोई गड़बड़ी न हो। एक पत्र और अन्तमें जल्दी-जल्दीमें टाइप किया पर समय हो गया था, डाक चल पड़ी थी। डेककी ओर तेज़ीसे गया पर डाक

न मिली। इस पत्रको रख लिया है और हैफ़ामें इसे छोड़ूँगा, एक दिनका अन्तर हवाई जहाज़की दुनियामें कुछ ऐसा नहीं है। यह पत्र हिन्दुस्तान का है।

राहमें कई तस्वीरें ली थीं। दो तो मेरे मित्र श्रेयांसप्रसादजी जैनके लड़के ज्ञानने ली थीं, बाक़ी राहमें मैंने लीं—अदनके पासकी अरबकी ज़मीन की, शादवान टापूकी, सिनाई पर्वत-श्रेणी और चोटी आदिकी। एक फ़िल्मरोल समाप्त हो गया था, दूसरा कैमरेमें भर लिया था। समाप्त फ़िल्मरोल 'डेवेलप' करनेके लिए एक फ़ोटोग्राफ़रको दे दिया जो जहाज़पर ही आकर ले गया था। तीसरे पहर उसने फ़िल्म लौटाये और साथ ही उनके एक-एक प्रिण्ट भी छाप कर दिये। धोया उसने उन्हें ख़राब था जिससे प्रिण्ट अच्छे नहीं आये थे। ख़ैर, उसे दो रुपये उनके लिए देने पड़े। एक रुपया (३ रुपये देने थे) बचाकर प्रसन्न हुआ, यह न सोचा कि दो बिगड़ गये। पर इतना ज़रूर है कि वहाँ पाँच रुपये अगर उनके लेता तब भी बिगाड़ कर ही लाता। मैंने उससे दो और फ़िल्म स्पूल मँगवाये थे जो उसने पाँच रुपयोंमें लाकर दिये। चाहता था 'सुपर एक्स कोडक' मिला 'प्लस एक्स कोडक'। ख़ैर ये भी अच्छे हैं, काम चल जायगा।

इसी समय एक ग्रीक ईसाई सज्जनसे बाइबिल भी ख़रीदी। राहके लिए रेवरेण्ड जेम्सकी बाइबिल माँग रक्खी थी, परन्तु उसपर निशान आदि नहीं कर सकता था और मुझे जो प्राचीन फ़िलिस्तीन आदिके विषयमें बाइबिलसे बहुत कुछ निकालना है, कुछ आश्चर्य नहीं कि पन्नोंके हाशिये रंग जायँ। इससे अपनी ही बाइबिल ठीक है। यह बाइबिल गुटका है पर संक्षिप्त नहीं। सम्पूर्ण है, पर अंग्रेज़ी अनुवादमें मूल मात्र।

सन्ध्या समय देर तक एक मिस्री अफ़सरसे बात करता रहा। अरबोंमें इसराइलके नये यहूदी राज्यको लेकर बड़ा विद्वेष फैला हुआ हैं। वे किसी तरह भी नहीं चाहते कि वह राज्य क़ायम रहे। उसके जन्मके समय भी आस-पासके अरब राज्योंमें बड़ी सनसनी फैली थी। उन्होंने उससे खुल्लम-

खुल्ला युद्ध भी किया था। अब भी साधारण अरब उससे खार खाये बैठा है, चाहता है कि कब युद्ध छिड़े और कब उस अभागे नवराष्ट्रको नष्ट कर दें। उनके पास सेनाकी कमी शायद न होगी। उनका विश्वास है कि लाखोंकी संख्यामें अरब युवक फ़िलिस्तीनमें वक़्त आते ही उतार दिये जा सकेंगे। राष्ट्रसंघको सजग रहनेकी बड़ी आवश्यकता है। पर वह क्या अन्यत्र भी उसी जागरूकता और शक्तिका परिचय देगा जिसका उसने कोरियाके सम्बन्धमें दिया है ?

सन्ध्या होते ही चारों ओर प्रकाश पानीमें नाचने लगा था। सामने ही प्रमुख प्रकाश-स्तम्भ था जिसका प्रकाशपुंज बड़ी सुन्दर मन्थरगतिसे चतुर्दिक् बिखर रहा था। चारों ओर अन्य छोटी-बड़ी बिजली-बत्तियाँ जलमें काँप रही थीं। सामने ही तटवर्ती मकानोंकी पहली कतार थी। अमेरिकी दूतावास, टामस कूकका दफ़्तर आदि सब इसी पहली पंक्तिमें थे। मुझे इस बातका काफ़ी दुःख रहा कि नगरके इतने पास रहते भी उसे देख न सका। सुना इसकी आबादी दस लाखके लगभग है। अनेक मकानोंकी ज्योति धीरे-धीरे मन्द पड़ चली। उनके सामनेके निम्नवर्ती जलवर्ती बरामदोंमें नावें कतारसे बँधी धीरे-धीरे जलके हिलनेसे झूम रही थीं। मैं भी दिनभरका थका-माँदा अपने केबिनको लौटा और बिस्तरकी शरण गया।

—(२-१०-५०)

— १ —

पोर्ट सैयद और जेनोआके बीच

प्रातः पौने पाँच बजे ही नींद खुल गई। उठा, मुँह-हाथ धोया और लिखने बैठ गया। पिछले दो दिन सिवा पत्रोंके अपनी दिनचर्या प्रायः नहीं ही लिख पाया था। जब जहाज़ बन्दरमें पहुँचता है तब एक अजब उथल-पुथल-सी मच जाती है, दोनोंमें, बन्दरके निवासियों-कर्मचारियोंमें भी, यात्रियों-ख़लासियोंमें भी। चाहे परिणाममें कुछ न हो पर एक अजब तेज़ी, कुतूहल, सक्रियता उमड़ पड़ती है।

उसीसे मैं भी आक्रान्त हो गया था और पिछले दोनों दिन एक प्रकार से निष्क्रिय बीते थे। वही मैं सुबह ही पिछले दो दिनोंकी आप बीती लिखने बैठा। लिखा और काफ़ी लिख गया। लिखना समाप्त कर स्नानादि-से निवृत्त हुआ और कपड़े पहन—एक पैण्ट और बुशशर्ट डाल—डेकपर पहुँचा। डेक सूना था। लोग निकले ज़रूर थे, तभी उनकी जूतियोंकी आवाज़ नीचेसे सुन पड़ी थी। पर अब वे अपने केबिनोंको लौट गये थे।

मैं खड़ा रहा। यह भूमध्यसागर है, मेडिटेरेनियन-सी, प्राचीनकालीन संसारके बीचोबीच जिसकी स्थिति कभी मानी जाती थी और उस भ्रमके दूर हो जानेपर जिसकी वही संज्ञा आज भी प्रचलित है। देखा, दूर तक हल्के नीले रंगकी जलराशि गुमसुम पड़ी है, गुमसुम क्योंकि उसमें कहीं एक भी लहर नहीं। जहाज़ इसीसे ज़रा जुम्बिश नहीं खाता। समुन्दरका इतना चुप रहना कभी न देखा था। शान्त भूमध्यसागर कहीं हिलता तक न था। लगता था कि आक्षितिज नीलाभ जलकी किसीने चादर फैला दी है, पानीपर जादू डाल दिया है।

और लगता था आकाश मण्डल मारे उसके ऊपर अपनी छाया डाल रहा है। श्रीमती 'राका' की एक पंक्ति याद आई—'अम्बरने मदी धरा पर डाली छातीकी छाया'—पर हाँ, यहाँ धरा न थी, वैसे ही जैसे अरब सागरपर कहीं नहीं थी, और एकबार फिर जहाज़ ऐसे समुद्रपर चल रहा था जिसके ओर-छोर कहीं दिखाई नहीं पड़ते थे।

जहाज़ अरबसागरकी भाँति उसकी छातीपर हल भी यहाँ नहीं चला रहा है, चुपचाप जैसे छलकता जाता है, अविराम, अविकल। ऊपर व्यापक आकाश है, नीचे अगाध सागर और बीचमें हमारा जहाज़ अकेला। क्षितिज तक नज़र फैलानेपर भी कुछ दिखाई नहीं पड़ता। आकाश और सागरके बीच कहीं-कहीं सफ़ेद बादलके छिटके टुकड़े आवारा फिरते हुए दिखाई पड़े और तत्काल मित्रवर रामनरेश त्रिपाठीके 'पथिक' की पंक्तियाँ मूर्त्तिमती हो आईं—

नीचे नील समुद्र मनोहर ऊपर नील गगन है,
घनपर बैठ बीच में बिचरूँ, यही चाहता मन है!

इस भूमध्यसागरने चिरकाल तक मानव प्रयास और प्रगतिका साक्ष्य किया है। इसके तटपर महान् प्राचीन सभ्यताओंका जन्म, विकास और निधन हुआ है। इसीसे सम्भवतः इसे कुछ कहना शेष न रहा। जिसमें ज़र्फ़ अधिक होता है उसमें शब्दकी इतनी महिमा नहीं होती। भूमध्यसागरका कृतित्व असाधारण है।

इसीके दक्षिणी तटपर उस मिस्री सभ्यताने आजसे प्रायः छः हज़ार वर्ष पहले आँखें खोलीं जिसके अभ्रंलिहाग्र शिखर आज भी बियाबाँ-में एक रहस्य-सा छिपाये खड़े हैं, यद्यपि अपने भीतरका भेद उन्होंने कबका खोलकर बाहर कर दिया है। इसी सागरमें उस प्राचीन क्रीतकी राज-धानी क्नोसस अवस्थित था जिसका राजा मिनोस अपने स्वर्णभारसे प्रसिद्ध हो गया है और जिसके नामने प्रसिद्ध मिनोई सभ्यताको आजसे प्रायः

चार हज़ार वर्ष पूर्व सनाथ किया था। प्रायः तभी इसके उन फिनीकी माँझियोंने चतुर्दिक् व्यापारका राज्य स्थापित किया था जिनकी लिपिने पिछली अनेक सभ्यताओंकी कहानी लिखी। इसी फिनीकी संस्कृतिका नेता सागरके दक्षिणी तटपर कार्थेज़के नामसे ई० पू० ८०० के लगभग ही खड़ा हुआ जो तत्कालीन संसारका सबसे बड़ा और सम्पन्न नगर था और जिसके लाड़ले सेनापति हैनिबलने स्पेन, दक्षिणी फ़्रांस और इटली-को रौंद डाला, यद्यपि वह अपने उसी विजय-विस्तारमें जामाके प्रसिद्ध युद्धमें कार्थेज़के साथ ही मिट गया। इसी सागरके पूर्ववर्ती तटपर यहूदी जातियोंकी सभ्यता खड़ी हुई। बाइबिलके यहूदी और इस्रायली यहीं जुरूसलममें, कनान और फिलिस्तीनमें, बसे जहाँ हज़रत मूसाके साथ मिस्रसे आये नरपुंगवोंने उस जूदियाका विस्तार किया जहाँके स्वतंत्र विचारकोंने पहले पहल धनियोंके विरुद्ध ग़रीबोंकी आवाज़ उठाई। यही वह उत्तरी तट है, उत्तरी तटका पूर्वी प्रसार, जहाँ दोरियाई ग्रीकोंने उत्तर-पूर्वसे आकर क्रीतवासियोंको बरबाद कर दिया, और मिकनी सभ्यता त्रायके साथ ही खो गई। वहीं ग्रीकोंने अपनी वीरता और ज्ञानका परिचय दे उस सभ्यताकी नींव डाली, सारा यूरोप जिसका आज ऋणी है। उस सागर-पर कालक्रमसे रोमने शक्ति बढ़ाई और कार्थेज़को नष्टकर सभ्य जगत्-पर अपना साम्राज्य क़ायम किया। मिस्रके तटपर इसी सागरमें सिकन्द-रियाका वह बन्दर बना जो आज भी जीवित है और जो कभी सुन्दरी क़िलयोपात्राकी विलासिताका केन्द्र थी। उसीके पूर्वी तटसे थोड़ी ही दूरपर कालान्तरमें उस ईसाने अपने उपदेश किये जिसका धर्म आज संसारमें इतना जनप्रिय हो रहा है। इसी सागरके उत्तरी कोणमें वह वेनिसका नगर बसा है जो एकबार मध्यकालमें भूमध्यसागरकी तटवर्ती भूमिपर अपना साम्राज्य खड़ा कर चुका है। उसी सागरके वक्षपर हमारा 'जान बाके' चुपचाप चला जा रहा है, फिलिस्तीनके बन्दरगाह हैफ़ाकी ओर।

पोर्ट सैयदसे हैफ़ा लगभग १६५ मील है, उत्तर-पूर्वकी ओर। सागर

तटपर स्वेज़ नहरकी बाईं ओर पोर्ट सैयद है। प्राचीनकालमें, जैसा, आज भी है, मिस्र और फ़िलिस्तीन मिले हुए थे। इसीसे मिस्री राजाओंका फ़िलिस्तीन और दज़ला-फ़रातका द्वाब और बाबुली तथा ईरानी राजाओं (ग्रीक और रोमन भी) का मिस्र जीतना इतना आसान हो गया था। बन्दर (नहर) की बाईं ओर पोर्ट सैयद है और दाहिनी ओरसे उत्तर-पूर्व की ओर १६५ मील चलकर जहाज़ हैफ़ा पहुँचता है।

सुबह जब डेकपर गया तब हम उत्तर-पूर्वकी ओर जाते हुए मालूम पड़े, सूर्यको दाहिने छोड़ते हुए। पर तीसरे पहर हम सीधा पूरबकी ओर जा रहे थे क्योंकि सूर्य प्रायः पीछे हो गया था। आशा थी कि हैफ़ा ६ बजे शामके लगभग पहुँच जायँगे। तीसरे पहर ही बाइबिल-प्रसिद्ध कारमेल पर्वत और उसकी श्रेणी दिखाई पड़ने लगी। यह पर्वत प्रायः बारह मील की शृंखला बनाता समुद्रके तटमें घुस पड़ा है। इसकी ऊँचाई क़रीब १७०० फ़ुट है। चार बजे ही जब यह दिखाई पड़ा इसके शिखर और ऊपरी प्रसारपर सफ़ेद मकानोंकी क़तारें ऊपर-नीचे दिखीं। बाइनाकुलरसे जो देखा तो जान पड़ा कि एक विशाल नगर दूर तक पर्वतकी ऊँचाईसे नीचे तट तक उतरता पड़ा है। पूछा तो मालूम हुआ कि हैफ़ा यही है।

धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा और जैसे-जैसे अँधेरा बढ़ा हज़ारों-लाखों बल्ब ऊपरसे नीचे पर्वतपर झिलमिलाने लगे। प्रायः १५ मील दूरसे ही वे चमकने लगे थे। फिर हमने वह दृश्य देखा जो जीवनमें कभी न देखा था। लाखोंकी तादादमें विद्युत्प्रकाश पर्वतकी ढालपर इतने सुन्दर लग रहे थे कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं नगरकी वह छबि देख-कर दंग रह गया। शिमला भी सुन्दर लगता है और सामनेसे उसके बल्ब भी ऊपर-नीचे आकाशके तारोंसे प्रतीत होते हैं पर वह नगर अभाग्यवश समुद्रसे नहीं देखा जा सकता। हैफ़ाकी छटा अद्भुत है। उसके बल्ब ऐसे लगते हैं जैसे अन्धकारमय पृष्ठभूमिमें जड़े अनन्त-अनन्त हीरक चमक रहे हों।

देरतक डेकसे नगरकी छटा देखता रहा, मैं भी और अन्य सहयात्री भी। कुछ देरके बाद देखता हूँ कि जहाज़की गति बन्द-सी होती जा रही है। फिर एक कर्मचारीसे ज्ञात हुआ कि चूँकि पाइलट बन्दरसे नहीं आया (उसका आना बन्दरमें प्रवेश करनेकी अनुमति है), इससे हमें यहीं बन्दर से प्राय: दो मीलकी दूरीपर, लंगर डालकर रात बितानी होगी। फिर यह याद आया कि प्रात: ही जहाज़पर सभी प्रकारके वांछित-अवांछित व्यक्तियोंकी भीड़ लग जायगी और तड़के ही उठना पड़ेगा।

इसलिए भी कि सबकी इच्छा जुरूसलम जानेकी है और मेरी तो इच्छा पोर्ट सैयदमें तटपर न जा सकनेके कारण प्रतिज्ञामें बदल चुकी थी। हाँ, यह तभी हो सकता है कि वहाँ जानेकी अनुमति अधिकारियों द्वारा मिल जाय। उस सबका प्रयत्न कल करना है, इससे जल्दी सो जाना अच्छा है। यह विचारकर केबिन चला आया। आजके सम्बन्धमें कुछ लिखना बाकी था। अब तक लिखता ही रहा हूँ। प्राय: दो पृष्ठ आध घण्टेमें लिखा है और सोनेकी तैयारीकी सोच ही रहा था कि याद आई कि ब्रेज़िलकी राजधानी रायो डि जेनेरो एक आवश्यक पत्र लिखना है। अब वह पत्र टाइप करके ही सोऊँगा जिसमें उसे और हिन्दुस्तान जानेवाला, जो कल लिखा था और जो छूट न सका था, एक साथ डाकमें छोड़नेके लिए कल साथ ही प्रात: दे सकूँ।

—(३–१०–५०)

आज अक्तूबरकी चार तारीख़ है और हम हैफ़ामें हैं। परन्तु अभी तक हम किनारे नहीं पहुँच सके। जहाँ पिछली रात लंगर डाला था वहीं खड़े हैं। ऊपर डेकपर जो गया तो देखता हूँ कि हम बिलकुल वहाँ भी नहीं हैं, कुछ आगे हटकर नगरके और पास आ गये हैं। पर नगर दिखाई नहीं पड़ता, कुहरेकी एक मोटी चादरसे ढका हुआ है, जैसे बादलकी एक मोटी दीवार खड़ी कर दी गई है।

कुछ भी देख नहीं सकते, न नगर, न नगरकी पृष्ठभूमि पर्वतकी ढाल, न बन्दरमें खड़े बड़े जहाज़। जहाँ रात लाखों झिलमिलाते तारोंसे पर्वती ढाल ढके हुए थी वहाँ इस समय प्रातः केवल दूध-सी पर कुछ धूमिल कुहरेकी दीवार है और न हम वहाँकी चहल-पहल देख पाते हैं न मकानों या पहाड़की चोटियाँ।

नौ बजेके बाद कुछ जुम्बिश हुई, जहाज़ कुछ हिला। चारों ओर हड़हड़-पटपट होने लगी और देखते ही देखते लंगर उठ गया। सूरज निकलनेसे भाफ़के बादल पिघल गये थे और शहर उसकी किरणोंमें चमक उठा था, सुबहका ताजा शहर, सोकर उठा जुम्हाता-अंगड़ाता शहर, जिसका मुँह देख जहाज़ अपना शकुन बनाते हैं, अपने शुभ दिनका आरम्भ करते हैं।

जहाज़ सरका, क्योंकि पाइलट आ गया था और उसने 'जान बाके'को बन्दरमें दाख़िल होनेकी इजाज़त दे दी थी। बाईं तरफ़ उस जहाज़के मस्तूलोंको छोड़ते हुए, जो कुछ दिनों पहले लड़ाईके समय डूब गया था, उस बाँधके पीछेकी ओर चले जहाँ जानेको रातसे ही मन मँडरा रहा था और जहाँ खड़े जहाज़ोंकी क़िस्मतपर रश्क़ हो रहा था।

जहाज़, जिन्हें बन्दरमें घुसनेकी अनुमति मिल जाती है, इसी बाँधके पीछे खड़े होते हैं। अब भी वहाँ अनेक जहाज़, सैनिक-सौदागर-यात्री, सभी प्रकारके, खड़े थे। हमारे जहाज़के लिए भी जगह कर दी गई थी और वह अपने नियत स्थानपर जाकर खड़ा हो गया।

लोग आने लगे, पाइलट, उसके सहकारी, अन्य कर्मचारी, पुलिस, जहाज़के एजेण्ट, सभी जहाज़पर आ गये। पुलिसने हमारे पासपोर्ट देखे और बताया कि हमें फ़िलिस्तीन घूमनेकी अनुमति मिल जायगी। इस संवादने हमें अत्यन्त पुलकित कर दिया। पिछले दो सप्ताहोंसे निरन्तर यह इच्छा बनी रही थी कि इधरकी ही यात्रामें एक बार जुरूसलम, नज़रथ आदि देखनेको मिल जाय तो बड़ा अच्छा और इधर पोर्ट सैयदसे हैफ़ाके

१६५ मीलके रास्तेका तो घण्टा-घण्टा इस स्वप्नमें ही बीता था। वही स्वप्न अब सत्य होता जान पड़ा, यह बड़े आह्लादका कारण हुआ।

मेरे साथ एक दिक़्क़त और थी। मेरे पासपोर्टमें रूस और फ़िलिस्तीनके नाम दर्ज न थे। रूस जानेकी इजाज़त तो उत्तरप्रदेशकी सरकारने ही देनी अनुचित समझी थी, पर फ़िलिस्तीनका पासपोर्टपर दर्ज होना ग़लतीसे रह गया था। वह ग़लती स्वयं मेरी थी। उसमें तुर्की, ईराक़ और मिस्रके नाम तो हैं पर लेबनान, सीरिया, इज़रेल (इस्राइल) और ट्रान्स्जार्डनके नहीं। और पासपोर्टमें छपा है कि फ़िलिस्तीनके लिए अलग और स्वतन्त्र वीज़ा चाहिए, साथ ही पासपोर्ट भी, जिनके विना प्रवेश नहीं हो सकता। इसने मेरे लिए एक सरदर्द पैदा कर दिया था। और जबतक अफ़सर पासपोर्ट देखता रहा मेरे मनमें एक अजब बेचैनी और परेशानी बनी रही।

मैंने उससे पूछा—फ़िलिस्तीनके ऐतिहासिक और धार्मिक स्थानोंको क्या हम जा सकेंगे ?

उसने कहा—हाँ, आपलोगोंके पासपोर्ट दफ़्तरमें रख लिये जायँगे और इनकी जगह पास मिल जायँगे। जब आपका जहाज़ जाने लगेगा तब आप पास लौटाकर अपने पासपोर्ट वापस ले लेंगे।

बड़ी शान्ति मिली और यह निश्चय हो गया कि हम इसराइलके स्टेटमें जहाँ चाहें घूम सकेंगे। अफ़सर पासपोर्ट लेता गया और थोड़ी देर में पास भी जहाज़पर आ गये। साथ ही सुना कि जहाज़ इस बाँध और जेटीके बीच भी न रहकर बिलकुल जेटी या शहरकी तटसे लगी सड़कसे लगा दिया जायगा। इससे किनारे जानेमें और आसानी हो जायगी वरन् श्री जेम्सको कैमरोंके पासोंके लिए जहाज़से जो जेटी तक मोटरबोटसे जाना पड़ा था तो एक-एक ओरका एक-एक डालर भाड़ा लग गया था, महज़ आधा फ़र्लांग पानी लाँघनेके लिए !

कहाँ तो जहाज़ रातभर समुद्रमें मीलों दूर लंगर डाले बन्दरकी

झिलमिलाती बत्तियोंको ताकता खड़ा रहा था कहाँ उसे अब सुविधा-पर सुविधा मिलने लगी। इसका एक विशेष कारण है। इसराइलको छोड़ मध्य-पूर्वके शेष सारे राज्य अरब जातियोंके हैं। इराक़, मिस्र, सीरिया लेबनान, टान्स्जार्डन, सभी। अकेला इसरायल यहूदी है। सारी अरबी रियासतें एक ओर हैं, इसरायल अकेला है। अभी हाल तक उनमें लड़ाई होती रही है और अब भी भीतरी लड़ाई जारी है और किसी दिन भी बारूदमें आग भड़क सकती है। अरबी रियासतों और इसरायल सबमें लड़ाईकी चर्चा बराबर चल रही है और किसी विदेशीका सम्हलकर बात न करना खतरेसे ख़ाली नहीं है। बम्बईसे चलनेके दो-चार दिन बाद ही यह बात हमें सुझा दी गई थी और हम मिस्रियों आदि सभीसे सिवा मौसिमके और बात न करते थे।

जहाज़का हैफ़ा जाना भी इसी कारण अरबी रियासतोंको पसन्द न था। मिस्र इन रियासतोंका अगुवा है इससे उसे जहाज़ोंका, विशेषकर गल्ला ढोनेवाले जहाज़ोंका, इसरायलके बन्दरगाह हैफ़ाको जाना बिलकुल ही पसन्द नहीं। और चूँकि अन्तर्जातीय उसूलोंसे बँधे होनेके कारण मिस्र उनका इसरायल जाना या स्वेज़ नहरसे गुज़रना तो नहीं रोक सकता, जहाँ तक हो सके उनका खाना-पीना अपने असहयोगसे तो यथासंभव बन्द कर ही सकता है। तो उसने यह सुनते ही कि जहाज़ हैफ़ा जा रहा है, और जहाज़ माल या ग़ल्ला ले जा रहा है, उसपर रोक-टोक लगा दी। उसका शहरसे खाने-पीनेका सामान लाना मने कर दिया और उसे पीनेका पानी तक न लेने दिया। एक जहाज़की तो वहाँ पूरी ख़ानातलाशी भी होने लगी और हम भी सहमें कि यदि ऐसा ही हमारे साथ भी हुआ तो यद्यपि हमारे पास कुछ है नहीं पर समयकी हानि तो काफ़ी हो ही जायगी। पर ऐसा हुआ नहीं और केवल साधारण 'चेकिंग'से ही छुटकारा हो गया। हाँ, जहाज़का नाम 'काली लिस्ट'पर ज़रूर लिख गया।

हैफ़ा आने-जानेवाले सारे जहाज़ोंके नाम मिस्रमें लिख जाते हैं और

वहाँ नाम लिख जानेका मतलब होता है, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, अन्न-जलका न मिलना। इससे हमारा वहाँ रुकना भी बेकार था और यद्यपि पुलिस अफ़सरने हमें ग़ीज़ा और काहिरा जानेकी अनुमति दे दी थी हमने कमसे कम इधरकी यात्रामें पोर्ट सैयदकी ज़मीनपर उतरना मुनासिब नहीं समझा। राष्ट्रसंघके स्थापित हो जानेके बाद भी जो राष्ट्रोंके परस्पर सम्बन्धमें इस प्रकारकी खींचा-तानी, असद्भाव मनमुटाव बना हुआ है वही राष्ट्रसंघको कमज़ोर और फ़ार्स भी बनाये हुए है और वही एक दिन अभाग्य वश उसके दफ़नका कारण भी होगा।

ग़रज़ कि हमारा 'जान वाके' भी मिस्री 'काली लिस्ट'पर दर्ज है। पर भाग्यवशात् हमें उससे लाभ ही हुआ, क्योंकि इसी कारण हमें यहाँ हैफ़ामें सुविधाओंपर सुविधाएँ मिलती गईं। और हमारा जहाज़ जेटीपर भी आ लगा, बिलकुल उस तटसे जो नगरकी सागरवर्ती सड़क बन जाती है।

हम सब स्वभावतः ही डेकपर थे और अब यथासम्भव वहींसे शहर देखने लगे। जहाज़परसे माल उतरना शुरू हो गया था। माल उतारा तो उसी प्रकार जा रहा था जिस प्रकार पोर्ट सैयदमें उतारा गया था पर उसे एजेण्टके गुदामों तक मज़दूर नहीं ढोते थे और न वे बोड़ोंको कन्धोंपर ही उठा-उठा कर ट्रकोंमें लादते थे। उनका काम यहाँ अत्यन्त सरल हो गया था। ऊपरसे जब बोड़े लादकर नीचे लटकाये जाते थे तो उन्हें मज़दूर ज़मीनपर न लेकर उन चौपहल लोहेकी पहियेदार चौकियोंपर लेते जो गाड़ीके डब्बोंकी भाँति पहले आपसे और अन्तमें एक छोटी मोटरसे जुड़ी थीं। अन्तर बस इतना था कि ये डब्बे न होकर खुली चौकियाँ मात्र थीं।

इन्हीं चौकियोंपर माल उतार लिया जाता। प्रायः बारह पन्द्रह बोड़े एक-एकपर लद जाते और दस-दस चौकियाँ मोटरसे आसानीसे गुदामको एक ड्राइबर द्वारा खींच ले जाई जातीं। यन्त्रके सहयोगने मनुष्यका काम कितना आसान कर दिया है। उसे सामान उठानेमें अपनी जान पीसनी

नहीं पड़ती, हल्के-फुल्के अंग-संचालन मात्रसे वह अपना काम पूरा कर लेता है और उस भयंकर दानवसे इशारे मात्रसे वह दिन-रात काम लेता रहता है जिसे मशीन कहते हैं और जिसका वह स्वामी है। मज़दूर मज़दूर होकर भी साहब है, कमीज़ पतलून, पुलओवर, टोपी और मोज़े-जूते उसके जिस्मपर है और सिगरेट उसके मुँहमें। फिर भी वह अपना नहीं, औरोंका है।

सुबहसे ही आज सोच रहे थे कि जहाज़ किनारे लगते ही टूरिस्ट कम्पनियोंसे इधर-उधर जानेके लिए बातचीत आरम्भ कर देंगे। पर दोपहर तक यह न हो सका। दस बजेसे डेकगोल्फ़ खेलने लगे। तभी पट्टे-में कुछ दर्द-सा मालूम हुआ। परवाह न की, सोचा निकल जायगा। साढ़े दस-ग्यारह बजे चाय पी और साढ़े बारह बजे लंचके लिए गया। लंचके समय दर्द काफ़ी बढ़ गया और बिस्तरकी ज़रूरत महसूस हुई।

मेजके साथियोंसे इजाज़त माँग केबिन भागा और कपड़े उतार, पाजामा डाल बिस्तरपर पड़ रहा। दर्द अबतक काफ़ी बढ़ गया था और सिहरन जो खानेकी मेज़पर ही शुरू हो गई थी अब जाड़ेके रूपमें बदल गई। कम्बल खींचकर ऊपर डाला, पर जाड़ा बढ़ता गया। किसी प्रकार एक घण्टा यह सोचकर चुप रहा कि ठंढ मिट जायगी, ठंढ मिटी नहीं और बढ़ती गई। आख़िर स्टिवार्डेसको घण्टी बजाकर बुलाना ही पड़ा। दो कम्बल ऊपर डाले, फिर तीन और फिर चार। तब जाकर कहीं ठंढ रुकी। ठंढ तो रुकी पर बुख़ार चढ़ आया, काफ़ी तेज़। मलेरिया था और साथ ही पट्टेमें दर्द था क्योंकि वहाँकी गिल्टी निकल आई थी।

क्वीनीन मँगवाई, एक खाई भी। पर स्टीवार्डेसने कहा कि डाक्टर आनेवाला है, देख लेगा, कोई चिन्ता न करें। पर चिन्ता बुख़ारके मारे सचमुच बढ़ ही गई थी, चिन्ता इसलिए और कि इतने दिनोंकी आशापर कहीं पानी न फिर जाय। बम्बई और पोर्ट सैयदके बीच अनेक बार सोचा था कि ईसाके स्पर्शसे पुनीत स्थानोंके दर्शन निश्चय करूँगा और पोर्ट सैयद

और हैफ़ाके बीचका रास्ता तो यही सोचते बीता था। पर अब जो तबियतका यह हाल देखा तो दिल जैसे बैठ चला। इसी परेशानीने बुख़ार और बढ़ा दिया। पर करता क्या, चुप था, मजबूर।

डाक्टरकी राह देखता रहा। डाक्टर आया। डाक्टर सभी बन्दरगाहों-पर जहाज़पर आता ही है। कुछ मेरे ही लिए नहीं आया। पर कप्तान उसे लेकर केबिनमें चले आये। डाक्टरने देखा-भाला। बुख़ार देखा तो काफ़ी निकला। उसने पट्टेपर अल्कोहल लगाकर सेंक दिया और ढेर-सी रूई रखकर उसे बाँध दिया। दवा देदी, गोलियाँ, और जानेको हुआ। मैंने डरते-डरते पूछा, डाक्टर, मैं बड़ा चिन्तित हो उठा हूँ कि साथियोंके साथ कल स्थानोंको देखने इधर-उधर न जा सकूँगा।

मैं स्वयं अपने वक्तव्यके अनौचित्यपर चकित था पर पूछ ही तो दिया कि क्या यह संभव है कि कल जा सकूँ। उसने कहा, वह तो ख़ैर कल्पनाके बाहर है, हाँ, अगर आज बुख़ार उतर गया और कल भी न आया तो परसों जा सकोगे। चुपचाप सुन लिया। डाक्टर जाते-जाते कहता गया कि थरमामीटर भेजता हूँ, शामको टेम्परेचर ले लेना, अगर ज़रूरत समझना तो कल सुबह या जब चाहो बुला लेना। वह अपना कार्ड छोड़ता गया।

मैं खिन्न और विमन पड़ा रहा, अधिकसे अधिक दवा खाता, चुप-से चुप रहकर जिससे आराम मिलनेसे बुख़ार उतर जाय। पर उधर पेटमें धौंकनी चल रही थी कि सारे साथी तो कल ही चले जायँगे फिर मुझे अकेले ही जाना पड़ेगा। और अकेले जाने लायक़ क्या परसों तक भी हो सकूँगा। अनजान विदेश, कमज़ोर शरीर, और पैसेकी मार। सुना था कि 'ट्रिप' के क़रीब पाँच पौंड आदमी पीछे लगेंगे। पर यह तो तब जब बारह एक साथ जाते यानी एक ओर जुरूसलम और दूसरी ओर नज़रथ आने-जानेके, कुल साठ पौंड अर्थात् क़रीब ८००)। भला तनहा इतना या इसका आधा भी कैसे संभव होता जब बीमारी-कमज़ोरी अलग

खटक रही थी। परन्तु घंटेभर बाद ही सुना कि कप्तानने मेरा ख़यालकर ट्रिप दूसरे दिनके लिए स्थगित कर दिया है। बड़ी राहत मिली।

और कोशिश इस बातकी करने लगा कि कल तक अच्छा हो जाऊँ जिससे परसों मैं भी सबके साथ ही जा सकूँ। अभी जब इसका पता न लगा था कि यात्रा एक दिन और पीछे हटा दी गई है तभी अगले ही दिन जानेके दिमाग़ी इन्तज़ाममें लग गया था। सोचा कि अगर बुख़ार न भी उतरा तो कह दूँगा, बुख़ार नहीं है, आख़िर बुख़ार इतना बराबर चढ़ा तो रहेगा नहीं, हाँ, दर्द ज़रूर सँभालना है जो, इतनी बाँध-बूँधके बाद आख़िर कुछ तो सुनेगा। हाँ, अभी ज़रूर वह सीधा खड़ा तक नहीं होने देता। और इधर-उधर स्थानोंको देखनेमें न केवल खड़े होनेकी ही आवश्यकता होती है बल्कि पर्याप्त चलने-फिरनेकी भी। क्या करूँ? चुपचाप मनः-शक्ति लगाये पड़ा रहा।

रेवरेंड जेम्सने आकर एक ख़बर सुनाई कि जहाज़ प्रायः एक सप्ताह यहाँ रुकेगा क्योंकि माल उतारनेका इन्तज़ाम काफ़ी नहीं है और जहाज़ अनेक हैं। इसी कारण वास्तवमें हमें यहाँ पहुँचनेके दिन बन्दरमें आनेकी इज़ाज़त न मिली थी और दूर खुले समुद्रमें रातभर खड़ा रहना पड़ा था। ऐसी दशामें कभी-कभी हफ़्तों माल ढोने वाले जहाज़ोंको बन्दरके सामने लंगर डाले खड़ा रह जाना पड़ता है। और यहाँ भी जो कुछ ऐसी ही सूरत हो चली थी तो कप्तानने यहाँ तक तै कर लिया था कि यदि यहाँ बन्दरके बाहर रुकनेकी संभावना हुई तो हैफ़ा वाला माल जेनोआमें उतारेंगे और लंगर उठाकर यहाँसे चल देंगे। पर दूसरे ही दिन अन्दर जानेकी इज़ाज़त मिल गई थी और एकके बाद एक सुविधाएँ मिलने लगीं थीं। लंगर उठाकर चल देनेका एक कारण यह भी था कि एक पत्र जहाज़की मालिक–कम्पनीका जल्दीसे जल्दी न्यूयार्क पहुँचनेकी हिदायतके साथ आगया था। यह संवाद मेरे लिए अच्छा था क्योंकि मैं न्यूयार्क जल्द-

से जल्द पहुँचना चाहता हूँ। पर इतनी दूर आनेके बाद फ़िलिस्तीन, जुरूसलम आदि देखे बग़ैर लौट जाना मुझे हरगिज़ मंजूर न था।

अस्तु, यह कि जहाज़ यहाँ अब एक सप्ताह रहेगा मेरे ढाढ़सका कारण हुआ, क्योंकि यह तो मुझे यक़ीन था कि मेरे बिस्तर छोड़ते सात दिन नहीं लगेंगे। बस एक बात अधिक ख़र्चकी निश्चय हो सकती थी जो अन्ततोगत्वा मुझे स्वीकार करनेमें आपत्ति न होती फिर यह भी आशा बराबर थी कि यदि मेरे सहयात्री नहीं तो अन्य यात्री कमसे कम ज़रूर मिल जायँगे। चुपचाप पड़ा बुख़ारकी गतिविधि देखता रहा। पट्टी बदलनेके लिए जो चौथे पहर उठा तो दर्द कुछ कम मालूम हुआ। सीधा खड़ा भी हो सका और देखनेपर सूजन कम लगी। मनमें साहस भर चला।

—(४–१०–५०)

पर बुख़ार बना रहा। बुख़ार रातभर बना रहा। और दवा, जिसके नामसे पहले मतली आया करती थी, बड़े चावसे खाने लगा। सुबह बुख़ार उतर गया था, थर्मामीटर लगाया तो ३६–४ था, यानी बुख़ार न था। यहाँ यही नार्मल है क्योंकि इसरायलमें भी डाक्टर यूरोपकी ही भाँति इसी प्रकारके थर्मामीटरका प्रयोग करते थे जो सेंटीग्रेट दिखाता है, फ़ारेनहाइट नहीं। डाक्टर भी क़रीब आठ बजे बग़ैर बुलाये आ पहुँचा। आते ही दर्द पूछा, दर्द नहीं था। गिल्टी देखी, गिल्टी दब गई थी और सूजन नहीं थी। दबानेपर भी दर्द न हुआ। बुख़ार देखा, नहीं था। उसने कहा, शामको बुख़ार देख लेना और अगर न रहे तो कल बाहर जा सकते हो। पट्टी बदलते रहना, और आज डेक वग़ैरहपर पहले हल्के-हल्के टहलना जिसमें कल घूमनेका भार एकाएक बहुत न हो जाय। चलते-चलते जो उसने हाथ मिलाया तो हाथ गरम मालूम हुआ। हाथ मुझे भी अनेक बार गरम मालूम हुआ था। डाक्टर लौट पड़ा और नब्ज़ गिनने लगा।

मैं घबड़ाया कि कहीं बुख़ार लौट न पड़ा हो। पर सन्देहकी मात्रा लिये हुए भी वह विना कुछ कहे चला गया। और मैं चुपचाप लेट रहा। मैंने निश्चय कर लिया था कि अगर मुझे लौटकर एक सप्ताह भी विस्तरपर पड़ा रहना पड़े तो वह अंगीकार होगा। फिर भी मैं डाक्टरके बताये उपचार करने लगा, दवा खाने और पट्टी बदलने लगा। पर डेकपर मैं न गया क्योंकि अपनी शरीरकी दशा मैं डाक्टरसे कहीं अधिक समझता था।

दस बजे बुख़ार बढ़ता-सा लगा। आँखें भी बन्द होने लगीं, सिर जलने लगा, शरीर शिथिल हो गया। थर्मामीटर खींचकर जो बग़लमें दबाया तो निकालनेपर पारा साढ़े ३८ सेंटीग्रेट चढ़ा हुआ मिला। नीचेसे ज़मीन सरक गई। दवा लेकर चुपचाप फिर पड़ रहा। और शामतक चुपचाप पड़ा रहा, विना कुछ खाये-पीये। शाम तक यही हालत रही। बुख़ार वैसे ही था पर दर्द कहीं कुछ न था। कम्बल मँगाकर ऊपर डाल लिये और बारह बजे रात तक आँखें बन्द किये रहा। फिर बुख़ार जो लगा तो उठा और केबिनमें दो-चार क़दम चला पर बुख़ार नापनेकी हिम्मत न हुई। दो बजे फिर उठा, घूमा, पर थर्मामीटर न छुआ। चार बजे तक कई बार बदन पसीनेसे भींग चुका था, कई बार मैंने पसीना पोंछा था। अब मैंने थर्मामीटर लगाया और पारा ३६ सेंटीग्रेटके नीचे मिला। आश्वस्त हो गया। हल्की चादर तानकर सो गया।

—(५–१०–५०)

साढ़े ६ बजे नींद खुली। अँगड़ाई ली और स्वस्थ जीवकी भाँति बीमारीको भुलाकर बिस्तरसे अलग जा खड़ा हुआ। छठीका सवेरा था, यात्राका दिन। शौचादिसे निवृत्त हो दाढ़ी बनाई और साफ़ कपड़े बदल यात्राके लिए तैयार हो गया। स्टीवार्डेसने बताया कि आज 'ब्रेकफ़ास्ट' साढ़े सात ही बजे होगा। साढ़े सात बजे मैं डाइनिंग रूममें था, मेज़पर,

सबकी बधाइयाँ लेता, प्रातरभिवादन लेता-देता। और साढ़े आठ बजे इसरायलकी ज़मीनपर, आरामदेह मोटरमें जुरूसलमकी ओर चला।

परन्तु फिलिस्तीनके दर्शनीय ऐतिहासिक अथवा धार्मिक स्थानोंके विषयमें कुछ कहनेके पूर्व उस देशके इतिहासपर यहाँ कुछ लिख देना अधिक समीचीन होगा।

ग्रीक फिलिस्तीनका प्राचीन हिन्दू नाम प्लेशेथ है। ई० पू० ४५० के लगभग ग्रीक इतिहासकार हेरोदोतसने इस देशका भ्रमण कर पहले पहल साइरोपालेस्तीना नामसे पुकारा। यहाँके निवासी अति प्राचीनकालसे 'सामी' हैं। यह नाम उन्हें हज़रत नूहके पुत्र सामकी सन्तति होनेसे मिला है। सामियोंका वास्तविक स्थान अरब है। आधुनिक पुरातत्त्वके अनुसार अमूरी और कनानी भी, जो उत्तारी अरबके खानाबदोश थे, इन्हीं सामियोंमेंसे हैं। २५०० ई० पू० तक अमूरी बाबुल, सीरिया और फिलिस्तीनमें बस चुके थे। प्रायः इसी काल कनानियोंने भी सीरिया और फ़िनीकियापर आक्रमण कर १७०० ई० पू० तक उसपर अधिकार कर लिया।

इस दिशाकी सबसे प्राचीन और सभ्य जाति सुमेरी है जो ग़ैरसामी या सामियोंसे भिन्न थी। उसका वासस्थान सुमेर था जो दक्षिणी बाबुलमें या बाबुलसे दक्षिण था। सामी जातियोंका पहला महत्त्वपूर्ण संक्रमण संभवतः ई० पू० चतुर्थ सहस्राब्दीमें हुआ और उसने सुमेरियोंको प्रधानतः प्रभावित किया। सुमेरियोंका प्राधान्य उत्तरसे हटकर दक्षिण तक ही सीमित रह गया। इस संघर्षका महत्त्वपूर्ण फल यह हुआ कि दक्षिणी और उत्तरी जातियोंके समन्वयसे बाबुली और असूरी (आसुरी) जातियोंका जन्म हुआ जिन्होंने सुमेरियोंकी संस्कृति अधिकांशमें अपना ली। इस धरापर सुमेरियोंने ही मिस्रियों और सैंधवोंकी भाँति, जो उनके समकालीन थे, पहले पहल सभ्यताका प्रकाश फैलाया और लिपिका आविष्कार किया था। उनकी लिपि पुरातत्त्वमें कीलनुमा (क्यूनीफ़ार्म) कहलाती है जो दाहिनी

ओरसे बाईं ओरको लिखी जाती थी। इसीने फ़िनीकी, अरबी आदि उन सारी लिपियोंको जन्म दिया जो दाहिनी ओरसे बाईं ओरको लिखी जाने लगीं। इन्हींमेंसे एक 'खरोष्टी' नामसे भारतमें भी प्रसिद्ध हुई जिसका उपयोग सम्राट् अशोक मौर्यने उत्तर-पश्चिमी प्रान्तोंके अपने अभिलेखोंमें किया। बाबुलियोंकी मूल भाषा सुमेरी (ग़ैरसामी) थी जिसका उपयोग पीछे केवल ज्योतिषी, पुरोहित आदि करते रहे। असुरोंने भी इसे पवित्र भाषाका स्थान दिया। बाबुली प्रान्तका प्राचीन नाम सुमेर बाइबिलका शिनार है।

धीरे-धीरे बाबुलनगरका प्राचीन सुमेरी नाम कानरा (भगवानका द्वार) बदलकर सामी बाब-इलू (भगवानका द्वार, बबुली भाषामें) अर्थात् 'बाबुल' बन गया। बाबुलियोंकी ज़बान अब सामी 'अक़्क़ादी' थी जिसने सुमेरीका स्थान ले लिया। २८०० ई० पू० तक सुमेरियोंका अन्त हो गया और उनके प्रदेश सर्वतः अक्कादी या बाबुली शासनमें आ गये। ग्रीक इस देशको ख़ल्दिया कहते थे। ख़ल्दिया अस्सीरी 'कल्दी' (बाइबिल कस्दी) से निकला। अस्सीरी सारे बाबुली प्रदेश, विशेषकर दक्षिणी, को इसी कल्दी नामसे पुकारते थे। उत्तरी प्रदेश, जिसमें बाबुल और अक्कादके नगर भी शामिल थे, अक्काद कहलाता था।

बाबुली राजाओंमें से ज्ञात प्राचीनतम, अक्कादका, सारगोन महान् (२६०० ई० पू० के लगभग) है। उसका पुत्र नाराम-सिन (ल० २५५० ई० पू०) था। इन्हीं पिता-पुत्रने पहले पहल अरबसे भूमध्यसागर और मिस्र तक अपना साम्राज्य फैलाया। २००० ई० पू० के लगभग उस पराक्रमी और मेधावी अमूरी सम्राट् हम्मुराबी (ख़म्मुराबी, अम्रफ़ेल—बाइबिल) ने बाबुलके साम्राज्यपर शासन किया जिसका नैतिक विधान मानव जातिका प्राचीनतम और प्रथम विधान है।

बाबुलमें अक्कादीके अतिरिक्त एक और ज़बान पूर्वी आरामी या खल्दी पिछले कालमें बोली जाने लगी थी। इसे वहाँ राजकीय भाषा या साहित्य-

का पद कभी न मिला। यह केवल वहाँकी जनताकी 'बोली' थी। छठी सदी ई० पू० में नेबूख़दनेज़्ज़ारने जुरूसलमका नाशकर वहाँके यहूदी राजा, प्रजा और नेताओंको अपनी राजधानी बाबुलमें लाकर क़ैद कर दिया। यहीं यहूदियोंने यह बाबुली 'बोली' सीखकर उसे अपना लिया। छठी सदी ई० पू० से यही आरामी बोली सारे पश्चिमी एशियाकी एकमात्र साहित्यिक भाषा बन गई। यहूदी अपनी क़ैदसे जो ४९ वर्ष बाद ईरानी सम्राट् कुरुषकी कृपासे स्वदेश लौटे तो इसे अपनी ज़बान बनाकर साथ लेते आये। इसी ज़बानमें यहूदियोंका प्राचीनतम साहित्य मिस्र आदिसे उपलब्ध हुआ है।

कनानियोंने जब सीरिया-फ़िलिस्तीन जीता तब साथ ही बाबुली संस्कृति और अक्कादी भाषा तथा कीलनुमा लिपिको भी अपना लिया। १५०० ई० पू० के बाद इस प्रदेशपर मिस्री सम्राटोंका अधिकार हो गया, और जबतक मिस्री साम्राज्यका पतन हुआ स्वयं कनानी भी पर्याप्त दुर्बल हो गये थे। इसीसे चौदहवीं सदी ई० पू० के आरम्भमें इस्राइलियोंने उनपर हमलाकर उन्हें सहज ही हरा दिया। सौ-डेढ़ सौ सालके भीतर हैफ़ासे मिस्रकी सीमा तकका सारा तटवर्ती दक्षिण प्रदेश उन्होंने अपने अधिकारमें कर लिया। इसी प्रदेशके साथ शारों और शेफेलाके मैदान भी उनके हाथमें आ गये। फ़िलिस्तीनके निवासी फिर भी कुछ काल तक इस्रा-इली जोशुआ और उसके उत्तराधिकारियोंसे लड़ते रहे। प्राचीनतम कनानी सम्भवतः फ़िनीकी थे जो इस संघर्ष अथवा अपने संक्रमणमें निरन्तर पश्चिम, सीरिया और फ़िलिस्तीनके समुद्र तटकी ओर हटते गये। इनके संक्रमणकी अन्तिम धारा 'ख़बीरियों' की थी जो इब्रिम या सहब्रू थे। इन्हीं में-से डेडसीके पूर्ववर्ती मोआबी, डेडसीके दक्षिण और अकाबाकी खाड़ी तक अराबामें इदोमी, जार्डनके पूर्ववर्ती अम्मोनी और कनानियोंके देशके इस्रा-इली थे।

इस्राइलियोंका देश जार्डन नदीके पूरब-पश्चिम दोनों ओर था।

गैलिलीके उपरले-निचले प्रदेश, समरिया और जूदियाके प्रदेश इस देशमें शामिल थे। इसरायल (फ़िलिस्तीन) में अब जार्डनके केवल पूर्ववर्ती प्रदेश शामिल हैं परन्तु ऊपर गिनाये गैलिली, समरिया आदि अब भी उस देशके भौगोलिक प्रदेश हैं। आजके इसरायलकी चौहद्दी इस प्रकार होगी—उत्तरमें भूमध्यसागरके तटपर रास-ए-नकूरासे मेतुला और जार्डनके उद्गम तक, पूर्वमें जार्डन, मेरोम झील, तिबेरियस (गैलिली) झील, फिर अराबासे अक़ाबाकी खाड़ीपर अक़ाबा तक, दक्षिण पश्चिममें सिनाई प्रायद्वीपसे भूमध्यसागर तक, और पश्चिममें स्वयं भूमध्यसागर।

प्राचीन नगर जुरूसलमका शाब्दिक अर्थ है 'शान्ति', और इस नगर के मोरिया पर्वतपर की 'नींव-शिला' प्राचीनतम कालसे पूजाका आधार रही है। यहीं इब्राहिमने इसहाककी कुर्बानी की थी। इसी इसहाकका बेटा याकूब इस्राइलकी उन बारहों जातियोंका जनक था जिन्हें हज़रत मूसाने अपनी धार्मिक चेतनासे आलोकित और संगठित किया। जोशुआने इन जातियोंको इस विजित भूमिपर बसाया और 'जजों'ने अपनी योग्यतासे उनका शासन किया। फिर उन्होंने अपना पहला राजा साल (१०३३–१०१३ ई० पू०) को चुना। उसके उत्तराधिकारी दाऊद (१०१३–९७३ ई० पू०) ने जुरूसलमके सायन (ज़ायन) पर्वतको जीत उसपर अपना क़िला बनाया। उसका पुत्र सुलेमान (९७३–९३३ ई० पू०) इन राजाओंमें सबसे प्रसिद्ध हुआ और उसने मोरिया पर्वतपर अपने इतिहासप्रसिद्ध मन्दिरका निर्माणकर उसमें नूहकी 'नौका' और मूसाके दस आदेश-विधानकी प्रतिष्ठा की।

उसके मरते ही राष्ट्र कमज़ोर हो गया और मिस्रके फ़राऊन शिशाक ने जुरूसलमको बरबाद कर सुलेमानके मन्दिरको लूटा। शीघ्र तब इस राज्यके दो भाग हो गये और उत्तरमें पहले पहल जेरोबोआमके नेतृत्वमें इस्राइल राज्यकी नींव पड़ी। इसकी राजधानी इफ्रेमके पहाड़ोंमें शेखेम बना। जेरोबोआम प्रथमसे पाँचवें राजा उम्री (८८७–८७७ ई० पू०) ने

शेमरेसे ख़रीदकर पर्वतपर समरिया(शोम्रोन)की नींव डाली। इस समरिया का उल्लेख ऋग्वेदमें भी हुआ है—'समर्या' शब्दमें। इस्राइलके अन्तिम राजा होशियाके शासनकालमें असुर राजा शालमानेज़र चतुर्थ (७२७–७२२ ई० पू०) ने समरियाको तीन साल तक घेर रक्खा और उसके उत्तराधिकारी सारगोन द्वितीय (७२२ से ७०५ ई० पू०) ने उसे नष्ट कर उसकी प्रजाको बन्दी कर लिया। जूदाके दक्षिणी राज्यको बाबुली सम्राट् नेबूख़दनेज्ज़ार द्वितीय (६०४–५६२ ई० पू०)ने सुलेमानके मन्दिर को जलाकर जुरूसलमको नष्ट कर दिया। फिर वह राजाको अन्धाकर और यहूदी नेताओंको बाँधकर बाबुल ले गया। जुरूसलममें केवल निम्न-वर्गीय और किसान बच रहे।

४९ वर्ष बाद जब ईरानी आर्य राजा कुरुषने बाबुल जीतकर इन्हें स्वतन्त्र कर दिया तब ज़ेरुबाबेल और पुरोहित जेशुआकी अध्यक्षतामें जुरूसलम लौटकर उसके पुनर्निर्माणकी इन्हें अनुमति मिली। कुछ दिनों बाद एज़रा भी यहूदियोंका एक दल लिये स्वदेश लौटा और शीघ्र ऋतक्षयार्ष (आर्तक्षयार्ष) का चषकवाहक नेमेइया जुरूसलमका गवर्नर बनकर आया जिसने उसकी दीवारें निर्मित कीं (४४५ ई० पू०)। अगले साल एज़राने जनताके सामने मूसाके दस आदेश पढ़कर उसपर अमल करनेकी उससे प्रतिज्ञा कराई। फिर एक महान् समिति बनी जो धार्मिक मामलोंमें प्रधान मानी गई।

फिर जुरूसलमपर ३३२ ई० पू० में सिकन्दर और उसके ग्रीकोंका अधिकार हुआ। सीरियाके अन्तिओक तृतीय महान्की विजयने यहूदियोंको सर्वथा ग्रीक सभ्यतामें दीक्षित करना चाहा और अन्तिओक चतुर्थने जुरूसलमको फिर लूटा। अब यहूदी जनताने प्रबल विद्रोह कर ग्रीकोंको मार भगाया। मकाबियोंके शासनमें देशमें फिर एक स्वतन्त्र राष्ट्र खड़ा हुआ और सिमोनके बेटे योहन हरिकानुस (१३५–१०५ ई० पू०)

के शासन कालमें तो यहूदियोंने अनेक प्रदेश भी जीतकर अपने शासनमें कर लिये।

उधर रोमनोंका साम्राज्य दुनियापर हाँबी हो रहा था। यहूदियोंके घरेलू झगड़ोंसे लाभ उठाकर पाम्पेईने देशको ६३ ई० पू० में जीत लिया। रोमनोंने अब एक इदौमीको यहाँका शासक बनाया। पहले इदो-मियोंको योहनहिरकानुस्ने ज़बर्दस्ती यहूदी मज़हबमें दाख़िल किया था, अब उन्होंने उसका बदला लिया। पहले जुरूसलमका शासक ऐंटीपेटर हुआ फिर फ़ज़ीलस, फिर उसका भाई हिरोद। यही रोमनोंकी सहायतासे जुरूसलम जीत इसका राजा हुआ और हिरोद प्रथम महान् कहलाया (३७ ई० पू०)। उसने नगरका फिरसे निर्माण कराया और उसे इमारतोंसे भर दिया। उसीकी मृत्युके साल ४ ई०पू०में हज़रत ईसाका जन्म हुआ। जुरूसलम इसी रोमन उथल-पुथलका शिकार कुछ काल और बना रहा। अब रोमनोंने इस देशको अपने सीरियाके प्रान्तके अधीन कर दिया और उनका प्रतिनिधि इसकी देखभालके लिए आने-जाने लगा। इन्हीं दिनों राजनीतिक देखभालके लिए पोन्तियस पीलेत नियुक्त हुआ जिसके शासनके पन्द्रहवें वर्ष योहन (बप्तिस्मक) और ईशू (२९ ई०) प्रगट हुए। ईशू (या ईसा) इसी पीलेतके विधानसे अपने जीवनके संभवतः तैंतीसवें वर्ष गोलगोथाके पर्वत शिखरपर शूलीपर चढ़े।

सम्राट् कैलिगुलाके शासन-कालमें यहूदियोंका शक्तिसूर्य फिर एक बार मूर्धाभिषिक्त हुआ, जब अधिकार अग्रिप्पा प्रथमके हाथमें आया। उसने जुरूसलममें तीसरी उत्तरी नगर-दीवार खड़ी की। उसके मरते ही फिर लूट-मार शुरू हुई। रोमनोंने अपना शिकंजा कसा, यहूदियोंने प्रबल विद्रोह किया और रोमन जेनरल तीतसने ७० ई०में नगरपर अधिकार कर मन्दिरको जला डाला और राज्यको 'सीरिया-पालीस्तिना' नाम देकर उसे रोम साम्राज्यका सूबा क़रार दिया।

सम्राट् हेद्रियनने १३५ ई० में अन्तिम यहूदी विद्रोहका दमन कर

प्राचीन मन्दिरके स्थानपर जूपितरका मन्दिर स्थापित किया और उसमें उसने अपनी मूर्तिकी स्थापना की। उसने यहूदियोंको नगरसे निकाल बाहर किया। कुछ मिस्र चले गये, कुछ बाबुल। केवल थोड़ेसे यहूदी गैलिलीमें रह गये और यही स्थान पीछे उनका केन्द्र बना। अबतक इस गैलिली-सागरका नाम सम्राट् तिबेरियसके नामपर 'झील तिबेरियस्' पड़ चुका था और यह आज भी इसी नामसे जाना जाता है।

सम्राट् कान्स्तेतीन (३०६–३३७ ई०) के ईसाई धर्ममें दीक्षित हो जानेपर इस देशके इतिहासमें एक नये प्रकरणका आरम्भ हुआ। उसकी माता हेलेनाने ईसाई तीर्थोंकी यात्राकर वहाँ गिरजाघर बनवाने शुरू किये जिन्हें उसके पुत्रने पूरा किया। जूलियन और जस्तीनियन प्रथमके शासनकालमें यहूदियोंके अधिकार दिन-दिन छिनते गये और उनकी दशा गिरती गई। इस बीच ईसाई धर्मका महत्त्व यहाँ बहुत बढ़ा और उसके अनेक गिरजाघर मठ आदि यहाँ खड़े हुए। कुछ ही काल बाद उत्तरी बर्बरोंकी चोटोंसे रोमन साम्राज्य टूट चला। उसके पश्चिमी और पूर्वी दो भाग हो गये और पूर्वी भाग बीज़ेन्तियममें प्रतिष्ठित होनेके कारण बीज़ेन्तीन साम्राज्य कहलाया। इस काल भी देशमें अनेक गिरजाघर और इमारतें बनीं जिनकी विशेषता उनकी फ़र्शोंकी पच्चीकारी थी।

सातवीं सदी ईस्वी के पहले ही चरणके अन्तमें अरबमें जो चिनगारी भड़की थी वह मुहम्मदके मरते ही भयानक आग बनकर दिशाओंकी ओर बढ़ चली। ख़लीफ़ा उमरका शासनकाल इन अरबी विजयोंके लिए विशेष हितका रहा। उसी काल अबू उबैदा और ख़ालिद इब्न वालिदके नेतृत्वमें फ़िलिस्तीनपर भी अरबोंका हमला हुआ। ६३४ ई० में दमिश्क उनके अधिकारमें आ गया और चार वर्ष बाद जुरूसलमके नगरद्वार भी उनके लिए खुल गये। उन्होंने गिरजाघरोंकी जगह अपनी बड़ी मस्जिदें खड़ी कीं। उनके शासनमें देश फला फूला और कारवाँ देशके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक चलकर उसे देश-विदेशसे लाई वस्तुओंसे भरने लगे। जुरूसलम

तब मुसलमानोंके लिए भी तीसरा पाक शहर (दो मक्का और मदीना) बन गया।

चार सदियों बाद जुरूसलमपर अधिकार करनेके लिए यूरोपीय ईसाइयोंके वे हमले शुरू हुए जिन्हें क्रूसेड कहते हैं। वे एक प्रकारके धर्म-युद्ध या जेहाद थे। १०९९ की जुलाईमें उनका जत्था जुरूसलममें दाख़िल हुआ और गडफ़े जुरूसलमका पहला ईसाई राजा हुआ। १११८ ई० के बाद वाल्डविन द्वितीयके शासनकालमें ईसाई विजयोंकी पराकाष्ठा हुई। क्रूसेडरोंने अनेक गिरजाघर और मठ बनाये। पूर्वमें एक नया ईसाई सम्प्रदाय ग्रीक चर्चके नामपर संगठित हुआ था जो १०५४ ई०में रोमके पोपके अधिकारसे स्वतन्त्र हो गया। इससे क्रूसेडरोंमें मतभेद हो जानेसे उनकी शक्ति दुर्बल हो गई। अन्तमें ११८७ ई० में निचली गैलिलीमें 'खत्तीकी सींगों'के (दो पहाड़ोंके बीचकी घाटी) पास प्रबल मिस्री तुर्क सुल्तान सलादीन ने क्रूसेडरोंको बुरी तरह हरा दिया। उसके भतीजेकी रानी प्रसिद्ध शजरुद्दूरने इंगलैण्डके क्रूसेडर राजाको अपनी दिलेरीसे क़ैद कर लिया। चार वर्ष बाद उन्होंने फिर शक्ति संग्रह की, यूरोपसे क्रूसेडरोंकी धारापर धारा चली आ रही थी, और उन्होंने अक्कोपर अधिकार कर लिया जो पीछे एकर या सन्तजानका एकर कहलाया। १२९१ ई० में उसे उनसे मलिक एल अश्राफ़ने छीन लिया और उस पवित्र देशके अन्तिम स्थानसे उनके पैर उठ गये।

फिर फ़िलिस्तीनकी भूमिके स्वामी मुसलमान हुए। पहले मामलुक तुर्क, फिर उत्तमान। उत्तमान तुर्कोंकी बनवाई अनेक ऊँची इमारतें आज भी वहाँ खड़ी हैं और उनके अनेक दुर्ग आज भी उनकी शक्तिका साक्ष्य करते हैं। इन्हीं उत्तमान तुर्कोंने १४५३ ई० में कुस्तुन्तुनियाँपर अधिकार कर वहाँके पूर्वी (ब्रीज़ेन्तीनी) रोमन साम्राज्यके अन्तिम घटाटोपको उखाड़ फेंका और यूरोपीय ईसाई राजशक्तियोंके लिए राहु बन गये। पहले महासमरके बाद १९१७ ई० के दिसम्बरमें अंग्रेज़ी सेना जुरूसलममें

दाख़िल हुई और अगले सालके सितम्बर तक उन्होंने देशपर अधिकार कर लिया।

फ़िलिस्तीन और सीरियाके अधिकांश निवासी रोमी-नूहके बेटे साम की सन्तति—हैं। इनको हम प्रायः तीन भागोंमें विभक्त कर सकते हैं—१. अरब (मुस्लिम और ईसाई दोनों); २. सिरियक (मुसलमान और ईसाई), उन जातियोंकी सन्तान जो हिरौद महान्‌के समय अरामी (अरामइक-सीरियक) भाषा बोलती थीं। आज वे अरबी ज़बान बोलती हैं और उनमेंसे कुछ सीरियामें अरामी बोलीसे मिली-जुली अरबी। ३. यहूदी जिनकी दो जातियाँ या शाखाएँ हैं—अश्केनाज़िम और सेफ़ार्दिम।

सामियोंके अतिरिक्त अन्य जातियाँ इस प्रकार हैं:—

१. ईसाई (ग्रीक, मिस्री कोप्त, अबीसीनियक, अर्मैनियक, रूसी, अंग्रेज़, जर्मन, फ्रेंच ओर इतालियन)। युद्ध और इसरायलकी नवीन राष्ट्रशक्तिके क़ायम होनेके बाद अनेक यूरोपीय जातियाँ इस देशसे चली गई हैं।

२. मुसलमान (तुर्क़, सिरकस्सी, हिन्दुस्तानी, निग्रो या हबशी, उत्तरी अफ्रीकाके बर्बर, और मिस्रके नूबी)। फ़िलिस्तीन और सीरियाके प्रायः सभी मुसलमान सुन्नी हैं। और इनमें भी ७५ फ़ीसदी शफ़ी सम्प्रदाय के हैं। कुछ थोड़ेसे मेताविले सम्प्रदायके शिया उपरली गैलिलीमें रहते हैं। गावोंमें मुसलमान नारियाँ खेतीमें अपने पुरुषोंका हाथ बटाती हैं पर शहरोंमें वे बुरकेमें रहती हैं। अरबी या तो मदनी (शहरके रहनेवाले हैं), या फ़ेलाहीन (किसान), या बद्दू। बद्दू घुमक्कड़ हैं, अधिकतर अनेक जातियोंके, और उनमेंसे अनेक उन्हीं जगहोंमें अब बस गये हैं जहाँ कभी वे डेरे लगाकर टिका करते थे। अब वे अधिकतर ऊँट और भेड़ें पालते और पैदा करते है।

अरबोंकी पोशाक पाँच-छ वस्त्रोंसे बनती हैं—१. अबाया (जिससे हिन्दी एबा निकला है—ऊपरका चोग़ा-सा पहनावा जो घुट्टी तक बदनको ढके रहता है) २. लेफ़्फ़ा (लाल या अन्य रंगका वह चमकीला वस्त्र जो सिरको आच्छादित रखता है), ३. केफ़्फ़िए (श्वेत शिरोवस्त्र), ४. अगाल (शिरोवस्त्र को यथास्थान रखनेके लिए गोल, काली, मोटी डोरी जो अक्सर रेशमकी होती है) और ५. तारबूश (फ़ैज़) । इनके अतिरिक्त एक पाजामा-सा नीचे पहना जाता है जो प्रायः चुस्त ऊपर ढीला होता है ।

१९४६के जूनके बुलेटिनमें दिसम्बर १९४५ तककी आबादी इस प्रकार दी हुई है—१,८१०,०३७ । इनमेंसे १०३५०१२ मुसलमान (इनमें बद्दू शामिल नहीं) हैं । ५,५४,३२९ यहूदी हैं, और १,३९,२८५ ईसाई । शेषमें ६६'५५३ बद्दू हैं और १४,८५८ अन्य (बहाई, द्रूज़, मेताविले, और नौशेरी) ।

साधारण जनताकी ज़बान इब्रानी और अरबी है । प्रायः प्रत्येक यहूदी दोनों जानता है, साथ ही अँग्रेज़ी भी । इन तीन ज़बानोंके साथ ही अधिकतर शिक्षित फ्रेंच भी जानते हैं और अनेक अन्य विदेशी भाषाएँ भी । स्विस जनताकी तीन भाषाएँ जाननेके कारण प्रायः प्रशंसा की जाती है । परन्तु यहूदी इब्रानी, अरबी और अंग्रेज़ी मातृभाषाकी भाँति बोलते हैं और अन्य भाषाएँ जानने और बोलने वालोंकी तादाद बेशुमार है । और अब तो जो अनेक देशों और दिशाओंसे यहूदी लौट-लौटकर अपने प्राचीन देशमें जमा हो रहे हैं, स्पेनी और मिस्रीसे लेकर जर्मन-पोलीश-रूसी तक बोलनेवाले काफ़ी संख्यामें बढ़ गये हैं । यहूदियोंके उच्चारणमें टवर्ग नहीं और वे उसका तवर्ग द्वारा मधुर उच्चारण करते हैं ।

फ़िलिस्तीनके सिक्के अब अंग्रेज़ी सिक्के हैं । वहाँ भी अब पौंड चलता है जो प्रायः अंग्रेज़ी पौंडके ही बराबर है, परन्तु उसके अन्य अंश शिलिंग

आदि नहीं होते। पौंडके बाद पिएस्तर होते हैं। सौ पिएस्तरका एक पौण्ड होता है। इस तरह सिक्केकी चलनमें वहाँ मेट्रिक व्यवस्था क़ायम है।

यहूदी धर्म और संस्कृति अथवा जो साधारणत: 'जुडाइज़्म' कहलाता है, वस्तुत: उस धार्मिक-सांस्कृतिक रूपरेखाको कहते हैं जिसे यहूदियोंने छठी शती ई० पू० में अपने बाबुली प्रवासमें सँवारा और स्वदेश लौटकर विकसित किया। यहूदियोंका ज्ञान बाइबिलकी पुरानी पोथी (ओल्ड टेस्टामेण्ट) में संग्रहीत है। इस पोथीपर कुछ व्याख्यान और टीकाएँ भी हैं जो तालमुद और रब्बी-पुरोहितों द्वारा मुखरित हुईं। इन तीनोंका समाहार जुडाइज़्म है। पुरानी पोथीमें यहूदियोंके धार्मिक विश्वासका निचोड़ वह एकमात्र संसारका स्रष्टा और शासक यहोवा (ऋग्वैदिक यह्वा, यह्वे आदि) हैं जो साथ ही पुण्य और नेकीका उच्चतम आदर्श भी है।

यहूदियोंका जीवन १३०० ई० पू० के बाद, अर्थात् मूसाके देहावसानके पश्चात् उन्हींके बताये दस आदेशोंके अनुकूल चलने लगा। बारहों जातियाँ संगठित होकर विवाहादिमें अन्य जातियोंसे पृथक् हो गईं। इन्हीं जातियोंमेंसे कुछ अपने पड़ोसियोंकी देखा-देखी मूर्तिपूजा भी करने लगी थीं। मूसाके बाद आनेवाले महात्माओंने अपनी प्रजाको सद्धर्मपर चलनेकी सलाह दी और मूर्तिपूजाके विरुद्ध उन्हें सावधान किया। बाबुली प्रवाससे लौटकर तीतस्के विध्वंसके पूर्व यहूदी नेताओंने अपना धर्म-साहित्य एकत्र कर लिया। मूर्तिपूजाका अन्त हो गया और बाइबिलकी पुरानी पोथीका आविर्भाव हुआ। इसमें मूसाकी पाँच पुस्तकें और भविष्यद्वक्ताओंकी उन्नीस पुस्तकें संग्रहीत हुईं। उन्हींके साथ फिर हिरोदके समयके पवित्र अभिलेखोंकी बारह पुस्तकें भी शामिल कर ली गईं। इनके अतिरिक्त कुछ और भी यहूदियोंका प्राचीन साहित्य है पर उसे 'प्रकाशित' होनेका श्रेय प्राप्त नहीं। इनका मन्दिर सिनागाग कहलाता है और पुरोहित रब्बी कहलाते हैं।

कालान्तरमें यहूदियोंको अपना देश छोड़कर अन्य देशोंकी शरण लेनी

पड़ी और वे इतस्ततः बिखर गये। परन्तु उनका धार्मिक साहित्य ही उन्हें राष्ट्रका रूप देता रहा। अब फ़िलिस्तीन उनके पास न था परन्तु उनकी पुरानी पोथी फिर भी उनके पास थी जिसने उनमें राष्ट्रभावनाको जाग्रत रक्खा। वे स्वदेशसे बिखरकर भी आपसमें इसी पुस्तकके ज़रिये बँधे रहे। संसारकी कोई दूसरी जाति नहीं जिसने इतिहासमें इतना कष्ट उठाया जितना यहूदियोंने, परन्तु जितनी इनमें संयुक्त हो जानेकी शक्ति है उतनी और किसी जातिमें नहीं। और आज ये अपने देशमें लौटकर एक सुन्दर और सबल पार्थिव राष्ट्रका निर्माण कर रहे हैं।

जब संसारमें राष्ट्रीयताकी लहर चली तब स्वयं यहूदी विदेशोंमें उससे वंचित न रह सके। उनमें भी अपने प्राचीन देशको लौटकर अपना राष्ट्र सबल करनेका जोश आया। और उनमें ज़ायोनिज़्म या ज़ायनवाद ज़ोर पकड़ने लगा। जुरूसलमके पवित्र पर्वत ज़ायन (या सायन) के नामपर उन्होंने अपना संगठन किया और रूसी यहूदी विद्यार्थियोंके ज़ियानिस्ट संगठनने १८७० और १८९६ ई० के बीच 'पवित्र देश'में अनेक बस्तियाँ बसाईं।

डा० थ्योडोर हर्ज़ेल और प्रथम ज़ियानिस्ट काँग्रेसके आन्दोलनने यहूदी 'स्वदेश' की माँग प्रबल की। साथ ही ज़ियानिस्ट विश्व-संस्थाकी नींव पड़ी जिसने फ़िलिस्तीनमें यहूदी बस्तियोंका निर्माण आरम्भ किया। चारों-ओर नये यहूदी गाँव खड़े होने लगे, यहूदी स्कूल खुलने लगे, बाइबिलकी इब्रानी लौटकर बोली जाने लगी। रोथशील्ड और बैरन हिर्शके दानोंसे इस दिशामें राष्ट्रीय सक्रियता और बढ़ चली।

लड़ाईके बाद फ़िलिस्तीनपर अंग्रेज़ी 'मैण्डेट' के क़ायम होते ही वहाँ यहूदियोंके 'पुण्य-क्षेत्र' की माँग भी स्वीकार कर ली गई। इस मैण्डेटका यह एक ध्वनित सिद्धान्त हो गया कि वह पुण्य-क्षेत्र क़ायम करनेके सारे आर्थिक, राजनीतिक और वैधानिक साधन शीघ्र प्रस्तुत कर दें।

शीघ्र यहूदी-राष्ट्रीय-फण्डकी प्रतिष्ठा हुई और भूमि ख़रीदी जाने

लगी। अनन्त धन इस दिशामें एकत्र कर लिया गया। देश-विदेशसे यहूदी धन बरसने लगा और ख़रीदी जमीनपर बसनेवाले समुद्रपारसे स्वदेश लौटने लगे। इस दिशामें धनदानसे भी कहीं अधिक कार्य जनताके त्याग और सेवाने किया। नवयुवकों और नवयुवतियोंके अनेक संघोंने दिन-रात अकृत्रिम संकल्पसे काम किया और इसका परिणाम यह हुआ कि फ़िलिस्तीन (इसरायल) आजके संसारका सबसे तरुण राष्ट्र स्वतन्त्रतः खड़ा है।

अस्तु, दो मोटरें प्रस्तुत हुईं। दोनों सुखद थीं, एक सुन्दर लम्बी बड़ी सात व्यक्तियोंके बैठने लायक़ कार थी, दूसरी स्टेशन वैगन। पसेन्जर और कप्तान कारमें बैठे, अन्य वैगनमें। आने-जानेका भाड़ा फ़ी आदमी साढ़े चार पौण्डके अन्दाज़ अर्थात् प्रायः ७६ रु० ३ आ० देने पड़े।

ठीक साढ़े आठ बजे हम जुरूसलमके लिए रवाना हुए। ड्राइवर ग़ज़बका पथ-प्रदर्शक था। यहाँ यह बता देना उचित होगा कि इसरायलका मोटर ड्राइवर हमारे ग्रेजुएटोंसे कहीं अच्छा पढ़ा-लिखा होता है और अँग्रेज़ी और फ्रेंच तो वह अँग्रेज़ अथवा फ्रांसीसीसे किसी क़दर घटकर नहीं बोलता। फिर इसरायलके सम्बन्धमें तो उसकी ऐतिहासिक और सामाजिक जानकारी स्तुत्य है।

उनके प्रदर्शनकी मंज़िलोंको कर्णगत करते हम कारमेल पर्वतकी शृङ्खला और दाहिनी ओर समुद्रके बीच समरियाके मैदानमें दक्खिन जुरूसलमकी १७५ किलोमीटर (प्रायः डेढ़ किलोमीटरका एक मील होता है) की राह तय करते चले। सड़क समुद्रके तटसे लगी ही हुई थी और मीलों हमने सागरकी वायुका सुखद आस्वादन किया। नील सागरसे उठती सीकरसनित वायु हमारा रोम-रोम पुलकाने लगी। और हम वायुगतिसे, प्रायः ७०-८० मील फ़ी घण्टेकी रफ़्तारसे राह तै करने लगे।

राहमें कहीं भी नज़र डालनेसे स्पष्ट हो जाता था कि इसरायलका तरुण राष्ट्र अपनी योजनाओंको रूप देनेमें व्यस्त है। सर्वत्र खेत बनाये

जा रहे हैं, बस्तियाँ बसाई जा रही हैं, पेड़ लगाये जा रहे हैं और सर्वत्र मशीनका दानव मानवकी सूझ और व्यवस्थाके इशारेपर नाच रहा है। इसरायल नया है, सर्वथा नया। उसके नगर-क़स्बे नये हैं, गाँव-बस्तियाँ नई हैं।

गाँव तो कहने मात्रको गाँव हैं। उनमें नगरकी प्रायः सभी आवश्यकताएँ प्राप्य हैं—बिजली, नल आदि सभी। लगता है, छोटे होने मात्रसे वे गाँव कहलाते हैं। लौहमय सिमेंट द्वारा बल्लियोंपर खड़ा दो कमरोंका घर इतना स्वच्छ होता है कि जहाज़का केबिन जान पड़ता है। उसके साथ उसके किचन, गुसलख़ाना, आदि सभी होते हैं और प्रत्येक गृह दूसरेसे काफ़ी दूरीपर खड़ा है, अपनी ज़मीनपर, और ये सारे घर इतने दूर-दूर हैं कि इतनी तेज़ चलनेवाली कारसे भी गिने जा सकते हैं।

नगर गावोंसे काफ़ी बड़े हैं, इनकी तादाद भी काफ़ी हैं और ये पूरबके किसी तरह नहीं जान पड़ते। ये यूरोप या अमेरिकाके टुकड़े जान पड़ते हैं और टुकड़े भी ऐसे जो वहाँके लिए भी नये माने जायँ। ये छोटे हैं पर इनके निवासी विद्या-बुद्धिमें संसारके किसी नगरमें अपनी विचक्षणताकी एकता सिद्ध कर सकते हैं।

गाँवों और नगरोंके बाहर चारों ओर सड़कके दोनों ओर दूर तक अंगूरी लताओं और तरकारियोंके खेत हैं और मीठे नीबू तथा सन्तरे आदि फलोंके पेड़-पौधे। हैफ़ा सन्तरोंके लिए विशेष प्रसिद्ध है। एक विशेष उल्लेखनीय बात जो इन खेतों या बग़ीचोंके सम्बन्धमें है वह है इनकी सिंचाईकी व्यवस्था। वह बड़े मार्केकी है। जैसे क्यारियोंमें पौधे खड़े हैं वैसे ही क़तारोंमें पम्प-पंक्तियाँ भी लगी हैं। एक-एक पंक्तिमें अनेक, कोई बीसों, दो मुहें नल लगे हैं जो निरन्तर बिजलीसे घूमते रहते और अपने फ़ौवारोंसे दोनों ओरके पौधे सींचते रहते हैं। इन पौधोंके, अनावृष्टिके कारण, कभी सूखनेका डर ही नहीं है। राहमें दूर तक हम इस सिंचाईकी व्यवस्थाको उत्कण्ठासे देखते रहे।

आगे समरियाका मैदान था जिसका संकेत ऋग्वेदमें 'समर्या-समर्या' पाठमें आया है। समरियाके अतिरिक्त इस प्रदेशका विशिष्ट और नया नगर हेदेरा है जहाँ प्रायः दस बजे पहुँच हमने जलपान किया। मित्रोंने केक-सैंडविच आदि खाई, मैंने अस्वस्थ होनेके कारण केवल लेमनेडसे सन्तोष किया। आगेका रास्ता बीहड़ था, पहाड़ोंके भीतरसे होता हुआ। इधरसे चलते जान पड़ा कि देश कितना पहाड़ी, कितना पथरीला है। पर साथ ही यह कि इसरायलका निवासी कितना सक्रिय, कितना उद्योगशील है कि जहाँ ज़रा भी ज़मीन कामकी हुई उसे जोत-बो लेता है और वह अत्यन्त उपादेय आधुनिक कृषि-साधनोंसे, जिससे भूमि शीघ्र सोना उगलने लगती है। वास्तवमें तो वह पहाड़ोंपर तक खेती कर लेता है। कम-से-कम पहाड़ोंके जैतूनी बाग़ तो निश्चय उतने ही कामके हैं जितने बहुल।

अधिकतर मार्ग पहाड़ोंके बीचसे, उनकी शृङ्खलाओंके बीचसे ही होकर गया था। बीच-बीचमें अरबोंके अनेक पुराने गाँव थे। उनके घरोंके पतले दरवाज़ों और छोटी खिड़कियोंको देख इसरायलके ताज़े देखे नये गाँवोंकी याद आ जाती थी। अरबोंके गाँव अब इसरायलके अधिकारमें हैं और अरब इसरायलके निवासी होकर रहते हैं। पहाड़ोंके नगर-गाँव प्रायः सभी पत्थरके बने हैं, अनगढ़े पत्थरके, जो पहाड़ोंसे आवश्यकतावश तत्काल निकाल लिये जाते हैं। चूनेकी तरह सफ़ेद साबूनी पत्थर—सोप-स्टोन।

यात्राके मार्गमें बराबर ऐसे गाँव—बड़े और छोटे—देखनेको मिले जो वीरान हो गये थे, जिन्हें पिछली लड़ाईमें अरबों और यहूदियोंने बरबाद कर दिया था। बमबाज़ीने उनके घरोंकी छतें उड़ा दी थीं, मशीनगनोंने उनकी दीवारें चलनी कर दी थीं। अरबोंको यह पसन्द न था, न अब है कि उनकी उजड़ी कङ्काल दुनियाके बीच यहूदियोंका खुशहाल—हँसता राष्ट्र खड़ा हो। लेबनान, सीरिया, ट्रान्स्जार्डन, पासके सभी राज्य अरबी

हैं, दूरके इराक़, अरब और मिस्र भी अरबी, और और दूरके तुर्की तथा ईरान, अफ़गानिस्तान तथा पाकिस्तान भी कम-से-कम मुसलमान।

इस पहाड़ी राहसे तेल अवीवका नया विशाल नगर दूर दाहिने छोड़ते हम दोपहरके समय जुरूसलम पहुँचे। क्या लिखूँ क्या मनकी स्थिति थी। महर्षि ईसाकी स्मृति बलवती हो उठी, जिसने संसारके दुःखको दूर करनेका प्रयास किया, ग़रीबोंकी दुनियाको आशासे प्रकाशित किया, दया और प्रेमका सन्देश संसारके कोने-कोनेमें भेजा ओर अन्तमें स्वयं जो शूलीपर अपने आदर्शोंकी रक्षा और सत्यके गौरवके लिए चढ़ गया। उसकी याद मेरा रोम-रोम पुलकित करने लगी। मरते दम तक जिसके मनमें अपने विपक्षियों और हत्यारों तकके प्रति सिवा दयाके अपकारकी भावना न आई और जिसने शूलीपर चढ़ अपनी प्रार्थनामें उनके लिए भी भगवानसे क्षमा माँगी—भगवान इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये अज्ञानी हैं, नहीं जानते! वह कितना महान् रहा होगा। क्यों न सत्य और अहिंसाके व्रती गाँधीको वह अमर आत्मा अपनी ज्योतिसे आलोकित कर दे। भारतीयको अपनी संस्कृतिके नाते तीन महान् पुरुष विशेषतः प्रभावित करते हैं—बुद्ध, ईसा और गाँधी।

ईसाकी स्मृतिसे मेरा मन दो हज़ार वर्षों पूर्वके उस प्राचीन जुरूसलम-में जा लगा जिसकी हवामें उसकी आवाज़ बसी थी, जिसे मैं इस समय सदियों पार सुन रहा था। जुरूसलमका वह प्राचीन मन्दिर, पुरोहितोंका वह घटाटोप, अमीरोंका वह ऐशपरस्त जीवन, और उनके बीच ईसाकी आवाज़, ग़रीबोंको सान्त्वना, इसी पृथ्वीपर भावी स्वर्गकी चेतना, और पाइलटका पुरोहितोंके अभियोगपर प्राणदण्डकी आज्ञा, पुरोहितों और रोमन सैनिकोंका मिला-जुला अट्टहास, दुर्बलयष्टि ईसाका गिरते-पड़ते गिलगोथाके शिखरकी ओर क्रूसके साथ प्रयाण, रोमन सैनिकोंका काँटेदार ताज द्वारा ईसाको व्यंग्यमय 'सीज़र' कहकर वीभत्स और घृणित विनोद, शूली और अन्ततः निर्वाण—सभी एक-एक कर नेत्रोंके सामने उठ आये।

आजकी जुरूसलमकी नई दुनियामें उस महात्माकी आवाज़ नहीं, उसके नये कलेवरमें उसके आशान्वित स्वर्गकी कमनीयता नहीं, पर उसके कण-कणमें, उसकी गर्दमें वह पुकार निश्चय निहित है जो आज भी समझनेवालोंको अनमना कर देती है। काश, वह आजकी झूठ और बेइमानीसे आलोकित दुनियाके बीच होता और उसके रक्तसने हथकण्डोंको देख पाता! पर अच्छा है वह आज नहीं है वरना उसकी करुण आत्मा उस दृश्यको न देख पाती जो आजका शैतान ग़रीबों और सर्वहारोंपर ढाये जा रहा है, जो आज उसीका नाम ले-ले कर, उसीके गिरजेकी बुर्ज़ियोंके नीचे वर्ण-भेद और सभ्यताके नामपर मानवताका गला घोंट रहा है, उन सारी मान्यताओंका ख़ून कर रहा है जो उस महामनाको प्रिय थीं, उसकी इष्ट थीं, उसका सर्वस्व थीं।

नगरके बीचसे, उसे लाँघते और पीछे छोड़ते, पहले उस बेथेलहेमकी ओर प्रायः ६ मील दक्खिन बढ़ गये जहाँकी एक घुड़सालमें ई० पू० ४ में उस महात्माका जन्म हुआ था। उस घुड़साल और रोमके राजप्रासादमें कुछ ही काल बाद युद्ध ठन गया था जिसमें घुड़साल जीता था और राजप्रासाद अपनी सारी सम्पदा और वैभवके साथ भूलुंठित हो गया था। हम उसी बेथेलहेमकी ओर बढ़े जिस ओर कभी तारोंकी छाँवमें तारोंके संकेतपर पूरबसे बुद्धिमान बढ़े थे, जब बेथेलहेमकी उस घुड़सालने सुयश पाया था।

बेथेलहेम इसरायलकी ओरसे नहीं जाया जा सकता। वह अरबी हलक़ेमें है, ट्रान्स्जार्डनकी अमलदारीमें। हमने एक बड़ी इमारतपर खड़े होकर उसे थोड़ी दूरसे देखा और उस डेड-सी (मृतसागर) को भी जिसकी सतह संसारके सारे समुद्रोंकी सतहोंसे नीची है। गैलिलीकी झीलकी तरह यह लगभग ५० मील लम्बा और १० मील चौड़ा है। पास ही मगीका कूप या नक्षत्रका कूप है जहाँ पूरबके तीनों बुद्धिमानोंने उस नक्षत्रको

फिर देखा था, जो, कहते हैं, पहले एक बार उनके घरोंपर चमका था और अब उन्हें ईसाके जन्मस्थानकी ओर लिये जा रहा था।

दाहिने राखेलकी मज़ार है, याकूबकी पत्नी राखेलकी, जो बेनयामिन-को प्रसव करते ही मर गई थी। बेथेलहेम समुद्रकी सतहसे प्रायः २३३१ फ़ीट ऊँचाईपर है, पहाड़ी भूमिपर। इसकी आबादी क़रीब ८००० है जिसमें सिवा ५०० मुसलमानोंके सभी ईसाई हैं। यहीं दाऊदका निवास था। इसी दाऊदके कुलमें यूसुफ़का जन्म हुआ जो ईसाकी माता मरियम-का पति था और नज़रथमें बढ़ईका काम करता था। ईसाका जन्म बेथेलहेममें इस कारण हुआ कि हाकिमोंने मर्दुमशुमारीका हुक्म दिया था और सबको अपने-अपने गाँव-नगर जाकर अपनी गणना करानी होती थी। उसीसे यूसुफ़ भी अपनी मरियमको लेकर बेथेलहेम आया था। सरायमें स्थानकी कमी होनेके कारण नवजातको कपड़ोंमें लपेटकर अस्तबल-की एक चरनमें रख दिया गया था। वहाँ आज अनेक प्रकारके पौराणिक जादू-मन्तरका ज़ोर है। प्रसवकी गुफ़ा भी पास ही दिखाई जाती है।

बेथेलहेमके पूरबमें एक कोणदार शिखरवाला पर्वत है, प्रायः २७५ फ़ुट ऊँचा। यह 'स्वर्ग पर्वत' कहलाता है। हेरोदने इसीपर अपना ग्रीष्म-प्रासाद और एक दुर्ग बनवाया था जिससे इसका दूसरा नाम हेरोदियम भी पड़ गया है। हेरोद मरा तो ज़ेरिकोके अपने शीतप्रासादमें, पर दफ़नाया यहीं गया था। हेरोदियममें उसके प्रासाद और दुर्गके भग्नावशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

और यह भग्न विशाल इमारत जिसकी छतसे हमने बेथेलहेम और हेरोदियम, डेडसी और टान्स्जार्डन देखा! इसकी छत टूटी हुई है, दीवारें जैसे-तैसे खड़ी हैं और इन दीवारोंपर एक इंच ऐसी जगह नहीं है जो गोलों और गोलियोंसे न छिदी हो। लड़ाईके ज़मानेमें अरबोंने चारों ओरसे इसपर गोलाबारी कर इसे चलनी कर दिया है। यह इमारत बच्चोंके लिए थी पर लड़ाई तो लड़ाई ही है, क्या बच्चे क्या औरतें, क्या साधु क्या औलिये!

इसी इमारतमें खाना समाप्त कर हम फिर जुरूसलम लौटे। दोपहर हो चुकी थी, अभी देखना बहुत कुछ था। जुरूसलम प्राचीन कालकी ही भाँति आज भी जूदियाकी राजधानी है। संसारके प्राचीनतम नगरोंमें एक यह 'शान्तिका नगर' है। यह इसका शाब्दिक अर्थ है, यही इसके महान् ईसाने संसारको सन्देश रूपमें दिया था। परन्तु इसी 'शान्तिके नगर' में पत्थरको भी पिघला देनेवाले दर्दनाक़ नज़ारे घटे पर संगदिल इन्सान न पसीजा। कितनी ही बार यह नगर स्वयं उजड़ा, बसा, जला, बना। पहले-पहल इस नगरका उल्लेख जो बाइबिलमें हुआ है वह इब्राहिम (अब्राहम) के स्वागतमें है जब उसके राजाने उस महात्मा और इब्रानी जातियोंके पूर्व-पुरुषका रोटी और शराबके साथ स्वागत किया था। इब्राहिम बाबुली सम्राट् हम्मुराबीका शायद समकालीन था, प्रायः २००० ई० पू०। मिस्रके प्राचीन नगर तेल-एल-अमरनाके 'पत्रों' में भी इस नगरका हवाला मिलता है जो चौदहवीं सदी ई० पू० के हैं और कीलनुमा अक्षरोंमें बाबुली जबानमें लिखे हैं।

सुलेमान (सोलेमन) के पिता दाऊद (१०१३–९७ ई० पू०) ने फिर इसे जीतकर ज़ायन पर्वतपर अपने नामका नगर बसाया। यहींसे इस वंशके अन्य राजाओंने भी शासन किया। नगरके मोरिया पर्वत-शिखरपर सुलेमानने अपना विशाल मन्दिर बनवाया। उसके मरते ही मिस्री सम्राट् शिशाकने जुरूसलम और उसके मन्दिरको लूटा और शीघ्र इस राज्यका उत्तरी भाग स्वतन्त्र इस्राइलका राज्य बन गया। छठी सदी ई० पू० में ख़ल्दी (बाबुली) सम्राट् नेबूख़दनेज़्ज़ारने फिर इस विशाल नगरको लूटा और क़त्लेआम कर यहाँके प्रमुख निवासियोंको क़ैदकर बाबुल ले गया। ईरानी सम्राट् कुरुष्की कृपासे यहूदी फिर स्वदेश लौटे और उन्होंने इस अभागे नगरका पुनर्निर्माण किया। यही लूटमारकी दशा रोमनोंकी विजय और ईसाकी शूली और बाद तक चलती रही। अन्तमें ईसाई रोमनोंने चौथी सदी ईस्वीमें इसे कुछ शान्ति दी। पर विजयी अरबोंने इसे फिर

जीत लिया। फिर क्रुसेडोका ज़माना आया, फिर तुर्कों, फिर अँग्रेज़ोंका। और आज यहूदियोंका अपना जुरूसलम फिर अपने प्राचीन और पुरातन सही अधिकारियोंके सायेमें नये ज़र्क-वर्क़ नई चमकके साथ नया खड़ा है, पुरानेको अपने नीचे दबाये या उधर अरबोंकी चङ्गुलमें छोड़े। आज इस नगर्में, या नगरके इस नये इसरायली हिस्सेमें, मुसलमान कम हैं (हैं भी तो इसरायलके नागरिक), ईसाई हैं और शेष सारे यहूदी। आबादी प्रायः ढाई लाख है।

शहरको तीन दीवारें टूटी-फूटी दशामें घेरती हैं। पहली दाऊद और सुलेमानके नगरकी हैं, माउण्ट ज़ायनसे मोरिया तक; दूसरी वह जिसे बाबुली क़ैदसे लौटकर यहूदियोंने पहलीकी ही नींवपर खड़ी की थीं जिसके पास ही हेरौद, हिप्पकस, हसमोनी, मिरियन आदिकी बुर्जियाँ खड़ी हुईं; और तीसरी उत्तरी दीवार जिसे पहली सदी ईस्वीमें अग्रिप्पा प्रथमने खड़ा किया।

प्राचीन जुरूसलम चार पहाड़ियोंपर बना है—अक्रानामकी उत्तर-पश्चिमी पहाड़ी, पश्चिमी पहाड़ी, जाययन, पूर्वी मोरिया। चौथी पहाड़ी बेज़ेथा पूर्वी पहाड़ीका ही प्रसार है। ये २३०० फ़ुटसे अधिक ऊँची हैं। मरियम-दरवाज़ेसे जो सड़क हिरोदी दुर्गके भग्नावशेषोंकी ओर जाती है उसकी दाहिनी ओर 'दर्दकी राह' (वाया दोलोरोज़ा) है जिससे ईसा गोलगोथाके वधस्थलको अपना क्रूस ले गये थे। पास ही वह गिरजाघर है जिसकी फ़र्श मोज़ाइक (पच्चीकारी) की है और जो पित्रोरियम अर्थात् पाइलेटका न्यायमन्दिर कहलाता है। सम्भवतः इसी स्थलसे उसने ईसाके वधका अपना निर्णय सुनाया था।

गोलगोथाकी पहाड़ीपर प्रसिद्ध क़ब्रवाला गिरजाघर है जो, कहते हैं, ईसाकी शूलीके स्थानपर खड़ा है। सत्य चाहे जो हो यह मानना होगा कि यदि ईसाकी कहीं क़ब्र रही हो तो उसे निश्चय यहीं कहीं होना

चाहिए। इसी स्थानपर रोमन कोन्स्तानतीनकी माताने भी गिरजाघर खड़ा किया था।

इसी पुराने जुरूसलममें यहूदियोंकी पवित्र 'रोनेवाली दीवार है।' यह दीवार वास्तवमें मन्दिरके क्षेत्रको घेरनेवाली प्राचीन दीवारका ही पश्चिमी भाग है। इसी दीवारके नीचे खोदते हुए पुराविद् वारेनने सभ्यता-की उन्नीस तहें ऊपर कर दी थीं जिनमेंसे सबसे निचली सुलेमानके समय की अर्थात् दसवीं सदी ई० पू० की थी। यह दीवार यहूदियोंके लिए अत्यन्त पावन है और यहाँ वे नित्य इबादत करते हैं। मन्दिरके नाशके दिन प्रतिवर्ष वे यहाँ धाड़ें मार-मारकर रोते हैं और जेरेमियाकी प्रार्थना दुहराते हैं।

मोरिया-पहाड़ीपर सुलेमानने अपने इतिहासप्रसिद्ध मन्दिरका निर्माण कराया जिसे उसकी मृत्युके बाद मिस्री सम्राट् शिशाकने लूटा और छठी सदी ई० पू० में जिसे जुरूसलमके साथ ही नेबूखदनेज्ज़ारने जला डाला। यह पर्वत यहूदियोंके लिए अत्यन्त पुनीत है।

दोपहरके बाद हम माउण्ट ज़ायनपर चढ़े, ज़ायनके पर्वतपर ही दाऊद आदिके गढ़में। कारमेंसे ही देखा कि सामने दूरकी दीवारपर बन्दूक़ लिये अरब प्रहरी खड़ा है। गाइडने बताया कि उधरका भाग अरबोंके अधिकारमें है और यात्रियों तकको उस दीवारपर बैठे-बैठे ही अपनी गोली-का शिकार बना देना उस अरबकी अपनी इच्छापर निर्भर करता है। सहमे पैरों हम पहाड़ीपर चढ़े। पहाड़ीके प्रायः सारे भागोंमें चारों ओर कटीला तार दौड़ता है, भीतर बाहर, सर्वत्र, और जगह-जगह भीतरी सहनमें भी दाहिने-बायें बग़ीचे और रास्तोंमें भी दोनों ओर बीसों दफ़े 'गाइड'ने हमें सावधान किया कि हम सम्हलकर चलें और तारोंको न लाँघे क्योंकि उधर सर्वत्र माइन (बारूदी विस्फोटक) बिछी हुई है, जाने कब स्पर्श पाते ही भड़क उठे। अरबोंने लड़ाईके ज़मानेमें वहाँ माइन बिछा दी थी जो आजतक साफ़ न हो सकी। और यह ज़ायनकी पहाड़ी कभी यहूदियोंके
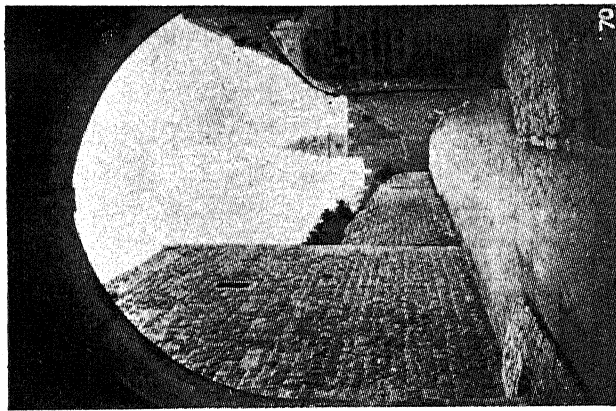
पवित्र पर्वत : ज़ायनका रास्ता
जुरूसलमका प्राचीन भाग
एक दीवार इस्रायलकी दूसरी ट्रान्सजार्डनकी
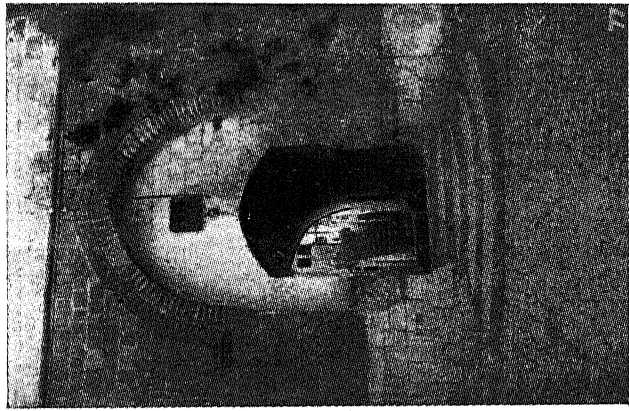
जुरूसलम—यहाँ ईसाने अपना अन्तिम भोजन किया था ।
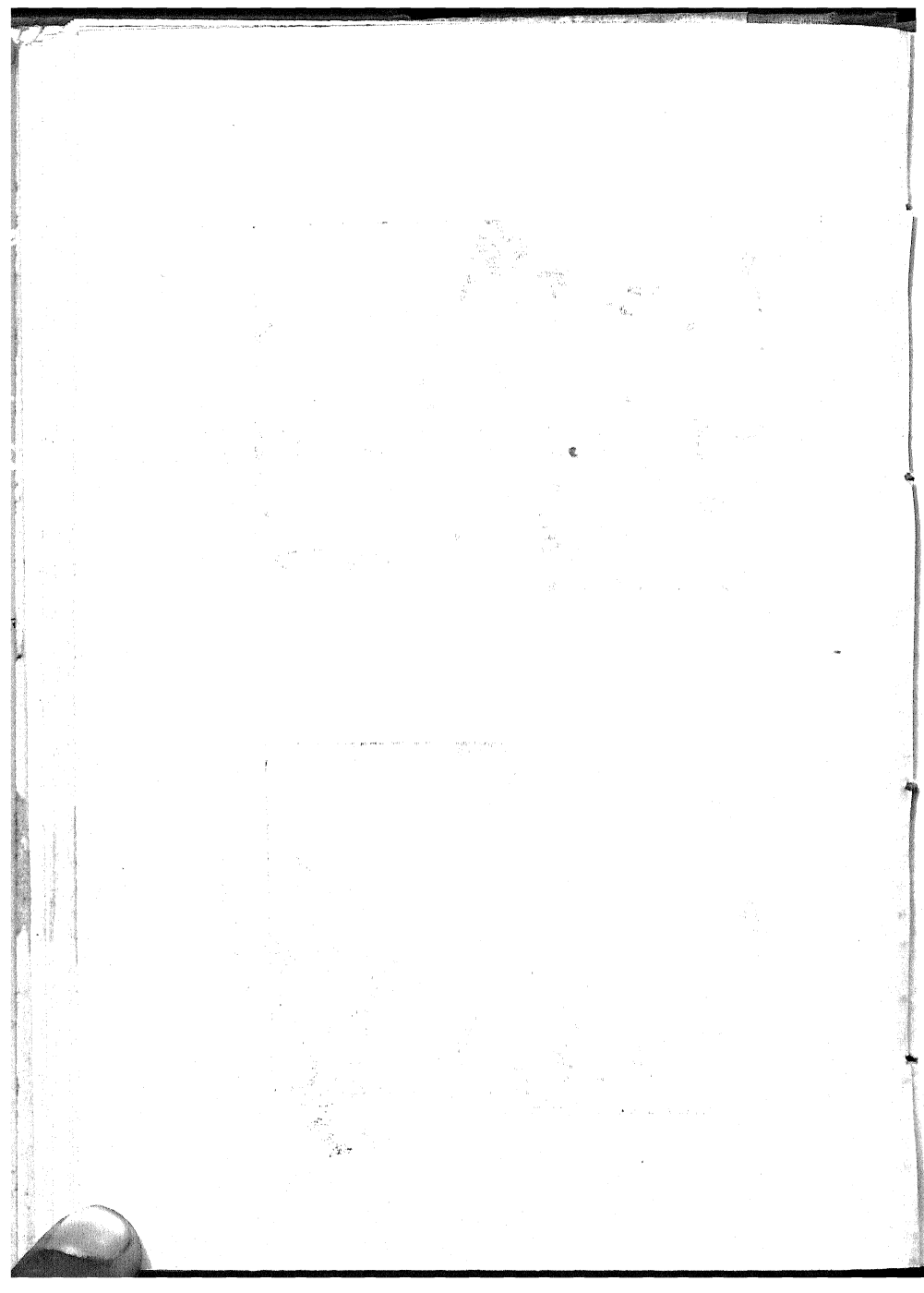
अधिकारमें, कभी अरबोंके हाथ आती-जाती रही। पर यहूदियोंने जो उसपर आते-जाते अधिकार क़ायम रखा तभी वे जुरूसलमको भी अपने हाथमें रख सके।

यह पूरी पहाड़ी दाऊद और सुलेमानकी प्राचीन दीवारोंके अन्तर्गत थी। यहीं दाऊदने अपना नगर बसाया। यहीं वह पवित्र कमरा देखा जो ईसाका 'अन्तिम-भोजन वाला कमरा' कहा जाता है, जहाँ उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा था कि 'तुममेंसे एक कोई मुझे पकड़वायगा।' इमारत पुरानी है परन्तु यह दो हज़ार वर्ष पुरानी है, यह मानना कठिन है। पर हाँ, इसे माननेमें आपत्ति नहीं हो सकती कि यद्यपि यह कमरा नहीं, यह स्थल 'अन्तिम-भोजन'का हो सकता है।

पास ही दाऊदकी क़ब्र है जिसपर अब एक मक़बरा बना हुआ है। यही दाऊदकी वास्तविक क़ब्र है, इसे स्वीकार करनेमें भी आपत्ति हो सकती है पर निश्चय वह स्थल कहीं आस-पास ही होगा, क्योंकि सारी दाऊदी इमारतें प्रायः इसीके समीप हैं। ऊपर चढ़कर नये-पुराने शहरपर एक नज़र डाली, हिब्रू विश्वविद्यालय दूरसे देखा और अरबोंकी अमलदारीमें खड़ा प्राचीन जुरूसलमका कुछ मार्ग, और नीचे उतरा। वहाँसे उसी क्षेत्रमें कुमारी मेरीकी क़ब्रवाला गिरजा देखा, सुन्दर हालका बना गिरजा, जिसको ईमानदार अमेरिकन पादरीने बताया कि यह कहना कठिन है कि पवित्र कुमारीकी क़ब्र यही है। फिर भी नीचे तहखानेमें ले जाकर उन्होंने हमें जो कुछ दर्शनीय था, दिखाया।

हम नये शहरको लौटे। एकाध पुस्तकें और चीज़ें ख़रीदीं। तीसरा पहर हो चुका था, चौथेका आरम्भ था। मैंने डिनर खाया, खानेकी स्थितिमें न था। पासकी एक दुकानमें घुसा। बेचनेवाली महिलाने पूछा—'हिन्दुस्तानी ?' कहा, 'हाँ',। 'हमारी दूकानमें भी एक भारतीय लड़की थी, बम्बईकी, जो आजकल छुट्टीपर है, पेरिस गई हुई है। कुछ जुरू-

सलमका तोहफ़ा ले लो।' मित्रलोग यादगारें खरीद रहे थे। मुझे जो उस महिलाने चुप देखा तो कहा—'न सही जुरूसलमके नामपर, उस भारतीय लड़कीके नाते कुछ ले लो जो यहाँ काम करती है।' फलतः मैंने भी एक चाँदीका लटकन कुछ रुपयोंमें खरीद लिया।

नया शहर, जैसा ऊपर कह चुका हूँ, यूरोप-अमेरिकाका टुकड़ा है और वह भी पिछली सदीके यूरोप-अमेरिकाका नहीं, ताज़ा आजका। नगरके नर-नारी सर्वथा साहब हैं। मर्द और औरतें सभी यूरोपीय वेश-भूषा धारण करते हैं। स्वच्छ सुघड़ सबल युवतियाँ तरुणोंके साथ इधरसे उधर टहलती आ-जा रही हैं। जीवन चारों ओर लहरें मार रहा है। जिधर देखिए उधर क़हक़हे लग रहे हैं, चुहलबाज़ियाँ चल रही हैं। ये ही तरुण-तरुणियाँ प्रौढ़-वृद्ध युद्धके समय सर्वथा कठोराकृति और कर्मठ गम्भीर हो जाते हैं। जिस रेस्तराँ (वियेना) में हमारे साथियोंने खाना खाया था और जहाँ मैंने भी आइसक्रीमका एक प्लेट लिया था वहाँ लोग शतरंज आदि भी खेल रहे थे। उससे मुझे प्राचीनकालकी सरायों या यूरोपीय मध्यकालीन 'टेवर्नों' की याद आगई।

सन्ध्या समय जेरिकोको तीस-चालीस मील दाहिने पूर्व-दक्खिन छोड़ते हम हैफ़ाकी ओर लौटे। जेरिको भी बड़ा प्राचीन स्थान है जो अब ट्रान्सजार्डनके हिस्सेमें पड़ गया है। मैंने इस स्थानका नाम सुना था पर अत्यन्त अस्पष्ट रूपसे। परन्तु बच्चेको सुलाने या फलका रस पिलानेके लिए जब मेरी पत्नी जेरिको चलनेका गाना गातीं तब मुझे उसका विशेष ज्ञान हुआ। मैंने फिर भी उनसे कभी पूछा न था कि आख़िर यह जेरिको है क्या बला। इतना मुझे ज़रूर कभीका धुँधले रूपमें स्मरण था कि रोमन एन्तनीने अपनी मनस्विनी और काम्य प्रेयसी मिस्री रानी क्लियोपात्राको जेरिकोका ज़िला जीतकर दे दिया था। पर साथ ही यह भी धारणा थी कि यह ज़िला कहीं मिस्रके आस-पास ही है। अब साथ ही यह भी जाना कि क्लियोपात्राने जेरिकोका उपहार स्वीकार कर उसे हेरोदको बेच दिया था,

जहाँ उस यहूदी नृपतिने अनेक सुन्दर इमारतें बनवाई थीं। अस्तु, जेरिको-को दाहिने-पीछे छोड़ते हम हैफ़ा लौटे।

राहमें हमें तेल अबीव देखना था, जो इसरायलका जुरूसलमके बाद दूसरा प्रसिद्ध नगर है, बिलकुल नया, अभी हालका बना, नवीनतम अमेरिकाका एक तराशा टुकड़ा, समुद्रके तटपर खड़ा प्रायः ढाई लाखकी आबादी लिये इसरायलकी राजधानी। यही तेल अवीव है।

प्रायः पाँच बजेके बाद हम जुरूसलमसे रामले-लिद्दा-जफ़्फ़ाकी राह शेफ़ेलाके उपरले मैदानोंसे होते तेल-अवीवकी ओर चले। सन्ध्या सुहावनी थी। वायु मनोरम, और कारकी तेज़ीसे सामनेकी हवा चित्तमें स्फूर्ति भरने लगी।

लगभग तीस मीलके बाद हम उमैयद अब्दुल मालिकके बेटे सुल्तान सुलेमान प्रथम द्वारा ७१६ ई० में वसाये रामले पहुँचे। नगर मस्जिदोंसे भरा है। आगे थोड़ी दूरपर लिद्दा है। यह भी पुराना शहर है। इसकी आबादी लगभग २० हज़ार है। यहाँके निवासी अधिकतर मुसलमान हैं। यहाँ हवाई अड्डा भी है। अँधेरा होनेके बाद हम तेल-अवीव पहुँचे जो जुरूसलमसे लगभग ४५ मील उत्तर-पश्चिम है। यह हालका ही बसा है, १९०९ का, और पीछेका, मध्य-पूर्वमें आर्थिक संस्थाओं बैंकिंग आदिके लिए यह प्रधान केन्द्र है। यह बन्दरगाह भी है पर ऐसा बड़ा या उत्तम नहीं जैसा हैफ़ा और जहाज़ोंके लिए कोई पनाह न होनेके कारण उनको खुले समुद्रमें ही खड़ा रहना होता है।

हमने अनेक बार इस सुन्दर नये नगरकी सड़कोंका फेरा किया। लोग ख़ुशहाल नज़र आ रहे थे और अधिकतर रेस्तरोंमें चाय-काफ़ी पी रहे थे। अनेक रेस्तराँ खुले आसमानके नीचे थे, जैसा फ्रेंच या इतालियन रिवेयरामें अक्सर देखनेको मिलता है। बम्बई बड़ा ज़रूर है पर सफ़ाई और समुद्रतटकी सफ़ाई कृत्रिम, मानवमंडित, सुन्दरता उसे तेल अवीवसे सीखनी होगी।

तेल अवीव अनेक साहित्यिकों, लेखकों और प्रख्यात यहूदी नेताओंका वासस्थान है। दिवंगत प्रसिद्ध इब्रानी कवि हाइम नहमान बिआलिक यहींके रहनेवाले थे। दिवंगत महाकवि डाक्टर शाउल खैरनिखोव्स्की भी यहीं के थे जो यहूदी लेखक-संघके प्रधान थे।

अब हम तेल अवीवसे शेफ़ेलाका मैदान दक्षिण छोड़ उत्तरकी ओर शारों और समरियाके मैदानकी ओर बढ़े। रात हो गई थी परन्तु थोड़ी-थोड़ी दूरपर खड़े गाँवों और नगरोंकी बत्तियाँ लगातार हमारा मार्ग आलोकित करती रहीं। इसके अतिरिक्त इस सड़कपर, अथवा यों कहिए कि इसराइलकी सभी प्रधान सड़कोंपर, बड़ा यातायात है। लोग रात-दिन आते-जाते रहते हैं, मोटरें निरन्तर दौड़ती रहती हैं।

शारोंका मैदान तेल-अवीवसे उत्तर समुद्रतटसे लगा-लगा हैफ़ा तक फैला हुआ है। एक पक्की सड़क (मेटल्ड) समुद्र और समरियाके पर्वतोंके बीच दौड़ती है। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, शेफ़ेलाका उत्तरी भाग और शारोंका मैदान सन्तरा, नीबू, मीठा नीबू, अंगूर, केला और बादाम आदिके पौधे उगानेके लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। हमने इनके अनेक बाग़ और खेत अपनी राहमें देखे। यहूदी अपनी भूमिका अच्छा-से-अच्छा उपयोग करनेसे कभी नहीं चूकता।

हैफ़ाकी राहमें समरियाका प्रधान नगर हेदेरा पड़ता है। १८९१ ई० में ही इसकी नींव पड़ी थी। पहले यहाँकी ज़मीन दलदल थी, मलेरियासे भरी। पर दलदल अब सुखा लिया गया है। और मलेरिया तो शायद सारे देशमें अब कहीं नहीं है। चारों ओर युकेलिप्टसके ऊँचे पेड़ खड़े हैं। यह पेड़ दलदल और मलेरिया दोनोंका दुश्मन होता है। हेदेराकी आबादी प्रायः दस हज़ार है और यहाँके निवासी अधिकतर नारंगीकी खेती करते हैं।

उत्तर हैफ़ाके मार्गमें वादी-एल-मुग़ार है, 'गुफाओंकी घाटी', जहाँकी प्राकृतिक कन्दराओंमें प्रागैतिहासिक मनुष्य रहा था। यहाँकी खुदाईसे

दो प्रकारके अस्थिपञ्जरोंका पता चला है इनमेंसे एक तो प्राचीन प्रस्तर-कालका निएण्डर्थल मानवके हैं, दूसरे नीग्रो मानव के।

नौ बजेके बाद हम हैफ़ा पहुँचे। नगर लाखों बत्तियोंसे जगमगाता दिनकी आभा लिये था। मैंने खाया-पिया कुछ नहीं, सीधा बिस्तरपर जा गिरा। आश्चर्यकी बात तो यह थी कि कई दिनों बीमार रहकर आज पहले-पहल उठा था, खाया-पिया कुछ नहीं था फिर भी थकान न थी। डर था कि चलना बहुत पड़ेगा, और चलना पड़ा भी बहुत था, परन्तु क्लान्ति विशेष नहीं जान पड़ी। अत्यन्त प्रसन्नता इस बातकी थी कि हैफ़ा आना बेकार न हुआ और अगले दिनकी 'दिप'में भी जानेकी आशा बाँध 'बंक' पर लम्बा हो गया।

—(६-१०-५०)

आज सातवीं है। सुबह सोकर उठा तो चित्त हल्का पाकर बड़ी ख़ुशी हुई। डर था कहीं बुख़ार कलकी हरारतसे रातमें लौट न पड़े, पर हुआ ऐसा नहीं। सुबह जी प्रसन्न मिला। जो पूछा तो मालूम हुआ कि ग्यारह बजेके लगभग जहाज़का एजेण्ट आयेगा और अपनी गाड़ीमें हमें नज़रथ आदि स्थानोंको निःशुल्क सैर करायेगा।

ग्यारह बजेके बाद ही हम हैफ़ा-नज़रथ मार्गपर दैत्यवेगसे उड़े जा रहे थे। कारमेल पहाड़ियोंकी शृङ्खला दाहिने लेते फिर पीछे छोड़ते हम पहाड़ी शृङ्खलाओंके जालमें बढ़ते गये। बहुत ऊँचा उठना और सहसा सैकड़ों फ़ुट नीचे उतर पड़ना, आजकी सैरकी ख़ूबी थी। जेज़रीलकी घाटीसे ताबोर पर्वतको दाहिने छोड़ते हम नज़रथकी ओर मुड़े।

राहका दृश्य अत्यन्त आकर्षक था। ऊँची पहाड़ियोंसे नीचे दाहिनेका खेतों भरा मैदान बड़ा सुहावना लग रहा था। आमेकका मैदान तो सचमुच प्राकृतिक सुन्दरताके विचारसे अतीव मनमोहक था। इतना अभिराम कि हमें मोटर रोककर उतरकर उसकी छवि कुछ क्षण देखनी

पड़ी। कटे खेतों या उनकी काली मिट्टीके ऊपरसे बादलोंकी छाया जो निकलती तो लगता नरम मख़मली कालीन बिछी है।

ताबोरका पर्वत-शिखर दिखाई ज़रूर पड़ता है पर है दाहिने हाथ काफ़ी दूर। नज़रथका मार्ग यहाँ निचली गैलिलीके पहाड़ोंपर चढ़ उस पर्वतके पाससे निकल जाता है जहाँ ईसाको नीचे फेंक देनेका प्रयत्न किया गया था। पास ही बाईं ओर नज़रथका मनोहर नगर है जो अपने नये-पुराने ताने-बानेमें बुना पड़ा है।

पहले-पहल नज़रथका नाम बाइबिलकी 'नई पोथी'में आता है। यहीं ईसाके पिता यूसुफ़ रहते और लुहारका काम करते थे। परिवारके मिस्रसे लौटनेपर ईसाने अपने बचपन और तारुण्यके दिन यहीं बिताये थे। चौथी सदी ईसवी तक यहूदी और समसियाबी इस नगरमें रहते थे। चौथी सदीके बाद ईसाइयोंका यहाँ निवास बढ़ा और उनकी संख्या निरन्तर बढ़ती गई।

मरियमके पारस्परिक वासस्थानपर कोन्स्तांतीनकी माता हेलेनाने गिरजाघर बनवाया जिसकी पच्चीकारी (मोज़ाइक) की फ़र्श आज भी जहाँ-तहाँ देखी जा सकती है। उस गिरजाघरके कुछ टूटे स्तम्भ भी वहाँ देखनेको मिले जिन्हें रोमन कहनेमें सन्देह नहीं हो सकता। यहाँका प्रमुख गिरजाघर 'सेण्ट मेरीज़ एनन्सिएशन' कहलाता है। उसके भीतर 'यूसुफ़की बेदी' वाली गुफा है। पीछे एक प्राचीन गुफा है जिसमें मरियमकी रसोई है। कहते हैं, यहीं यूसुफ़ और मरियम रहते और काम करते थे। यहीं एक गुफामें एक ओर यूसुफ़का आवास बताया जाता है जहाँ वे लुहारका काम करते थे। एक ओरका गढ़ा उनकी भाथी बताया जाता है। यहीं शायद दोनों छिपे थे। कुछ भी हो, गुफाएँ प्राकृतिक और प्राचीन हैं। उनमें नाचे पानी (बरसाती) संचित करनेके गढ़े भी बने हैं। उस देशमें पानी कम बरसता है इससे यह इन्तज़ाम आज भी सबको करना पड़ता है।

नज़रथ गाँवके भीतर गये और उस यहूदी सिनागाग (मन्दिर) को देखा जहाँ ईसा प्रति शनिवारको उपदेश दिया करते थे। भीतर अरबोंकी आबादी है और उनके घरोंको देखकर अपने पूरबिये देशकी सहज ही याद आ जाती है। पत्थरके उनके घर छोटे, बन्द, अँधेरे और सँकरे हैं। नज़रथ गैलिली ज़िलेका सदर मुक़ाम है; पहाड़ियोंके ढलावपर बसा हुआ, और पासकी घाटी बड़ी उपजाऊ दिखाई पड़ती है।

हम सन्ध्या होते-होते नज़रथ-हैफ़ा रोडसे हैफ़ाको लौट आये। रातके प्रायः नौ बजे एक स्थानीय सज्जनके साथ माउण्ट कारमेलके शिखरपर गये। वहाँसे हैफ़ाका दृश्य अत्यन्त सुन्दर था। बिजलीकी लाखों बत्तियाँ दीवालीकी छटा धारण किये हुए थीं। शिखर तक सुन्दरसे सुन्दर मकान बनते चले गये हैं, बनते चले जा रहे हैं। शिखरपर पास ही मेगिडोंका रेस्तराँ और होटल था। उसमें गये। नाच-गानकी तैयारी थी। अनेक नर-नारी बैठे चाय-पानी कर रहे थे। आरकेस्ट्रा तैयार था। रात दिनकी भाँति चमक रही थी। तरुण और तरुणियाँ अपने वेशावेशमें स्वर्गको तुच्छ कर रहे थे। हम वहाँ थोड़ी देर खड़े रहे। भीतर अब बैठनेकी जगह भी न थी और मैनेजरके इन्तज़ाम कर देनेकी इच्छा प्रगट करनेपर भी हमने वहाँ रुकना पसन्द न किया। लौट पड़े।

पहले टैक्सी लेकर ऊपर आये थे और मेगिडोंमें घुसनेके पूर्व ही उसे भेज दिया था। अब होटलसे जो बाहर निकला तो याद आई कि फ़ेल्ट हैट टैक्सीमें ही रह गई है। टैक्सीका ड्राइवर सज्जन मालूम हुआ था, पर जो हैट लौटा दे तो उसकी सज्जनता जानें। जिनके साथ हम कारमेलके शिखरपर गये थे उन्होंने कहा कि मैं टैक्सीवालेको जानता हूँ और कल उसे ढूँढ़कर जहाज़पर पहुँचा दूँगा। कहा तो उन्होंने यहाँ तक कि कुछ अजब नहीं कि हैट जहाज़के एजेण्टके दफ़्तरमें अब तक पहुँच गई हो। (पर हैट दूसरे दिन भी नहीं मिली, तीसरे दिन सुबह तक नहीं, जब हमारा जहाज़ हैफ़ासे लंगर उठाकर चल पड़ा।) एजेण्टके दफ़्तर वालोंको न्यूयार्क

का पता देकर हैट भेजनेको कह दिया। देखें, मिलती है या नहीं। उस हैटके खोनेका मुझे अफ़सोस है। आनेके समय पचास रुपयेमें उसे बम्बईमें खरीदा था। रुपये लगे थे, इसकी बात इतनी न थी जितनी इसकी कि उसे सिरपर रखनेका मौक़ा भी नहीं आया था। यदि हैटकी चोट न लगी होती तो निश्चय कारमेलके शिखरका यह सौन्दर्य असाधारण था, और इसकी आशा क़तई नहीं कि न्यूयार्कमें वह मेरे पास पहुँच जायगी। इसरायलकी सुन्दरतामें यह, हैटकी कालिमा !

—(७–१०–५०)

आज आठवींकी सुबह है। प्रातः ही तैयार हो गया क्योंकि एक ट्रिप और करना था, गैलिली आदिका। मेरे मित्र श्री जेम्सने यह ट्रिप एक टूरिस्ट कम्पनी—पत्रा ट्रेवेल एजेन्सी—के ज़रिये तै किया। हम पाँच पैसेंज़र थे और बाइस पौंड देने पड़े, साढ़े चार-चार पौंड फ़ी आदमी, अर्थात् लगभग ६० रु० ५ आ० प्रत्येक व्यक्ति।

हम प्राचीन अक्को (एकर) की ओर लगभग दस बजे तक आराम-देह मोटरपर चले। हमें एक-एक परची एजेंसीकी ओरसे दे दी गई। उसपर छपा था—हैफ़ा-अक्को-टाइबेरियस्-कापरनोम-हेप्तापेगन-माउण्ट बीटीट्यूड-देगानियाँ-जार्डन-केपार-याबीनएल-(यदि सम्भव हुआ तो) मैदिगो-हैफ़ा।

पहले हम ज़ेबुलुनका मैदान होकर प्राचीन अक्को या एकरकी ओर चले। ज़ेबुलुन और एकरका मैदान हैफ़ा-एकर खाड़ीसे लगा-लगा चला गया है। इसका अधिकतर भाग यहूदी राष्ट्र-फ़ण्डने ख़रीद लिया है। बीच-बीचमें चारों ओर नई बस्तियाँ और उपनिवेश देखे जहाँ लोग यन्त्रकी सहायतासे निरन्तर काम कर रहे थे। आज रविवार है, इससे लोग कलकी छुट्टी समाप्तकर काममें लगे हुए हैं। यहूदियोंकी छुट्टी और आरामका दिन रविवार न होकर शनिवार है जिसे ये लोग 'सैबथ डे' कहते हैं।

सैबथके दिन सृष्टि करते हुए जेहोवाने विश्राम किया था। इसीसे ये लोग भी शनिवारको ही छुट्टी मनाते हैं।

एकरकी सड़क ज़ेबुलुन और एकरके मैदानके बीचसे किशोनकी छोटी नदी पारकर जाती है। आगे चेकोस्लोवेकियाके यहूदी निर्माता जान मज़ारिकके नामपर क्फ़ार मज़ारिक नामकी बस्ती है। एकरके दक्खिन उसके पास ही नामान नामकी नदी भूमध्यसागरमें गिर जाती है। इस नदीको ग्रीक बेलोज़ कहते थे और प्राचीन फ़िनीकी पवित्र मानते थे। परम्पराके अनुसार इसी नदीके तटपर फ़िनीकियोंने काँच बनानेका तत्त्व जाना और इसीकी बालूसे पहले-पहल उन्होंने काँच बनाकर उसका कारख़ाना खड़ा किया। यहीं एक प्रकारकी मछलीके कठोर आवरणसे उस व्यापारी जातिने नील रंग निकाला। एकर पहुँचनेके पहले ही दाहिनी ओर प्राचीन अक्कोकी आबादी है जो अब तेल-एल-फ़ुखार कहलाती है।

इस देशमें अक्को ही एक ऐसा मुक़ाम या नगर है जिसे यहूदी कभी न जीत सके। कभी इसकी दीवारोंके भीतर उनके क़दम न जा सके। अभी एकाध साल हुआ जब उनका इस प्राचीन नगरपर अधिकार हुआ है। यह नगर पूर्ण रूपमें कनानी-फ़िनीकी है। प्राचीन कालमें अक्कोका बन्दरगाह काफ़ी महत्त्वपूर्ण था। जब सिकन्दरकी मृत्युके बाद मिस्रका अधिकार तालेमियोंके राजकुलको मिला तब उन्होंने अक्कोकी प्राचीन बस्ती छोड़कर नई बसाई और यही नई बस्ती वर्तमान एकरकी बुनियाद है। इससे इसकी वर्तमान बुनियाद भी कम-से-कम दो हज़ार वर्षोंसे अधिक प्राचीन है।

अक्को ऋद्ध पत्तन था। ग्रीकों और प्राचीन यहूदियोंकी अच्छी संख्या थी। जब अरबोंकी विजयवाहिनी सातवीं सदीमें इधर चली तो अक्को भी उनकी चोटसे न बच सका और उनके अधिकारमें आ गया। फिर ईसाई धर्मयुद्ध (क्रूसेड) ११०४ ई० में बाल्डबिन प्रथमने इसे जीत लिया और इसकी क़िलेबन्दीकर यहीं यूरोपीय लड़ाकोंने अपने जहाज़ लगाये।

सुलतान सलादीनने इसे जीत लिया पर 'सिंहहृदय' रिचर्डने ११९१में इसे फिर जीता और सन्तजानने इसका नाम एकर रख दिया। जुरूसलम उनके हाथसे निकल ही चुका था अब १२९१ ई०में एकरपर भी तुर्कोंका अधिकार हो गया। जज़ारपाशाने अठारहवीं सदीके उत्तरार्धमें यहाँ अनेक सुन्दर बुलन्द इमारतें बनवाईं और इसकी नये सिरेसे क़िलेबन्दी भी की। नैपोलियन जब मिस्रसे विफलमनोरथ हो भूमध्यसागरसे होकर जलमार्ग न मिलनेसे फ़िलिस्तीनके स्थलमार्गसे स्वदेश लौटने लगा तब एकरको जीतनेका मोह-संवरण न कर सका। पर लाख प्रयत्न करनेपर भी यह नगर उसके हाथ न आया। बाद उन्नीसवीं सदीमें इब्राहिम पाशाने इसे जीतकर नष्ट कर दिथा। फिर आस्ट्रिया और इंगलैंडके सम्मिलित बेड़ेने जज़ारपाशाकी सुन्दर इमारतोंको गोलोंसे बरबाद कर दिया।

इस नगरमें अधिकतर अरब रहते हैं। उनकी संख्या लगभग १०,००० है और ईसाइयोंकी लगभग २,०००। एकर उन बहाई मुसलमानोंका मुख्य केन्द्र है जो ईरानसे भागकर आये थे और संसारमें भातृभाव फैलानेके उदार विचार रखते हैं। समय और अवसर न मिला वरना इनके नेताओंसे साक्षात्कार करने और विचार-विनिमयकी बड़ी लालसा थी।

एकरसे हम उत्तरवर्ती सड़कके रासनकूराके दक्खिन-दक्खिन फ़िलिस्तीनकी उत्तरी सीमासे लगे-लगे पूरबकी ओर चले। आगे उत्तरी गैलिलीका मैदान है। उसी गैलिलीके पहाड़ोंके बीच यह नई मेटलकी सड़क दौड़ती है, कदस्साका प्राचीन उजड़ा रोमन गाँव और रोमन मन्दिरका खण्डहर पीछे छोड़ते हम घाटीका अभिराम चित्र अपने हृदयपर उतारते तीबेरियस्की झील या बाइबिल प्रसिद्ध गैलिलीके समुद्रकी ओर चले।

नज़रथ हमने कल ही देखा था इससे हम उसे दाहिने पीछे छोड़ते आगे बढ़े। तीबेरियस्की झील दूरसे ही नीचे दीख पड़ी। तीबेरियस्के पहले ही हत्तिनकी सींगनामके दो पर्वत-शिखर दिखाई पड़ते हैं। हम नीचे उतरकर गैलिलीके समुद्र या तीबेरियस्के तटपर पहुँचे, कुछ ऊँचे, उसी

शिखरपर जहाँ आज एक इटालियन चर्च क़ायम है और जो कभी ईसाके स्पर्शसे पवित्र हुआ था। चर्च सम्भवतः उसी स्थलपर खड़ा है जहाँ हज़रत ईसाने अपने जगत्प्रसिद्ध शिखरवर्ती उपदेश किये थे। इन उपदेशोंको अँग्रेज़ीमें 'सरमन आन दि माउण्ट' कहते हैं। इन्हींमें ग़रीबोंकी स्तुति और उनके स्वर्गकी भविष्यद्वाणी हुई है। ये ही उपदेश तालस्ताय और गाँधीको अत्यन्त प्रिय लगे थे। मैंने अपनी बाइबिल निकालकर वह प्रसंग पढ़ा।

यहाँसे उतरकर हम और नीचे पहुँचे जहाँ, कहते हैं, ईसाने लोगोंमें रोटी और मछली बाटकर उन्हें तृप्त किया था। यहाँ भी एक चर्च खड़ा है जो कोन्स्तान्तीनकी मोज़ाइक फ़र्शपर खड़ा है। इस फ़र्शपर अनेक जल-पक्षियों—हंसों, मोरों—और कमल आदिके पच्चीकारीमें ही चौथी शताब्दीके रोमन कलामें अभिराम चित्र देखनेको मिले। सुबोध गाइडने बताया कि ये चित्र मिस्री दृश्य अंकित करते हैं। मुझे इसमें आपत्ति हुई। मिस्री लिपियोंकी इबारत तो ये किसी प्रकार ध्वनित नहीं करते और यदि ये किसी देश-विदेशकी ओर संकेत करते हैं, जैसा इस स्थानके प्रतिकूल इनका अंकन सुझाता भी है, तो निःसन्देह हंस, कमल और मयूरोंका अंकन मिस्रसे कहीं अधिक भारतीय परम्परामें होगा।

अब हम तीबेरियस् पहुँचे। सूरज अभी चमक रहा था पर हम तीसरा पहर समाप्त कर चुके थे। तीबेरियस् लेक या गैलिली-सागरका तीसरा नाम, गेन्नेसर या शेनेज़रथ भी है जिसका बाइबिलमें उल्लेख किन्नरथ नामसे भी हुआ है। इसकी ध्वनिमें मुझे किन्नरोंकी याद आई। पहाड़ी मुल्क, विशेषकर यहाँ, यह निश्चय बड़ा रोमांचक है और किन्नरों तथा किन्नरियोंकी याद घुमक्कड़को यहाँ सहज ही आ सकती है। यह झील या समुद्र प्रायः चौदह मील लंबा और छः मील चौड़ा है। ऊपर पर्वत-शिखरसे यह केवल एक साधारण गढ़े-सा लगता था पर जैसे-जैसे हम नीचे उतरते और पास आते गये इसका आकार बढ़ता गया। डेड-

सीकी भाँति यह सागर भी संसारके निम्नतम सिन्धु-सतहोंमेंसे है। इसकी सतह भूमध्यसागरसे २०८ मि० है।

इस सागरके पश्चिमी तटपर तीबेरियस्का प्राचीन नगर अपने नये कलेवरमें लिपटा-सा खड़ा है। इसे गैलिलीके शासक हेरोद एन्तिपस्ने २२ ई०में बसाया और इसका नामकरण रोमन सम्राट् तीबेरियस् सीज़रके नामपर किया। जुरूसलमके विध्वंसके बाद यहूदियोंको यहाँ बसनेकी अनुमति मिली। तीबेरियस् फिर तो दूसरी सदी ई०के अन्तसे यहूदियों-का केन्द्र बन गया। क्रूसेडोंके बाद इस प्रदेशमें अनेक चर्च बने।

दक्षिण तटसे प्रायः लगे हुए ही गरम जलके सोते हैं जिनपर अब छत बना दी गई है और वे अब इमारतके अन्तरंग बन गये हैं। भीतर गये तो वृत्ताकार जलपरिधिपर उठता हुआ धुआँ देखा। कमरा गरम था और गन्धककी गन्ध धूएँके साथ बराबर उठ रही थी। जल काफ़ी गरम था, प्रायः असह्य। चर्मरोगोंके रोगी पासके ही सह्य उष्ण जल-संचयमें गोता लगाते हैं।

हमने गैलिली-सागरके स्वच्छ हरित जलका स्पर्श किया। पिया भी। जल निर्मल, शीतल, स्वादु और मीठा था। नीचे बालूकी जगह छोटे शालिग्रामकी तरह चिकने पत्थर हैं। कुछ बटोर लिये फिर जार्डन नदीकी ओर चले। जार्डन सीरियाके पहाड़ोंसे निकलकर गैलिलीसागरमें प्रवेश करती हैं फिर उसमेंसे निकलकर बहती हुई डेड-सीमें जा गिरती है। नदी अत्यन्त पतली मालूम हुई, पचास फ़ुटसे भी पतली। इसके दोनों ओर नरकट आदि लगे थे। देगानियाँके पास हम उसे लाँघ फिर लौटकर उसी राह तीबेरियस् आ गये। आगे सीरियाकी सीमा है और अरब प्रहरी सदा चौकन्ना रहता है। उसके कोषमें क्षमा शब्द नहीं है। कब उसकी बन्दूक गुड्डम-गुड्डम कर उठे, नहीं कहा जा सकता।

जार्डन देखनेमें पतली है पर फ़िलिस्तीनकी शायद यही सबसे बड़ी नदी

है और ईसाइयोंकी परम पुनीत। इसीके जलसे यहीं जानने ईसाको बप्तिस्मा दिया था।

तीबेरियस्के समीप ही बेथ येराका प्राचीन कनानी स्थल है जिसकी नींव प्रायः २५०० ई० पू० में पड़ी थी। दो हज़ार वर्ष तक वह वीरान पड़ा रहा, फिर कनानी दीवारोंपर रोमन बस्ती बसी। हमने इस गैलिली तटवर्ती नगरके भग्नावशेष देखे! इसका स्नान-ह्रद दर्शनीय है यद्यपि उसके भग्नावशेष मात्र अब रह गये हैं। हमने इसके कुछ चित्र भी लिये। इस कृत्रिम स्नान-सरोवरका जल नालियोंके ज़रिये गरम कर लिया जाता था।

अब हम दक्खिनी-उपरली राहसे हैफ़ाकी ओर लौटे। राहमें कई स्थान देखने थे। उत्तरकी ओर मिग्दलकी बस्ती है, प्राचीन मग्दालाकी जिससे थोड़ी ही दूरीपर गैलिली मानवकी प्रागैतिहासिक गुफा है। यहीं १९२६ ई० में नियान्डर्थल-मानवकी-सी ही प्राचीन प्रस्तरकालकी नारी खोपड़ी मिली थी जो जुरूसलमके संग्रहालयमें सुरक्षित है। प्राचीन कोपरनमको दूर उत्तर छोड़ते हम प्राचीन मेगिदोकी ओर बढ़े, तेज़ीसे, क्योंकि सूर्य तीव्रतासे नीचे उतरता चला जा रहा था और हमें उसके रहते ही मेगिदो पहुँचना था। पर वहाँ पहुँचते-पहुँचते सूर्य क्षितिजसे नीचे लुढ़क गया।

नई सड़कपर अरबोंका गाँव तानाक (बाइबिलका तानाख़) है। यहीं प्रोफ़ेसर सेलिनने सभ्यताकी पाँच तहें खोद निकाली थीं। यहीं एक स्थल ऐसा भी मिला जहाँ भाण्डमें कसे बच्चोंके शरीर मिले। ये बच्चे प्रमाणतः बलि चढ़ाये गये थे। उस दर्दनाक प्राचीनकालमें मनुष्यकी क़ीमत कुछ न थी। बैरमें भी वह मारा जाता था, प्रेममें भी। धर्मका यह भीषण रूप प्रायः सारी प्राचीन, विशेषतः प्रागैतिहासिक, जातियोंमें रहा है जहाँ शिशु के शरीरको भी बलि चढ़ा दिया गया।

पास ही एल-लेजूनका गाँव है जिसके पास तेल-एल-मुतासेलिपकी ऊँचाईपर, कारमेल शृंखलाकी छायामें प्राचीन मेगिदोके भग्नावशेष

हैं । यहींसे मिस्रको प्रशस्त वणिक्पथ गया था । प्राचीनकालमें बाइबिलके अनुसार यह स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था और विजेताओंके लिए विशेष महत्त्वका माना जाता था । इसी कारण मिस्रियों, कनानियों और इस्राइलियोंने बारी-बारी यहाँ अपने दुर्ग बनाये । यहीं अस्शुरकी ओर जाते मिस्रियोंका मार्गावरोध करते हुए जूदाके राजा जोशियाने वीरगति पाई थी । १९१८ ई० में यहीं जेनरल एलेनबरीने एक समूची तुर्क सेनाको घेर लिया था ।

पहले यहाँ ई० पू० तृतीय सहस्राब्दीके एक अमूरी क़िले और दीवारके भग्नावशेष मिले थे । अन्य वस्तुओंके साथ यहाँ आठवीं सदी ई० पू० की दो मुहरें भी मिली थीं । १९२५ ई० में शिकागो विश्वविद्यालयके पूर्वात्य विभागने कुछ खुदाई कराई थी । प्रोफेसर गाई उसके नेता थे । यहाँ हमने पुराविदोंके रहनेके बने घर भी देखे । सूरज तो डूब ही चुका था परन्तु अभी गोधूलिका उजाला हमारा सहायक था । हम राहकी परवाह न कर पीछेकी ओरसे पहाड़ी या टीलेपर काँटोंकी राह चढ़ गये । हमारे साथ दो नारियाँ भी थीं ।

सुलेमान-कालका एक नगर और अस्तबल खुदकर ऊपर आगये हैं । विद्वानोंका अनुमान है कि तीरके राजा हिरामके फिनीकी राजाओंने इस नगर और अस्तबलका निर्माण किया था । फ़िलिस्तीनके विजेता मिस्री सम्राट् शिशाकका एक पत्थर यहाँ मिला है जिससे तत्कालीन इतिहासपर प्रचुर प्रकाश पड़ता है । अब तक अँधेरा काफ़ी बढ़ चुका था । पहले टीलेसे नीचे उतर, पुराविदोंके वासस्थानको बग़लमें लेते, हम फाटककी ओर बढ़े परन्तु सन्तरी या चौकीदार कोई न था और फाटकमें ताला लगा था । हमें उलटे पैरों लौटना और जंगल-काँटोंकी राह अँधेरेमें खड़ी पहाड़ीसे उतरना पड़ा ।

फिर हम तेज़ीसे हैफ़ाकी ओर चल पड़े । राहमें हमने आज, कल और परसों तीनों दिन अनेक किबूत देखे थे । 'किबूत' एक प्रकारका संगठित

इसरायल

दमिश्क
सीरिया
इतुरिया
अक्को(एकर)
हैफा
गलिली सागर
तिबेरियस
गिल्बोआ
ट्रान्सजार्डानिया
गिलिअद
तेल-अवीव
रामले
जेरुसलम
बेथलेहम
गाज़ा
मृत सागर

ई

ग्रामजीवन है जिसमें सैकड़ों नर-नारी एक साथ रहकर अन्नादि उपजाते हैं। उनके आहार-बिहार समान और एकस्थ हैं, लेन-देन एकस्थ। उनकी भूमि-जायदाद बँटी नहीं। एक ही साथ सैकड़ों लोग ज़मीनका पट्टा लेकर खेती आदि करते हैं और आवश्यकताके अनुसार अनाज आदि ले लेते हैं। रुपये-पैसे या ज़रूरतसे अधिक वस्त्रादि भी वे नहीं रखते। जो कोई धन, रेडियो आदि लाकर उसमें सम्मिलित होते हैं वे उनको सर्वार्थ अर्पण कर देते हैं। तब उनपर उनका कोई अपना अधिकार नहीं रह जाता। किबूतके रहने वाले फ्रेंच 'फ़िज़ियाक्रेट' फ़िलासफ़रोंसे कहीं नज़दीक, उन प्राचीन ईसाई संगठनोंके नज़दीक हैं जो कभी संगठित हुए थे। गाइड अनेक बार प्रयत्न करके भी यह स्पष्टतः नहीं समझा सका कि ये किबूत रूसी कम्युनिज़्म (साम्यवाद)से बहुत भिन्न हैं। ये, सम्भव है, इस स्थितिमें उससे कुछ मिलते हों। परन्तु हैं ये उसी दिशामें संकेत करते, आदिम साम्यवादकी ओर। इनमें पति-पत्नी तो एकसाथ रहते और काम करते हैं और बालक नर्सरियोंमें रख दिये जाते हैं जहाँ उनकी भले प्रकार देख-भाल की जाती है। आठ-नौ वर्षके हो जानेके बाद, यदि वे चाहें, अपने माता-पिताके साथ रहकर उनके काममें हाथ बँटा सकते हैं या स्वयं अपनी वैयक्तिक मेहनतका लाभ अपने प्रिय किबूतको दे सकते हैं।

इसी प्रकारकी एक और संस्था है जिसे 'मोशाब' कहते हैं। मोशाब में ऐसे लोग रहते हैं जो खेती आदि तो सामूहिक रूपसे करते हैं पर परिणाममें उपज या लाभ आदि अपने परिणामके अनुसार बाँट लेते हैं। उन्हें अपना धन आदि वैयक्तिक रूपसे बढ़ानेका अधिकार और अवसर होता है। मैंने प्रायः दस वर्ष हुए भारतके गाँवोंमें इसी प्रकारके उत्पादन संगठनकी योजना रक्खी थी। इसमें विना किसी समसामयिक राजनीतिक संकटके सामूहिक रूपसे आधुनिक उत्पादन-यंत्रोंका लाभ उठाया जा सकता है और वैयक्तिक लाभ भी किया जा सकता है। और यदि, वह अवश्य गमनीय स्थिति—सामूहिक हितचेतना—अनिवार्य है तो निश्चय यह योजना

उधरका मार्ग भारतके लिए सुगम कर देती। इसी प्रकारका एक तीसरा संगठन इसरायलमें और है जिसे 'कुसा' कहते हैं। यह किबूत और मोशाबके बीचका संगठन है। सारे फ़िलिस्तीनमें हमने घूमकर भी कहीं मवेशी न देखे थे। कहीं-कहीं इक्के-दुक्के गधे या ख़च्चर और कहीं-कहीं छोटे नगरों या गाँवोंमें घोड़ा जोते हुए लंबी बैलगाड़ीनुमा गाड़ी दीख गई थी पर गाय-बैल या ऊँट कहीं नहीं। अब इन किबूतोंमें प्रौढ़ बलिष्ठ भरे थनों वाली चितकबरी गायें देखनेको मिलीं। हाँ, ऊँट फिर भी दिखाई न पड़े। पूछनेपर मालूम हुआ कि वे दूसरी ओर (यानी अरबोंके देशमें) रह गये हैं। इसरायलियोंको वस्तुतः उनकी आवश्यकता ही क्या है जब उन्होंने इस्पातके दानवको अपना अकिंचन दास बना लिया है ?

हैफ़ा पहुँचते-पहुँचते आठ बज चुके थे। बत्तियोंके प्रकाशमें हैफ़ा चमक रहा था। कारमेलकी छायासे निकल हम बन्दरकी ओर बढ़े। कार छोड़ देनी पड़ी और पास दिखाकर हम अपने जहाज़पर चढ़ गये।

× × ×

यहाँ इस हैफ़ाके विषयमें भी कुछ लिख देना आवश्यक है जो इसरायलका सबसे प्रधान बन्दर है और नये नगरोंमें भी कुछ कम महत्त्वका नहीं है।

हैफ़ाका पुराना नगर भी कुछ कम पुराना नहीं। कमसे कम यह ईसवीकी प्रारम्भिक सदियोंका तो अवश्य है। तुर्की कालमें निःसन्देह इसकी विशेषता घट गई और यह तुच्छ और उपेक्षित हो गया। पिछले महासमरके बाद नये हैफ़ाका कलेवर बनने लगा। हैफ़ाकी खाड़ीके घुमाव का खासा लाभ उठाकर एक सुन्दर बन्दरकी नींव डाली गई और कारमेल पर्वतके शिखरसे तट तकका ढलाव नई इमारतोंसे ढक गया। आज हैफ़ा पुराने हैफ़ासे प्रायः बारह मील दूर एक व्यापारी नगर है जिसकी आबादी प्रायः डेढ़ लाख है, जो निरन्तर बढ़ती जा रही है।

यहींसे लेबनान, सीरिया, ट्रान्सजार्डन और मिस्रको रेलें जाती हैं—देरा-दमिश्क लाइन, देरा-हेजाज़ लाइन, देरा-बेरूत लाइन। अनेक कारख़ाने और फ़ैक्ट्रियाँ आज इस नवनगरके आकाशको अपनी ध्वनिसे प्रतिध्वनित करती हैं। उत्तरी भागमें कभी जर्मन-टेमला-कालोनी थी जिसके बाद यहूदियोंके सुन्दर मुहल्ले हैं। माउण्ट कारमेलकी ढालपर हादर-हाकारमेलका अभिराम यहूदी 'उद्यान'-नगर है।

माउण्ट कारमेल प्रायः बारह मील समुद्रकी ओर घुसकर उस कोणका निर्माण करता है जहाँ हैफ़ाका बन्दर वर्तमान है और जिससे उसकी तूफ़ानोंसे रक्षा होती है। सुन्दर सड़क कारमेलके शिखर तक जाती है जंहाँसे निरभ्र आकाश होनेपर लेबनानके माउण्ट हरमानके हिमाच्छादित शिखर देखे जा जा सकते हैं। ऊपर कारमेलाइट (ईसाई) साधु-संघका सन्त एलिजाका मठ है जो पहले-पहल ११५६ ई० में खड़ा हुआ था। उसकी नई इमारत प्रायः सवा सौ साल पुरानी है। मध्य शिखरपर यहूदियोंके अनेक अतीव सुन्दर भवन हैं। एलिजाकी गुफा कारमेलके चरणमें है, नीचे, और यहूदियोंके लिए परम पुनीत। हैफ़ा जागता-बढ़ता हुआ नगर है और ऐसा लगता है कि शीघ्र यह फैलकर सामनेके कारमेलके दोनों डैने अपने नित्य बनते आवासोंसे ढक लेगा। हैफ़ाका भविष्य उज्ज्वल है, चमकते नक्षत्र सरीखा।

× × ×

जहाज़पर लौटा तो देखा कि डाक्टर महोदय मँडरा रहे हैं। इन्हींने पिछली बार मुझे दवा दी थी। उनसे मिला और ऊपर चला गया। यह गुमान भी न था कि इन्हें कुछ देना है। अभी ऊपर जाकर नीचे आने ही वाला था कि स्टीवार्डेसने कहा कि आपको डाक्टर याद कर रहे हैं। मैं तत्काल नीचे आया। डाक्टर साथ-साथ मेरे केबिनमें चले आये। इधर-उधरकी बातें कर और मेरे जीका हाल पूछ उन्होंने कहा—'एक बिल है छोटा-सा।' मैंने समझ लिया कि बीमारीका बिल मुझे ही चुकाना

है और कहा कि 'सारा देना-लेना कप्तान ही कर रहे हैं, इससे आप उन्हींको बिल दे दें, मैं उनसे हिसाब कर लूँगा।'

डाक्टर ऊपर गये। मुझे भी कप्तानसे कुछ काम था, ऊपर मैं भी चला गया। इस बीच डाक्टरने बिल बना लिया था और मुझे उसपर दस्तख़त करनेको कहा। मैंने बिना देखे-बूझे दस्तख़त कर दिया। देख-बूझ कर ही क्या करता? आख़िर बिल तो बिल ही था। ख़ैर, बादमें मालूम हुआ कि बिल ६ पौंडका (७९ रु० ४ आ०) था। दंग रह गया। और मज़ा यह कि उसमें दो-दो बार बुलाये जानेका उसने चार्ज किया था जब बुलाया वह वस्तुतः एक बार भी न गया था। पहली बार स्वाभाविक ही वह जहाज़के कामसे आया था, जो कप्तानने मेरे विषयमें राय ली तो उसका चार्ज कर लिया। फिर भी वह कुछ बेजा न था। पर दूसरे दिन जो बिना बुलाये आप आ पहुँचे उसके रुपये माँगना तो बड़ा बेजा था। इसपर तुर्रा यह कि मेरी लिखी अँग्रेज़ीमें पुस्तकें केबिनमें जो देखीं तो मुँहमें पानी भर आया और तोहफ़े-उपहारमें उनकी प्रतियाँ माँगने लगे! ज़ाहिर है कि मुझे उन्हें एक पैसेकी चीज़ भी देनी गवारा न थी जब वे एक लम्बा हाथ मेरी जेबपर मार चुके थे। उनका कार्ड मेरे पास है पर मैं जान-बूझकर ही उनका नाम यहाँ नहीं देना चाहता। मुझे फिर भी कुछ तसल्ली हुई जब कप्तानने बताया कि एक और सज्जनसे उसी डाक्टरने इसी हैफ़ामें और इसी जहाज़पर सिर दर्दके १८ पौण्ड अर्थात् १४० रु० १२ आ० ठग लिये थे।

—(८-१०-५०)

आज प्रातः ही चलनेकी तैयारी थी। पर जो ऊपर गया तो मालूम हुआ कि जहाज़ खुलनेमें अभी कुछ देर है। एजेण्टसे उन फ़िल्मोंको न्यूयार्क भेजनेको कहकर केबिन लौट आया जो हैफ़ाके एक फ़ोटोग्राफ़रको

धोनेके लिए दिये थे। ये तस्वीरें हैफ़ा पहुँचनेके पहलेकी पोर्ट सैयद और स्वेज़नहर आदिमें ली गई थीं।

फिर ऊपर गया और देखा कि आगेका जहाज़ हट गया है। यह एक यहूदी शरणार्थी जहाज़ था, 'ट्रान्सिलवेनियाँ'—रुमानियाँसे आया हुआ। कल ही तड़के आ गया था। मैं भी कल उसे देखने गया था। बालक, वृद्ध, युवा, युवती सभी प्रकारके यात्री थे जो अपना घरबार लिये दूरके विदेशोंसे आये थे। इनके लिए बस्तियाँ और उपनिवेश तैयार हो रहे हैं, कुछ हो चुके हैं। पर सुना कि जहाज़ नियत समयसे कुछ पहले आगया है। फिर भी यदि अनुद्यत भारतमें लाखों रोज़ आने-वाले शरणार्थियोंका प्रबन्ध हो जाता है तो इनकी यहाँ क्या बात है? पर, हाँ, भारतके शरणार्थियोंकी भाँति ये दीन-हीन असहाय न थे, हो भी न सकते थे, आख़िर ये उनकी भाँति मारे हुए तो थे नहीं। इतना निस्सन्देह था कि जिनके निजी-सम्बन्धी हैफ़ामें थे और लेने आये थे वे प्रसन्न-पुलकित थे, जिनके कोई न था वे कुछ मनमारे चुप थे। सो आज सुबह ही वह जहाज़ जेटीसे हट गया था।

हमारा भी जहाज़ धीरे-धीरे हट चला और नौ बजते-बजते हम भी बन्दर-से बाहर निकल खुले समुद्रपर चल पड़े। सागर शान्त और स्थिर था। कहीं एक लहर तक न थी। हम थोड़ी देर तक ऊपर-नीचे करते रहे। डेक-गोल्फ़का भी एक गेम खेला। पर दिमाग़ वहाँ न था। चिन्तित था कि इधर डायरी कई दिनोंसे नहीं लिखी जा सकी है, कुछ तो बीमारी और कमज़ोरीसे, कुछ दिन-रातकी दौड़-धूपके कारण। अस्तु, मैंने दूसरे दिनसे लिखनेका विचार पक्का कर बिस्तरकी राह ली। कुछ आराम कर लेना भी ज़रूरी था।

—(९–१०–५०)

प्रातः रमणीक था, यद्यपि कुछ बादल घिर आये थे। बाहर निकल-रक समुद्र और दूरका अभ्रान्तरित क्षितिज देखने लगा। हवामें नमी थी।

केबिन लौटा, पहली बार स्वेटर निकालकर पहना, फिर ऊपर गया। धीरे-धीरे हवा चल रही थी, समुद्रने भी कुछ तेवर तान लिये थे। हवा कुछ ज़ोरकी न थी परन्तु गम्भीर-निश्चय थी। उससे समुद्रमें लहरियाँ तो नहीं उठती थीं पर दूर तक हिल जानेवाली नीची लहरें ज़रूर थीं। इससे हमारा जहाज़ झूलेपर टँगा-सा रह-रहकर हिल जाने लगा और जब वह हिलता, लगता जैसे पेट उमड़कर ऊपरको हो चला। किसी क़दर ब्रेकफ़ास्ट खाया और पेटका रोग भुलानेके लिए ऊपर डेकपर आकर गोल्फ़ खेलने लगा।

बात यह थी कि इधर एक ज़मानेसे कुछ तो आदत पड़ जानेके कारण कुछ ज़मीनपर रहने या जहाज़के न चलनेसे सामुद्रिक रोगकी बात भूल गई थी, और समझता था कि सब दुरुस्त हो गया। इसका एक कारण और था। इधर कई दिनों जो इसरायलके पहाड़ोंमें कारमें निरन्तर घूमा था और बेहिसाब लम्बी यात्राएँ करके और बेइन्तहा मोड़ोंपर घूम या नीचे-ऊँचे होकर भी जब मतली न आई, और ऐसा तब जब कि मैं प्रायः अस्वस्थ ही रहा था तो स्वाभाविक ही मुझे अपनी तबीयतपर भरोसा हो आया था। कमसे कम समुद्री बीमारीकी बात तो प्रायः भूल ही गई थी। पर जब डेक-गोल्फ़ खेलकर भी उसे मनसे अलग न कर सका और एक बार पेट मुँहको आ ही गया तब दोपहरके खानेके लिए मेरा इन्तज़ाम न करनेकी स्टीवोर्डेसको ख़बर करके केबिन भागा और बिस्तरपर लम्बा हो रहा। शाम तक तबीयत ठीक हो गई थी। अब कुछ ऐसा लगा कि अपनी दवा आप ही कर लूँगा। ऊपर जाते ही सुना कि अकेला मैं ही मुसीबतमें नहीं पड़ा था बल्कि मिस वाल्टन भी कुछ देरके लिए लड़खड़ा गई थीं।

रातमें पानी बरसने लगा। आकाश शामको ही बादलोंसे ढँक गया था। शामका खाना भरपूर खा लिया था। अब खानेकी विशेष परेशानी भी न थी क्योंकि मैंने उसमें कुछ सुधार कर लिये थे। स्वेज़के पहलेसे ही

मैंने अपने खानेका क्रम इस प्रकार बना लिया था—सुबह सात बजे सन्तरेका रस और एक सेब, साढ़े आठ बजे सबके साथ ब्रेकफ़ास्ट जिसमें मीठे नीबूके साथ सन्तरेका एक ग्लास रस और दो तोश, साढ़े बारह बजे लंचपर टमाटरकी सैंडविचेज़ और कुछ उबले साग, साढ़े तीन बजे चाय, ६ बजे शामके डिनरके साथ एक दिन बीच डालकर चावल, चाहे मीठेमें चाहे करीके साथ, टमाटर या हरी तरकारीका सूप (शोरबा) तथा फल, और आठ बजे सन्तरेका एक ग्लास रस और एक सेब। आज भी भोजनका प्रायः यही विधान है, अन्तर बस इतना है कि सेब अब चुक गया है पर उसकी जगह सुबह टिनका फल ले लेता हूँ, और लंच तथा डिनर दोनों समय टमाटर उबलवाकर नमकके साथ खा लेता हूँ।

घरसे आनेपर समुद्री रोगने अरबसागरमें काफ़ी कमज़ोर कर दिया था। कुछ सम्हला तबतक हैफ़ाकी बीमारीने फिर कमज़ोर कर दिया। घरसे अभी काफ़ी कमज़ोर हूँ पर जान पड़ता है यह स्थिति अमेरिका पहुँचने तक बराबर किसी न किसी अंश तक बनी रहेगी। पर अब कुछ घबड़ाहट नहीं होती और मैं इसका आदी होगया हूँ। इसी स्थितिमें अपना काम भी बराबर किये जा रहा हूँ। इधरकी शेष डायरी भी भरनी शुरू कर दी है। बड़ा नागा रह गया था, उसे सावधि करना है, १५ अक्तूबरके पहले-पहले, क्योंकि उस दिन प्रातः ही जब हम जेनोआ पहुँच जायँगे तब फिर हलचल-सी मच जायगी और इधर-उधर घूमने लगनेसे लिखनेका समय भी कम मिलेगा। साथ ही हिन्दुस्तान और अमेरिका अनेक पत्र भी भेजने हैं जिन्हें जेनोआ पहुँचनेके पहले ही लिख लेना होगा, जिससे वे वहाँ पहुँचते ही छोड़े जा सकें। एक पत्र जो स्वदेशमें एक मित्रके लिए पोर्ट सैयदमें ही लिख लिया था और जल्दीमें जो वहाँ छूट न सका था वह हैफ़ामें भी न मिला जिससे वहाँ छोड़ा जा सके। उसे लाख खोजा पर वह जो नहीं मिला तो नहीं मिला और अब हैफ़ा छोड़नेके बाद ही इसी पाण्डुलिपिमें मिल गया है। उसे भी जेनोआमें निःसन्देह रवाना करना है।

रातमें कुछ फर-फर आवाज़ मालूम हुई। मैं वास्तवमें एक ज़मानेसे उन्निद्र रोगका रोगी हूँ और यद्यपि मैं चौबीस घण्टे लगातार बिस्तरमें पलक मारे चुपचाप पड़ा रह सकता हूँ, मुझे नींद आती नहीं है। जो झपकी जब-तब आती भी है तो हल्कीसे हल्की आहटसे वह तत्काल खुल जाती है। फर-फर कुछ लगा तो आँख खोलकर जो देखा तो कम्बलको भींगते पाया। पानी बरस रहा था। पोर्टहोल (केबिनकी खिड़की) खुली छोड़ दी थी। पंखा बंद कर दिया था इसलिए और अब फरफर पानी आ रहा था। उठकर पोर्टहोल बन्द किया, कम्बल हटाया, पंखा खोला, फिर पड़ रहा।

—(१०–१०–५०)

सुबह जो उठा तो देखा कि सूरज झाँक रहा है और सामने ही कुछ दूरपर पहाड़ी धुँधली दीवार है। मुँह-हाथ धोया, ऊपर गया। कप्तानसे मालूम हुआ कि हम प्रसिद्ध द्वीप क्रीटसे लगे कोवदोस नामक एक छोटे टापूके पाससे गुज़र रहे हैं। उसके पीछे स्वच्छ आकाशके नीचे दूर एक धुँधली बनती-बिगड़ती दूसरी रेखा भी दिखाई पड़ी। शायद वह क्रीट-की थी।

जो अनेक प्राचीन सभ्यताओंके आवास मुझपर जादू डाल देते हैं उन्हींमें क्रीट भी है। क्रीटकी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन सभ्यताओंमेंसे है, मिस्र-सुमेर-मोहेन-जोदेड़ोंके शीघ्र ही बादकी, उस संस्कृतिके पिछले खेवेकी, फ़िनीकी सभ्यतासे कुछ पहलेकी और साथकी भी, निश्चय आर्य-ग्रीक सभ्यतासे पर्याप्त पहलेकी। उत्तरी भूमध्यसागरपर इसी क्रीटकी प्राचीन सभ्यताके नगर मिकीनी, त्राय आदि खड़े थे जब दोरिय ग्रीकोंने ग्रीसमें आकर पहले तो उसकी नागर सभ्यतापर आश्चर्य किया फिर उसका अपनी बर्बरतासे ध्वंस कर दिया। उसके बाद ग्रीसमें उन्होंने अपनी नई सभ्यताकी शिला रक्खी। क्रीटकी राजधानी क्नोसस थी जहाँके राजा मिनोसका महल तक सफल पुराविद् सर आर्थर ईवान्सने खोद निकाला

है। इस मिनासके नामपर इस सभ्यताका दूसरा नाम 'मिनोअन' भी पड़ा है। त्राय भी इसी सभ्यताका नगर था जिसकी महिमा महाकवि होमरने 'ईलियद' में इतनी गरिमासे गाई है, और जिसे, एकके ऊपर एक ६ नगरोंको, श्लीमनने ज़मीनसे निकालकर ऊपर रख दिया।

फिर क्रीटके भी पीछेकी प्रधान भूमि ग्रीसकी याद आई जहाँ पोरिक्लिज़ और दिमास्थेनिज़, सोफ़ोक्लिज़ और अरस्तोफेनिस, सुकरात और अफ़लातून, अरस्तू और अस्पाज़ियाने अपने-अपने कालमें अपनी मेधा व्यक्त की थी, और उस स्पार्ताकी भी जिसका विक्रम इतना मस्तिष्कपर नहीं जितना शारीरिक शक्ति और सैनिक विनयपर निर्भर करता था। फिर भ्रमितपोतनाविक उलीसिज़की याद आई जो इन्हीं आस-पासके द्वीपोंमें खो गया था, जिसके रूपके जादूमें मत्स्य-कन्याएँ (मरमेड) रम गई थीं और जिसकी पतिव्रता पत्नी पेनीलोप फिर भी उसकी आशामें प्रणयियोंको निराश करती रही थी।

निकल गया कोवदोस, और उसके पीछे क्रीट, और उसके पीछे ग्रीस। और हमारा 'जान बाके' लहरोंके शिखरपर चढ़ा इटलीके अँगूठे और मेसिनाके जलडमरूमध्यकी ओर चला जा रहा है।

सुबह ही से लिखने लगा था, बहुत कुछ लिखना था, बहुत लिखा भी। ब्रेकफ़ास्ट खाकर कुछ देरँ डेक-गोल्फ़ खेला, फिर लिखने बैठा, और फिर दोपहरका खाना खाकर थोड़ी देर आराम किया, कुछ पढ़ा और लिखा। लिखता रहा। फिर शामके खानेका समय हो गया। खाना समाप्त कर दो मिनटके लिए ऊपर गया, कप्तानको बिल चुकाने। बिल १५ पौंड, १६ शिलिंग, १० पेंसका था, डाक्टरका हिसाब और स्थान-स्थानके ख़रीद-फ़रोख़्त करनेके लिए एक पौंडकी नक़दी लेकर। इससे जाना कि हररोज़में कुल क़रीब २०८ रु० ख़र्च हुए थे, खोई हैटके ५०) अलग, जो मँहगे पड़े। हम जितना घूमे उसके विचारसे मैं समझता हूँ यह ख़र्च कुछ भी नहीं है, और इसमें तो डाक्टरका बिल भी शामिल है, यद्यपि वह ख़र्च नहीं है जो

जहाज़के एजेण्टकी मोटरमें मुफ़्त सैर करनेसे बच गया था। पोर्ट सैयदमें जो कुछ मैंने खर्च किया था वह भारतीय रुपयोंमें किया था, यहाँ कप्तानको बिल मैंने ट्रैवेलर-चेकके पौंडोंमें चुकाया। बीस पौंडके चेक दे दिये जिससे जेनोआमें बाक़ी लीरेमें बदलकर ले सकूँ।

रातमें केबिनसे लौटकर बब्बनको बनारस एक पत्र लिखा और सँभाल-कर रख दिया जिससे पोर्ट सैयदवाले पत्रकी दशा उसकी भी न हो। देर तक नींद नहीं आई। बिस्तरपर पड़ा बारह बजे तक कुछ पढ़ता रहा। बाद पुस्तक रखकर बत्ती बुझा दी और बिस्तरपर पड़कर आँखें मूँद लीं।

—(११–१०–५०)

आज बारहवीं तारीख़ है। उठते ही लिखने बैठ गया। बहुत लिखना है, डायरीका बक़ाया अभी काफ़ी है। पत्र भी अनेक लिखने हैं। ब्रेकफ़ास्ट-के बाद गोल्फ़के एक गेमके लिए ऊपर गया। पर सभी व्यस्त थे। कोई ख़त लिखने लगा, कोई कपड़े छाँटने लगा। मुझे भी याद आया कि ख़त भी लिखने हैं, कपड़े भी छाँटने हैं।

आलमारीके कपड़े देखे। एक स्लीपिंगसूट कचारना था, कुछ बनयानें, कुछ जाँघिये। एकाध कमीज़ें, पाज़ामा, कुर्त्ता भी है। भला कौन करे? तै किया, जाँघिया और बनयानें तो कचार लूँगा कल-परसों, पर और कपड़े लाँड्रीमें जेनोओ भेज दूँगा। कपड़े बाँधकर रख दिये। एक बुशशर्ट ऊपर ही रह गई थी, पर उसे जब-तब पहना करता हूँ इससे वहीं टँगा रहने दिया।

एकाध बटन टाँकने थे। बड़ी देर तक सुई-डोरा ढूँढ़ता रहा। सारे बकस जब हींड़ डाले तब वह छोटी आलमारीमें मिला। पर अब जो कमीज़ उठाई तो टाकनेकी तबीयत न करे। एक बटन तो जैसे-तैसे कर टाँक लिया पर उसका काज जो ज़रा बड़ा हो गया था उसका क्या करूँ? वह जो सम्हालने चला तो उसकी अजब गोल शक्ल बना डाली। फिर तो

झल्लाहटमें बस एक ही बात मुँहसे निकली—हिन्दुस्तानी बीबी भी क्या न्यामत है !

निःसन्देह बड़ी न्यामत है हिन्दुस्तानी बीबी। उसकी कमी हर जगह खलती है, हर जगह उसकी ज़रूरत महसूस होती है। वह भला क्या नहीं है ? और ये हिन्दुस्तानी प्रगतिशील छोकड़े अपनेको अग्रगामी समझनेवाले ज़रूरतकी बुनियाद तक नहीं समझ पाते ! नहीं समझते कि अगर बीबी कामसे मुकर जाय तो ग़ज़ब हो जाय। पर अपनी बीबीकी अँग्रेजियतका लाभ आखिर मुझे क्या है ? मैंने क्षणभर सोचा। पर आखिर उससे कौन-कौनसे काम कराये जा सकते हैं ? एम० ए० बीबी, जो साथ ही विद्यालयकी प्रिंसिपल भी हो, भला बटन तो टाँकनेसे रही। सुराख़ फिर भी छोटा कर ही लिया और अँग्रेज़ी कहावतकी ज़ोरसे दाद दी—'आवश्यकता आविष्कारकी जननी है।'

लिखा, डायरी भी, चित्राको पत्र भी। डायरी धीरे-ही-धीरे काफ़ी लिख गया हूँ। आजकी हो गई, कलकी कल होगी।

—(१२–१०–५०)

आज सोकर जो उठा तो खिड़कीसे पहाड़ दिखाई पड़ा, हमारी दाहिनी ओर। एकाएक याद आया, इटली होगा। बाहर आया, देखा, दूरतक दौड़ती ऊँची पर्वतमाला एक ओर है, वैसी ही दूसरी ओर। और दोनों ओर पर्वत-शिखरपर बादल मँडरा रहे हैं। एक ओर इटली (का अँगूठा) था, दूसरी ओर सिसिलीका बड़ा द्वीप, और हम मेसिनाका जलडमरूमध्य पार कर रहे थे जो भूमध्यसागरके दो भागोंको मिलाता है।

मेसिनाके जलडमरूमध्यकी चौड़ाई बहुत ही कम है, कोई डेढ़ मील। इसीसे थोड़ा पानी इधर था, थोड़ा उधर और लग रहा था जैसे स्वेज़की नहरसे निकल रहे हों। अस्तु, यूरोपकी ज़मीन पहले पहल दीख पड़ी। याद आया इसी मेसिनाने प्रबल फ़िनीकी विजेता हैनिबलका बल क्षीण कर

दिया था। इसीके पास उस अपूर्व सेनापतिकी, जिसने स्पेन और इटली जीत लिया था, ज़ामाके मैदानमें शक्ति कुचल गई थी और संसारके सबसे बड़े और समृद्ध फ़िनीको नगर कार्थेजकी श्री लुट गई थी जिससे इत्रुस्कनोंकी शक्तिकी समाधिपर खड़े आर्य केन्द्र रोम साम्राज्यके प्रशस्त मार्गपर चल पड़ा था।

बाहरसे केबिनमें चला आया और लिखने लगा। थोड़ी ही देर बाद रेवरेण्ड जेम्सकी आवाज़ सुन पड़ी—'मित्र जी, बाहर निकलिए, यह दृश्य देखिए।' श्री जेम्स मुझे 'मित्रजी' कहा करते हैं। उठा और बाहर आया। पहले भी एक बार बाहर जा चुका था, यह उन्हें नहीं मालूम था। ऊपर भी गये। इटलीकी ओर देर तक हम लोग बाइनाकुलरसे देखते रहे। पहाड़की ढालपर प्रायः सर्वत्र अंगूरकी बेलें दिखाई पड़ीं।

सोचा, एक तस्वीर ले लें पर प्रकाश अनुकूल न था। बादलोंके मारे अँधेरा-सा हो रहा था। पानी बरस चुका था, अभी बरस ही रहा था। थोड़ी देरमें एक ओर बड़ा-सा टापू दिखाई दिया जिसकी निचली ढालपर तटतक बसी बस्ती दिखाई पड़ी। टापूका नाम स्त्राम्बोली था और वह कभी ज्वालामुखी रह चुका था। वह ३१३५ फ़ुट ऊँचा है। इधरके प्रायः सभी पहाड़ ज्वालामुखी हैं। एटना तो सिसिलीमें रातके अँधेरेमें ही निकल गया था। आगे दाहिनी ओर प्रसिद्ध और भयावना विसूवियस मिलेगा जिसने पहली सदी ईसवीमें ही नेपुल्सके पासका जगद्विख्यात नगर पाम्पेईको विस्फोटसे निकले अपने लावा और भस्मसे भठ दिया था। विसूवियस नेपुल्सके पास ही है और नेपुल्सको हम आज तीसरे पहर तक दाहिनी ओर कर लाँघ जायँगे। इस स्त्राम्बोलीके समीप ही एक ओर पहाड़ी टापू मिला जो पानीपर ऐसे खड़ा था जैसे जहाज़। हमने पहले उसे जहाज़ समझा भी पर निकला वह पहाड़।

आजतक हम पश्चिम चलते रहे हैं, प्रायः नितान्त पश्चिम, और घड़ी निरन्तर पीछे करनी पड़ती रही है। अब हम यहाँसे पश्चिम बहुत कम,

प्रायः नहीं, और सीधा उत्तर जायँगे, इटलीकी प्रधान भूमि और सार्डीनियाँ–कोर्सिकाके बीच होते हुए। तीसरे पहर तक हमने नेपुल्स भी लाँघ लिया। हैफ़ामें आशा हुई थी कि शायद नेपुल्सके लिए भी माल मिल जायगा और तब हम पाम्पेईका विध्वस्त नगर देख सकेंगे पर ऐसा हो न सका और अब हमें सीधे जेनोआ जाना है, जेनोआकी खाड़ीमें, हैफ़ासे १६१० मील दूर।

और हम चले जा रहे हैं, पर तीव्र गतिसे नहीं, हल्के, क्योंकि कल ही रेडियोसे ख़बर मिल गई थी कि हम जेनोआके बन्दरमें दिन निकलनेके पहले रविवार (१५) को प्रवेश नहीं पा सकेंगे। इससे रातको ही पहुँच कर बाहर समुद्रमें लंगर डाले पड़े रहनेके बजाय कप्तानने जहाज़की चाल ही कुछ धीमी कर देनी मुनासिब समझी। अब हम जेनोआ परसों दिन निकलनेके बाद ही पहुँचेंगे। हमें यह मंजूर है, कुछ चिन्ता नहीं।

आज शामका खाना खाते समय मिस्टर जेम्सने एक चिन्ताजनक संवाद सुनाया। कहा कि अमेरिकाने रेडियोसे प्रसारित किया है कि सारे विदेशियोंके वीज़ा जो अन्य देशोंमें अमेरिकी कान्सुलेटोंने आजसे पहले जारी किये थे आज रद्द कर दिये गये। यह डाँवाडोल कर देनेवाली ख़बर थी। कहीं इतना सारा करा कराया मिट्टीमें न मिल जाय। किसीने राय दी कि जेनोआके अमेरिकी कान्सुलसे मिल लूँ। पर मैंने निश्चित किया कि ऐसा न करूँगा। पहले तो यदि अमेरिकाका वैदेशिक विभाग घरसे यह आज्ञा प्रसारित करेगा तो उसका विदेशस्थ कान्सुल उसमें परिवर्तन कैसे कर सकता है? फिर जेनोआके कान्सुलको वीजामें किसी प्रकारका परिवर्तन करनेका क्या हक़ है? इसके अतिरिक्त मैं तो प्रायः एक महीनेसे जहाज़-पर और समुद्रमें रहा हूँ। फिर वहाँ भारतीय दूतावास भी तो है। पर यदि जहाज़से उतरने ही न दिया तो? तो देखा जायगा, न सही अमेरिका, और देश तो हैं यद्यपि डालरोंकी कमी हो जायगी क्योंकि

व्याख्यानोंके डालर तो वहीं मिलने हैं और इसीलिए तो यूरोपसे टूरका आरम्भ न कर अमेरिकासे करने वाला था।

बड़ा क्रोध आया कि अमेरिका इस प्रकारकी अनुत्तरदायी आज्ञा प्रसारित करेगा। पर अजब क्या है? पोर्टसैयदमें ही ख़बर मिली थी कि दक्षिण कोरियाके प्रेसीडेण्टने कहा कि 'युद्धका न्याय्य लक्ष्य तो ३८ समानान्तर सीमा लाँघना ही है' और बेबिनने कहा कि ३८ समानान्तर सीमा है ही नहीं, और मैकआर्थरने तो ख़ैर, उसे लाँघ कर ही दम लिया। अमेरिकाने जिस प्रकार चीनकी आसमानी सरकारके प्रतिनिधिको अपनी धींगाधींगीसे अपने झूठे पिट्ठू वोटोंसे, राष्ट्र-संघमें बरक़रार रक्खा, चीनी जनताके उचित प्रतिनिधिको संघमें नहीं प्रवेश पाने दिया, जिस प्रकार उसने राष्ट्रसंघके निर्णयके पूर्व ही कोरियामें युद्ध छेड़ दिया, उसी प्रकार उसने उत्तरी कोरियाको हड़प लेनेकी भी सुविधाएँ राष्ट्र-संघसे प्राप्त कर लीं।

और अब उसके तेवर इस प्रकार हैं! सुना है, यह आज्ञा उसने घर और बाहरके कम्यूनिस्टोंके डरसे निकाली है। निस्सन्देह इङ्गलैण्ड कितना महान् है कि वहाँ कम्यूनिस्टोंकी संख्या इतनी होनेपर भी उसने न तो उन्हें कैद किया न विदेशियोके वीज़ा ही रद्द किये। और यह परम्परा उसकी आजकी नहीं, पुरानी है, जब उसने मेटरनिक, नेपोलियन तृतीय और मार्क्स तीनोंको अपने द्वीपमें पनाह दी, जब उसने न लेनिनको रोका न स्तालिनको, न त्रात्स्कीको, न क्रापात्किनको, न बूकनिनको, मात्सिनी-को, न गौरीवाल्डीको।

ख़ैर, भविष्यको स्वयं अपनी चिन्ता अपने समयपर करनेकी सूझ दे अब बिस्तरपर चलता हूँ। काफ़ी लिखा है और यद्यपि बजे अभी साढ़े आठ ही हैं पर आराम ही करूँगा। एक पत्र आज भी लिखना चाहता था पर अब उसे कलपर ही छोड़ता हूँ। हाथ दुख गये हैं और कुछ ठंढ भी लग रही है। अब कुछ ठंढ लगने लगी है। आज सारे दिन ज़ोरकी हवा चलती

रहनेके कारण कुछ सर्दी रही है। वैसे हम अब यूरोपकी हवामें आ गये हैं यद्यपि अभी यह इटलीकी ही हवा है, जो हमारे हिन्दुस्तान सरीखा ही खुले निर्मल आकाश और मौसिमोंका देश है।

—(१३-१०-५०)

आज चौदह है। उठा और मुँह-हाथ धोकर पत्र लिखने बैठा। पत्नी-को एक पत्र लिखा और ब्रेकफ़ास्टके लिए गया, फिर ऊपर कल संध्या कोरफ़ेल साबाल्तीका एक उपन्यास—दि नप्शल्स ऑफ कोर्बल (कोर्बल-की शादी)—फ्रांसीसी (राज्यक्रान्ति सम्बन्धी)—उठा लिया था, उसे समाप्त किया। कप्तानसे ज्ञात हुआ कि हम कबके रोम लाँघ चुके हैं।

इसका मतलब यह है कि हम सार्डीनियाके विशाल द्वीप और इटलीके बीचसे निकल रहे हैं। सार्डीनिया भूमध्यसागरके सबसे बड़े द्वीपोंमें-से है। इससे बड़ा केवल सिसिलीका द्वीप है। अधिकतर यह पहाड़ी है और इसकी आबादी प्रायः दस लाख है। पहले यह द्वीप फ्रांसके अन्तर्गत था पर अब इटलीका है। यह है तो हमारे बायें ही, पर काफ़ी दूर है, इससे हम इसे देख नहीं सकते। हम इसके और इटलीके बीचमें उत्तरकी ओर निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं।

समुद्र शान्त है, प्रशान्त, गाँवके गढ़ेकी तरह। इसमें ज़रा भी लहर, स्पन्दन मात्र तक, नहीं। आदृष्टि फैले हुए जलकी एक चादर है। धूप उस-पर तेज़ चमक रही है। और एक ऐसा कुहासा-सा पड़ा हुआ है कि पता ही नहीं चलता कि हम आसमान देख रहे हैं या समुन्दर।

लंचकी घंटी बजी और हम नीचे आये। खाते समय देर तक इधर-उधरकी गपशप होती रही। मिस वाल्टनके लिए पति ढूँढ़नेका मज़ाक चलता रहा। वह कैसा होगा, कितना ऊँचा, कितनी आयुका, किस रंगका? मैं ब्राह्मण था और श्री जेम्स मिशनरी। दोनों ही पुरोहितका काम कर सकते हैं। तै पाया कि दोनों मिलकर मिस वाल्टनके लिए पति ढूँढ़ेंगे।

फिर जहाज़के प्रधान इञ्जीनियर फ्रांक स्कारा (नारवेजियन) की कल जेनोआमें पत्नी आ रही है। हँसनेके लिए उनकी पत्नीकी चर्चा शुरू हुई, और उस खुशीमें दावतोंकी। फिर एकाएक कप्तानको माण्टी क्रिस्टोकी याद आई और वे ऊपर भागे।

माण्टी क्रिस्टोकी याद मुझे भी आई क्योंकि प्रसिद्ध रोमांचक फ्रांसीसी उपन्यासकार अलेक्जाँद्र दुमाका उपन्यास 'काउण्ट ऑफ माण्टी क्रिस्टो' मैंने कई बार अंग्रेज़ीमें पढ़ा था, और उसका सम्बन्ध इस टापूसे गहरा है। उपन्यासका हीरो शातू दी इफ़के दुर्ग-कारागारसे भागकर यहीं आता है और अबी द्वारा बताये तरीक़ोंसे इस द्वीपकी कन्दराओंमें संचित सीज़र बोर्जियाके पिता पोप अलेक्जैण्डरके अमित धनसे धनी हो जाता है। फ्रांसमें अपने शत्रुओंसे बदला ले और वहाँ अपना कार्य समाप्त कर वह अन्तमें इसी द्वीपकी ओर जहाज़से चलकर अन्तर्धान हो जाता है। काउण्ट ऑफ़ माण्टी क्रिस्टो उपन्यासका एक अद्भुत जादू भरा चरित्र है और माण्टी क्रिस्टो जादूका टापू। हम सब उसे देखने ऊपर भागे।

बादलोंके पीछे उसका ऊँचा शिखर छिपा हुआ था। बाइनाकुलर द्वारा उसे देर तक देखता रहा। हम उसे अपनी दाहिनी ओर छोड़ते उत्तर-की ओर निकल जाते हैं। और देखते एक अजब गुदगुदी मालूम हुई। यह द्वीप अत्यन्त छोटा है, उत्तरसे दक्खिनकी ओर केवल सवा दो मील लम्बा, सर्वथा पथरीला। उसकी चट्टानें प्रायः सीधी खड़ी हैं। सारा द्वीप एक विशाल पहाड़ी है, २१२६ फ़ुट ऊँची। उसके उत्तरी भागपर कुछ मकान हैं। वहीं राजमहल भी है। इस द्वीपमें इटालियन राजा इमैनुएलका शिकार-गाह भी था।

माण्टी क्रिस्टोका टापू इटली और कोर्सिका नामक द्वीपके प्रायः बीचो-बीच है, कोर्सिकाके मध्यभागके सामने। हमारा जहाज़ इस समय कोर्सिका और माण्टीक्रीस्टोके बीचसे जा रहा है, बाईं ओर कोर्सिका है, दाहिनी ओर माण्टी क्रिस्टो।

कोर्सिका पहले इटलीके शासनमें था परन्तु अब फ्रांसीसी राज्यक्रान्तिके समयसे ही यह फ्रांसके शासनमें है। इसका विस्तार भी सार्डीनिया और सिसिलीका-सा पर्याप्त बड़ा है, यद्यपि यह उन दोनोंसे आकारमें छोटा है। इसकी जनसंख्या सवातीन लाखके लगभग है। इस द्वीपने इतिहासका निर्माण किया है। नेपोलियनने इसकी प्रसिद्ध्धि दिगंत तक फैला दी क्योंकि वह स्वयं इसी टापूका निवासी था।

कुछ कालसे कोर्सिका निवासी इटलीके चंगुलसे स्वतन्त्र हो जानेका प्रयत्न कर रहे थे और उस प्रयत्नमें नेपोलियनके पिताका भी कुछ कम हाथ न था। स्वयं नेपोलियन उसी आज़ादीकी लड़ाईके सपने देखा करता था कि तभी फ्रांसने इस द्वीपको खरीद लिया और नेपोलियन वजीफ़ा लेकर फ़ौजी स्कूलमें दाख़िल हो गया। तबसे आगेका इतिहास फ्रांसीसी राज्य-क्रान्तिका है और नेपोलियनके साम्राज्यका। कोर्सिकाका यह निवासी किस प्रकार फ्रांस, इटली, आस्ट्रिया, स्पेन आदिपर अधिकार कर सारे यूरोपका विधाता बन बैठा यह इतिहासका एक दिलचस्प प्रकरण है। उस दिशामें इस कोर्सिकाका असाधारण योग इतिहासको मिला है।

कोर्सिकाका अदृश्य तट दूर है पर हम उसकी लंबाई ही अभी इस जल-प्रसारपर नाप रहे हैं। कुछ देर और ऊपर ठहरकर नीचे लौट आया और एक पुस्तक लेकर बिस्तरमें पड़ रहा। पर सो न सका, सोना चाहता भी न था, क्योंकि आगे एल्बाका द्वीप आनेवाला था। ऐसा न हो कि वह आकर निकल जाय और हम उसे देख न सकें। कई बार उठा और लेटा।

आख़िर एल्बा आया, दाहिनी ओर, कोर्सिकाके उत्तरी भाग और इटलीके बीच, इटलीकी भूमिके काफ़ी पास। कोर्सिकाका नितान्त उत्तरी भाग एक पतला प्रायद्वीप है जिसे काप कोर्स कहते हैं। उससे लगा ही लगा और दक्खिन काम-बिआको है। इसी उत्तरी भूप्रसारके दाहिने पूर्वकी ओर इटलीके पास ही एल्बाका छोटा टापू पूरब-पच्छिम फैला हुआ है।

यह तोस्कानो द्वीपसमूहका सबसे बड़ा, सबसे समृद्ध और सबसे सुन्दर द्वीप है। इसे इटलीकी भूमिसे कानालेदि पिओम्बिनो नामका जलप्रसार पृथक् करता है। यह द्वीप पन्द्रह मील लंबा और दोसे दस मील तक चौड़ा है। इसका सबसे ऊँचा पहाड़ भाँती कापाने है, ३३४३ फ़ुट ऊँचा। यह इटलीके शासनमें है।

नेपोलियनके सम्पर्कसे यह छोटा टापू भी इतिहासमें अमर हो गया है। जब जर्मन-आस्ट्रियन सेनाओंने नेपोलियनको परास्त कर पेरिसमें प्रवेश किया तब वह क़ैदकर एल्बा भेज दिया गया। वह उस पन्द्रह मील लम्बे टापूको ही अपना साम्राज्य मान उसपर आदर्श शासन करने लगा। उधर आस्ट्रियाके मंत्री मैटरनिकके नेतृत्वमें विजयी राष्ट्र यूरोपका नक़शा 'वियनाकी कांग्रेस' में बदलने लगे। बन्दर बाँट शुरू हुई। किसी जातिका पैर किसी जातिके सिरसे बाँधा जाने लगा, किसीकी भुजा किसीके कन्धे से। ऐसा लगा कि नेपोलियन मिट गया और फ्रांसकी राज्यक्रान्तिके बलिदान सर्वथा निरर्थक हो गये। यूरोपके राजपरिवार आश्वस्त हो गये।

सहसा नेपोलियन फ्रांसकी ज़मीनपर आ खड़ा हुआ। एल्बाके छोटे टापूमें वह न अँट सका और वह फ्रांसके रंगमंचपर अपने अन्तिम अभिनय-के अर्थ प्रकृत रूपमें आ खड़ा हुआ। कैसे वह वहाँ पहुँचा इसकी और प्रच्छन्न रूपसे अपने उपन्यास काउण्ट ऑफ माण्टी क्रिस्टोके आरम्भमें अलेक्जान्द्र दुमाने संकेत किया है। जैसे भी हो, नेपोलियन फ्रांस जा पहुँचा और उसकी पुरानी सेनाएँ दौड़-दौड़कर उनके झंडेके नीचे खड़ी होने लगीं। विएनाकी कांग्रेस असमय उठ गई। जानके लाले पड़ गये। राष्ट्रोंने अपनी सेनाएँ फिर मैदानमें खड़ी कीं। यूरोपके सिंहासन हिल उठे।

फिर यूरोपीय इतिहासके वे महत्त्वपूर्ण सवा तीन महीने शुरू होते हैं जिन्हें 'सौ दिन' (हन्ड्रेड डेज़) कहते हैं, जब नेपोलियनने फिर एक बार

अपनी शक्ति जीवित करनेका प्रयत्न किया। पर वह सफल न हो सका और शीघ्र सौ दिन बाद वाटरलूकी लड़ाईमें बुखेर और वेलिंग्टनकी सम्मिलित वाहनीने उस नरपुंगवको परास्त कर दिया। इस बार अंग्रेज़ किसी प्रकारकी दयाके लिए तैयार न थे। और उन्होंने यूरोपसे दूर अफ्रीकाके तटकी ओर सेन्त हेलेना नामके द्वीपमें नैपोलियनको ले जाकर क़ैद कर दिया। उसी द्वीपमें कुछ साल बाद अपने संस्मरण लिखता और अपने कर्मोंका न्याय रूपसे समर्थन करता वह मरा।

एल्बाका यह इटलीके पासका टापू उसी नेपोलियनके इतिहाससे सम्बन्धित है। अब हम इसे पीछे छोड़ चुके हैं और मन्थर गतिसे उत्तरकी ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। दाहिने उत्तरकी ओर इटलीका प्रसिद्ध बन्दर लेघार्न पड़ेगा और उसके बाद स्पात्सियाकी छोटी खाड़ी और तब पश्चिमकी ओर हटकर जेनोआकी खाड़ी। वहीं इटलीके पश्चिमी प्रसारमें दक्षिणी तटपर खाड़ीपर खड़ा जेनोआका प्राचीन और प्रसिद्ध बन्दर है। पर हम आज वहाँ नहीं जा सकते, रातमें भी नहीं, उषाके पहले ब्राह्म मुहूर्तमें भी नहीं, ऐसा ही जेनोआके बन्दरके अधिकारियोंका आदेश है। इससे कल सूर्योदयके बाद, प्रायः आठ बजे हमें ज़ेनोआकी पनाहमें प्रवेश करना है।

आज कुछ जुक़ाम-सा हो आया है। कल शाम हवा ठंढी और ज़ोरकी थी। देरतक डेकपर गोल्फ़ खेलता रहा। ठंढ लग गई। पर रात भली भाँति कट गई, कोई कष्ट नहीं हुआ। आज दोपहरसे छींकें आने लगीं और खूब आईं चार बजेके लगभग जो जलती चायके दो प्याले पिये तब जाकर कहीं सर्दीसे नजात मिली वरना कुछ अजब नहीं कि जुक़ाम हो जाता और जुक़ाम हो जाना मेरे लिए एक क़हर है। बात यह है कि इटली यूरोप होता हुआ भी बहुत कुछ मौसिममें हिन्दुस्तानियत लिए हुए हैं, फिर भी हम एक दूसरी दुनियामें हैं, यूरोपके वातावरणमें, एक नये महाद्वीपके तट पर और एक नई आबोहवाके स्पर्शमें। हवा पानी सचमुच ही अब बदल चला है, स्वदेशसे इस प्रायः पाँच हज़ार मीलकी दूरीपर।

चिट्ठियाँ और भी लिखनी हैं। सारा पढ़ना-लिखना बन्द कर अब चिट्ठियाँ ही पहले लिख लूँगा—बाबूजीको, पद्मा और दुलहिनको, कुछ पत्र न्यूयार्कको। शशीको एक पत्र डालकर बताना होगा कि जहाज़ पहले सप्ताहमें न्यूयार्क पहुँच रहा है। काफ़ी देर हो गई है, देर हुई जा रही है। सोचा था अक्तूबरके मध्य ही पहुँच जायेंगे पर अब नवम्बरके पहले सप्ताह-से पूर्व पहुँचना असम्भव है। पर इस देरकी इतनी परवाह नहीं है, राहमें बहुत कुछ देखा-सुना है। वह उसी देरसे ही और मेरे कारगो-शिप चुननेके कारण ही हो सका। हाँ, यदि यह इतनी देर न हुई होती, और जैसा कि टॉमसकूकके आफ़िस वालोंने मुझे पहले बताया था, तो अक्तूबरकी ग्यारहको न्यूयार्क पहुँच गया होता और अमेरिकी सरकारके इस नये एलानकी परेशानी और ख़तरोंसे बच गया होता जिसके फलस्वरूप विदेशियोंके वीज़ा रद्द कर दिये गये हैं।

जो भी हो, मित्रोंको लिख देना आवश्यक है। एक पत्र शशीको लिखूँगा, दूसरा श्री डेविड फ़्रीमैनको, तीसरा श्रीमती पर्ल एस० बक को। एक और पत्र हिन्दुस्तान भी लिखना है, हिन्दूविश्वविद्यालयके डा० प्राणनाथ को। उन्होंने मध्यपूर्वकी संस्कृतिपर काफ़ी विचार किया है और वैदिक साहित्यको प्राचीन बाबुली-असूरी आदि क्यूनीफ़ार्म लिपियोंमें लिखे अभि-लेखोंके सहारे सुलझानेमें बड़ा परिश्रम किया है। फ़िलिस्तीनके अपने भ्रमणके अनुभव मुझे शीघ्र उन्हें लिख भेजना है। पहला पत्र उनको ही लिखूँगा।

डा० प्राणनाथको पत्र लिख लेनेके बाद सोने लग गया। जहाज़की चाल और धीमी कर दी गई है, प्रायः पाँच मील फ़ी घण्टेकी, वरना हम जेनोआके बन्दरमें रातके एक बजे ही पहुँच जाते। इस रफ्तारसे चलकर प्रातःकाल वहाँ पहुँचेंगे।

—(१४–१०–५०)

आज पन्द्रह है। नींद जल्दी ही खुल गई। जो घड़ी देखी तो अभी केवल चार बजे थे। उठकर मुँह-हाथ धोया, दाढ़ी बनाई, जूतोंमें पालिश की, लांड्री भेजनेके लिए कपड़े इकट्ठे किये, उनकी फ़ेहरिस्त बनाई और बाँध कर एक ओर रख दिया। फिर स्नान कर चाय पी और ऊपर गया, डेक पर। देखा सूर्य अभी बादलोंके गर्भमें है, पर पहाड़ोंकी दीवार जो कमरेसे बिलकुल काली दीख रही थी अब धीरे-धीरे गहरा हरा रंग धारण करती जा रही है।

हमारा जहाज़ तेज़ीसे घूम रहा है और जैसे-जैसे यह घूमता जा रहा है कुहरेके भीतरसे जेनोआकी बत्तियाँ चमकती आ रही हैं। जेनोआका नगर इसी पर्वतके चरणमें, उसकी दीवारकी ढालपर, शिखरपर भी, बसा हुआ है। अब जहाज़ धीरे-धीरे घूमकर सामनेसे उसे दाहिने बाजू लेने लगा। सूरज भी बादलोंसे निकलकर अपनी लाल आभा सामनेके तटपर बिखेरने लगा। तटवर्ती जेनोआकी ऊँची अट्टालिकाएँ, उनके गुंबद और बुर्ज़ियाँ चमक उठीं।

सामने और बिलकुल पास जेनोआका प्राचीन बन्दर है, काफ़ी बड़ा। ज़हाज़को दो मोटरबोट खींचे लिये जा रहे हैं। सामने ही अपने देशका यात्री-जहाज़ खड़ा है, 'सूरत'। मन प्रसन्न हो उठा, भारतका जहाज़ देखकर, अपना स्वच्छ-सुन्दर जहाज़ जिसपर हिन्दुस्तानी नाविक काम कर रहे थे। दौड़कर केबिन गया, केमरा लाया और उसका चित्र लिया। उसी 'सूरत' के पास दूसरी जेटीसे लगकर अपना 'जान बाके' भी खड़ा हुआ। अब टामस कूकके दफ़्तरसे आने वाले स्वदेशके पत्रोंकी प्रतीक्षा है।

— ३ —

जेनोआ और जिब्राल्टरके बीच

जेनोआ। जेनोआ इटलीका प्रधान व्यावसायिक नगर है, उसका प्राचीनतम व्यापारिक नगर भी। कुछ कालके लिए अपने वैभव कालमें वेनिसने जेनोआसे भूमध्यसागरके व्यापारका नेतृत्व छीन लिया था। परन्तु शीघ्र इस नगरने अपना प्राचीन गौरव स्वायत्त कर लिया। जेनोआ वेनिसके इतिहासमें आनेके पहले भी महान् रहा था, उसके पीछे भी महान् बन गया।

जेनोआ उस खाड़ीके तटके बीच बसा है जिससे उसका नाम धारण करनेका गौरव प्राप्त है। बिसाग्नो और पोल्चेवेरा की घाटियोंके बीच बसा यह नगर अत्यन्त सुन्दर है। इसका दृश्य नेपुल्स और कुस्तुन्तुनियाँकी ही भाँति समुद्रसे अभिराम लगता है। नगरको सुन्दर बनाने वाले जितने साधन होते हैं—सागरतट, पर्वतश्रृंखला, खुला निर्मल आकाश—वे सभी इस नगरको प्राप्त हैं। अप्पेनाइन पर्वतमालाकी छायामें जेनोआ बसा है, परन्तु उसकी बस्ती केवल यहीं तक सीमित नहीं। अद्‌र्ध-चन्द्राकार हो वह निरन्तर ऊपर उठता गया है और उसने पर्वतकी प्रायः समूची ढाल अपने कलेवरसे ढक दी है। फिर इसके दोनों पार्श्ववर्ती सिरे पक्षीके डैनोंकी भाँति दोनों ओर शिखरकी ओर उठते चले गये हैं। उनका ढलाव और विशेषकर समुद्रकी तटवर्ती आबादी संसारके सबसे मनोरम स्थलोंमेंसे है और 'इटालियन रिवेयरा'की संज्ञासे प्रसिद्ध है। यह इस प्रकारके अपने पश्चिमी प्रसार 'फ्रेंच रिवेयरा'का सौंदर्यमें प्रबल प्रतिद्वंदी भी है।

फ्रेंच 'रिविएरा' पेग्ली

Nervi - Porticciolo e Golfo Paradiso
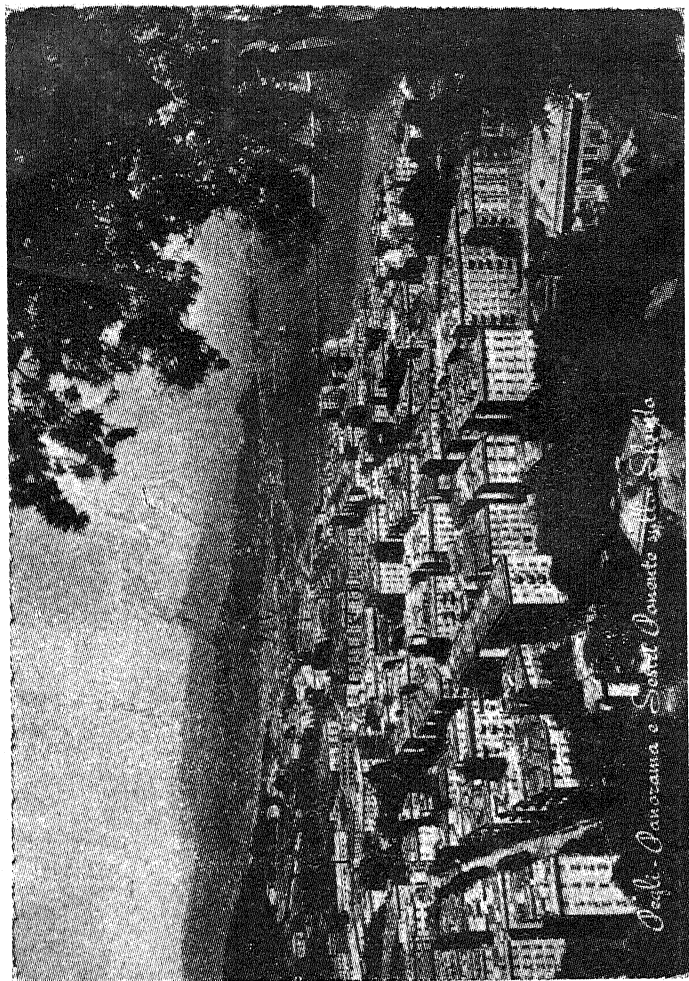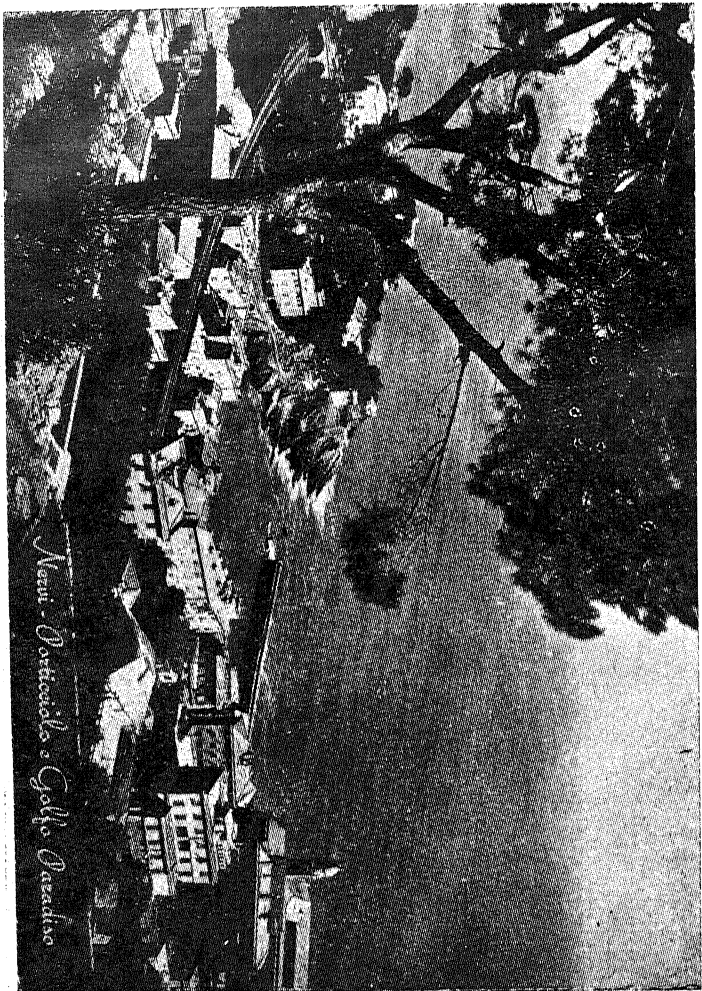
इतालियन, 'रिविएरा' नेर्वी

जेनोआ इटलीके प्राचीनतम नगरोंमें है, सम्भवतः रोमसे भी प्राचीन। रोमके निर्माणकी पारम्परिक तिथि ७५३ ई० पू० है। इसके इतना प्राचीन होनेमें कुछ लोगोंको शंका हो सकती है पर शायद जेनोआके सम्बन्धमें नहीं। अत्यन्त प्राचीन कालमें ही इस भागके इटली-निवासियोंने इसे बन्दरका रूप दे दिया था और यहाँसे दूर-दूरकी वे सामुद्रिक यात्रा करने लगे थे।

कुछ लोगोंका तो यहाँ तक विश्वास है कि इसे जल-प्रलयके बाद हज़रत नूहके पुत्र याफ़ेतने बसाया था। निश्चय इस विश्वासको प्रमाणित करनेका कोई साधन नहीं और ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दीमें इस नगरका निर्माण माननेवालोंमें गणना अधिकतर श्रद्धालुओंकी ही है, वैज्ञानिक विद्वानोंकी नहीं। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि नगर अत्यन्त प्राचीन है यद्यपि इसे ईसा पूर्व पहली सहस्राब्दीके पहलेका नहीं माना जा सकता और न निश्चित रूपसे इसकी कोई आरम्भिक तिथि ही बताई जा सकती है।

इस सम्बन्धमें एक बातमें इतिहासकार सहमत हैं। वह यह कि अत्यन्त प्राचीन कालसे ही लिगूरियन (इटलीके इस तट-प्रदेशके निवासी) जेनोआ-से अपने जहाज़ लेकर भूमध्यसागरके विभिन्न व्यावसायिक नगरोंको जाते थे और उनसे व्यापारिक वस्तुएँ बदलते थे। उनका कार्थेजके प्राचीन नगरसे गहरा व्यापारिक सम्बन्ध था। कार्थेज फ़िनीकी सभ्यताका प्रधान केन्द्र और व्यावसायिक नगर था। फिनीकी व्यापार और सभ्यताकी बुनियाद ईसासे पहले शायद पचीसवीं सदीमें पड़ी थी। परन्तु कार्थेजका वैभव-सूर्य वास्तवमें ईसासे प्रायः सातवीं-आठवीं सदी पूर्व चमका था। तब उस नगरने अपने भूमध्यसागरके दक्षिणवर्ती अफ्रीका तटके आधारसे सागरके प्रायः सारे तटोंपर अधिकार जमा लिया था। उसकी राजनीतिक सत्तामें सम्भव है किसीको सन्देह हो परन्तु व्यापारिक प्रभुतामें किसीको नहीं। उन सदियोंमें और तीन-चार सदियों बाद तक भूमध्यसागरके चतुर्दिक् देशोंपर उसकी अखण्ड प्रभुता बनी रही। तीसरी सदी ई० पू० में सफल प्रतिद्वन्दी रोम

प्रबल हुआ जिसने उसके और संसारप्रसिद्ध तरुण सेनापति हैनिबलको परास्तकर सागरका साम्राज्य दूसरी सदी ई० पू० में छीन लिया। जिन युद्धों द्वारा कार्थेजका सर्वनाश हुआ और रोमका सार्वभौम शासन जमा वे इतिहासमें प्यूनिक युद्धोंके नामसे प्रसिद्ध हुए। और प्रथम प्यूनिक युद्धमें जेनोआके निवासी कार्थेजियोंके मित्र थे और रोमनोंके विरुद्ध लड़े थे।

दूसरे प्यूनिक युद्धमें जेनोआने अपना रुख़ बदल दिया था। उसके इस नये रुख़ने उसे कार्थेजका शत्रु बना दिया और तब उसे अपने इस पक्ष-परिवर्तनका कटु परिणाम भी भुगतना पड़ा। हैनिबालके भाई मागोनेने २७५ ई० पू० उसपर आक्रमणकर उसे बुरी तरह लूटा। अब जेनोआ निवासियोंने खुलकर रोमनोंका साथ दिया और कार्थेजियोंके वे प्रगट शत्रु बन बैठे। जेनोआ अबसे रोमका एक प्रान्त बन गया। इसके वीर सैनिकोंने फिर तो रोमके झण्डेके नीचे खड़े होना अपना कर्तव्य समझा और वे मारियसकी अध्यक्षतामें जुगुर्था और चिम्ब्रीके विरुद्ध लड़ते रहे।

उस कालके संकटमय जीवनने जेनोआको निर्बल कर दिया क्योंकि उसे लूटने और बरबाद करनेमें न तो रोमनोंने किसी प्रकारका संकोच किया न कार्थेजियोंने। दोनोंकी चोटसे इस नगरका वैभव उस प्राचीन-कालमें चूर-चूर हो गया। अपने व्यापारिक जीवनसे जेनोआ असाधारण सम्पन्न हो गया था। परन्तु अब शत्रुओंकी लूट-खसोटसे उसकी समृद्धि नष्ट हो गई और वह भी श्रीविहीन हो गया। परन्तु व्यापारी शान्तिकाल-के लिए उचित अवसर पा समृद्ध हो जाता है। युद्धोंके समाप्त होते ही जेनोआने फिर अपनी नावें सँभालीं और उसे अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करते देर न लगी।

फिर भी उसकी प्राचीन स्वतन्त्रता उसके हाथ न आई। रोम महत्त्वाकांक्षी हो चुका था। उसे साम्राज्यका मज़ा मिल चुका था, शासन-की चाट लग चुकी थी। वह अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा तो जान देकर करता था। रोमके तरुण सेनापति अपनी महत्ताकी नाप अपनी विजयोंसे

करते थे और जेनोआ भी धीरे-धीरे अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता खोकर रोमन साम्राज्यका ही एक संभ्रान्त प्रान्त बन गया। पर उसके नाविक अब अपने नगरकी लक्ष्मीका भंडार नहीं भरते थे, वे रोमके श्रीमानोंके भृत्य थे, कमकर।

आठ बजे प्रातः जहाज़ लगा। हम पहलेसे तैयार थे। जहाज़की सीढ़ियाँ लग रही थीं। हम पुलिस अफ़सरके इन्तज़ारमें थे। पासपोर्टकी कार्रवाईसे छुट्टी पाते ही 'गैंगवे' (सीढ़ी) के नीचे भागे। सामने हिन्दुस्तानका 'सूरत' जहाज़ खड़ा था जिसे देरतक निहारता रहा था। अपने देशका पहला जहाज़ विदेशमें देखा था। बड़ा उत्साह बढ़ा। साथियोंके साथ बग़ैर किसीसे कुछ पूछे उसके ऊपर चढ़ गया। मिस वेण्डबंडने सुझाया, यहाँ हिन्दुस्तानी खाना मिल जायगा, गोआनीज़ दिखाई देते हैं। पूछो, भात-चपाती।

भूखा था, जहाज़को देख सच ललचा गया, जैसे युगोंसे भात-चपाती न देखी हो। हेड बावर्चीको बुलाया। हमें देखकर वह बड़ा खुश हुआ। पर हमने जो खाना माँगा तो जैसे कुम्हला गया। लजाकर बोला, अफ़सोस कि अभी खाना बनना शुरू भी नहीं हुआ है, वरना खिलाकर कितना खुश होता। जहाज़ बस दस मिनटमें ही खुलने वाला है।

सच बेचारा बेबस था। हँसते, हाथ मिलाते, विदा लेते हम भागे। बन्दरके हातेमें हज़ारों तरहकी बाहरसे आई और देशसे बाहर जानेवाली चीज़ोंका अम्बार लगा था। टीलोंसे ऊँचे गोमांसके कतरे अधखुले परतोंमें रक्खे थे। गन्ध असह्य थी। परन्तु रेवरेण्ड जेम्सका बालहृदय मचल गया। अपनेको वे रोक न सके। भागे हुए गये, एकको चाटा, राल टपक पड़ी। रुचियोंमें कितनी भिन्नता होती है। जो एककी घृणा है वही दूसरेका आकर्षण।

माल ढोने वाली अनेक गाड़ियाँ खड़ी थीं जिनमें विशाल घोड़े जुते थे। सवारीके घोड़ोंसे ये भिन्न होते हैं, हाथीके-से, नितान्त भारी। बहुत

ऊँचे, बहुत चौड़े और मज़बूत। इतने विशाल घोड़े कभी तसवीरमें भी न देखे थे। उनकी नस्ल ही दिगर थी। खड़ा देखता रहा। जेम्स साहबने पुकारा तो भागा।

बन्दरसे शहरमें घुसनेके कई रास्ते थे। सामनेकी राहसे बढ़े। लकड़ी-का बन्द अवरोध था। उसके एक ओर तीन-चार सैनिक खड़े थे। वे आगे पास देखने बढ़ आये। पासपोर्टकी आवश्यकता न थी। पासपोर्ट रखकर पास लेना पड़ा था। पास दिखाया तो पूछा गया—सिगरेट है? डालर हैं? पाउण्ड हैं? और जाने क्या-क्या। हममें-से सिगरेट कोई पीता न था, डालर, पाउण्ड जो कुछ थे सब ट्रैवेलर्स चेकमें ही थे, बताकर बढ़ गये। अभी कुछ और चलना था, उस गन्दे मैदान, बन्दरकी हवासे, बाहर निकलनेसे पहले।

दो एक पतली गलियोंसे गुज़रकर ऊँची सड़कपर आ गये, चौड़ी खुली सड़कपर जिसके दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे कईमंज़िले मकान थे। थोड़ी-दूरपर तिकोने, चौकोने, गोल छोटे-छोटे पार्क थे। सुबह बड़ी खुशनुमा थी। सूरज निकला हुआ था, धूप कुछ बुरी नहीं लग रही थी यद्यपि उसकी विशेष अभिलाषा नहीं थी। हवाके हलके झँकोरे बदनको भी जैसे उछाले दे रहे थे। मनमें वैसे ही उछाह भरा था—पहली बार यूरोपकी ज़मीनपर पैर रक्खे थे। विशेषकर इटलीकी उस ज़मीनपर जो इतिहासमें शालीन हो चुकी थी।

बन्दरके मैदानमें गलियोंकी ओर बढ़ते ही तीन छोटी लड़कियाँ दिखाई पड़ीं। सुन्दर, सुडौल लड़कियाँ, ग्यारह-तेरह सालके बीचकी। हमारे साथ आगे-पीछे चल रही थीं। खेलती, हँसती, हमें देखती, विशेषकर मुझे। यूरोपमें सफ़ेद रंग आकृष्ट नहीं करता, सर्वसाधारणका है, काला करता है। मैंने कहा भी 'मिस्टर जेम्स, यहाँ आकर्षणका बिन्दु मैं हूँ, आप नहीं।' 'मिस वाल्टनने मुसकराकर कहा—'एक धोखा भी हो सकता है।' सही, हब्शी होनेका धोखा भी हो सकता था और इथियोपिया जीत लेनेके कारण

वहाँके हब्शियोंसे इटलीका सम्पर्क रहा भी था। मैंने झट होठों और सिर-पर हाथ फिराकर मिस वाल्टनको आश्वस्त कर दिया कि मैं धोखेका कारण नहीं बन सकता।

न, पर उन लड़कियोंका रुख़ मेरी तरफ़ कठोरताका नहीं, स्निग्ध कोमल था। आँखें हँस रही थीं। बात करनेकी उत्सुकता थी। अजनबी था। मैं कुछ बोला नहीं और हम सड़कपर बढ़ते गये। निश्चय हमारा कोई लक्ष्य न था। निरुद्देश्य हम चले जा रहे थे। नई जगहमें अनजानके कारण गुम जानेका कोई डर नहीं होता। खो जाना ज्ञानकी ही एक नकारात्मक संज्ञा है। आंशिक ज्ञान न होनेसे खोना नहीं होता। हमारे लिए हर सड़क 'नई दुनिया'को जाती थी। हम कभी तो सड़क काट दूसरी ओर निकल जाते, कभी मोड़पर मुड़कर दूसरी सड़क पकड़ लेते।

सदा पिछली छोड़ी हुई सड़क भूल जाती। जो बात नहीं भूलती वह यह थी कि वे बच्चियाँ अब भी हमारे साथ थीं। कभी वे हमारे आगे हो जातीं कभी पीछे, कभी बाएँ, कभी दाएँ कभी बिलकुल गायब हो गयी दीखतीं फिर सहसा हँसतीं हुई बग़लसे निकल पड़तीं। सड़क-पर मोटर पानी छिड़कती निकल गयी। अधिकतर सड़कें पहले ही धुल चुकी थीं। इससे चमक रही थीं। आकाश भी निर्मल, निरभ्र, नीला था, इटलीका अपना आकाश, यूरोपका ही, पर उसके उत्तरी देशोंसे सर्वथा भिन्न, हिन्दुस्तान जैसा।

सामने पार्क था, हरा-भरा-सजा। चारों ओर बेंचे पड़ी थीं। पार्क कई तहोंका था, तहपर तह ऊँचा। बीच वाली ज़मीनपर ताँबेका घुड़सवार था। हम उसकी निर्जीव रानों द्वारा विशाल अश्वको दबानेकी हास्यास्पद चेष्टा देखते उसे पीछे छोड़ते आगे बढ़ गये। ऊँचेपर सड़क थी, चढ़ गये। उसके एक मोड़पर ऊँचा खण्डहर मैदान था, हरियालीसे लदा। वहाँ पहुँचते ही साथकी बच्चियोंको खड़ा पाया।

अब रुक न सका। मैंने मुसकरा दिया। वे पहलेसे ही हँस रही

थीं। उनकी ओर उँगलियोंसे इशाराकर पूछा—'फ्रेंड्स' ? (मित्र ?) नहीं समझीं, हँस पड़ीं, फ्रेंचमें पूछा—'अमी ?' (मित्र ?)। तीनों एक साथ सकारात्मक स्वर कर उठीं। 'अमी'से मिलता-जुलता शब्द ही मित्रके लिए इटालियन ज़बानमें भी व्यवहृत होता है। बातें होने लगीं, अधिकतर इशारोंसे, क्योंकि इटालियन पूर्वजोंके वंशधर होते भी रेवरेण्ड जेम्स उधरसे कोरे थे। फ्रेंचके एकाध शब्दोंकी जानकारीसे मैं कुछ-कुछ उत्तर दे भी लेता था पर वे तो निस्पन्द मुँह ही देखते रहते।

एक तो इटालियन ज़बान, दूसरे बोलने वाले बच्चे, अत्यन्त मधुर थी। इटालियनके बराबर मीठी ज़बान दुनियामें किसी मुल्ककी नहीं, फ्रांस और फ़ारसकी भी नहीं। हम मुग्ध उनकी बातें बग़ैर एक लफ़्ज़ समझें सुनते रहे। यह समझ रही थीं, हमें अच्छा लग रहा है, बोलती जाती थीं, कभी हमसे, कभी आपसमें। और हँसीके फ़ौवारे निरन्तर छूट रहे थे। इटालियन स्वर सदा एकरस रहते हैं—उन्हें बोलते मुँह पूरा खोलना पड़ता है—'ए'का उच्चारण 'आ' है, 'ई'का 'ए', 'आई'का 'ई', 'औ'का 'औ', 'यू'का 'ऊ'। कहीं धोखा नहीं, कहीं विकल्प नहीं। उस भाषामें टवर्ग नहीं होता।

मैंने लड़कियोंसे नाम पूछा। उन्होंने अपने नाम बताये—मीलारा सिल्वाना (Milara Cilvana) मारा रोज़ा (Mara Rosa), पेर्सी अनामेरिया (Perci Annameria)। तीनों स्कूलमें पढ़ती थीं। आज इतवार था, स्कूलकी छुट्टी थी, बाहर घूमने निकल पड़ी थीं। मैंने उनकी एक तस्वीर ली। पासकी बड़ी बिल्डिंगके विषयमें पूछा—उन्होंने एक साथ कहा—'हस्पताल'। मुझसे पूछा—'इण्डियन' ? मैंने स्वीकारात्मक संकेतकर मित्रोंकी ओर देख कहा—'अमेरिकन'। बच्चियोंने हाथ मिलाया, हमसे विदा ली और एक ओर चली गईं, बार-बार फिर-फिर देखतीं। जैसे हम कभीके दोस्त हों। यह इन्सानियतका सौरभ है जो कभी कहीं मन्द नहीं पड़ता। हम पहली बार मिले थे, सदाके लिए, जीवनमें फिर कभी न

मिलनेके लिए बिछुड़ गये, पर यादकी लीक बनी रही जो बरबस लौट पड़ती है ।

अस्पतालमें दाखिल हुए । अस्पताल बड़ा था, दो मंज़िला, लम्बा, चौड़ा, कई चौकोंका । एक सिस्टरने अंग्रेज़ी न जानते हुए भी बड़ी तत्परता-से हमारा स्वागत किया । एक और मिली जो थोड़ा-बहुत अंग्रेज़ी बोल लेती थी । उसने हमें चारों ओर प्रत्येक विभागमें घुमाया । बड़ी सफाई थी । रुपयेकी कमी न थी और उसका सही उपयोग होता जान पड़ा । सैकड़ों बेड थे । चीड़-फाड़का विभाग अलग था । एक ज़च्चा विभाग भी था । बड़ेसे वार्डमें प्रायः बीस बिस्तर लगे थे । शायद और वार्ड भी थे । मैं उधरसे हट आया । हमारी तीनों साथिनें अन्दर चली गईं ।

तभी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोलती एक नर्स भागी हुई हमारे पास पहुँची । उसकी चेष्टासे कुछ घबड़ाहट, कुछ बेबसी, कुछ अनुनय झलकता था । उसने हमें ऊपर चलनेको कहा । झट, मित्रोंके आ जानेपर हम 'लिफ्ट'से ऊपर गये । रास्तेमें नर्सने बताया, ऊपर अंग्रेज़ बीमार है, 'नश्तरका केस', किसी अंग्रेज़ी बोलने वालेसे बात करनेको तड़प रहा है ।

लम्बे बरामदेके सिरेपर उत्तरकी ओर एक छोटा-सा कमरा था जिसमें अकेला पड़ा २४–२५ सालका नौजवान दर्दसे तड़प रहा था । रह-रहकर उसकी चीख़ हमें व्याकुल कर देती । उसे अपेन्डिसाइटिज़ थी जिसका आपरेशन हुआ था । आपरेशन तो वस्तुतः सँभालके लिए हुआ था । पेटका फोड़ा अपने आप फूट गया था । इंगलैंडसे वह पूरब जा रहा था । अपेंडि-साइटीज़का दर्द राहमें ही उठा । पहलेसे ही तकलीफ़ थी, ग़रीब जानता न था । दर्द बढ़ता गया । जहाज़पर इलाज कहाँ तक हो सकता था । एक दिन सहसा फूट गया । ग़नीमत हुई कि जहाज़ जेनोआके पास पहुँच गया । युवक उतारकर अस्पतालमें दाखिल कर दिया गया ।

वह समझता था कि उसका रोग भयानक है । एक तो अपेण्डिसाइ-टीज़, दूसरे अपने आप फटा हुआ । टाँके लगा दिये गये थे पर दर्द बेहिसाब

था। कोई बेहोशीकी दवा काम नहीं करती थी। तीन दिनसे बेचारा इसी तरह तड़प रहा था। माँ-बाप भाई-बहन सब दूर थे, सभी याद आ रहे थे। बड़े मन्सूबेसे उन्होंने उसे विदेश भेजा था, जहाज़पर आकर विदा किया था और आज वह अकेला असहाय दूर देशमें ज़िन्दगीकी राहके किनारे पड़ा था। किसीसे दो बातें अँग्रेज़ीमें करनेको तड़प रहा था। जब उसने सुना कि अँग्रेज़ी बोलनेवाले 'विज़िटर' नीचे घूम रहे हैं तब मिलनेको बेताब हो उठा।

हमारे पहुँचते ही, जहाँ उसमें हिल तक सकनेकी ताक़त न थी, हिलनेसे भयानक दर्द होता था, वहाँ जिस्मको तनिक उठाकर वह हममें-से प्रत्येकसे गले मिला। फूटकर रो पड़ा। उसका बच्चों-सा बिलखना अत्यन्त असह्य हो उठा। कोई मदद न हो सकी। फिर भी उसे बड़ी सान्त्वना मिली। हम उसके कोई होते न थे। दूरके इन्सान थे। जितना ही मैं दूरका था उतना ही मेरे अमेरिकन साथी। हमसे अधिक निकटके तो वे इटालियन ही थे जो उनकी देख-भाल कर रहे थे पर भाषाका दायरा पारिवारिक आभास उत्पन्न करता है। अपनी जबानमें मरते हुएका भी किसी ऐसेसे बोल लेना जो उसकी बात, उसका दुःख, समझता है, बड़ी न्यामत है।

उस नौजवानको छोड़नेका जी नहीं होता था। हमारे चलनेसे वह और बिलख पड़ा, लगा, जैसे किसी अति निकटके सम्बन्धीको छोड़कर जा रहे हों। जहाज़पर पहुँचकर भी उसकी याद बरबस आती रही, बार-बार। उसका तड़पना बार-बार दिलपर चोट करता। उसका अकेलापन, वतनसे दूरका सूनापन जैसे हमें भी बेमन कर देता था।

जहाज़की ओर लौटे। प्रायः उसी पहली राहसे। बन्दर पास ही था। हम कुछ दूर नहीं आये थे। वह बादल दूर पूरब भागा जा रहा था जो अभी नगरके उस भागपर पानीकी पिचकारी छोड़ गया था। रविवार-का दिन था, इससे दुकानें तो बन्द थीं पर होटल-रेस्तराँ चल रहे थे।

यहूदी रब्बी बाउम, फ्राऊ बाउम और उनकी बच्ची

साग-सब्ज़ी-फल आदिकी दुकानें खुली थीं। लोग ख़रीद रहे थे। सन्तरे, मोसम्बी, केले, सेव, आडू, काले-हरे अँगूर, आम तक। सब्ज़ी हर क़िस्मकी पाव-पाव डेढ़-डेढ़ पावके आलू, टमाटर, भिण्डी, पालक, बन्दगोभी आदि सब कुछ।

धीरे-ही-धीरे दोपहर हो आई थी। लंचका समय हो चला था। तैयार होकर सीधे खानेके कमरेमें पहुँचे। स्टीवार्डेस देखकर मुस-कराईं। मैंने उनका भाव नहीं समझा। तब समझा जब मेज़ निरामिष खाद्योंसे भर गई। वह और कप्तान दोनों आज मुझे प्रसन्नकर उसका मज़ा लेनेको तैयार बैठे थे। इससे एकके बाद एक नहीं सब एक साथ, जो हाल ही नगरके बाज़ारसे आया था, सामने रख दिया गया। सब हँस पड़े। जेम्स साहब और दूसरे साथियोंके लिए भी उनके अभिमत पदार्थ प्रस्तुत थे। मेरे लिए तो हज़ार सपने जैसे एकाएक सच हो उठे थे। जेनोआकी दुकानोंमें जो देखा था वह सारा उठकर मेरे मेज़पर आ गया था। कहना न होगा कि मैंने आहारके साथ समुचित न्याय किया और स्टिवार्डेस तथा कप्तान नोक्लिंगके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकाशित किया। स्टीवा-र्डेस तो अपने यत्न-मात्रसे प्रसन्न और सन्तुष्ट थीं क्योंकि मैं जो निरामिष-भोजी होनेसे संसारके सारे पदार्थोंसे विरहित था उनकी कृपाका विशेष पात्र था। मुझे सब प्रकारसे वह खिलाना चाहतीं पर 'सकल पदारथ'के रहते भी जो मैं अभाग्यसे उससे वंचित था उसे वह नियतिको ही दोषी ठहराती थीं। फिर भी मेरी रुचि इतने दिनों (चौबीस दिन) साथ रहकर वह जान गई थीं और उनको यक़ीन था कि आज मैं भरपेट खाऊँगा। खाया मैंने भरपेट। वह अभितृप्त हो गईं।

एक नये परिवारसे भोजनके समय मुलाक़ात हुई। ये रब्बी, यहूदी पुरोहित थे। जर्मनीमें सब कुछ खो चुके थे और अब अमेरिका जा रहे थे। भले, अधेड़, साफ़ दयालु चेहरा। उसपर लम्बी दाढ़ी। काले बालों-पर चाँदपर चिपकी गोल टोपी। साथ अधेड़ सुन्दर पत्नी थीं, और एक

चार सालकी बच्ची। कोई अंग्रेज़ी नहीं बोलता था, केवल इब्रानी और जर्मन, या जर्मन मिली इब्रानी, यिद्दिश। प्रायः निरामिषभोजी थे, कमसे कम 'सैबथ' (शनिवार) के दिन। लड़की बड़ी तेज थी। कुछ घण्टोंमें ही अंग्रेज़ीके अनेक शब्द सीख गई। पर हममें अधिकतर बातें इशारोंमें ही होती थीं।

जेनोआसे नये इंजीनियरने जहाज़का चार्ज ले लिया था। अब तक जो इंजीनियर हमारे साथ रहे थे वे भी जहाज़में ही रहेंगे पर चार्ज नये इंजीनियरका होगा। हमारे पुराने साथी इंजीनियरकी पत्नी भी लञ्चके समय मिली थीं। वह भी अंग्रेज़ी नहीं जानतीं। उनके पति, जो मुझपर विशेष मिहरवान थे, हम दोनोंके बीच दोभाषियेका काम करते थे। पत्नी हल्की-फुल्की सुकुमार-सुन्दर थीं, नारवेसे अधिकतर रेलसे ही आई थीं। बड़ी सहृदय और मिलनसार लगीं। काश कि मेरे ज़बान होती, या उनके ही!

कुछ देर तीसरे पहर आराम किया। आज जहाज़पर बड़ी चहल-पहल थी। कारण कि शामको कुछ आवश्यक खलासियोंको छोड़ सबको तटपर जानेकी छुट्टी थी। सात बजे नगरमें कुछ दूरपर 'नारवे जहाजी होम'में समारोह था, दावत थी। हम सभी वहाँ निमंत्रित थे। सारे बन्दर-गाहोंमें माँझियोंके मिलने-खेलनेके क्लब होते हैं। और नारवेके प्राचीन सामुद्रिक होनेके कारण प्रायः प्रत्येक बन्दरमें उसके माझियोंका अपना भवन था। जेनोआका तो विशेष सम्पन्न था। जहाज़ोंके प्रायः सभी बड़े-छोटे अफ़सर, खलासी आदि तैयार होने लगे। शामको नगर जानेके लिए जो 'गैंगवे'की ओर बढ़ा तो माझियोंका छुट्टीका लेबास देख दंग रह गया। उनकी स्नायुग्रथित देह देखनेका अभ्यस्त होनेके कारण उन्हें सूट और टाईमें पहचानना कठिन हो रहा था।

सात बजे गन्तव्य स्थानको पहुँचना था। साढ़े ६ बजे ही तैयार होकर केबिनसे बाहर निकल आये। सभी तैयार मिले। टैक्सियाँ आवश्यकता-

नुसार मँगा ली गई थीं। नगर घूमने निकले। बिजलीकी रोशनीमें शहर चमक रहा था। रात थी और हम टैक्सियोंमें थे, पर यह समझते देर न लगी कि पिछली लड़ाईमें जेनोआ कितना बरबाद हो चुका है। इतना कि मरम्मत दिन-रात होते-रहते भी खण्डहरोंका कोई शुमार नहीं। इटली गत महायुद्धमें आक्रान्ता रहा था इससे उसे क्षति भी काफ़ी उठानी पड़ी। सन् ३७ से ही उसने अपनी फ़ासिस्ती शक्तिका प्रदर्शन शुरू कर दिया था। अबीसीनियापर उसकी बढ़ी शक्तिकी पहली चोट पड़ी। पर महायुद्धके अन्त तक उसे स्वयं धराशायी होना पड़ा था। और युद्ध अपनी नृशंसतामें फ़ौजी गैरफ़ौजीमें तो अन्तर डालता नहीं, सबका एक-साँ नाश करता है। सही, इटलीको गुमराह करनेवाले कुछ थोड़े चोटीके राजनीतिक ही थे पर उनका परिणाम तो सबको भुगतना पड़ा। इटलीके नगरोंमें सबसे अधिक हानि जेनोआको हुई, सबसे अधिक बरबादी उसीकी हुई। इतनी कि आज लड़ाईके प्रायः पाँच साल बन्द हुए होकर भी खण्डहर हज़ारोंकी तादादमें शहरमें खड़े हैं, इसके बावजूद कि उनकी सम्हाल बराबर होती जा रही है।

उन खण्डहरोंपर नज़र डालते, चौड़ी सड़कोंकी ऊँची अट्टालिकाओंके सायेसे निकलते हम 'पियात्सा दफ़ेरारी'के प्रशस्त चौराहेपर जा खड़े हुए। बड़ा भव्य दृश्य था। लाल-पीली-नीली बिजलीकी रोशनीमें बीचके फ़ौवारों-की नीहारिकाएँ दूर ऊँचाईसे उठ-उठ बिखर रही थीं, रंग-बिरंगी। पाँच मिनट बाद ही हम मोटरोंमें जा बैठे। सात बजे नियत स्थानपर पहुँचना था।

माँझियोंका वह भवन एक गलीमें था, नगरके दूर कोनेमें। आध घण्टे मोटरोंमें चलते रहे थे। आध घण्टा रातकी सूनी सड़कोंपर मोटरके लिए काफ़ी होता है। सामने बाहरी दीवारमें केवल एक पतला दरवाज़ा था। उससे भीतर घुसे। ख़ासा लम्बा-चौड़ा कम्पाउण्ड था, और उसके बीच एक अच्छा-भला मकान। उसके बरामदे-कमरे भरे थे। आये लोगों-

की भीड़ ख़ासी थी। सभी माँझी ही न थे। कुछ माँझी, कुछ उनके जहाज़ोंके यात्री, कुछ उत्तरी देशोंके दूतावासोंके कर्मचारी, कुछ पादरी।

बरामदेमें लोग पिङ्पाङ् खेल रहे थे। कमरोंमें दूसरे विविध खेल। मैंने भी रिङ्गके दो-एक हाथ फेंके। फिर कुछ फ़ोटो-कार्ड ख़रीदे। सैकड़ों लोग थे। कुछ बाहर जानेवाले, कुछ बाहरसे आनेवाले यात्री भी थे। आठ बजे खाना शुरू हुआ था। खानेसे पहले स्वागत आदि। वह नाविक-सदन एक प्रकारका गिरजा भी था। पादरीने साफ़-सुथरा व्याख्यान दिया था। कुछ गाना-बजाना हुआ। एक नाविकने अत्यन्त सुन्दर वायोलिन बजाई। बड़ा उत्साह था लोगोंमें। वीज़ाकी परेशानीने मनमें बड़ी चिन्ता उत्पन्न कर दी थी फिर भी जशनने मनको काफ़ी हल्का कर दिया।

क़रीब दस बजे खाना ख़त्म हुआ। कुछ लोग तो चले गये, बाक़ी दल-के-दल बैठे-खड़े बात करने लगे। मैं जैसे ही मेज़से उठकर हाल कमरेमें आया, किसीने पूछा कि डेनमार्कके कान्सुल आपसे बात करना चाहते हैं, कुछ समय दे सकेंगे? समय मेरे पास अफ़रात था, पर मैं उन्हें जानता न था और ताज्जुब हुआ कि उन्होंने मुझे कैसे जाना। बात यह थी कि किसीने उनसे यह कह दिया था कि हममें एक आर्क्यालोजिस्ट (पुरातत्त्ववेत्ता) और बाइबिलकी पुरानी पोथीका जानकार है। और चूँकि उनके बड़े भाई मध्य-पूर्वके पुराविद् रहे थे, उनको मुझमें कुछ दिलचस्पी हो आई।

मैंने उनसे मिलते ही उनका भ्रम दूर कर दिया कि मेरी उस दिशामें कोई ख़ास जानकारी नहीं है। हाँ, मैंने उनसे कहा, मेरी उसमें दिलचस्पी ज़रूर है और बाबुल, अस्शुर आदिके प्राचीन इतिहासका विद्यार्थी होनेके नाते जहाँ इन देशों और ख़ल्द आदिका उस महान् पुस्तकमें जिक्र है वहाँ मेरा विशेष राग भी है। उनसे देर तक बाइबिल, मध्य-पूर्व आदिपर मेरी बात भी हुई। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं सीधा इसरायलसे वहाँकी प्राचीन जगहोंकी खुदाइयाँ देखकर और नज़रथसे जुरूसलम तथा अक्करसे

गैलिली तकका दौरा करके आ रहा हूँ, तब तो वे और भी प्रभावित हुए। ऊँचे गठे सुन्दर जवान थे, नितान्त भद्र। उनका नाम था स्टीन बेस्गार्ड (Steen Boesgaard)। उनके साथ उनकी आकर्षक पत्नी और कन्या भी थीं। हमलोग अपनी बातोंके सिलसिले और जोशमें यह सर्वथा भूल गये कि हम खड़े हैं और हमें खड़े-खड़े प्रायः घण्टा बीत चुका है। चूँकि मैं खड़ा था, वे तीनों भी शिष्टतावश खड़े थे। जब मैंने लड़कीको कुछ अनमनी एक पैरसे दूसरे पैरपर भार डालते देखा तब मुझे उसका ध्यान आया और मैंने उनसे क्षमा माँगते हुए बैठनेकी प्रार्थना की।

हम वहाँसे जब चले तब आधी रात कबकी बीत चुकी थी, प्रायः एक बज चला था। उन्होंने मेरे कुछ लेक्चर करानेकी बात की, जेनोआमें फिर आनेकी बात कही, और डेनमार्क आनेका बार-बार अनुरोध किया।

सड़कें सुनसान थीं। रोशनी सर्वत्र थी, पर सूनी-सी। टैक्सीपर थोड़ी देर बैठना भी लगा जैसे घण्टों बैठे रहे हों। केबिनमें घुसते ही, कपड़े उतार फेंके और बिस्तरमें जा घुसा।

—(१३-१०-५०)

सुबह जब सोकर उठा तब ख़ासी धूप चढ़ आई थी। घोड़ा बेचकर सोया था। आज बड़ा काम था। कुछ फोटो प्रिण्ट करानेके लिए नेगैटिव देने थे, टॉमसकूकके दफ़्तरमें जाकर ट्रैवेलर्स चेक भुनाने थे, जेनोआके दर्शनीय स्थान देखनेका प्रबन्ध करना था, कुछ ख़रीदारी भी करनी थी— हैट जो हैफ़ामें टैक्सीको भेंट कर आया था और इन सबसे आवश्यक था अपने 'वीज़ा'की समस्या हल करना। ग्यारहको जब हम अभी समुद्रमें ही थे कि प्रेसिडेण्ट ट्रूमन साहबने रेडियोपर ऐलान कर दिया था कि जिनके 'वीज़ा' ग्यारह अक्तूबरके पहलेके होंगे वे रद्द समझे जायँगे, अमेरिकाके लिए उन्हें नया 'वीज़ा' लेना होगा। बग़ैर नये 'वीज़ा'के यात्रियोंको अमेरिकी बन्दरमें लानेवाले जहाज़को फ़ी यात्री एक हज़ार

डालर (पौने पाँच हज़ार रुपये) जुरमाना देना होगा। बस तभीसे यह भयानक सिर-दर्द शुरू हो गया था। बात छिपाकर रखनी थी। तटपर पहुँचते ही अमेरिकन कान्सुलेट जाकर पहले 'वीज़ा' ठीक करा लेना आवश्यक था। वही पहले करना भी चाहता था पर अगला दिन रविवार पड़ता था, इसलिए लाचारी थी। आज आफ़िस खुलते ही पहला काम यही करना था, पर आफ़िस नौ बजेसे पहले खुलनेकी कोई संभावना न थी।

स्नानादिसे झट निवृत्त होकर खानेके कमरेमें नाश्तेके लिए पहुँचा। लोग पहले ही आ डटे थे। आध घण्टेमें बाहर निकल पाँचो साथी कलकी ही राह सन्तरियोंको पास दिखा तोतेके-से रटे सवालोंका पूर्ववत् ज़वाब दे सड़कपर निकल आये। पूछा, बाज़ार किधर है, जहाँ टॉमस कूक आदिके दफ़्तर हैं ? पता चला कि ३० नम्बरके ट्रामसे पियात्सा आक्वावर्दे जाया जा सकता है जहाँ अमेरिकन एक्सप्रेस, टॉमस कूक आदिके दफ़्तर हैं।

अकचकाये अजनबीकी तरह इधर-उधर देखते रहे थे कि ३० नं० का ट्राम आ गया। भागकर चढ़ गये। अकेला होता तो शायद नहीं चढ़ता, भीड़ इतनी थी। इतनी भीड़ तो अपने देशमें भी नहीं देखी। एकपर एक बैठे, छतसे टँगे, एक-में-एक गुँथे। पर ज़रा शोर नहीं, ज़रा बेरुख़ी नहीं। नज़रें मिल गईं तो बेमन भी लोग मुसकरा ही पड़ते थे। जाना, यह यूरोप है।

पियात्सा अक्कावर्देका 'चौपाटी' मनोहर है, लोगोंसे भरा, बसों-मोटरों-से भरा। चारों ओर दुकानें हैं। एक ओर छोटे पार्कमें नई दुनियाका पता लगानेवाले क्रिस्तोफ़ारो कोलोम्बो (कोलम्बस्) की मूर्ति है, मूर्ति १८६२ में चन्देकी रक़मसे बनी थी। दर्शनीय है। कोलम्बस् लंगरपर झुका खड़ा है। नीचे चारों कोनोंपर धर्म, विज्ञान, शक्ति और नौचालनकी क्रमशः वार्नी, कोस्तोली, सान्तारेली और गागिनीकी बनाई मूर्तियाँ हैं, चार उत्कीर्ण दृश्य महानाविकका जीवन व्यक्त करते हैं। इनमें सुन्दरतम
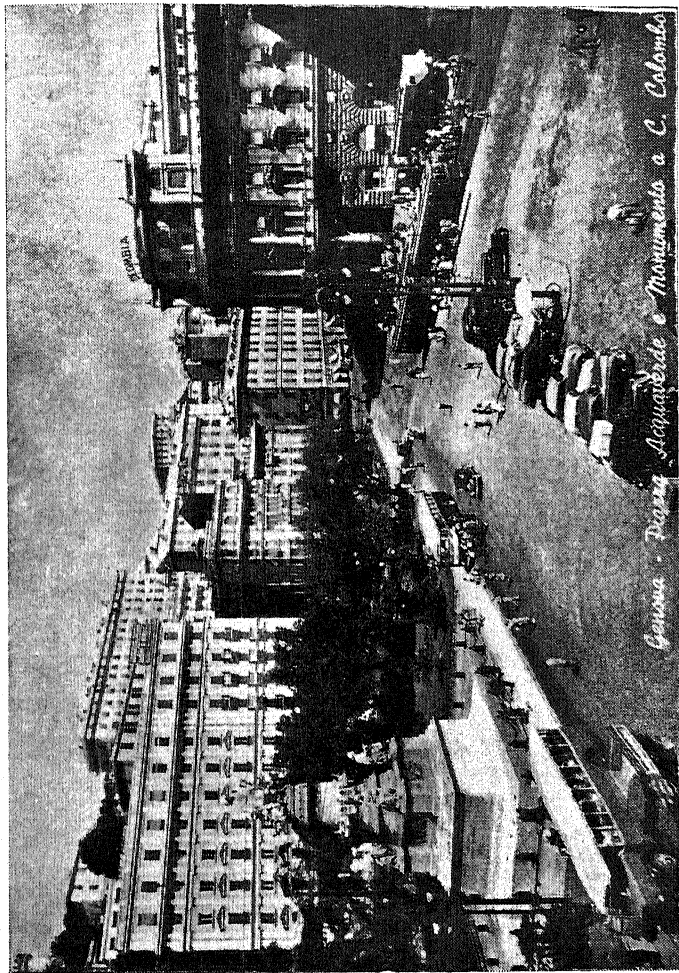
जेनोआ–अक्वावेर्दे के चौक में कोलम्बस की स्मारक-मूर्ति

रेवेली द्वारा प्रस्तुत कोलम्बस्का शृङ्खलाबद्ध दृश्य है। देर तक खड़ा उस असाधारण धीर नाविककी प्रतिमा देखता रहा जिसे अनेक लोग स्पेनका नागरिक करके ही जानते हैं। कोलम्बस् जेनोआका रहनेवाला था। उसका पुराना साधारण घर आज भी विया दान्तेमें सुरक्षित है, राष्ट्रनिधिकी भाँति।

उसी पियात्सा अक्कावर्देसे वह विया बाल्वी नामकी सड़क गई है जिसपर टॉमस कूकका दफ़्तर है। बिलकुल पास प्रायः मुँह पर ही। 'विया' कहते हैं सड़कको। मुझे टॉमस कूकके दफ़्तरमें छोड़ लोग अमेरिकन एक्स्प्रेसके आफ़िसमें चले गये। वहाँ उन्हें अपनी चिट्ठियाँ देखनी थीं। मैंने अपनी चिट्ठियाँ टॉमस कूकके यहाँसे लीं। घरकी ओर मित्रोंकी अनेक चिट्ठियाँ थीं। देवव्रतकी चिट्ठी तो जहाज़पर ही मिल गई थी क्योंकि उसपर पतामें केवल जेनोआ, मेरा नाम और जहाज़का नाम लिखा था। कभी-कभी कम लिखना सही लिखना सिद्ध होता है, उसके खो जानेका भी डर था, पर जो मिला तो सबसे पहले। घरकी याद ताज़ी हो गई। कुछ देर फिर-फिर चिट्ठियाँ पढ़ता रहा। एकाएक एक सज्जनके स्पर्शसे सपना टूटा।

देखा, लम्बी दाढ़ीवाले लम्बा पादरीनुमा लेबास पहने भारतीय खड़े थे। उन्होंने पूछा, हिन्दुस्तानसे आ रहे हैं या हिन्दुस्तान जा रहे हैं? बताया, अमेरिका जा रहा हूँ। फिर मेरे पूछनेपर मालूम हुआ कि वे और उनके दूसरे दो बन्धु 'पवित्र वर्ष'के समारोहमें शामिल होने आये थे, अब जहाज़ न मिलनेसे रुके पड़े हैं, और उसकी आशा न होनेसे हवाई सफ़रका टिकट ख़रीद रहे हैं। छः महीनेसे उधर ही थे। 'पवित्र वर्ष' हर पचास साल बाद आता है, जब पोप विशेष रूपसे दर्शन देते हैं। यह साल वही पवित्र वर्ष था सन् ४९ की क्रिस्मसकी शामसे सन् ५० की क्रिस्मसकी शाम तक।

मैंने उनसे कुछ इधर-उधरकी बातें कर अपना काम सम्हाला।

चिट्ठियाँ ले ही चुका था। ट्रैवेलर चेकके 'लीरे' बदलने थे, वीज़ाके सम्बन्ध-में पूछताछ करनी थी। लीरा इटलीका सिक्का होता है। सिक्के १, ५, १०, २५ और ५० के होते हैं और नोट १०, ५०, १००, ५००, १००० और १००००के। लीरेकी क़ीमत बड़ी घटिया है। १७५० लीरे एक पाउण्ड या १३ रु० ६ आ० के आते हैं। डालर थोड़े थे, इतनी कठिनतासे मिलनेवाले डालर, इससे उन्हें बचा रखना था। उन्हें मैंने नहीं छुआ, पाउण्डसे ज़रूरत भर लीरे बदल लिये।

इटलीमें चमड़ेके, सोनेके बेलबूटोंवाले बड़े सुन्दर बटुए मिलते हैं। कुछ टॉमस कूकके दफ़्तरमें आलमारीके भीतर सजे थे। बड़े आकर्षक लग रहे थे। दो ख़रीद लिये, एक बड़ा और दूसरा हथेलीमें आ जानेवाला छोटा। ३६०० लीरें (क़रीब २७ रु० ८ आ०) में बड़ा और १२०० (९ रु० २ आ०) में छोटा। बड़ावाला अत्यन्त सुन्दर था, छोटा भी कुछ कम निराला न था। साथियोंने जो उन्हें देखा तो लुभ गये।

वीज़ाका मामला टॉमस कूककी पहुँचसे परे था। उन्होंने कहा कि अगर पासपोर्ट और पुराना वीज़ा उनके पास छोड़ दूँ तो वे अमरीकी कान्सुलेटसे दूसरा दिलवा देंगे। पर उसमें कुछ वक़्त लगेगा, प्रायः एक सप्ताह, क्योंकि वीज़ा जारी होनेके स्थान बम्बईको लिखना पड़ेगा और उस आफ़िससे यह लिखनेपर कि इस आदमीसे कोई डर नहीं है यहीं इटलीसे वीज़ा बदल दिया जायगा। पर मेरे लिए यह सम्भव नहीं क्योंकि मेरा जहाज़ दो दिन बाद ही कैनाडा चला जानेवाला है। उसे छोड़नेका मतलब फिर हज़ारों लगाकर टिकट ख़रीदना है और दूसरा जहाज़ मिलना कठिन है। हज़ारों यात्री इसी बीज़ाके चक्करमें अटके पड़े हैं, इसी जेनोआमें। पर मैं अपनेको साधारण यात्री नहीं समझता, विशेषकर जबसे कोलम्बसकी खड़ी मूर्ति देखी है। अमेरिकन कान्सुलेटका दफ़्तर पूछ वहाँ क़िस्मत अज़माने चल पड़ा। दफ़्तर पियात्सा पोर्तेलोमें था, ६ नम्बरकी दूसरी मंज़िलपर।

अब तक जेम्स आदि अमेरिकन एक्सप्रेसके दफ़्तरसे डालर बदलकर आ चुके थे। किसीके नाम एक भी चिट्ठी न थी। मेरी चिट्ठियाँ देखकर लोग मुसकराये। हम सब बाहर निकले। पास ही फ़ोटोकी एक दुकान थी। वहाँ 'डेवेलप' और 'प्रिण्ट' करनेको फ़िल्म दिये और तीसरे पहर वापस लेनेका वादा लेकर आगे बढ़े। राहमें एक भारतीय विद्यार्थी मिले, दक्षिण भारतके, जो इंग्लैंड जा रहे थे। अपने लोगोंमें चिपक जानेकी आदत होती है। पर न तो मैं चिपका न चिपकने दिया। उनकी ज़रूरत ज़रूर पूछ ली। वीज़ाकी चिन्ता परेशान कर रही थी। जल्दी दो बातें कर जान छुड़ाई। फिर बढ़ा, पियात्सा पोर्तेलो नं० ६ की ओर।

पियात्सा कहते है 'स्क्वेयर'को, खुली लम्बी-चौड़ी जगह, जहाँ सड़कें एक दूसरीको काटती हैं। साधारणतः चौराहे, पर चौराहे जो चौकसे लगते हैं, लोगोंसे भरे। पियात्सा प्रिन्सिपे और पियात्सा अक्वावर्देसे निकलकर विया वाल्बी नामकी सड़क पियात्साको रीदोनीको बीचसे चीरती पियात्सा पोर्तेलो चली गई है। यहीं ६ नं० की इमारतमें अमरीकी कान्सुल जेनरल-का दफ़्तर है, दूसरी मंज़िलपर।

झट वहाँ जा पहुँचा। ऊपर ख़ासी भीड़ थी। लोग इन्तज़ारमें बैठे थे। काउन्टरपर एकाध कर्मचारी लोगोंकी आवश्यकताओंके प्रति तत्पर थे। जगह होते ही मैं अपने नम्बरके मुताबिक वहाँ जा धँसा। अपना पासपोर्ट और वीज़ा बढ़ा दिया।

कर्मचारीने पूछा—वीज़ा रिन्यूअल? (नवीकरण?)

"जी हाँ।"

"कहाँसे आये?"

"हिन्दुस्तानसे।"

"कैसे आये?"

"फ्रेटर 'जान बाके'से।"

"वीज़ा बदल देंगे। उसका नवीकरण यहीं हो जायगा। पर ठहरना

होगा, क्योंकि उसमें देर लगेगी। आफ़िस आफ़ ईशू (जिस स्थानसे अमरीकी कान्सुलेटसे वीज़ा दिया गया है) से पूछना होगा। अगर उन्हें किसी प्रकार-की आपत्ति न हुई तो नया वीज़ा यहींसे दे दिया जायगा।"

मैं घबड़ाया क्योंकि इससे वही विपत्ति सामने आती दीख पड़ी जिसका संकेत टॉमस कूकने किया था। मैं जहाज़ छोड़ नहीं सकता था।

"अगर आप जवाबी तारसे बम्बईके दफ़्तरसे पूछ लें ?" मैंने सुझावमें पूछा।

"सही, पर आपके ख़र्चसे।" कर्मचारी बोला।

"निश्चय, मेरे ख़र्चसे।"

"पर उसमें चार दिन लग जायँगे। जहाज़ कब जा रहा है ?"

"परसों !"

"आपको तब तो ज़हाज़ छोड़ना होगा।"

"जहाज़ तो मैं नहीं छोड़ सकूँगा, छोड़ना मेरे लिए सम्भव नहीं है।"

"पर आप आगे जा कैसे सकेंगे ? हमको हुक्म तो यह है कि इस प्रकारका वीज़ा हाथ आनेपर ज़ब्त भी कर लिया जाय। अगर मुझे इसका सन्देह हो जाय कि आप बग़ैर नये वीज़ाके अमेरिका जानेपर तुले हैं तो यह पासपोर्ट भी अभी ज़ब्त कर सकता हूँ, कर लूँगा।"

यह तो बेतुकी मुसीबत आई। रुकना सम्भव न था। आगे बढ़ना ख़तरेसे ख़ाली न था। पासपोर्ट और वीज़ा दोनों कर्मचारीके हाथमें थे। सोचने लगा, कहाँ आ फँसा। सब मटियामेट होना चाहता था। कितनी मुसीबतों-परेशानियों-संघर्षोंके बाद विदेश निकल सका था, अब इस तकनी-की मुसीबतका सामना था और मैं सर होना नहीं चाहता था। सबसे आव-श्यक काम था उसके हाथसे अपना पासपोर्ट और वीज़ा वापस ले लेना। पासपोर्ट क़ानूनन लिया जा सकता था पर उसका मतलब होता हिन्दुस्तान जाते जहाज़पर ज़बरन बैठाया जाना जो मुझे किसी तरह मंजूर न था। मौक़ा बड़ा नाज़ुक था, बड़ी होशियारीसे काम लेना था। कुछ बातमें

गर्मी आ गई थी, इससे सर्वथा समर्पण कर देनेका मतलब था कर्मचारीके मनमें सन्देह उत्पन्न करना। इससे रुख़ वही बनाये रखकर बातचीत जारी रक्खी। एक बात अचानक और हो गई जिससे मुझे कुछ बल मिला यद्यपि मैं अपनी लड़ाई अकेला लड़नेको तैयार था। यह तो पहले ही सुन चुका था कि अमेरिका जानेवाले हज़ारों यात्री नये वीज़ाके लिए जेनोआमें स्वदेशस्थ अमरीकी कान्सुलेटकी स्वीकृतिके लिए ठहरे हुए हैं। उनमें कई मेरी स्थितिमें थे जिनका अपना जहाज़ छोड़ना मेरी ही भाँति सम्भव न था पर कोई चारा न होनेसे अवसन्न हो गये थे। उनमेंसे कुछ वहाँ बैठे भी थे और हमारी बातचीत सुनकर पास सरक आये थे। ऐसेमें आसरा लग जाता है, शायद अपना काम भी बन जाय। सो उनकी हमदर्दी तो मेरे साथ थी पर उनकी संख्या कुछ ख़ास मदद भी नहीं कर सकती थी क्योंकि संख्याका कोई ज़ोर वहाँ नहीं लग सकता था, कान्सुलेट दफ़्तरोंका रवैया यही है।

ख़ैर अपना पासपोर्ट और वीज़ा किसी प्रकार हथियाने थे। सिलसिला जारी रखते हुए बातचीत फिर शुरू की। पूछना यह था कि अगर इसी वीज़ाके साथ आगे बढ़ जाऊँ और अमेरिका जा पहुँचूँ तो क्या होगा। पर ऐसा पूछनेसे यह जाहिर हो सकता था कि मैं ऐसा करनेपर आमादा हूँ। वह इससे चिढ़कर पासपोर्ट-वीज़ा ज़ब्त भी कर सकता था जिसकी उल्टे-तिरछे वह अभी धमकी भी दे चुका था।

सो बातको घुमा-फिराकर पूछा—"आख़िर आपको सरकारकी ओरसे हिदायत क्या है ?"

"वही जो आपसे कह चुका हूँ।" कर्मचारीने कहा।

"मगर ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो बग़ैर आपको अपना वीज़ा दिखाये चले जायँ; तो ?"

"तो उनके ले जाने वाले जहाज़को फ़ी आदमी हज़ार डालर जुरमाना

देना होगा और यात्री सीधे 'एसाइलम' मार्च करा दिये जायँगे (विल बी मार्च्ड स्ट्रेट टु एसाइलम)।"

अपने देशमें 'एसाइलम' शब्दका इस्तेमाल 'ल्युनेटिक'के साथ पागल-ख़ानेके अर्थमें होता है। नीचेसे ज़मीन सरक गई। लोग जो पीछेसे मेरे कन्धोंपर उचक रहे थे, धीरे-धीरे अपनी कुर्सियोंपर जा बैठे। उन्हें अब इस मामलेसे कोई दिलचस्पी न थी। मुझे अपनी लड़ाई आप लड़नी थी। किसी तरह पासपोर्टको इस समय अपने हाथमें कर लेना है, आगे देखा जायगा, मैंने सोचा, और महज़ कोई उपाय सूझ जानेके लिए बातका सिलसिला जारी रक्खा।

पूछा—"फिर क्या कोई उपाय नहीं ?"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ, कोई और नहीं।" कहकर कर्मचारीने दूसरे व्यक्तिकी ओर मुख़ातिब होनेका रुख़ किया।

मैं जानता था, अब चूका तो चूका। पासपोर्ट अभी तक उसके हाथमें था, लगा, उसे वह पीछेकी मेज़पर रख देगा। फिर मुश्किल हो जायगी। पासपोर्ट धरने न पाये , दूसरेसे बातचीत न करने लगे। बातोंमें उसे फिर लगा रखो। शायद कोई सूरत निकल ही आये। बदनकी सारी नसें तनी आ रही थीं, पसीना छूट रहा था। अगले व्यक्तिसे 'एक मिनट और'की अनुनयभरी याचना करता फिर कर्मचारीसे बोला—

"देखिए, शायद इतना आप मेरे लिए कर सकेंगे, अमेरिकाके विश्व-विद्यालयों द्वारा आमन्त्रित व्यक्तिके लिए; कि मुझे इसी वीज़ापर बढ़नेकी इजाज़त दे दी जाय और मेरे ख़र्चपर बम्बईके दफ़्तरको 'केबुल' (तार) कर दिया जाय कि जहाज़के अगले ठहराव नोवा स्कोशिया (न्यू फ़ाउण्डलैंड, कैनाडा)के बन्दर हैलिफ़ैक्सके अमरीका कान्सुलेटको वापसी तार द्वारा वीज़ा बदलनेकी वह मंजूरी दे दें। वहाँ तक पहुँचते शायद ८-१० दिन मुझे लगेंगे। और बम्बईमें किसी तरहकी दिक़्क़त नहीं होगी, यक़ीन करें, अपने यहाँ मैं बिलकुल अनजाना आदमी नहीं हूँ।"

बात कहकर मैंने साँस ली। अथाहमें जैसे ज़मीनसे अँगूठा लगा।

जिस दूसरे व्यक्तिसे मैंने दो बात और करने देनेके लिए इजाज़त माँगी थी उसपर मेरी शिष्टताका कुछ प्रभाव पड़ गया था, और मेरी बातमें जो एक बड़े आदमियतकी ध्वनि थी उससे, लगा, दोनों कुछ प्रभावित हो गये।

"यह हो जाना चाहिए।" उस सज्जनने कुछ उत्साहसे कहा।

"नहीं जानते।" कर्मचारी कुछ शिथिल-सा बोला। पर शायद सर्वथा इन्कार करना कुछ बेजा सोच बोलता गया, "अच्छा देखिए, एक काम कीजिए, वह आप कर सकेंगे। आप इसी वीज़ापर हैलिफ़ैक्स चले जा सकते हैं अगर जहाज़के एजेण्टसे एक गारण्टी लिखवा कर हमें दे जायँ कि वह आपको बग़ैर नया बीज़ाके ले जानेकी 'पेनाल्टी'की ज़िम्मे-दारी लेनेको तैयार हैं। और मैं इस बीच ख़बर हैलिफ़ैक्स भेजनेके लिए बम्बई तार दे देता हूँ।"

हालत बिलकुल नाज़ुक थी। ज़ाहिर है कि यह मुझसे नहीं हो सकता था। आख़िर जहाज़का इटालियन एजेण्ट मेरा जाना तो था नहीं। उसे प्रभावित करनेको मित्र कप्तान नोकलिंगसे भी कहना ख़तरेसे ख़ाली न था क्योंकि उसके कहनेपर भी एजेण्ट ऐसी गारण्टी करता या नहीं करता यह तो संदिग्ध था ही, ख़तरा इसका भी था कि यह मसला सुनकर कहीं जहाजका कप्तान ख़ुद न बदल जाय। पर एक लमहा भी सोचा नहीं जा सकता था। मेरे जवाबपर और उससे अधिक मेरी चेष्टाओंपर सब कुछ बन या बिगड़ जाना निर्भर करता था। मैंने प्रसन्न सन्तुष्ट चेष्टा बनाकर तत्काल कहा—

"आह! यू हैव सेव्ड मी, फ़ार दैट इज़ ईज़ी। सो प्लीज़ परमिट मी टु कैरी दि पासपोर्ट ऐण्ड दि वीज़ा टु दि एजेण्ट फ़ार गेटिङ्ग द लेटर आफ़ गारैण्टी। ऐण्ड थैंक्स एवर सो मच—गाड ब्लेस यू! (ओ आपने मुझे बचा लिया, क्योंकि यह कार्य आसान है। अब कृपया गारण्टीकी

चिट्ठीके लिए मुझे पासपोर्ट और वीज़ा एजेण्ट तक ले जानेकी इजाज़त दें। हज़ार धन्यवाद—भगवान आपका भला करे !)

फिर पलक गिरते उसके हाथसे शान्तिपूर्वक पासपोर्ट ले 'बाई ! बाई ! कहता मंथर गतिसे बरामदा पार कर गया। चाहता था, पैरोंमें पंख लग जायँ, उड़कर जहाज़पर चला जाऊँ। पर सन्देह दूर करनेके लिए धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरा। नीचे उतर जानेपर जानमें जान आई। पासपोर्ट देखा, वीज़ा देखा, क़िस्मत सराहता फ़ोटोकी दुकानमें दोस्तोंसे जा मिला।

उन्होंने एक साथ पूछा—क्या हुआ ?

कहा—ठीक है, सब सम्हल गया। ख़ाली हिन्दुस्तान नये वीज़ेके लिए तार देना पड़ेगा।

अब चाहता था कि जहाज़ जल्दसे जल्द छूट जाता और हम ख़तरेके दायरेसे बाहर निकल जाते। जेनोआमें रुकना ख़तरेसे ख़ाली न था। वीज़ाके बारेमें किसीसे कुछ न कहनेका निश्चय कर साथियोंके साथ 'लञ्च' (दिनका खाना) करने गया। लञ्चसे भी विशेष आवश्यक कार्य बम्बईके अमरीकी कान्सुल जेनरल श्री टिम्बरलेक और श्री मीनू मसानीको वीज़ाके सम्बन्धमें पत्र लिखने थे। रेस्तराँमें अपने साथी खानेका आर्डर देने लगे तब तक मैंने सूत्रवत् परन्तु पुरअसर पत्र एक ओर बैठकर लिख लिये। भोजनके बाद दोनोंको उसी मतलबके तार भी दे दिये। मीनू मसानीको इसलिए कि टिम्बरलेकको फोन करके ज़रा जल्दी करा दें। लिख दिया था कि वीज़ा बदलनेकी अनुमति हैलिफ़ैक्सके कान्सुल जेनरल को दे दी जाय। टिम्बरलेकवाले पत्रके पतेमें 'कान्सुल जेनरल' लिखा जिसमें अगर वे न हों तो आफ़िस उसे खोल ले। भीतर टिम्बरलेक साहबके नाम एक व्यक्तिगत पत्र भी था। पीछे पता चला कि टिम्बरलेक छुट्टी लेकर अमेरिका चले गये हैं !

रेस्तराँ काफ़ी बड़ा था। खानेवालोंकी खासी भीड़ थी। हमारी मेज़ बड़ी थी क्योंकि हम पाँच जन थे। साथियोंने सामिष भोजन लिया, मैंने

निरामिष। इटलीकी एक विशेष प्रकारकी सेवई बड़ी मशहूर है। उसे 'मकरोनी' कहते हैं, काँटेमें लपेटकर खाई जाती है। पहले तो उठाते दिक़्क़त होती है पर शीघ्र आदमी अभ्यस्त हो जाता है। लोग उसे बड़े चावसे खाते हैं। मुझे अच्छी नहीं लगी। न मैंने अधिक खाई ही। एक पुराना क़िस्सा याद आ गया। मेरे मित्र योगीन्द्रनाथ सिनहाने वह क़िस्सा अपनी पुस्तक 'राउण्ड दि वर्ल्ड'में लिखा है। उनके साथ एक हिन्दुस्तानी मित्र इटलीके किसी रेस्तराँमें भोजन करने गये। और 'मकरोनी' खाना चाहा। बेयराको बुलाकर आर्डर किया—'एक प्लेट मारकोनी लाओ। बेयरा चला गया, नहीं समझा। दूसरेको ले आया। मित्रने फिर वही माँगा। वह बेयरा भी चला गया। हेड बटलरको बुला लाया। हेड बटलरने पूछा, 'बेयरेने समझा नहीं। क्या चाहिए, हुज़ूर।' अब तक वह सज्जन झल्ला उठे थे। उन्होंने कहा—'इसमें नहीं समझनेकी क्या बात है? सभी मेज़ोंपर लोग खा रहे हैं। मैं एक प्लेट 'मारकोनी' चाहता हूँ। इसमें जाने क्या मुसीबत है।' 'इसमें मुसीबत यह है,' हुज़ूर, बटलरने निहायत अदबसे मुसकराते हुए कहा, 'कि बेतारका तार ईजाद करनेवाला वैज्ञानिक और इटलीका गौरव मारकोनी अभी जिन्दा है, प्लेटपर नहीं लाया जा सकता। ख़ुदा उसे चिरायु करे!' मित्रने अब समझा कि वे 'मकरोनी' को 'मारकोनी' कहते रहे हैं। झेंपे। लोग आसपास मुसकरा रहे थे। वह भी हँस पड़े। मकरोनीकी प्लेट अब तक उनकी मेज़पर आ चुकी थी।

मैंने थोड़ा सन्तरेका रस लिया, आलू और पालकके साथ डबल रोटीके एकाध कतरे खाये, बन्द गोभी, चुक़न्दर-टमाटरकी सलाद खाई, अनन्नासका 'डेसर्ट' लिया और कुछ फल खाये। निरामिष खाद्यसे मेज़ भरी थी। सेब, केले, अंगूर सभी थे। डबल रोटी इटलीकी ख़ास तरहकी होती है। बाटीकी तरह गोल सख़्त। अच्छी नहीं लगी।

रेस्तराँसे निकलकर बाज़ार घूमने लगे। दुकानोंमें गये। मुझे कुछ

आवश्यक चीज़ें ख़रीदनी थीं। दाढ़ी बनानेका ब्रुश टूट गया था। उससे भी आवश्यक फ़ेल्ट हैट थी। अपनी मैं हैफ़ामें टैक्सीमें भूल आया था। हैट प्राय: ३५ रु०में मिली, अत्यन्त सुन्दर। इटलीमें फ़ेल्टका अच्छा रोजगार है। मेरा ख़याल है कि वहाँकी-सी सुन्दर ओर सस्ती फेल्ट हैट अन्यत्र नहीं मिलती। मैंने चित्राके लिए निहायत ख़ूबसूरत एक छाता १९०० लीरे (करीब साढ़े चौदह रुपये)में लिया और दस रुपयेमें लेडीज़ वैग। अपने लिए एक छोटा-सा साधारण पर्स (चमड़ेका बटुआ) भी ७०० लीरे (सवा पाँच रुपये)में खरीदा।

इटलीमें ख़रीदारी ख़ूब हो सकती है, होती है। चीज़ें भी इतनी मँहगी नहीं।

सोना भी सस्ता है पर बाहर नहीं जा पाता। ख़रीदारीके लिए जेनोआमें सबसे सुन्दर सड़क विया रोमा है। दोनों ओर ऊँची चमकती इमारतें हैं, नीचे दुकानें जिनमें चीज़ें बड़े आकर्षक ढंगसे रखी हैं। विया रोमा पियात्सा द फ़ेरारीसे पूरबकी ओर निकल जाती है। उसके समानान्तर ही गालेरिया मात्सीनी (मात्सिनीकी गैलरी) जाती है। ऊँचा सुन्दर गोल गुम्बज, उसके नीचे चौड़ी सड़क जिसपर जेनोआकी सुन्दरता 'कैफ़े' और 'बार' हैं। जाड़ेमें यहाँ ख़ासी चहल-पहल रहती है। इस समय भी थी। लोग हाथमें हाथ डाले चहलक़दमी कर रहे थे, हालाँ कि अभी तीसरे पहरके ढाई ही बजे थे।

समय था, एक आध संग्रहालयोंमें गये, कुछ महलोंमें। कुछ माइकेल ऐंजेलो, फ़ान डाइक आदिके भित्तिचित्र देखे। पर जल्दीमें, क्योंकि इटली एक बार फिर लौटना था और रोम, फ़्लोरेन्स, वेनिस, नेपुल्स चित्रोंसे भरे हैं। जेनोआ प्राचीन नगर है, यह पहले कह चुका हूँ। इसकी चौड़ी सड़कोंपर मध्यकालीन हज़ारों महल हैं, कितनोंमें भला जा सकते थे? कुछको देखा, सन्तोष कर लिया। अब तो उसपर अमेरिकाका भी ख़ासा

असर पड़ा है और अनेक स्काईस्क्रेपर (आसमान चूमनेवाले भवन) बन गये हैं ।

एक टैक्सी ली और जल्दीसे शहरके प्रधान चौक और प्रसिद्ध सड़कों-पर घूम आये । पियात्सा प्रिंसिपे, पियात्सा अक्वावेर्दे, पियात्सा कोरीदोनी, पियात्सा पोर्तेलो, विया वाल्बी, पियात्सा फ़ेरारी पहले ही घूम चुके थे । अब पियात्सा कोर्वेत्तो, विया लोरेंज़ो, विया दान्ते, विया गारीवाल्दी, विया सेतेम्बर आदि होकर गये । दे फ़ेरारीके चौकमें इटलीके प्रसिद्ध देशभक्त गारीवाल्दीकी ऊँची मूर्ति है और विया दान्तेमें अमेरिकाका पता लगाने वाले प्रसिद्ध नाविक कोलम्बस्का घर, है । छोटा-सा घर, आज वहीं राष्ट्रीय सम्पत्तिकी भाँति सुरक्षित है । लोग दूर-दूरसे आकर उसे बड़ी श्रद्धासे देखते हैं । नाविकोंकी तो वहाँ खासी भीड़ लगी रहती है । उस छोटेसे घरके आवारे लड़केने शायद वह काम किया जिससे संसारकी कायापलट हो गई । कोलम्बस्की उस खोजकी महत्ताका अन्दाज़ नहीं लगाया जा सकता ।

शाम हो गई थी । सड़कोंपर ख़ासी चहल-पहल शुरू हो गयी थी । हम बन्दरकी ओर चले । पोर्तो लान्तेनी जा पहुँचे । यहींसे शहरकी प्रमुख सड़क शुरू होती है जो जेनोआके आरपार चली जाती है । पास ही एक पहाड़ी है जिसकी चोटीपर जहाज़ोंके लिए प्रकाशगृह (लाइटहाउस) बना है । पन्द्रहवीं सदीमें ही बना था, ख़ासा ऊँचा है । इसका प्रकाश आसमान साफ़ रहनेपर प्रायः तीस मील दूरसे देखा जा सकता है । यह मध्ययुगकी सदियोंसे ही जहाज़ोंको राह बताता रहा है । आज हम इसका महत्त्व इतना नहीं समझते पर एक ज़माना था जब जहाज़ोंके लिए ये प्रकाशगृह प्राण-रक्षकका काम करते थे । उसके रखवालेको कुछ पैसे देकर ऊपर चढ़ा जा सकता है । हम भी ऊपर गये । साथी तो आख़िरी मंज़िल तक चढ़ गये पर मैं कुछ नीचे ही रुक गया । वहाँसे भी सारा जेनोओ नज़रोंके नीचे था—उसका विस्तृत बन्दर, अथाह फैली जलराशि, पासके स्काईस्क्रेपर । यहाँसे उस दीपस्तम्भ 'लान्तनी'के नामसे ही सार्थक विया देला लान्तनी वह लम्बी

सड़क है जो विया मिलानो और पियात्सा दे नेग्रो होती पियात्सा प्रिंसपे और पियात्सा अक्वावेर्दे चली गई है। लाइट हाउसके पाससे ही सड़क और तार लाँघ हम बन्दरमें दाख़िल हो जाते थे।

ख़ासे थक गये थे। उतरकर जहाज़ चले जाना चाहते थे कि एकाएक अस्पताल वाले अंग्रेज़ मरीज़की याद आई और हम उसे देखने अस्पताल पहुँचे। हालत वैसे ही नाज़ुक थी, वैसे ही वह अब भी तड़प रहा था। उसकी कराह दूर बरामदेसे ही सुनाई पड़ रही थी। आज वह बड़ा कमज़ोर लग रहा था। नर्सने अलग हमसे संकेतसे कहा कि उससे बात करनेसे हरारत होगी, बचनेकी आशा कम है। राहमें हमने उसके लिए कुछ फूल ख़रीद लिये थे। उसे दिये और क़रीब दस मिनट चुपचाप खड़े उसे देखते रहे। नर्सने उसके मुँहके पास फूल रख दिये। उसने उन्हें चूमा और हम जब तक खड़े रहे उसकी आँखें झरती रहीं। आँसू चुपचाप गालोंपर लुढ़क जाते। उसे सान्त्वना दे कल फिर आनेकी बात कह अपनी तर आँखें लिये हम लौटे।

मिनट भरको कप्तान नोकलिंग और स्टीवार्डेससे भेंट हुई। बता दिया कि हम शामका खाना भी बाहर ही ख़त्म कर चुके हैं। केबिनमें घुसा। कपड़े आलमारीमें फेंक, लेसके साथ ही जूते निकाल विस्तरमें जा घुसा। फिर न जाना कि 'सपर' आया या नहीं, खाया या नहीं।

(१४–१०–५०)

सुबह जो उठा तो कमरेमें सोना बरसता पाया। हल्की सुहावनी धूप पोर्टहोलसे आ रही थी। जब तैयार होकर बाहर निकला तो मालूम हुआ कि रेवरेण्ड जेम्सने कई बार दरवाज़ा भड़भड़ाया था। मैं भूल गया था कि आज सुबह टॉमस कूक द्वारा आयोजित ट्रिपपर जानेकी बात है। अस्तु, झट उनके साथ नाश्ता किया और हम सब विया मिलानोसे बससे पियात्सा अक्वावेर्दे जा पहुँचे जहाँ बस मिलनी थी।

कुछ देर हो गई थी। लोग पहुँचकर अपने टिकट ले चुके थे पर अभी जगह थी। हम पाँचों भी अपने टिकट लेकर भीतर जा बैठे। बसें दो थीं। लोग, जिन्हें टिकट मिल चुके थे, अभी बाहर ही चहलक़दमी कर रहे थे। मैं इधर-उधर घूम रहा था। जेम्स भाँप गये। वह उधर हो आये थे। कहा, उधर है, चुपचाप चले जाइए, पर जल्द आ जाइए, वैसे बस तो रोक ही लूँगा।

गया, चलता गया। बराबर पक्की ज़मीनसे सीढ़ियाँ नीचे उतर गई थीं। उतरकर भीतर और चलना पड़ा सामने बिजलीके उजालेमें काउण्टर-के पीछे एक आदमी खड़ा था। मालूम हुआ कि पेशाब करनेके लिए महसूल देना पड़ता है। चार आनेके क़रीब महसूल दिये और काम ख़त्म करके भागा। पाखानेके लिए महसूल अधिक था। बसें अब भी खड़ी थीं, लोग अभी चहलक़दमी कर ही रहे थे। सभी क़िस्मके आदमी थे, स्पेनी, फ्रेंच, अमेरिकन, अँग्रेज़। मैं भीतर जा बैठा।

पास ही प्रायः २५–२६ वर्षकी दो अमेरिकन युवतियाँ बैठी बात कर रही थीं। काफ़ी ज़ोर-ज़ोरसे। मुझे कुछ अभद्रता-सी लगी। मैंने कुछ उपेक्षासे उनकी ओर देखा, एकसे आँख मिल गई। पर मेरी बेरुख़ी बरक़रार न रह सकी, उसने झट हँसकर पूछ दिया—'भारतीय ?' हँसकर ही उत्तर दिया, 'जी हाँ।' वह बोली, जो दूसरीसे पतली छरहरी कुछ अधिक सुन्दर थी—'मैं बर्मासे आ रही हूँ, और यह मेरी दोस्त सिसिलीसे।'

"और दोनों मिल कहाँ गई ?" मैंने पूछा। कुछ और लोग भी दूसरी ओर नज़र किये या अखबारसे आँख ढके हमारी बात सुनने लगे थे।

"वहीं, पालेरमोमें। ग़ज़बका बीच (समुद्रतट) है वहाँ।"

"और काप्री तो और भी ग़ज़ब है।" दूसरी बोली।

"तो काप्री भी हो आईं ?"

"सीधे वहींसे आ रहे हैं," पहली बोली। "हैड ए वन्डरफुल टाइम देयर।" (बड़े मज़े किये !)

"बड़ी भाग्यवान् हैं आप।"

"आप अभी नहीं गये ?" दूसरीने पूछा।

"अभी तो नहीं।"

"चूकिए नहीं। काप्री जाना बार-बार नहीं होता।" दोनों बोलीं।

"देखिए, अमेरिकासे लौटकर जानेका प्रोग्राम है।"

"अमेरिका ? अच्छा, अमेरिका जा रहे हो ? हम भी अमेरिकाके हैं। यह विस्कान्तिनकी, मैं कैलिफ़ोर्नियाकी।" एक बोली।

"आह, डियर ! डियर ! हम जाने कब स्टेट्स पहुँचेंगे।" दूसरीने अपने पंजे एक दूसरेमें कसते हुए कहा। उसने मेरे सँकुचाते हाथको पकड़ उसमें एक गोंदका मीठा टुकड़ा रख दिया।

जानता था कि अमेरिकन गोंद या कुछ-न-कुछ सदा चूसा करते हैं। लेमनजूसकी तरह होती है। मैंने कभी चूसी न थी। पर मेरे चार साथी बैठे थे। उनकी ओर देनेके लिए झुका। इसपर उस देवीने और कई निकालकर उन चारोंको भी बाँट दिये। ना, ना करते भी उन्हें लेना पड़ा। उनके झेपनेपर लड़कियोंमें-से एकने जड़ ही तो दिया—'मिशन वर्क ? हैव बिन आउट औफ़ द स्टेट्स लांग ?' (मिशनका काम करते हैं ? बहुत दिनों अमेरिकासे बाहर रहे हैं ?) ग़रज़की बाहर जाकर 'जाँगलू' हो गये हैं, रवैया भूल गये हैं !

जेम्स वग़ैरह, विशेषकर साथकी महिलाएँ झेंप रही थीं। उनकी भावभंगी, वाचालता और शोख़ी इन्हें अधीर कर रही थी। वे चुप हो जाते, मुँह फेर लेते। पर वे मुँह फेरनेवाली नहीं थीं। जाने कहाँ-कहाँकी बातें उन्होंने शुरू कीं, ख़त्म कीं, बीचसे बात तोड़ हँस पड़ीं।

"बर्माके हीरे सबसे अच्छे होते हैं, न ?" पहलीने मुझसे पूछा।

"कह नहीं सकता। मेरी उस ओर जानकारी नहीं है।"

"एं, एं, पर हिन्दुस्तानी हैं न ?" दूसरी बोली। "कोहेनूर हिन्दुस्तान का ही तो है ?"

कैसे कहूँ कि हर हिन्दुस्तानी कोहेनूर नहीं परखता। और मैं तो साधारण हीरे और काँचमें भी पहचान नहीं कर सकता। हीरे क्या दूसरे पत्थरोंके रंगों तककी मैं पहचान नहीं रखता।

इसी बीच दुभाषियेकी ऊँची आवाज़ने हम सबको अपनी ओर मुख़ातिब कर लिया। अपनी बातोंमें हमने न जाना कि बस कब भरी और कब चली। दुभाषिया वस्तुतः दुभाषिया ही नहीं कमसे कम तीनभाषिया तो था ही। तीन ज़बानें—अंग्रेज़ी, फ्रेंच और स्पेनी बोल रहा था। एक ही बात तीनोंमें कह रहा था कि मैं एक-एक चीज़ तीनों ज़बानोंमें बताऊँगा। उसकी आवाज़से मुझे उन अमरीकी देवियों-के जवाबसे नजात मिली। मैंने उन्हें चकराते छोड़ दुभाषियेकी ओर कान कर लिये।

बस अब भीतर सड़कमें आ गई थी। महल-पर-महल निकले जा रहे थे। बस कहीं रुकती न थी। वह बोलता जा रहा था, दाहिने-बायें हाथ उठाता, तीनों ज़बानोंमें। उनका यहाँ उल्लेख केवल असंभव ही नहीं बेकार भी है, क्योंकि इमारतोंका नामोच्चारण मात्र ही हो पाता था। हम उनके बारेमें विशेष कुछ जान नहीं पाते थे और सुनते ही उन्हें भूल भी जाते थे। एक बार हम यूनिवर्सिटीके सामने रुके, दूसरी बार एक चर्च-के सामने, तीसरी बार जेनोआके प्रसिद्ध कब्रगाहमें जानेके लिए।

यूनिवर्सिटी सामने संगमरमरकी है। पीछे ठोस ग्रेनाइट पत्थरकी। सत्रहवीं सदीके मध्य बनकर तैयार हो गयी थी। दूसरी मंज़िलपर लाइब्रेरी है, जेनोआका सबसे ऋद्ध संग्रहालय। जेनोआमें गिरजाघरोंकी भरमार है। अनेक प्राचीन भी हैं, मध्यकालीन तो शायद सभी हैं। हमने सान लोरेंज़ो नामक चर्च देखा, विशाल गोथिक या जिसे मूर गोथिक शैली कहते हैं, उसमें सम्पन्न। सामने ऊँचे खंभे हैं, भीतर विशाल प्रशस्त हाल।

रोमन कैथोलिक चर्च होनेसे उसमें सैकड़ों मूर्तियाँ हैं। शीशे सुन्दर आकृतियों द्वारा रंगीन चित्रित हैं। चर्च पुराना है, जैसा है वैसा भी ११०० ई० का, प्राय: साढ़े आठ सौ साल पुराना, उसके कुछ भाग तो दसवीं सदीके हैं, दो सौ साल और पहलेके। उसकी बुनियाद तो तीसरी सदीकी बतायी जाती है यद्यपि इसे गलेसे उतारना कठिन जान पड़ा। एकाध बार इस गिरजेको साम्प्रदायिक कोपका भी शिकार होना पड़ा है। एक बार तो इसे जला भी डाला गया था।

अन्तमें हम उस क़ब्रगाहको देखने उतरे जो अनेक लोगोंको जेनोआकी सबसे अमूल्य विभूति जान पड़ती है। इतालियन ज़बानमें उसका नाम 'काम्पोशान्तो दी स्ताग्लिएनो' (स्ताग्लिएनोका क़ब्रगाह) है। इतालियन पथ-प्रदर्शिका पोप पुस्तिकासे एक सज्जनने पढ़कर मुझे अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाया—सुनकर मैंने कान बन्द कर लिये। तोबा! ऐसा ग्रोटेक्स, इतनी निम्नस्तरीय कला मैंने जीवनमें कहीं नहीं देखी। रोती-सिसकती बेइन्तहा मूरतें, अतिरंजित विषादको बीभत्स रूपसे मुखरित करतीं। अगर मैं वहाँ न जाता तो कुछ खोता नहीं, हाँ, एक घिनौनी यादसे बच ज़रूर रहता। निश्चय मात्सिनीकी समाधिके लिए खिंचकर वहाँ जाता। सामने फाटक है, ऊँचा-चौड़ा। उसके पीछे दूर तक दौड़ती सुन्दर पर्वतमाला है जिसके नीचे हज़ारों-हज़ारों शक्लोंमें यह मृत्युका नगर बसा है। सरोके पेड़ हज़ारोंकी तादादमें बिखरे पड़े हैं। दुभाषिया अनेक भाषाओंमें एक ही बात दुहरा रहा है, कलाके इस असाधारण आदर्शको सराहता और मुखातिब न होनेवालोंको कलाहीन बर्बर समझ कोसता-धिक्कारता जा रहा है। मनमें है कि कब इस अशुभ यमपुरीसे निकल भागूँ। पीछेकी सान वार्तो-लोमो पर्वत-माला आकर्षक है। उसीपर वह जलाशय है जो सदियोंसे जेनोआवालोंकी प्यास बुझाता रहा है। उसका जल बिसान्योके सोतेसे आता है। बिसान्योकी यह घाटी जेनोओ शहरके उत्तर-पूर्वमें है। द्वारसे बाहर निकल कर ही जैसे साँस ली।

एक बज चुका था, लंचका समय हो चुका था। बस तेज़ भागी, जैसे घिनके कारण मेरी भूख भाग चुकी थी। रेस्तराँ कई मंज़िल ऊपर था। लिफ़्टसे वहाँ पहुँचे। कुछ तस्वीरें भी लीं, क्योंकि वहाँसे जेनोआका दृश्य अत्यन्त सुन्दर लग रहा था। हम छतपर थे और छतसे प्रायः सारा जेनोआ देख सकते थे।

लोगोंने जमकर भोजन किया, मेरे मित्रोंने भी, मैं भी दिखानेके लिए मुँह चलाता रहा पर कुछ खा न सका। कुछ फल ज़रूर लिये। वहींसे बैठा-बैठा सामने विया-दान्तेमें उस छोटे घरकी ओर देखता रहा जो इटलीकी अमूल्य निधि है, वह महानाविक क्रिस्तोफ़ कोलम्बस्का जन्मस्थान। उसे पहले भी देख चुका था। उधर जो नज़र गई तो सहसा दीख गया। कुछ शक हुआ पर जो पूछा तो सच वही निकला।

घण्टे भरकी छुट्टी थी। उसके बाद 'रिवियरा' जाना था, उसी बस-से। बाहर निकले। बसमें बैठे पियात्सा अक्वावर्दे पहुँचे। फिर एक घण्टेका वक़्त गुज़ारने घूमने चले। मुश्किलसे चार क़दम गये थे कि वही अमरीकी युवतियाँ मिल गईं। दूसरी पिछली राहसे जा रहे थे। बूचड़ोंका बाज़ार था। मछलियाँ, मांस, मांसकी विविध मिठाइयाँ बिक रही थीं। पूछा—"क्या खाया?" कहा—"साग-सब्जी"। "छिः!" फिर जेम्ससे पूछा। उन्होंने चलते-चलते सविस्तर बता दिया जो खाया था। एक बोली, "बस मैंने भी यही खाया।" दूसरीने इसी समय मांसबोझिल हवासे नथने भरते हुए कहा "हाउ डेलीशस्" (कितनी स्वादु बास है!)

दोनों तेज़ीसे हमें पीछे छोड़ती आगे निकल गईं। जेम्स कुछ ख़रीदने रुक गये थे। हम भी खड़े हो गये। महिलाओंको उन दोनों अमरीकी तरुणियोंका आचरण नितान्त अमर्यादित और बेशर्मीसे भरा जान पड़ा। आख़िर मिस वण्डेवण्डसे न रहा गया। बोल ही उठीं—"इनपर आप अमरीकी नारी-सम्बन्धी अपने विचार आधारित न करें। इन्होंने हमारा सिर झुका दिया।"

मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। पास ही गलीमें एक्स्चेंजकी दुकान थी, जहाँ सिक्के बदले जा सकते थे, कानूनन नहीं, पर शायद कुछ ऊँचे भावसे डालर भी। जेम्सने कुछ डालर बदले। मैं तो काफ़ी लीरे अपने पाउण्ड-चेकसे टॉमस कूकके यहाँ ही बदल चुका था। हम शीघ्र लौटे और इन्तज़ार करती बसोंमें बैठ गये। बसें 'रिवियेरा' की ओर चल पड़ीं।

रिवियेरा जेनोआके दोनों ओरका अत्यन्त आकर्षक समुद्रतट है। थोड़ी दूर पच्छिम जानेपर फ्रेंच रिवियेरा शुरू हो जाता है। दोनों ओर दूर तक फैली यात्रियोंकी क्रीड़ाभूमि है। जिसे प्रकृतिने अपने हाथों संवारा है यद्यपि मनुष्यने भी उसे सजानेमें कुछ उठा नहीं रक्खा है। दूर-दूरसे लोग वहाँकी जलवायुके लिए आते हैं। तटपर अनेक होटल या लोगोंके अपने घर हैं। इनसे सारा तट व्यक्तिगत बन गया है और नहानेके लिए पैसे देने पड़ते हैं। दोनों ही पैसे लेते हैं, होटलवाले भी, ख़ानगी मकानवाले भी। पर स्थल बड़ा सुन्दर है। गर्मियोंमें कुछ गर्मी ज़रूर होती है पर सर्दियाँ नम होती हैं। इस काल अक्तूबरका मध्य है, मौसम बड़ा ख़ुशनुमा है। आसमान साफ़ है, फूल क्यारियोंमें भरे हैं। अंगूरकी बेलें तो अब पुरानी हो चलीं पर खेतोंमें उनको फिरसे रोप रहे हैं। इटलीमें अँगूरकी जितनी खेती होती है शायद और कहीं इतनी नहीं होती। हरे, काले दोनों तरहके अंगूर होते हैं, दोनों मीठे। इन्हींके खेतोंमें बराबर समुद्रके किनारे-किनारे पहाड़के ऊपर सड़क चली गई है। उसपर हमारी बस उड़ती चली जा रही है। ग़ज़बका नज़ारा है, सामने भी, नीचे दाहिने भी।

पच्छिमकी ओर सान रेमो, बोर्दिघेरा, कापो मोतौला, अलास्सियो और प्रसिद्ध पेग्ली है। पर हम उधर न जाकर पूरब गये—नेर्वीकी ओर। जिनको समुद्रतट पसन्द है उनको नेर्वीसे बढ़कर सुन्दर स्थान न मिलेगा। समुद्रसे लगी पहाड़ीपर पानीकी सतहके बराबर डेढ़ मीलका तट है। लगातार बेंचें लगी हुई हैं। छोटा शहर जैतून, नीबू, नारंगीके

पेड़ोंसे घिरा है । आगे खाड़ी-सी बन गई है । वहीं एक छोटा-सा जहाज़ देखा, उसके हिन्दी नाम 'सूर्यमान्त'ने आकृष्ट किया । पर जहाज़ हिन्दुस्तानी न था, विलायतका था । निराश होना पड़ा । पास ही अनेक खुले हुए रेस्तराँ हैं जो सड़कपर ही कॉफ़ी वग़ैरह देते हैं । बड़ा सुहावना लगता है । इस प्रकारके खुले रेस्तराँ रिवियेराके सभी क़स्बों-गाँवोंमें हैं ।

सान्ता मार्गेरीता रिवियेराका स्वर्ग माना जाता है; हरी पहाड़ीसे घिरा, है भी यात्रियोंका वह स्वर्ग । उसके निचले भाग जैतूनके पेड़ोंसे घिरे घरोंसे भरे हैं । नीबू और नारंगीके पेड़, फूली झाड़ियाँ, गरम सूरज, नील समुद्र, चमकती रेत, बड़ी छतरियोंसे ढकी मेजें, एक साथ घुमक्कड़के दिलोदिमाग़पर हमला करती हैं । और वह बेबस हो जाता है । पास ही राहमें रापालाँ, चियावारी, सेस्त्री लेवान्त, ला स्पेत्सिया और पोर्तो फ़ीनो है, एकसे एक आकर्षक । वहाँ दुनियाके सारे पदार्थ अच्छे-बुरे सभी मुहय्या हो जाते हैं । रापालाँमें तो गोल्फ़ कोर्ससे नृत्यशाला तक हैं । वहीं मैंने पहले-पहल अमरीकी कोकाकोला पिया । अपने देशमें मैं बराबर उसे दूर हटाता रहा था, पर अब जो अमेरिका जा रहा हूँ इससे वहाँका प्रसिद्ध पेय पी लेना ही मैंने मुनासिब समझा । वहीं हमने टॉमस कूकके चेकके लीरे भी लिये । इन सारी जगहोंमें ट्रैवेलर्स चेक बदलवाये जा सकते हैं ।

इन क़स्बोंके बीच अक्सर छोटे-छोटे समुद्रतटीय गाँव मिल जाते हैं जो प्राकृतिक रंगमें रँगे हैं और मन वहाँ रम रहता है । इन स्थानोंको देखकर अपने देशकी याद आई जहाँ प्रकृतिने इससे कम सुन्दर स्थल नहीं दिये । काश इन्सान उसे अपनी लगनसे चमका पाता !

हम बीच-बीचमें रुकते गये थे । अब अन्त तक पहुँचते-पहुँचते, घूमते कॉफ़ी-चाय पीते, शाम हो गई थी । एक ओरसे प्रायः चार घण्टेकी दौड़ रही थी । जी प्रसन्न था; अन्तर नाच रहा था । फिर शायद इधर आना न हो, इससे मन बार-बार ललच रहा था । पर लौटना तो था ही । बसका हार्न बजा और हम उसमें जा बैठे । लौटते वक़्त काफ़ी तेज़ आये,

कहीं रुकना जो न था । ९ बजेके क़रीब शहरके बीच पहुँच गये थे । मेरी हालत लौटते समय काफ़ी नाज़ुक हो गई थी । बात यह है कि चक्करदार पहाड़ी सड़कपर मोटरमें मुझे चक्कर आने लगता है । जाते वक़्त तो किसी तरहकी तकलीफ़ नहीं हुई पर लौटते समय ख़ासी तक़लीफ़ हो गई । किसी तरह मनको सम्भाले, उलटी रोके, शहरमें दाख़िल हुआ । पियात्सा प्रिंसिपे और पियात्सा अक्वा वेंदेमें थोड़ी देर जब टहले तब जाकर कहीं शान्ति मिली ।

अभी हम लोग टहल ही रहे थे कि सामने 'हेलो' सुन पड़ा । देखा तो चिर परिचित अमरीकी लड़कियोंमेंसे एक एक युवाकी बाहमें बाँह डाले चली आ रही है । किसीने कहा, देखा, अभी आज सुबह तक अकेली थी, दोपहर और शामके बीच ही इतना गहरा दोस्त बना लिया ।

तबीयत ख़राब-सी थी । मैंने टैक्सी ली और मिसेज़ जेम्सके साथ जहाज़पर लौट आया । बाक़ी तीनों साथी अंग्रेज़ बीमारको देखने अस्पताल चले गये । हमने जहाज़पर पहुँच, कुछ सुस्ताकर सन्तरे खाये । आज खाना न हो सका । सन्तरे खाकर चाय पीकर पड़ रहा । ख़ासा थक गया था । सोने चला, तभी किसीने दरवाज़ेपर दस्तक दी । खोला तो मिस वण्डेवण्ड-को खड़ी पाया । कुछ उदास थीं । पूछनेपर कि मरीज़ कैसा है ? कहा, 'नहीं है ।' इस प्रकार ग़रीब अपने बान्धवोंसे दूर विदेशमें आकर चल बसा था । चुपचाप विस्तरकी ओर लौटा । नींद नहीं आई । देर तक पड़ा सोचता रहा । बार-बार उसकी याद आती रही, बार-बार अपना सूनापन घरकी यादसे विकल करने लगा । फिर न जाने कब आँख लग गई ।

—(१५–१०–५०)

बहुत तड़के उठा । डायरी लिखनी थी । एकाध चिट्ठियाँ भी । आज रात या कल जहाज़ चला जायगा । अभी तक वीज़ाकी चर्चा नहीं हुई है, पर डर बराबर बना रहता है । कहीं कप्तानको उसका ख़याल न हो जाय,

कहीं जहाज़का एजेण्ट न पूछ बैठे, कहीं इम्मीग्रेशन आफ़िसर चलते वक़्त पासपोर्ट न देख ले, वीज़ा उसकी नज़रमें न आ जाय। सही, वह कानूनन कुछ नहीं कर सकता, पर कुतूहलवश अगर उसके मुँहसे कुछ निकल गया? ग़रज़ कि भीतर चोर समाया हुआ है, जहाज़ खुलनेपर ही जानमें जान आयगी। वैसे आगे क्या बीतेगी, इसकी इतनी फ़िक्र नहीं, फिर इसलिए भी कि आशा है हैलिफ़ेक्स पहुँचने तक बम्बईसे वीज़ा बदलनेकी स्वीकृति आ जाय।

रात देरमें सोनेके बावजूद जल्दी उठ गया था। साढ़े तीन ही बजे। डायरी लिखीं, कुछ चिट्ठियाँ लिखी, स्टीवार्डको दीं। साढ़े ६ बज चुके थे। सात ही बजे नाश्ता लेना था क्योंकि हमलोगोंको जेनोआसे प्रायः पचीस मील दूर तक एक गाँव ब्रित्सालारा जाना था। ब्रित्सालारा रेवरेण्ड जेम्सके पूर्वजोंका गाँव है। नार्वे वालोंकी ही भाँति इटली वालोंकी संख्या भी अमेरिकामें बड़ी है। अधिकतर लोग क़िस्मत आज़माइशके लिए अमेरिका गये थे। कुछ सफल हुए थे, कुछ असफल। इस ब्रित्सालाराके भी बहुतसे नौजवान–अधेड़ संयुक्त राष्ट्र जा पहुँचे थे। जेम्स साहबके पूर्वज अमेरिका तीन-चार पुश्त पहले गये थे। परिवारकी किसी वृद्धाने उनसे कहा था कि जब हिन्दुस्तानसे लौटें तब ज़रूर अपने आदि देशके दर्शन करते आयें। सो जेम्स साहब वहाँ जाना चाहते थे। साथ ही हमलोग भी जा रहे थे। कुछ घूमना ही हो जायगा। पहला मौक़ा होगा, यूरोपका गाँव घूमनेका, फिर मिले न मिले। वस्तुतः घण्टोंका ही मामला भी था। सोचा था, टैक्सीसे जायँगे, टैक्सीसे लौट आयँगे। तीसरे पहर तक जहाज़-पर होंगे।

मेज़पर अंग्रेज़ मरीजकी बात छिड़ी तो जी भर आया था। सबको उसका गुज़र जाना मित्र-सम्बन्धीकी मृत्यु-सा लगा था। सबको अफ़सोस था। फिर भी बाहर जानेकी जल्दीमें नाश्ता खत्म भी जल्द हुआ। और

लोग तो आये नहीं थे, सवेरा था, अभी उन्हें क्या जल्दी हो सकती थी ? समयपर आना था ।

बाहर निकल ही रहे थे कि धोबीके यहाँसे कपड़े आ गये । कपड़े मिलाकर, स्टीवार्डको उसके पैसे देनेकी हिदायत कर हम नीचे उतरे । सड़कपर ट्राम पकड़ी और पियात्सा अक्वात्रेर्दे जा पहुँचे । वहाँसे टैक्सी ली पर किसीको ब्रित्सालाराका पता न मालूम था । टैक्सी वालेने इधर-उधर पूछा, कुछ पता न चला तो जेनोआके अड़ोस-पड़ोसका एक नक़्शा ले आया । उसमें ब्रित्सालारा मिल गया । 'मेन' सड़कसे थोड़ी ही दूरपर एक दूसरी सड़क घूम गई थी, पहाड़ोंमें उसीपर कुछ दूर जाकर ब्रित्सालारा पड़ता था । ड्राइवरने राह समझ ली और हमें बैठाकर चल पड़ा ।

यात्रा बड़ी ख़ुशनुमा थी । सुबहकी हवा बड़ी मनोरम थी । दूरतक, मीलों समुद्रतटसे लगी सड़कपर हम चले । लगा, जैसे कलकी नेर्वीकी राह चले जा रहे हैं । शायद गये भी थे कुछ दूर उसीपर । हरे-भरे पहाड़ । नीबू, मोसम्बी, सेब और जैतूनके बेइन्तहा पेड़ और बग़ीचे । किनारेकी पहाड़ी सड़कका ऊपर-नीचे सिलसिला, कभी बिलकुल पानीके किनारे कभी चट्टानोंकी आड़में समुद्रसे जैसे दूर-दूर ।

अनेक बार तो हम क़स्बोंके भीतरसे होकर गुजरे । एकाध बार तो रुककर भीतरसे निकल कमर भी सीधी की, गो बैठना कुछ तकलीफ़देह नहीं लग रहा था । मुझे समुद्रतटके ये छोटे-छोटे क़स्बे, विशेषकर छोटे-छोटे गाँव बड़े आकर्षक लगे । सदा भीड़भाड़से दूर रहनेकी आदत रही है पर पसन्द करता हूँ कि यद्यपि शहरके शोरसे दूर रहूँ, आधुनिक सभ्यता और विज्ञानके लाभसे वंचित न रहूँ, पाइप, बिजली, डाकख़ाना पास हों । इन छोटे-छोटे क़स्बोंमें, अधिकतर पासके गाँवमें ही ये सारी चीज़ें मुहय्या थीं, इससे किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं हो सकती थी, मन उधर रम रहा था ।

अब हम सीधी सड़क छोड़कर क़स्बेके बीचसे बायें चले जा रहे थे, दूसरी सड़कपर । इधरके लोग ब्रित्सालारा जानते थे । ड्राइवरने गाड़ी

रोककर जो पूछा तो कोई दिक़्क़त नहीं पड़ी, झट पता चल गया। एकाध गाँव लाँघते हुए ब्रित्सालारा आख़िर हम पहुँच ही गये। आठ बजे चले थे, अब क़रीब ग्यारह बज रहे थे। राहमें रुकते आये थे, ख़रामे-ख़रामे, इससे देर हो गई थी।

ब्रित्सालारा गाँवके पास सड़क कुछ तंग हो गई थी। एक ओर पहाड़ी थी दूसरी ओर गहरा नाला था, फिर सामने बड़ी ख़ूबसूरत पहाड़ियोंका एक सिलसिला अपने ही गावों-सा गाँव। घर खपड़ैलोंसे छाये, यद्यपि पत्थरके, क्योंकि गाँव पहाड़ी हैं। मोटर शुरूमें ही पासके बग़ीचेमें रुक गई। अपना गाँव याद आ गया। मेरे गाँव उँजियारके बाहर भी ऐसे ही आमके बग़ीचे हैं। देशी आमके। यहाँ सेब, नारंगी और जैतूनके हैं। पर हमारा गाँव एकमें एक गुँथे घरोंसे भरा दूर तक लम्बा-चौड़ा चला गया है, ब्रित्सालारा पतला-लम्बा है, छोटा, शायद सौ-दो सौ घर ही हैं। छोटे-सादे घर जिनमें गोरे चिट्टे साहब रहते हैं, अधिकतर बनियान-पतलून पहने, सिरपर टोपी धरे। अपने गाँवके गोरे लोगोंको यह लेबास दे दिया जाय तो उनमें और इन इतालियनोंमें कोई अन्तर न दीखे।

जहाँ टैक्सी रुकी वहाँ एक गिरजा था। या यों कहिए कि चर्च देखकर ही मोटर रोकी थी। गाँवोंमें चर्च अनेक सार्वजनिक कार्य करते हैं। उनका कार्य इधर अधिकतर सार्वजनिक संस्थाओंने ले लिया है पर मध्य-कालमें तो उनकी उपादेयता असीम थी। इस काल भी दूरके गाँवोंमें उनकी सेवा कुछ कम नहीं रही है।

हम जैसे ही गिरजेके द्वारपर खड़े हुए, पादरी साहब बाहर निकल आये। अब आगेका काम जेम्स साहबका था क्योंकि मिशनरी होनेके अति-रिक्त उन्हींको अपने पूर्वजोंके वंशधरोंको पूछना-जानना था। गाँवका पादरी गाँवमें सबको जानता है। ये महाशय भी जानते हुए लगे। केवल एकाध नामोंके सम्बन्धमें कुछ सन्देह हुआ या सन्दिग्ध उत्तर मिला, पर वह इस-लिए कि जेम्स साहबकी अपनी ही जानकारीमें कुछ त्रुटि रह गई थी।

पादरीसाहबसे हम सबका भी परिचय हुआ। हमें वे अपने आवासकी बैठकमें ले गये। साफ़-सुथरा, झाड़ा-पुँछा कमरा था, दो चार कुर्सियाँ एक छोटी मेज़के चारों ओर पड़ी थीं। रेवरेण्डकी पत्नी मिलीं। उन्होंने हमारी आवभगत की। रेवरेण्ड तो जेम्स साहब और उनकी पत्नीको लेकर उनके सम्बन्धियोंका पता लगाने गाँव चले गये थे। हम कुछ मिनट कमरेमें ही बैठे रहे। एक प्याला चाय पीकर मैं तो बाहर निकल आया। देवियाँ वहीं अन्दर बात करती रहीं।

बाहर बड़ा ख़ुशनुमा था। बिलकुल अपने गाँव-सा लगता था। दृश्य रोमैंटिक था। इधर-उधर पेड़ोंमें देर तक घूमता रहा। कभी पेड़ोंकी उभरी जड़ोंपर बैठता, कभी खड़ा हो जाता। बीच-बीचमें कभी मिस वाल्टन, कभी मिस वण्डेवण्ड, कभी दोनों बाहर आ जातीं। सामने चर्चके बग़ीचेमें एक मज़दूर काम कर रहा था। अंगूरकी बेल ठीक कर रहा था। उसने कुछ पके-हरे अंगूरोंका एक बड़ा गुच्छा तोड़कर दिया। इशारेसे बताया कि अब फ़सल ख़तम हो रही है। पर अंगूर मीठे ही न थे, उनका स्वाद भी बड़ा अच्छा था। गुलाब-सी महक उनसे आ रही थी।

क़रीब घंटे-सवा घंटेके इन्तज़ारके बाद जेम्स साहब लौटे। उनके साथ कुछ और लोग भी थे। एक सम्भवतः उनके दूरके चचेरे भाई होते थे। एक और सज्जन कुछ ऐसे ही रिश्तेदार थे। हमें वे गाँवमें ले गये पर भीतर ले जानेका मतलब था, सड़कपर और आगे बढ़ जाना, क्योंकि गाँव-के घर सड़कके ही दोनों ओर इक्के दुक्के खड़े थे। पास ही दो-एक दुकानें भी थीं। वहीं शायद गाँवका बाज़ार था। हमें देखकर बहुतसे गाँववाले पास चले आये। दुकानदार भी, डाकघरके पोस्टमास्टर भी। जेम्सके रिश्तेदारों और ग़ैरोंको अलग करना कठिन था, क्योंकि सभी अपने लग रहे थे। गाँवोंका वातावरण प्रायः सारी दुनियामें एक-सा है।

हम जब चलने लगे तब सबने हाथ मिलाये। अनेक मोटर तक छोड़ने आये। टैक्सीके पास ख़ासी भीड़ लग गई थी। चाय पहले भी पिला चुके

थे अब कुछ चीज़, डबल रोटी आदि भी देने लगे जो हम लोगोंने नहीं लिये। फिर जेम्स साहबके गाँव-भाईने अपने ही बग़ीचेके थोड़ेसे सेब दिये। वे अमेरिका जाकर लौट आये थे, जब क़िस्मतने साथ नहीं दिया था। साफ़ अंग्रेज़ी बोल लेते थे। सेब उनके बहुत ही बड़े थे। कई तो इतने कि उतने बड़े सेब हमने कभी देखे ही नहीं थे। सेबोंको देते हुए उन्होंने कहा कि हमने इसका नाम 'मुसोलिनी' रक्खा है। सच मुसोलिनीका असर इटलीपर एक ज़मानेमें ख़ूब रहा था। अभी तक उसका आभास किसी-न-किसी मात्रामें बना हुआ है।

गाँवसे मोह हो आया था, वहाँके निश्छल सीधे लोगोंसे भी। दूर मोटर निकल जानेपर भी सिर बाहर निकाल-निकाल पीछे देखते रहे। लोग अभी तक खड़े रुमाल और हाथ हिला रहे थे।

प्रायः पन्द्रह मील लौट चुकनेपर हम एक क़स्बेमें रुके। क़स्बा साफ़ था। बाज़ार निहायत अच्छा। हमने वहीं एक रेस्तराँमें 'लंच' किया। खाना काफ़ी अच्छा मिल गया था। फिर इधर-उधर घूमने लगे। भूलनेका कोई डर न था। अकेले-दुकेले दूर-दूर तक सड़कों-गलियोंमें निकल जाते और छोटी मोटी चीज़ें ख़रीद लेते।

इटली 'केमियो' पत्थरके लिए बड़ा मशहूर है। केमियो यहाँसे दूर-दूर जाता है। मेरे साथियोंने बताया कि यही केमियो जाकर अमेरिकामें तीन-तीन चार-चार गुना क़ीमतपर बिकता है। उन्होंने कुछ ख़रीदारी की। मैंने भी एक चेन और केमियो १८०० लीरे (क़रीब चौदह रुपये) में ख़रीदा।

बाज़ारमें फिरते-फिरते प्रायः शाम हो गई, तब चले। जहाज़पर क़रीब आठ बजे पहुँचे। टैक्सियों आदिके भाड़ेका हिसाब किया। इटलीमें टैक्सीका भाड़ा दुनियामें सभी जगहोंसे भिन्न रूपसे लगता है। और जगह मीलके हिसाबसे लगता है, यहाँ समयके हिसाबसे, जो खल जाता है। पहले १२ मिनटके ३०० लीरे (क़रीब ढाई रुपये) और प्रत्येक

अगले चार मिनटके ६० लीरे (क़रीब ६ आने)। प्रत्येक पैकेजके, जो अन्दर न लिया जा सके, २५ लीरे। टैक्सी इस प्रकार काफ़ी मँहगी है।

डिनर जहाज़पर ही खाया। सब सामान देखा-सम्हाला। कपड़े वग़ैरह रक्खे। रात या कल तक जहाज़ लंगर उठा लेनेवाला है। अब कहीं जाना भी नहीं। समय रहते भी बाहर जानेका इरादा नहीं है। बस एक ही चिन्ता है, वीज़ाकी। चुपचाप डायरी लिखी, एक बार डेकपर गया, जेनोआको भर आँख देखा। लौटकर सो रहा।

—(१६-१०-५०)

कल रातको ही किसी समय अपना जहाज़ जिब्राल्टरकी ओर चलनेवाला था, पर रातमें चल न सका। शामके प्रायः सात बजे मैं शहरसे लौटा तो जहाजकी सीढ़ीपर एक ख़बर पट्टीपर भट्टेसे लिखी हुई पढ़ी—'जहाज़ कल प्रातः ४ बजे रवाना हो जायगा।' और जानमें जान आई क्योंकि यद्यपि पद्माको पत्र लिख चुका था। एक कार्ड उसे और एक चित्रा-को डालना था। शामको ही पद्माका पत्र टॉमस कूकके दफ़्तरमें मिला था। आश्वस्त हुआ।

जहाज़ आज उन्नीसको खुला। दिनका बुरी तरह थका हुआ था क्योंकि शहरमें इधर-उधर घूमनेके सिवा जो ब्रिस्सुलारा जाना पड़ा तो काफ़ी थकावट आ गई थीं और नींद रातमें खुलकर आई। पर न जाने कैसे चार बजे सुबहके लगभग खुल भी गई। घड़ी देखी तो चार बज चुके थे पर जहाज़ हिलता-डुलता न जान पड़ा। जहाज़ बँधा है, अभी खुला नहीं, इसे जाननेका मेरे पास एक और साधन है। वह यह कि मेरे बिस्तरवाली दीवारके पास बाहर छतमें एक रोशनी है जो बन्दरमें जहाज़के खड़े रहते सारी रात जला करती है पर जब जहाज़ चलता होता है तब

वह बुझा दी जाती है। उसके जलते रहनेसे मैंने जाना कि अभी हम बन्दरमें ही हैं। कम्बल खींचकर फिर सो रहा।

६ बजे फिर नींद खुली। आकाशका प्रकाश कमरेमें हल्के-हल्के बिखर रहा था। मगर बाहरकी बत्ती अभी जल रही थी जिससे जाना कि अभी जहाज़ खुला नहीं। पर झटपट उठा, मुँह-हाथ धोया, नहाया—सर्दी थी पर ठण्ढे पानीसे ही नहाया यद्यपि ग़ुसलख़ानेमें गरम जलका प्रबन्ध मैंने प्रायः सदा पाया था—और कपड़े पहनकर ऊपर गया। जहाज़ लंगर उठानेकी तैयारीमें ही था।

धीरे-धीरे खड़खड़ होने लगी, लोहेकी रस्सियाँ खींची जाने लगीं, और लंगर देखते-ही-देखते ऊपर आ गया। दूसरे सहयात्री भी अब तक डेकपर आ गये थे क्योंकि बन्दरमें प्रवेश करते और छोड़ते समय हम सभी वहाँ मौजूद रहना चाहते थे। कई दिनों बाद बन्दरमें दाखिल होना कुछ ऐसा लगता था जैसे बियाबाँसे आबादीको लौट रहे हों और सामनेका नगर बड़ा भला मालूम होने लगता था। परन्तु दिनोंकी सैरसे भी हम शीघ्र ही ऊब जाते थे और जहाजका अगली दुनियाकी ओर चल पड़ना सुखद प्रतीत होता था। नगरको छोड़नेमें साथ ही एक प्रकारकी बेबसी जान पड़ती थी, फिर स्थलसे दूर जलसे सर्वथा घिरे होनेका एक प्रकारका हल्का भय भी लगता था।

अस्तु, जहाजने जो लंगर उठा लिया था सो वह चल ही पड़ा। कोई अनियम हो गया था जिससे उसने तीन-चार बार सीटी बजाकर 'सिगनल' दिया फिर कुछ ठमका-सा रहा, फिर सीटी दी और हल्के-हल्के चल पड़ा। इसी बीच पाइलट भी अपनी मोटरबोटसे आ गया। आवश्यक नियमोंकी पाबन्दी हो चुकनेपर जहाजने अपनी गति बढ़ा ली और प्रायः आध घण्टेमें वह बन्दरसे बाहर हो गया।

हम फिर भी डेकपर खड़े जेनोआकी ओर देखते रहे, और प्रायः घण्टे भरतक, जबतक उसका दर्शन कठिन और धूमिल न हो गया। आकाश

धीरे-धीरे बादलोंसे घिर चला था और बाहरकी हवा ठण्ढी जल-बोझिल लगने लगी। केबिनको लौट आया। सोचा कुछ लिखूँगा पर लिख न सका। कुछ पढ़ने लगा।

जेनोआ पहुँचनेके पहले ही एक पुस्तक पढ़नी शुरू की थी—जान कार्स्कीकी 'प्रच्छन्न राष्ट्रकी कहानी।' बीचमें जेनोआ आ जानेके कारण वह पढ़ाई जहाँ-की-तहाँ रह गई थी। पढ़ने लगा। सोचा आज रात तक उसे समाप्त कर डालूँ जिससे जेनोआका कुछ हाल जो लिखना शेष रह गया है कलतक समाप्त कर लूँ।

पर तभी याद आया कि कल बीसको माँपीकी शादी है और जेनोआसे तार भेजना रह गया। भागा हुआ ऊपरके डेकपर गया और स्पार्क (रेडियो-इंजीनियर) से पूछा कि क्या रेडियो द्वारा 'केबुल' हिन्दुस्तान भेजा जा सकता है ? उसने कहा—भेजा तो जा सकता है पर बड़ा मँहगा पड़ेगा, प्रायः २) फ़ी शब्द के। तार भेजना आवश्यक था। पत्नी और सुधा दोनोंके पत्रोंसे शादीकी तिथिका पता चल गया था और सोचा था कि हैलिफ़ेक्ससे बजाय तारके पत्र भेज देना उचित होगा। पर चलते-चलते जो पद्माका पत्र आ गया उसमें उसने लिखा था कि भाभीने घरके प्रायः सभीको बुलाया है और वह अकेली पिलानी जा रही है तो मैंने सोचा कि मेरा वहाँ न रहना शायद माँपीको अखरे। और यदि मैं स्वयं वहाँ न रह सकूँ तो कम-से-कम मेरा सन्देश और बधाई निश्चय वर-वधूके लिए सुखद होंगे।

मैंने तार दे दिया—अखंडित प्रेमके वातावरणमें फलो-फूलो ! वास्तवमें यह कालिदासके एक प्रसंगका शब्दान्तर है। साहित्यमें मुझे विवाहके अवसरपर उससे अधिक सुन्दर और श्रेयष्कर आशीर्वाद नहीं ज्ञात जो कालिदासने उमाके विवाहके अवसरपर कुमारसंभवमें आर्याओं द्वारा वधूको दिलवाया है—अखण्डितं प्रेम लभस्व पत्युः। उसीका अंग्रेजी भाषान्तर तारके शब्दोंमें मैंने पिलानी भेज दिया।

आज उन्नीसको दोपहरके समय तार भेजा गया, आशा है कि कल विवाहके लग्नपर अथवा उससे कुछ पहले ही वह पिलानी पहुँच जायगा। माँपी मेरी पत्नीकी छोटी बहन है और मेरी भूतपूर्व छात्रा। पत्नी विद्यालयकी प्रिंसिपल हैं और वहीं उनकी माता और माँपी भी आ गई हैं। वर भी उसी कालेजका छात्र है जहाँ मैं कभी पढ़ाता था और माँपीका सहपाठी भी। विवाह पिलानीसे ही हो रहा है। शुभमस्तु।

पुस्तक फिर पढ़ने लगा पर समाप्त न कर सका। इधर यह भी डर लगने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि डायरीका बक़ाया बढ़ जाय, इससे लिखने बैठा।

अब वातावरण पश्चिमका है, यूरोपका, पश्चिमी भूमध्यसागरका। अब डेकपर ठंढ लगने लगती है, और धूपका हल्का स्पर्श सुखद लगने लगा है। पर केबिनके अन्दर तो ख़ासी सर्दी है यद्यपि अभी ओढ़ता एक ही कम्बल हूँ। हैफ़ासे चलनेके बाद ही देखा कि स्टीवार्डेसने बिस्तरपर दूसरा कम्बल रख दिया है पर अब तक ओढ़ता एक ही रहा हूँ, और वह भी सदा नहीं। रातमें जब तब सुबहके समय ओढ़ लिया करता हूँ। हाँ, कमरेमें पंखेकी ज़रूरत निश्चय जेनोआ पहुँचनेपर नहीं रह गई और उसे अब मैं नहीं चलाता।

पर हाँ, एक कम्बल रातमें नितान्त आवश्यक हो गया है। और रातमें क्यों दिनमें भी लंचके बाद जब कभी लेटने या लेटकर कुछ पढ़ने जाता हूँ तब कम्बलकी आवश्यकता प्रतीत होती है। जेनोआमें कुछ चीज़ें ख़रीदी थीं, कुछ कपड़े धुलकर आये हैं, वे सभी इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। उन सबको यथास्थान रखना है पर जेनोआके चार दिनोंने शरीरको थका दिया है। सब चीज़ें जहाँकी तहाँ पड़ी हैं। इस घण्टेसे उस घण्टे, इस पहरसे उस पहर आलस बस टरकाये जा रहा हूँ। देखें उन्हें कब रख पाता हूँ।

जहाज़ चला जा रहा है, अपनी शीघ्रतम गतिसे बारह मील प्रति

घंटेकी चालसे। उसे निरन्तर पश्चिमकी ओर चलना है, कुछ दक्षिण होते। उसका मार्ग अभी फ्रांसके तट और कोर्सिकाके बीच है, पर शीघ्र वह तूलो, मारसेल्स आदि फ्रांसीसी बन्दरगाहोंको दूर दाहिने छोड़ निचली राहसे यूरोप और अफ्रीकाके बीच सर्वथा पश्चिमकी ओर चल पड़ेगा। जैसे उसने एशियाका महाद्वीप छोड़ा है, दो-तीन दिनोंमें वह यूरोप और अफ्रीकाका भी सन्धिद्वार लाँघ जायगा।

अभी मौसिम सम्हला हुआ है, वायु अनुकूल है और यदि वह ऐसी ही रही तो कल-परसों हम बालियारिक द्वीपसमूह और बाईस (रविवार)की सुबह तक जेनोआसे प्रायः ८६५ मीलकी राह तयकर जिब्राल्टर पहुँच जायँगे। पर जिब्राल्टरमें हमें रुकना नहीं है। फिर भी पूरबके इस द्वार और पतितोन्मुख ब्रिटिश साम्राज्यके इस अद्भुत दुर्गको देखनेकी इच्छा निरन्तर बलवती होती जा रही है।

(१६–१०–५०)

सोकर उठा तो देखा क्षितिज बादलोंसे भरा हुआ है। लगता है कि पानी बरसेगा। पर पानी बरसा नहीं। थोड़ी देरमें बादल जहाँ-के-तहाँ उड़ गये, आकाश निर्मल हो गया और दिशाएँ प्रतिभ।

आज उठते ही मुँह-हाथ धो लिखने बैठ गया। थोड़ा-बहुत लिखा भी पर मन न लगा। कपड़े आदि सम्हालने चला पर वह भी न हो सका। उधर कार्स्कीकी 'स्टोरी ऑफ़ ए सीक्रेट स्टेट'के कुछ परिच्छेद रह गये थे उन्हें पढ़ने लगा। पढ़कर समाप्त कर दिया, समाप्त करके ही उठा। सुन्दर पुस्तक है, सप्रमाण, सत्यानुरागिणी। अत्यन्त रोचक है। कोई इसे पढ़कर वह अंग्रेज़ी कहावत अंगीकार कर सकता है कि सत्य काल्पनिक (मिथ्या) से कहीं अनोखा होता है, कहीं लोमहर्षक।

और इसका लेखक स्वयं इस पुस्तकका प्रमुख पात्र है। पोलैण्ड कितना अभागा रहा है इतिहास इसका साक्षी है। कितनी बार वह बँटा,

कितनी बार उसका नक़शा बदला, कितनी बार उसके नागरिकोंको अपने राजनीतिक प्रभु बदलने पड़े—यह इतिहासकी करुण कहानी है। फ्राँस, आस्ट्रिया, प्रशा, रूसने बार-बार उस अभागे देशकी काया पलट की, बार-बार उसे अपनी भूलोलुपता और बन्दरबाँटका साधन बनाया, और इस दूसरे महासमरने तो उसकी जो दुर्गत की, उसके रक्तसे जो तर्पण किया वह मानवताके मर्ममें शूल बनकर बसेगा। 'स्टोरी आफ़ ए सीक्रेट स्टेट' उसी महासमरके मर्म-प्रहारकी दुःखद कहानी है।

महासमर—दूसरा महासमर—पहलेके बाद दूसरा, दोनोंका जर्मनीसे प्रारम्भ। प्रशा-जर्मन साम्राज्य तृतीय रीख़। सैदोवा-सेदान-पहला महा-समर-दूसरा महासमर। फ्रेडरिक महान्-बिस्मार्क-कैसर-हिटलर। नीत्शे-रोज़ेन्वर्ग-हिटलर। हिटलर स्थूल और सूक्ष्म दोनोंकी मूर्त पराकाष्ठा। राष्ट्रीयताका विकृत चरम मूर्तन, उस घोर राष्ट्रीयताका जो जातीयताकी जननी है, जातीयताकी जो अपनेको सर्वस्व मानती है, खुदाका प्यारा, मानवताका चरम विकास, विकासका अविराम लक्ष्य।

जो अन्य जातियोंको, अन्य राष्ट्रोंको, अपनी मान्यताओंकी चेरी अभि-मत साधन मानती है, जिसका पर्याय स्वराष्ट्र है और जिसके स्वराष्ट्रका पर्याय स्वजाति है, स्वस्तिकाकार जर्मन जाति, जो मात्र संसारकी नैतिक, राजनैतिक, आर्थिक समस्याओंकी विधाता है। शक्ति-शक्ति-शक्ति। मारक-अभिराम-स्थूल-शक्ति। और शक्तिका मूर्त विराम—फ़्यूरर-हिटलर। हिटलर जो जाति और राष्ट्र दोनों है, जिसकी अखण्ड सत्ता जर्मन जाति-की सर्वांगीण समष्टि है।

और वह फ़्यूरर शुद्ध जातीयताका उपासक है। उस जातीयताका जिसका आर्यत्व विजय और संसृतिका मापदण्ड है। पर आर्यत्व जिसने सभ्यताओंका अविराम विध्वंस किया है, सैन्धवोंका, मिस्रियोंका, असुरोंका, मिकीनियोंका, फ़िनीकियोंका। उस विस्मृत विध्वंस-लीलाका पुनरावर्तन

आर्यत्वके मेरुदण्ड जर्मनीको करना है और उसका पहला रूप विनाश है, विजातीयोंका विनाश, मुख्यतः यहूदियोंका।

यहूदी जर्मन रक्तको वैवाहिक सम्मिश्रणसे दूषित कर रहे हैं। उनका समूल विध्वंस जातीयताके विकासमें आर्यत्वकी प्रतिष्ठामें पहला क़दम है। तीसरे रीख़के चांस्लर जर्मन जातिके फ़्यूररका यही उद्देश्य है—उस यहूदी जातिका सर्वनाश, उन्मूलन, जिससे जातीयताका रक्त दूषित होनेका भय है। बर्लिन-मूनिख़-विएनाके रक्त-काण्ड और तब चेकोस्लोवाकिया-पोलैण्डका विध्वंस।

पोलैण्डके उसी विध्वंसकी कथा इस 'स्टोरी आफ़ ए सीक्रेट स्टेट'में निहित है, उसी यहूदी विध्वंसकी जो सर्वत्र विजितमें नई जर्मन प्रेरणा, उसकी उदीयमती चेतनाकी कसौटी था। पाँचसे दस हज़ार यहूदी बच्चों-तरुणों-प्रौढ़ों-वृद्धों-नारियोंकी नित्यके नरमेधमें आहुतिके लिए माँग लिये उनका 'प्रोग्रम' 'घण्टों'में एकत्रीकरण, वहाँ पंजर रूपमें इतस्ततः नंगे फिरनेवाले यहूदियोंपर तरुणों और बालकोंका लक्ष्याभ्यास और नग्न पिशाचताका अट्टहास। इसी बीच, जर्मन कान्सेन्ट्रेशन कैम्पोंमें भीषण असुर आचरणकी ओर सीना ताने पोलैण्डके तरुणों और वृद्धोंके राजनैतिक गुप्त प्रयत्न और आज़ादीके लिए अविराम अथक दानव युद्ध और उस युद्धकी कथा स्वयं वह जान कार्स्की लिखता है जिसका उस नव राष्ट्रके निर्माणमें सक्रिय हाथ था। पुस्तक भयानक भी है, अनुकरणीय भी।

काश भारतकी आज़ादीकी लड़ाईका भी इतिहासकार कोई कार्स्की होता और इतिहास लिखता उन चोटों-रक्तस्रावोंका, उन लाहौर, लखनऊ-के जेलोंमें निरन्तर तीसरी डिग्रीके पुलिस-हथकण्डोंका, उन बलिदानोंका जिनसे यमके दूत भी एक बार तिलमिला गये थे, वास्तवमें स्वतन्त्रता-समरमें प्राण देनेवाले, सन् पाँच और उससे भी पहलेके वीरोंका जिनके नाम तक आज हमारे जाने नहीं।

'स्टोरी आफ़ ए सीक्रेट स्टेट' समाप्त कर तीसरे पहर तक विस्तर-

पर पड़ा रहा। राष्ट्रीयता और जातीयताके कटु प्रयोगों और अनुभवोंपर विचार करता रहा। मानवताका बिलबिलाना सुनता रहा, उसका रक्त-स्राव जैसे प्रत्यक्ष देखता रहा। कनफ्यूशस, बुद्ध, ईसा, गाँधीके उपदेश क्यों इस प्रकार उपेक्षित हो चले हैं ? क्यों दानव अविराम शोषण करता जा रहा है ?—ये प्रश्न स्वभावतः मनमें उठते-विलीन होते रहे।

सन्ध्या समय ऊपरके डेकपर गया। बालेरिक द्वीपसमूह पास आता जा रहाथा। इस द्वीपसमूहमें मुख्यतः चार द्वीप शामिल हैं–मिनोरका, माजोरका, इविज़ा और फ़ोरमेन्तेरा। इनकी स्थिति नाओ अन्तरीपके पूर्वकी ओर है। इनका सम्मिलित क्षेत्रफल प्रायः दो हज़ार वर्गमील है और जनसंख्या ३०७०००। इनके बन्दर छोटे और साधारण हैं। हम इनको अपने दायें छोड़ते उनके और अफ्रीकाके बीचसे होकर चले।

पहले मिनोरका आया जो इसी द्वीपसमूहमें आकारमें दूसरा है, २७ मील लम्बा, १० मील चौड़ा। बीचमें मोन्तीतेरी है, ११७४ फ़ुट ऊँचा जिसके शिखरपर बना दुर्ग अच्छे मौसिममें क़रीब चालीस मीलकी दूरी तक देखा जा सकता है। माजोरका इन द्वीपोंमें सबसे बड़ा है, ५३ मील लम्बा, ४१ मील चौड़ा फ़ोरमेन्तेरा इस द्वीप समूहका प्रायः सबसे छोटा महत्त्वपूर्ण द्वीप है। इसका किनारा ६३० फ़ुट ऊँचा है। इविज़ा २१ मील लम्बा और इसका आधा चौड़ा है। यह इस द्वीपसमूहके पश्चिममें है। अँधेरा होनेके कारण मिनोरकाके सिवा अन्य द्वीप हम न देख सके। डिनरके लिए चले गये।

अब मेरी बगलमें बाईं ओर नये यात्री श्री बौमशेम बैठने लगे हैं, और उनके सामने उनकी पत्नी और अन्तमें उनकी दो सालकी बच्ची। ये लोग यहूदी हैं, यहूदी पुरोहित-रब्बी, और अमेरिका-संयुक्तराष्ट्र जा रहे हैं। सम्भवतः वहीं बस जायँगे। रूमानियाँके हैं। दोनों भले हैं और बच्चीने तो जहाज़पर उसे अपने हँसने-चीख़नेसे घरका रूप दे दिया है। ये लोग इब्रानी, जर्मन और फ्रेंच जानते हैं और अंग्रेज़ी न जाननेके कारण हम

बाक़ी यात्रियोंसे बोल नहीं पाते। अधिकतर इशारोंसे ही और जब तब एकाध अंग्रेज़ी या फ्रेंच शब्दोंसे भावोंका संकेत हो जाया करता है।

बिस्तरपर जब गया तब पिलानीकी याद आई। प्रायः इसी समय माँपीके विवाहका मुहूर्त है! विवाह हो रहा होगा। सारी पिलानी कालेजके अध्यापक आदि निमन्त्रित होंगे। मेरे आदरणीय आचार्यजी सम्भवतः गोत्रोच्चार कर रहे हों। पद्मा खुर्जेसे आ गई होगी और शायद विवाहके अवसरपर ही रेडियो-तार द्वारा भेजी मेरी शुभकामना भी पहुँच गई होगी। देरतक घरकी बातें सोचता रहा। फिर सो गया।

(२०–१०–५०)

सुबह जो उठकर ऊपर गया तो देखा कि फ़ोरमेन्तेरा—बालेरिक द्वीपसमूहके इविज़ा द्वीपके आगेका टापू और हमारा निकटतम द्वीप—थोड़ी ही दूरपर दाहिने पीछेकी ओर छूटता जा रहा है और उसके पीछे काफ़ी दूर, इविज़ाकी तटरेखाका पार्वती शिखर क्षितिजपर विलीन होता जा रहा है।

आज जलपानके बाद डेक-गोल्फ़ खेलने लगे। प्रायः साढ़े ग्यारह बजे तक खेला। शरीर अक्सर अकारण थक जाता है, थक क्या जाता है, व्यायाम आदिका कोई साधन न होनेके कारण कई प्रकारकी परेशानियाँ पैदा हो जाती हैं, और बदनमें कुछ फुर्ती हो आती है यद्यपि पसीना नहीं निकल पाता।

अब सर्दी लगने लगी है और मैंने कपड़ोंको फेर बदलकर एक बार और रख लिया है क्योंकि दो ही दिनोंमें, शायद कल ही हम अतलांतिक महासागर पहुँच जायँगे और तब सर्दी निश्चय बढ़ जायगी। बालेरिक द्वीपसमूह कबके पीछे छूट गये हैं और दाहिनी ओर स्पेनकी भूमि भी दीख पड़ने लगी है। यह स्पेनका दक्षिण-पूर्वी तट-प्रसार है। हम निरन्तर आगे बढ़ते जा रहे हैं। पश्चिमकी ओर। आज एक और

बात मालूम हुई। अठारह-बीस सालका एक नवयुवक चुपकेसे जहाज़पर चला आया है। जेनोआमें छिपकर चढ़ आया था और रस्सियोंके गुदाममें चुपचाप दुबका पड़ा था,। आज तीसरे दिन जब गुदाम खुला तब वह पकड़ा गया। बड़ी कठिनाई है, किया क्या जाय ? जेनोआ पास होता तो जहाज़ लौटकर उसे उतार देता पर अब तो अगले बन्दरपर ही वह उतारा जा सकता है और अगला बन्दर अतलान्तिक पार अमेरिका (कैनाडा) में हैलिफ़ैक्स है। पहले ऐसा प्रायः हुआ करता था कि लोग छिपकर जहाज़पर चढ़ जाया करते थे और खलासीका काम करते इष्टस्थानको चले जाते थे। परन्तु लड़ाइयों और परस्पर त्योरियोंके कारण सारे राष्ट्र इस सम्बन्धमें सचेत हैं और विदेशीका आना पसन्द नहीं करते। विना पासपोर्ट और वीज़ाके यात्री लानेवाले जहाजको १५०० पौण्ड (लगभग २० हजार रुपये) जुरमाना देने पड़ते हैं। इसीसे अपने जहाजके कप्तान भी सन्त्रस्त हैं। वैसे उस लड़केको देखा चुपचाप काम कर रहा था। जहाज़पर रंग किया जा रहा था, वह भी रंग कर रहा था। जहाज़से खाना-पीना मिल ही जाता है, प्रसन्न है। जहाँ जहाज उसे पटक देगा वहीं उतर जायगा। यदि कोई साधन मिल गया तब तो उतरे। विदेशमें किसी ओर सरक ही जायगा। वरना जहाज़ कभी लौटाकर स्वदेश तो पहुँचा ही देगा।

अपना हाल विधानतः उससे कुछ भिन्न नहीं है। जबसे संयुक्तराष्ट्र-की सरकारने विदेशियोंके वीज़ा असम्मानित और रद्द कर दिये हैं तबसे पहलेके वीज़ावाले यात्री ग़ैरक़ानूनी हो गये हैं। मैंने बम्बईसे अमेरिकन कान्सुल-जेनरलको हैलिफ़ेक्सके अमेरिकन कान्सुलेट आफ़िसको तार द्वारा मेरा बीज़ा सही कर देनेकी प्रार्थना भेज दी है। पर यदि समयपर तार न पहुँचा और वीज़ा कानूनी न बन सका तब न्यूयार्कमें क्या स्थिति होगी अभी कह नहीं सकता। कुछ भी हो सकता है। फिर भी चला जा रहा हूँ, जो होगा भुगत लूँगा।

तीसरे पहर फिर गोल्फ़ जमा, और खासा तगड़ा। एक ओर पुरुष थे दूसरी ओर नारियाँ। दो घंटे जमकर खेल हुआ। हम जीत गये। क़हक़हे लगे और जी हल्का हो गया। चुस्ती आ जानेसे शरीर प्रसन्न हो उठता है। नीचे गये। भोजनका समय हो गया था। छोटी बच्चीके साथ थोड़ा खेला, भोजन किया फिर केबिनमें जाकर बिस्तरपर पड़ रहा। हल्की सर्दी थी। रात भींग चली।

—(२१–१०–५०)

आज बाईसवीं है। उठा तो सर्दी मालूम हुई। बिस्तरसे निकला, मुँह-हाथ धोया, स्नान किया, चाय पी और फिर बिस्तरमें जा घुसा। रात कुछ पढ़ता-पढ़ता सो गया था, पुस्तक वहीं पड़ी थी, फिर उसे उठाकर पढ़ने लगा। इरादा कुछ लिखनेका था परन्तु ठंढने जो थोड़ी अलकश पैदा की तो कुर्सीपर न जा सका। सोचा, नाश्तेके बाद बैठूँगा। कम्बलसे बदन ढँक पढ़ने लगा।

साढ़े सात बजेके लगभग दरवाजेपर ठकठक हुई और उसे खोल कप्तानने 'गुडमार्निग'की। साथ ही कहा—सामने जिब्राल्टरकी चट्टान है और दृश्य बड़ा मनोहर है, थोड़ी देरमें निकल जायगा।

झट तैयार होकर ऊपरके डेकपर भागा। केवल मैं ही और कप्तान वहाँ थे बाक़ी सब यात्री अपने केबिनोंमें थे। दृश्य सचमुच अभिराम था। दाहिनी ओर दूर तक पहाड़ोंकी श्रेणियाँ थीं और सामने पास ही जिब्राल्टर-की ऊँची चट्टान चमक रही थी। सूरज निकल आया था और उसकी रश्मियाँ चट्टानपर जो भरपूर पड़ रही थीं तो लगा जैसे उसपर चाँदी बिखर पड़ी हो। चट्टान अकेली लगती है, अकेली है भी, बादल मँडरा रहे हैं।

चट्टान दीवारकी तरह खड़ी है, प्रायः सीधी, और बराबरके उसके दो हिस्से ऐसे लगते हैं जैसे खेमेकी ढाल हों या टिनकी दीवारें। जिब्राल्टर स्पेनकी ज़मीनपर ग्रेटब्रिटेनकी रियासत है। स्पेन और ब्रिटिश भूमिके बीच ६०० गज़ ज़मीन स्वाधीन है। उसी स्वाधीन भूमिकी दक्षिण दिशामें यह

जिब्राल्टरकी चट्टान पानीके ऊपर एकाएक उठ खड़ी हुई है, जलके ऊपर १३९६ फ़ुटका आकार लिये सवा दो मील लम्बी, मुश्किलसे पौन मील चौड़ी।

उसके उत्तरी और पूर्वी किनारे सर्वथा खड़े हैं, जहाँ केवल बन्दर कूदते रहते हैं। पश्चिमी ढालपर कुछ खेती होती है। इसकी चोटीपर, पश्चिमी भागमें और सामनेके दक्षिण तटपर अब अनेक मकान बन गये हैं जो जहाज़से साफ़ दिखाई देते है, बग़ैर दूरबीनके सहारे। चट्टानका दक्षिणी हिस्सा यूरोपा प्वाइण्ट (बिन्दु) कहलाता है, प्रायः ६०० गज़का।

जिब्राल्टरकी खाड़ी कारनेरो और यूरोपा प्वाइण्टके बीच केवल चार मील चौड़ी है। जिब्राल्टरका जलडमरूमध्य है जो एक ओर तो भूमध्यसागर और अतलांतिक महासागरको मिलाता है दूसरी ओर यूरोप और अफ्रीकाके महाद्वीपोंको (स्पेन और स्पेनी मोरोक्कोको) अलग करता है। इसकी अधिकसे अधिक चौड़ाई २४ मील है, कमसे कम पौने आठ मील। दोनों किनारे बराबर दीखते रहते हैं। एक समय अफ्रीकासे यूरोप जानेवाली सेनाएँ यहीं सीरे (Cires) और पुन्ता कानाले (Canales) या तारीफ़ा और अल्साज़ार (Alcazar) अथवा यूरोपा प्वाइण्ट और पुन्ता आल्मीना (सिउत्ता)के घाट पार उतर जाती थीं।

इस जिब्राल्टरका इतिहास बड़ा रोचक है। इसका प्राचीन नाम फ्रेतुन हरक्यूलियम (Fretune Herculeum) है और अरबोंका दिया हुआ बाब-एज-ज़काक आजका इसका नाम, जाब्रेल तारीक (मान्ती काल्पे), अरब जेब्राल तारीक़–बेन–ज़ैदीका दिया हुआ है जिसने ७१० ई० में अफ्रीकाकी भूमिसे इस जलप्रसारको लाँघ स्पेन जीता था। अपनी विजयोंके कारण वह विजेता ज़ब्र–अल–तारीक (तारीक महान्) कहलाया और जब्र–अल्तर उसीका अपभ्रंश हुआ जो अंग्रेज़ोंके संपर्कसे जिब्राल्टर बन गया।

ई० पू० तीसरी सदीमें अफ्रीकाके तटके विशाल फ़िनीकी नगर कार्थेजका भूमध्यसागरके प्रायः दोनों पश्चिमी तटोंपर राज था। उसकी प्रबल

सेनाओंने समुद्र लाँघ स्पेनपर अधिकार कर लिया। तभी रोम धीरे-धीरे उत्तरमें अपना मस्तक उठा रहा था। तभी २६४ ई० पू० में जब अशोक भारतमें अपने पितृ-राज्यका शासन कर रहा था, जब चीनका शी-ह्वांग तो अभी बालक था, सिकन्दरियाका संग्रहालय जब अभी वैज्ञानिक जिज्ञासुओं-की प्रश्न-पिपासा शान्त कर रहा था और बर्बर गाल एशियामाइनरमें जब अभी परगाममसे कर वसूल रहे थे तभी कार्थेज और रोमके बीच भीषण प्युनिक युद्धोंका आरम्भ हुआ।

२१८ ई० पू० में कार्थेजी तरुण सेनापति हानिबाल फ्रेतुम हर-क्यूलियमका यह जलप्रसार अपनी सेना समेत लाँघ स्पेनकी भूमिपर उतर गया और रोम कार्थेजके बीचकी सीमा इब्रो नदी भी उसने रोमनोंके देखते-देखते पार कर लिया। आल्प्स् लाँघ वह इटली पहुँचा और रोमनोंको धूल-पर धूल चटाता पन्द्रह वर्ष तक इटलीकी भूमि रौंदता रहा। फिर रसदकी राह कट जानेसे वह पीछे न लौट आगे इटलीकी समूची लम्बाई लाँघ समुद्र-की ओर बढ़ा। इधर कार्थेजके गुलामोंने विद्रोह कर दिया था। घरमें भी उसकी सेनाकी आवश्यकता थी। हानिबाल कार्थेजकी ओर बढ़ा पर ज़ामा-की भयंकर लड़ाईमें कार्थेजका सर्वनाश हो गया और संसारके उस अप्रतिम सेनापतिने पूर्वकी राह ली। रोमका ऐश्वर्य चमक उठा।

जिब्राल्टरके इतिहासका दूसरा देदीप्यमान काल आठवीं सदीके आरंभ-में आया जब पैग़म्बर मुहम्मदके अनुयायियोंने अपने अरबी रेगिस्तानसे निकलकर दुनियाको हैरतमें डाल दिया। मुहम्मदके मरते ही अरबी रिसालोंने पुराने गढ़ तोड़ डाले। बाइज़ेन्तियमकी रोमन सेना यारमुक (जार्डनकी सहायक नदी) की लड़ाईमें ६३४ ईसवीमें अरबोंसे टकराकर टूट गई और रोमन सम्राट् हैरेक्लियसके देखते ही देखते उसकी विजयोंके आधार—सीरिया, दमिश्क, पामाइरा, अन्तिओक, जुरूसलम—अरबोंके अधिकारमें आ गये। अरब अब पूरबकी ओर मुड़े। ईरानियोंने उनका

सामना किया पर रुस्तमने अरबोंके सामने मुँहकी खाई और ईरानी शक्ति चकनाचूर हो गई ।

अरब ईरान और पश्चिमी तुर्किस्तान लाँघ चीनकी सीमा तक जा पहुँचे फिर पश्चिमकी ओर मुड़े । मिस्र तिलमिलाकर गिर पड़ा, सिकन्दरियाका कुरानेतर पुस्तकालय जल उठा और अरबी सेना जब्र-अल-तारीक़ (तारीक़ बेन-ज़ैदी) की अधीनतामें भूमध्यसागरका दक्षिणी तट-प्रसार जीतती-फेतुम हरक्यूलियमके सामने आ खड़ी हुई । ७१० ई० में उसने स्पेनपर अधिकार कर लिया और दस वर्ष बाद पिरेनीज़ पर्वतमाला-पर । ७३२ ई० में अरब सेनाने फ्रांसके हृदयपर धावा किया और लगा कि सारा यूरोप उनके अधिकारमें आ जायगा पर सहसा पोतिएकी लड़ाईमें उनकी हार हो गई और उनका उत्तर-पश्चिमी प्रसार रुक गया ।

पर सदियों स्पेनको अपना आधार बना अरबोंने यूरोपको सभ्य बनाया । गणित, ज्योतिष, अल्केमी (रसायन), फ़िलसफ़ा सभी क्षेत्रोंमें यूरोप अरबोंका ऋणी हुआ । यह विचार भ्रमपूर्ण है कि ग्रीकोंने यूरोपको ज्ञान दिया । ज्ञान निश्चय ग्रीकों, चीनियों और हिन्दुओंका था परन्तु उसके प्रसारक अरब थे । कुस्तुन्तुनियाँके पतनके बहुत पहले, यूरोपीय सांस्कृतिक पुनर्जागरणसे सदियों पूर्व अरबोंने स्पेनके अपने आधारसे ज्ञानका प्रकाश यूरोपके देशोंपर डाला और फैलाया । स्पेनपर मुसलमानोंका प्रभाव प्रायः पन्द्रहवीं सदी तक किसी-न-किसी रूपमें बना रहा ।

उसी आधारके दक्षिणी सिरेपर जहाँ हानिबाल और जब्र-अल-तारीक़-ने समुद्र लाँघ अफ्रीकासे यूरोपकी ज़मीनपर क़दम रक्खे थे हमारा जहाज़ 'जान बाके' मँडरा रहा है । और हम बाइनाकुलर लिये दोनों ओर देख रहे हैं जहाँ दोनों महाद्वीपोंकी भूमि नितान्त पास आ गई है । और वहीं डेकपर खड़े हम दोनों महाद्वीपोंको देखते इतिहासकी दूरकी सदियों पार जब्र-अल-तारीक़ और हानिबालसे भी साक्षात् कर रहे हैं ।

जिब्राल्टर पूर्वमें माल्टा और सिंगापुरकी भाँति पश्चिममें अंग्रेज़ी साम्राज्यका प्रहरी है। जिब्राल्टरकी चट्टानके पीछे पश्चिमी भागसे लगा समुद्रका कोणिल तट है। वही जिब्राल्टरका बन्दर है। बन्दर प्रायः सवा मील लम्बा और तिहाई मील चौड़ा है। पीछे मीलों तटके समानान्तर फैली पर्वतमालाके ऊपर और नीचे तट तक स्पेनकी भूमिपर आबादी फैली हुई है जो लगातार गाँवों, नगरों और बस्तियों-कारखानोंके रूपमें तारीफ़ा तक चली गई है, यद्यपि पर्वतमाला वहीं समाप्त नहीं हो जाती।

जिब्राल्टरका नगर जौर बन्दर ब्रिटिश सरकारका है। नगर चट्टानके पश्चिमोत्तर कोणमें बसा है। यहीं ब्रिटिश गवर्नरका आवास है, अनेक गिरजाघर हैं, अस्पताल हैं, फ़ौजी छावनियाँ हैं। नगरकी आबादी प्रायः बीस हज़ार है। ब्रिटिश जिब्राल्ढर और स्पेनकी भूमिके बीच अनेक उद्यान हैं, एक क़ब्रगाह और घुड़दौड़का मैदान है।

आगे दाहिनी ओर पहाड़ और समुद्रका बढ़ता हुआ विस्तार तारीफ़ाके नगर तक चला गया है। तारीफ़ा पहले एक छोटा द्वीप था पर अब स्पेन-की भूमिसे जोड़ प्रायद्वीप-सा बना दिया गया है। इसके प्रधान भाग-को महाद्वीपसे एक कृत्रिम भू-भाग जोड़ता है। तारीफ़ा आर-पार प्रायः ७०० गज़ है और चारों ओर ऊँची चट्टानोंसे घिरा है। नगर प्रायद्वीपसे प्रायः आधा मील उत्तर-पूर्व है। इसे मूरोंने बसाया था। यह शहर-पनाह-से घिरा है जिसकी बुर्जियाँ यत्र-तत्र दिखाई देती हैं। दक्षिण-पश्चिमकी ओर गुज़मान दुर्ग है। जनसंख्या प्रायः १२००० है।

जिब्राल्टरकी चट्टानोंके सामने समुद्र पार स्पेनी मोरोकोका नगर सिउता है। प्राचीन नगर टूटी दीवारोंसे घिरा है। पश्चिमकी ओर प्राचीन गढ़बन्दी है जिसे वर्तमान नये अल्मीना नगरसे एक सूखी खाई उसे अलग करती है। अल्मीना नया नगर है। स्वच्छ और सुन्दर घर उद्यानोंमें खड़े हैं। सड़कें चौड़ी हैं। जनसंख्या ४०,००० के लगभग है।

अबतक हमने अनेक समुद्र पार कर लिये हैं—अरबसागर, अदनकी खाड़ी, लालसागर, आदि और यहाँ अब हम भूमध्यसागरको भी पार कर रहे हैं। भूमध्यसागर तीन महाद्वीपोंसे घिरा है, एशिया, अफ्रीका और यूरोपसे। जिब्राल्टरसे सीरिया तक इसकी लम्बाई क़रीब २१०० मील है और अद्रियातिक सागरसे जुन अलक़ब्रीत (सिद्राकी खाड़ी) तक चौड़ाई प्रायः १००० मील। इसके पश्चिमी भागकी अधिकाधिक गहराई १०३३८ फ़ुट है और पूर्वी भागकी १४४४४ फ़ुट।

देर तक हम डेकपर खड़े रहे, प्रायः डेढ़ घण्टे। इतनी देरमें सिउता और तारीफ़ा दोनों आँखोंसे ओझल हो गये। अफ्रीकाके तटका ऊँचा पहाड़ बादलोंके ऊपर अपनी नीली चोटी उठाये बड़ा भव्य मालूम हो रहा था। धीरे-धीरे दोनों ओरकी पर्वतमालाएँ भी धुँधली पड़ने लगीं और जब तक हम लंचके बाद ऊपर लौटे दोनों खो गई थीं।

हम अब स्पष्टतः अतलान्तिक महासागरमें थे। भूमध्यसागर और अतलान्तिक महासागरमें स्पष्ट अन्तर पड़ गया था। वह शान्त था यह तीव्र है, पर यह तीव्रता ढकी-छिपी है। भूमध्यसागरमें लहरियाँ थीं पर जहाज़ हिलता-डुलता न था। इसमें लहरियाँ नहीं हैं, सागर जैसे सो रहा है और सोतेमें गहरी साँसें ले रहा है बग़ैर उबले या उफने हुए उसके वक्षको दूर उठाता और गिराता है जिससे जहाज़का एक सिरा काफ़ी ऊपर उठ जाता है और दूसरा काफ़ी नीचे गिर जाता है। हम स्मोकरूम (बैठक)में जो दीवारके सहारे खड़े दरवाज़ेकी राह बाहर देखते हैं तो क्षितिज और क्षिति-जवर्ती आकाश और समुद्र एक साथ बहुत ऊँचा उठते और नीचे गिरते प्रतीत होते हैं। निश्चय महासागर अन्तरान्दोलित है।

अरबसागर (हिन्द महासागरका उपरला पश्चिमी प्रसार)में जब-तब तूफ़ान आते हैं पर भूमध्यसागर प्रायः शान्त रहता है। अतलान्तिक महा-सागरमें प्रायः तूफ़ान आया करते हैं और जब तूफ़ान आते हैं तब केबिनके भीतर भी जैसे प्रलय मच जाती है। पाँव तो ज़मीनपर खैर नहीं ही

टिकते, कहीं सिर टकराता है तो कहीं घुटने। और केबिनकी चीज़ें भी सजीव हो चलायमान हो उठती हैं। इस कोनेसे उस कोने लुढ़कने लगती हैं। और इस बीच समुद्री बीमारीके मरीज़ोंकी दुर्गति हो जाती है। मैं आसानीसे बीमार हो जाता हूँ, बम्बईसे आते अरबसागरमें ही हो गया था। मनाता हूँ, तूफ़ान न आये।

पर मेरे लिए तो इतना भी कुछ कम नहीं। जहाज़ जब उठता–गिरता है तब लगता है कि पेट मुँहको आ गया। अभी-अभी सुना भी है कि दो साथिनें बिस्तरपर लम्बी हो गई हैं। उनके बाद अब मेरा ही नम्बर है पर किसी तरह अपनेको सम्हाले हुए हूँ, जब आयगा देखा जायगा।

घरसे काफ़ी दूर हूँ। इलाहाबादसे बम्बई ८४७ मील है, बम्बईसे पोर्ट सैयद ३०४९ मील, पोर्टसैयदसे हैफ़ा १६५ मील, हैफ़ासे जेनोआ १६१० मील, और जेनोआसे जिब्राल्टर ८६५ मील। ग़रज कि लगभग ६५३६ मीलका सफ़र तय कर चुका हूँ और सामने समुद्र पार हैलिफ़ैक्स है, दूर अमेरिकाकी ज़मीनपर।

—(२२–१०–५०)

— ४ —

जिब्राल्टरसे हैलिफ़ैक्स

एशिया कबका छूट गया। जब एशिया छूटा तब ऐसा लगा कि घर छूट गया पर यूरोप भी कुछ अजब न लगा। लगा कि बाहर हैं पर घरके आसपास ही हैं। पर अतलान्तिक महासागरमें लगता है जैसे विदेशमें हैं। सभी बातें बदल गई हैं। सर्दी है, मौसिम बदल गया है, यद्यपि लगता नहीं। लगता नहीं इसलिए कि सर्दी होते हुए भी कृत्रिम प्रतीत होती है। धूप प्रिय नहीं पर सर्दी भी अप्रिय प्रतीत नहीं होती क्योंकि असमयकी-सी लगती है।

अब तक दो महाद्वीपोंके बीच उनकी छायामें थे। लगता था दो दीवारोंके बीच चल रहे हैं। अब एशियाके बाद वे दोनों महाद्वीप यूरोप और अफ्रीका भी पीछे छूट गये हैं। सामने दूर तक फैली अतलान्तिक महासागरकी जलराशि है, ठंढी, असहिष्णु, उर्मिल और दूर उस पार अपना लक्ष्य है—अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र, कैनाडा, दक्षिणी अमेरिका।

पहले जहाज़ हैलिफ़ैक्स जायगा, कैनाडाकी भूमिपर, नोवास्कोशियामें। हैलिफ़ैक्स जिब्राल्टरसे ३१८७ मील दूर है और वहाँसे न्यूयार्क प्रायः साढ़े चार सौ मील। पर राह कठिन है, तूफ़ानोंकी। और इसी राहपर पौने पाँच सौ साल पहले अत्यन्त सीमित साधनों और लड़ते-झगड़ते नाविकोंके साथ जेनोआका अदम्य नाविक क्रिस्टोफ़र कोलम्बस् पश्चिमकी राह दुनिया घूमकर उत्तर चीन (कैथे)की खोजमें चल पड़ा था।

दो सौ वर्ष और पहलेसे ही चीनके अपने वृत्तान्त द्वारा मार्को पोलोंने यूरोपीय सौदागरों और माँझियोंमें एक प्रकारकी हलचल मचा दी थी।

तभीसे चीनके लिए जलमार्ग ढूँढ़ा जाने लगा था। मार्कोका भ्रमण-वृत्तान्त जेनोआ निवासी कोलम्बस्‌ने भी पढ़ा। सेविलके संग्रहालयमें उस वृत्तान्तकी एक प्रति है जिसे कोलम्बस्‌ने पढ़ा था और जिसके हाशियेपर उसने अपने नोट लिखे हैं। कोलम्बस्‌की प्रतिभा उस भ्रमण—वृत्तान्तको पढ़कर जाग उठी थी और उसने पृथ्वीका चक्कर लगाकर जलमार्गसे चीन पहुँचनेका विचार मनमें पक्का कर लिया।

एक जेनोआनिवासीके मनमें ही विशेषतः यह बात क्यों उठी, इसका समुचित कारण है। १४५३ ई० में कुस्तुन्तुनियाँपर तुर्कोंका अधिकार हो जानेके पूर्व वही नगर पश्चिमी और पूर्वी व्यापार-मार्गोंका केन्द्र रहा था। उसी ओरसे जेनोआका अधिकतर व्यापार पूर्वसे होता था। वेनिस जेनोआ-का प्रबल शत्रु और तुर्कोंका ग्रीसके विरुद्ध सहायक था। इससे तुर्कोंकी जेनोआके प्रति शत्रुता बढ़ी और उधरका मार्ग उसके लिए बन्द हो गया।

परन्तु 'पृथ्वी गोल है'—यह प्राचीन विस्मृत खोज धीरे-धीरे फिर विचारकोंको आन्दोलित करने लगी और पृथ्वीका चक्करकर चीन पहुँचना न्याय्य प्रतीत होने लगा। इस दिशामें दो बातें और सहायक हुईं। एक तो माँझियोंका कुतुबनुमा था, कम्पास, जिससे यात्राके लिए सुहावनी रात और राह दिखानेके लिए निरभ्र आकाश तथा तारोंका होना आवश्यक न रह गया। और इसीकी मददसे दिशाओंका ज्ञान निरन्तर रखते हुए नारमन, कतालानी, जेनोई और पुर्तगाली नाविक अतलान्तिक महासागरमें कैनरी द्वीपसमूह, मदीरा और एज़ोर द्वीपों तक पहले ही जा पहुँचे थे। कोलम्बस् अपनी इतिहासप्रसिद्ध यात्राके लिए सन्नद्ध हो गया।

परन्तु उसके मार्गमें अभी अनेक विघ्न थे। वह यूरोपके एक राजदर-बारसे दूसरेको फिरता रहा जिससे उसे यात्राके आवश्यक साधन मिल जायँ परन्तु सर्वत्र उसे निराशा ही हुई। अन्तमें ग्रानादाके दरबारमें उसकी सुन-वाई हुई। ग्रानादा हाल ही स्पेनियोंने मूरोंसे छीना था और उसपर अब

फ़र्दिनान्द और इज़ाबेलाका अधिकार था। इन्हीं पति-पत्नीकी संरक्षा कोल-म्बस्को मिली और वह तीन छोटे जहाज़ोंको ले समुद्र बाँधने चल पड़ा।

दो महीने नौ दिन बाद वह एक ऐसे देशमें पहुँचा जिसे उसने भारत समझा परन्तु वास्तवमें वह एक नया महाद्वीप था जिसकी स्थितिका पुरानी दुनियाको गुमान तक न था। अपने साथ वह बहुत सा सोना, रुई, अनोखे पशु और दो गोदना-गुदे इंडियन स्पेन लाया। ये इंडियन वास्तवमें अमेरि-कन थे परन्तु वे इंडियन ही कहलाते थे क्योंकि अपने जीवनके अन्ततक कोलम्बस् यही समझता रहा था कि जिस देशका उसने पता लगाया है वह इंडिया (हिन्दुस्तान) है। वास्तविकताका पता कुछ साल बाद लोगोंने समझा कि कोलम्बस्का खोजा हुआ देश भारत न होकर अमेरिका है।

उसी कोलम्बस्की राह अतलान्तिक महासागरके उस पारकी ओर हम भी चले जा रहे है। पर हमारे सामने न तो कोलम्बस्के साधनोंकी कमी है न उस कालके हज़ार भयोंका भय, न प्रलयकी आशंका, हाँ तूफ़ानोंका डर ज़रूर है जिसे जैसे-तैसे हम सहकर यह पन्द्रह दिनकी यात्रा समाप्त कर ही लेंगें।

आज तेईस है। गवाक्षसे देखा तो समुद्रको हाहाकार करते पाया। जहाज़ भी हिंडोलेपर चढ़ा हुआ था। बाहर नहीं गया। मुँह-हाथ धोकर लिखने बैठ गया। आठ बजे स्नान करने गुसलख़ानेमें गया तो पाँव लड़-खड़ाने लगे थे परन्तु उन्हें ज़मीनपर टिकाये रहा।

स्नानकर साढ़े आठ बजे ब्रैकफ़ास्ट (नाश्ता) के लिए गया तो देखा यात्रियोंमेंसे दो मेज़पर नहीं हैं। मिसेज़ बौम तो कई साँझसे बीमार थीं, मिस वाल्टनकी कुर्सी भी ख़ाली पाई। सुना कि कलसे ही अस्वस्थ हैं और समुद्री बीमारीके साथ ही साथ कुछ ज्वर भी चढ़ आया है। ढाढ़स अब टूटने लगा। भीतरी घबड़ाहट बढ़ी। चित्तको सम्हाला और ऊपर जाकर स्मोकरूममें बैठ गया।

मिस वाल्टन अब कुछ अच्छी थीं। और वहीं बैठी थीं। उनका हाल पूछा, कुछ आश्वस्त हुआ। दीवारके सहारे खड़ा सामने बाहर क्षितिजके साथ समुद्र और आसमानका उठना-गिरना देख रहा था कि याद आया कि जहाज़ दोलेपर है और पेट भी साथ ही हिंडोलेपर चढ़ा हिल रहा है। नीचे उतर गया और डर भुलानेके लिए लिखने बैठ गया। दो-तीन पृष्ठ लिखा भी कि दोपहरके खानेकी घंटी बजी। घड़ी देखी तो उसमें पौन बज गया था। फिर याद आई कि हम निरन्तर पश्चिमकी ओर बढ़ते जा रहे हैं और आज घड़ीको अट्ठारह मिनट पीछे करना है। उसकी सुई पीछे कर भोजनके कमरेमें गया।

अब भोजन करते भी डर लग रहा था। रसकी कोई चीज़ न खाई, न तेल मक्खनकी ही सूखी चीजें खाईं और लंच समाप्त होनेके पहले ही मेज़से उठने लगा। सबकी आँखें मुझपर एकबार पड़ी, मिस वाल्टनकी विशेषतः। मैंने कहा, कुछ आशंका हो रही है, और उठकर कमरेमें चला आया।

कुछ लिखने बैठा। कुछ लिखा भी। पर लिखकर क्षण-क्षण उठने वाली आशंकाको न भुला सका। पेट उमड़ा और सभी कुछ बाहर आ गया। मुँह-हाथ धोकर बिस्तर पर पड़ रहा। और शाम तक पड़ा रहा। खाने नहीं गया। जब स्टीवार्डेस् आई तो कह दिया कि रात आठ बजेका सेब आदि भी न लाये, कुछ न लूँगा। प्रातःके लिए भी कह दिया कि सिवा सूखे टोस्टके कुछ और न लूँगा। फिर लिखनेका उपक्रम किया, पर लिख न सका, बिस्तर पर फिर जा लेटा।

—(२३-१०-५०)

आज चौबीस है। रातमें सर्दी थी, दोनों कम्बल डाल लिये थे। फिर भी लगता है बिना मौसिमके सर्दी बनावटी ही है। सर्दी जैसी भी हो, बढ़ती ही जा रही है। सारे गर्मीके कपड़े उठते ही बक्समें रख दिये और कुछ

सर्दीके और निकाल लिये। स्टीवार्डेस् टोस्ट लेकर आई। जैसे-तैसे कर एक खाया बाक़ी लौटा दिये। सिन्धु घहरा रहा है।

फिर लिखने बैठा। लिखता रहा हूँ, लिख रहा हूँ। साढ़े आठ बज चुके हैं, ब्रेकफ़ास्टकी घंटी भी बज चुकी है और लोगोंकी आवाज़ भी काँटे-छुरी-प्लेटके साथ-साथ सुन पड़ने लगी है पर कुर्सी छोड़ उठकर वहाँ जानेकी हिम्मत नहीं हो रही है। नहीं जाता। और कुर्सीपर बैठना भी मुहाल हो रहा है। बिस्तरमें ही चला जाऊँगा वरना क्या जाने कैसी बीते!

लिखते-लिखते गाँधीजीकी याद आई। राउण्ड-टेबुल (गोलमेज़)-कान्फ्रेन्सके लिए विलायतकी यात्रा उन्होंने समुद्रसे ही की थी और उन्हें कुछ न हुआ था। फिर उसपर तुर्रा यह कि वे यात्रामें केबिनमें नहीं डेक पर ही रहे थे। सुन रक्खा था कि जहाज़पर चढ़नेपर सबको यह बीमारी होती है पर तभी सुना कि गाँधीजी जब पहली बार पढ़नेके लिए विलायत गये थे तब भी उन्हें यात्राकी यह व्याधि न हुई थी। ख़ैर, यहाँ तो बुरा हाल है, बिस्तरपर ही चलता हूँ।

—(२४-१०-५०)

कल बिस्तरपर चला गया था और सारा दिन सारी रात वहीं लेटा रहा। कुछ खाया-पिया नहीं क्योंकि पेटकी स्थिति ठीक न थी। समुद्र पहले ही सा साँस ले रहा था, जहाज़ पहले-सा ही झूलेपर चढ़ा हिल रहा था और मुझे बीमारीके भयसे भर रहा था। कल दिन और रातमें ४०० पृष्ठोंका एक अमेरिकन जीवन सम्बन्धी उपन्यास समाप्त कर गया।

सुबह आज कुछ देरसे उठा और एक सूखा तोश मात्र खाया। पर उसे भीतर रख न सका। रातमें जहाज़ इतना अधिक हिलने लगा कि मैंने समझा तूफ़ान शुरू हो गया है। पर ऐसा था नहीं, यद्यपि उठकर खिड़कीसे झाँक बाहर समुद्रको ओर देखनेका साहस न हुआ। चुपचाप पड़ा रहा।

आज प्रातः जो उठकर देखा तो समुद्रको कल-सा ही ज़ोर-ज़ोरसे हिलते पाया; कलसे कुछ ज़्यादा ही। लिखने बैठा हूँ, पर लिखा जा नहीं रहा है। दो दिनसे कुछ खाया-पिया नहीं। कल तो सारा दिन सिर भी दुखता रहा। लगता है समुद्री बीमारीका साफ़ शिकार हो गया हूँ। डर इसका इतना नहीं कि बीमार हूँ, डर इसका है कि कब तक बीमार रहूँगा। तूफ़ानोंके इस महासागरमें आखिर इतनी लहर तो उठती ही रहेगी। फिर वास्तवमें यह लहर कहाँ है, यह तो गुमसुम समुद्रका साँस लेना है। यदि हालत यही रही तो क्या इसी प्रकार विना खाये-पिये पड़ा रहना पड़ेगा ? यह तो बड़ा कष्टकर है। इसका मतलब यह कि कुछ काम नहीं कर सकूँगा और खाना न खा सकनेके कारण दिन-दिन कमज़ोर होता जाऊँगा। फिर तो बीमारीकी हालतमें न्यूयार्क जाकर करूँगा क्या ? इधर हैलिफ़ैक्समें ही बहुत कुछ करना है।

फिर भी अपनेपर बड़ा भरोसा है। जब सब ओरसे निराश हो जाता हूँ तब भी अपनी ही ओर देखता हूँ और आजतक अपनेने कभी धोखा न दिया। उसी अपनेपर दृढ़ विश्वासकर समुद्रकी ओर देख रहा हूँ। और समुद्र उफ़नता जा रहा है। उसकी आवाज़ निरन्तर सुनाई दे रही है। आवाज़, कि जैसे अँगारोंपर किसीने पानी डाल दिया हो।

आज फिर बाहर नहीं जा रहा हूँ। जानेकी हिम्मत ही नहीं हो रही है। देखूँ कबतक पड़ा रहना होता है। मिसेज़ बौमकी तबीयत भी अच्छी नहीं है, न मिस्टर बौमकी। मिस वाल्टन भी खानेकी मेज़पर नहीं जा पातीं। क्या बीमारी है यह भी—न बुख़ार, न खांसी, न और कोई वात। पर भीतर कुछ टिकने नहीं पाता। जैसे आदमी चर्खीपर चढ़ा हो। चर्खीपर चढ़कर जो सम्हला रहता है उसे जहाज़पर बीमार होनेका डर कम होता है पर वह भी अधिकतर बीमार पड़ ही जाता है। बात यह है कि यहाँ मँडरानेकी बात इतनी नहीं जितनी नीचेसे ऊपर उठनेकी है। जहाज़का एक सिरा कभी ऊपर, बहुत ऊपर उठता है, कभी दूसरा, और पेट भी जैसे

नीचेसे ऊपर जाकर टँग जाता है। गति बुरी हो जाती है। फिर तो बैठा भी नहीं रहा जाता; खड़ा होना तो असम्भव है।

पर इसपर भी कुछ ऐसे हैं जो दौड़ भी लेते हैं। अनेक तो केबिनोंमें असहायसे पड़े हैं, बैठ भी नहीं पाते, बिस्तरमें हैं। उनसे खाना देखा तक नहीं जाता सुस्वादु-से-सुस्वादु भोजन देखते ही उन्हें मतली आने लगती है। पर यहीं ऐसे भी हैं जिनको वह भोजन पूरा नहो पड़ता। जहाज़के सीमित भण्डार, भला ले ही कितना खाद्य पदार्थ सकते हैं, वे कहते हैं, और जो कुछ उपलब्ध है फ़िलहाल तो उसीपर गुज़र करना है। और वे बस गुज़र करते हैं! जहाज़का हिलना-डुलना, समुद्रका गुर्राना, उसकी लहरोंके तेवर उनका कुछ बिगाड़ नहीं पाते। स्टीवार्डेसको उनका नित्य नई खानेकी वस्तुओं, नये पकवानोंके लिए आदेश जाता रहता है। काश मैं भी ऐसा होता कि स्टिवार्डेसोंको इसी प्रकार आदिष्ट कर सकता और उपलब्ध सामग्रीका भरपूर उपयोग कर पाता! स्टीवार्ड और उसकी सहा-यिका स्टीवार्डेसें अत्यन्त अनुकूल हैं। नित्य अनेक बार केबिनमें आ-आकर पूछते रहते हैं—क्या बनाऊँ? कुछ तो खाइए, कुछ तो कहिए, फल, चावल, सैंडविच!

पर यहाँ तो भोजनके नामसे जी अजब हो आता है। वैसे स्वभावसे भी कभीका खाऊ नहीं हूँ, घरका भी नहीं, जहाँ इच्छाकी सभी वस्तुएँ प्राप्य हैं, और यहाँ तो ऐसी व्याधिमें पड़ा हूँ जो खानेका ही तिरस्कार करती है। दो-दो तीन-तीन दिन खाना नहीं खाता और भूख नहीं लगती, ज़रा नहीं मालूम होता कि खाना कई दिनोंसे नहीं खाया है। घबड़ाहट है तो बस इसकी कि हैलिफ़ैक्स और न्यूयार्क बहुत कमज़ोर नहीं पहुँचना चाहिए। पर प्रयत्न करके भी कुछ कर नहीं पा रहा हूँ।

जेम्स और मिसेज़ जेम्स आये और कुछ देरके बाद कप्तान। पूछा, क्या किया जाय? कुछ तो खाओ। यह बीमारी तो होती ही रहती है। इसको जीतनेका उपाय तो यही है कि खाओ और फेंको, फिर खाओ।

परन्तु दो बार फेंकनेके बाद तो शरीर और गलेकी ऐसी दुर्गति हो जाती है कि खानेकी ओर देखने तककी हिम्मत नहीं होती। कप्तानने बताया कि अनेक-अनेक बार अतलान्तिक महासागर पार किया है पर जीवनमें पहली बार मौसिम इतना अनुकूल और शान्त मिला है कि न वर्षा है न आँधी और ११ मील प्रति घण्टेकी प्रायः अधिकतम रफ़्तारसे जहाज़ चला जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह महासागर तो स्वाभाविक ही चञ्चल और तूफ़ानोंसे भरा है। इससे अधिक शान्त तो यह हो ही नहीं सकता। दो-तीन दिनोंमें आदतसे बीमारीकी सम्हाल हो जायगी, ऊपर डेकपर जाइए, गोल्फ़ खेलिए।

पर गोल्फ़ खेलनेकी हिम्मत न थी। लिखना बन्दकर बिस्तरपर चला गया और शाम तक वहीं पड़ा रहा। सोचा कल कुछ खानेको कोशिश करूँगा और खाकर सीधा ऊपर जाऊँगा। यदि स्थिति सँम्हली रही तो कुछ खेलूँगा भी, पर अभी तो विश्राम ही उचित है। लहरोंकी आवाज़पर कान लगाये पड़ा रहा, ज़रा तो कम हो। जहाज़का हिलना थोड़ा भी कम हो तो जानमें जान आये। विश्वास हो, कि न सही आज-कल तो काम-का होगा। पर आवाज़ घटनेके बजाय बढ़ती ही गई, जहाज़का हिलना-डुलना भी बढ़ता गया और मैं चुपचाप प्रायः दम साधे पड़ा रहा। धीरे-धीरे हल्की नींदने समुद्रकी आवाज़ दबा दी।

—(२५–१०–५०)

आज छब्बीस है। नींद जो खुली तो जहाज़को और अधिक हिलता-डुलता पाया। पर आज मैं सन्नद्ध हो गया हूँ कि जो भी हो खाना थोड़ा-बहुत खाऊँगा और ऊपर भी जाऊँगा। उठकर हाथ-मुँह धोया, एक तोश खाया, चाय नहीं पी। कमरा दुरुस्त किया और थोड़ा लिखा।

परन्तु खिड़कीसे जो बाहर देखा तो समुद्रको कल-परसोंसे भी अधिक उफनते पाया। उसके तेवर आज और तिरछे हो गये थे, कमान अधिक चढ़ गई थी। हिम्मत विशेष पहले भी न थी और समुद्रको इस प्रकार

उबलता देख तो जो कुछ ढाढ़स बाँधा था वह भी जाता रहा। पर ऊपर गया, दो मिनटके लिए। फिर ब्रेकफ़ास्टकी घंटी बजी और खाने-की मेज़पर पहुँचा।

लोग मुझे वहाँ देखकर बड़े प्रसन्न हुए। कप्तानने कहा कि कई दिनों आपके विना बड़ा सूना रहा है, आज आपको साथ बैठे देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अन्य मित्रोंने भी प्रसन्नता प्रगट की। मिसेज़ बौम क्षण भरके लिए पास बैठी रहीं, पर उनका जी जो घबड़ाया तो उठकर चली गईं। मैंने मीठा नीबू खाया और ज़रा-सा सन्तरेका रस पिया। पर थोड़ी देरके बाद ही स्थिति भयानक हो गई और मित्रोंसे इजाज़त माँग केबिन भागा। पानीकी एक-एक बूँद बाहर निकल गई और बदन तथा गलेमें दर्द होने लगा।

पड़ा रहा। जी बड़ा व्याकुल हुआ। आखिर कब तक इस प्रकार चलेगा। यदि यह सागरका साधारण रूप है तो अब सम्हलनेकी क्या आशा हो सकती है। ग्यारह-साढ़े ग्यारह तक चुप बिस्तरमें दुबका पड़ा रहा फिर हिम्मत बाँध ऊपर गया। घंटे भर वहाँ समुद्रकी ओर दृष्टि फेरे बैठा रहा। श्री जेम्सने बताया कि रेडियोकी ख़बर है कि चीनने तिब्बत-में प्रवेश कर लिया है और भारतीय सरकार उस ख़बरकी सच्चाईकी पुष्टि-के इन्तज़ारमें है।

खबरने मनमें किसी प्रकारकी हलचल न पैदा की। तिब्बत अजब प्रकार-का रहस्यमय देश है। उसपर चीन सदियोंसे एक अनिश्चित प्रकारकी सत्ता बनाये था। प्राचीनकालसे ही तिब्बत चीनका अपनेको जाने किस कारण उपकृत मित्र ही नहीं उसका अनुगामी मानता था। जब हर्षकी मृत्युके बाद सातवीं सदी ईस्वीके मध्य कन्नौजके सिंहासनपर अधिकार कर उसके मंत्री अर्जुनने चीनी दूत-मण्डलके अधिकांश सदस्योंको मार डाला था तब उसके नेताने तिब्बतमें ही शरण ली थी और तिब्बतने चीनके मित्रकी भाँति नहीं उसके अधीनस्थ सामन्त-राज्यकी भाँति उसकी सहायता की थी और उसीकी सेनाओंने अर्जनको परास्तकर चीन भेज दिया था।

परन्तु सातवीं-आठवीं सदियोंसे भारतने भी तिब्बतपर एक प्रकारका सांस्कृतिक आभार डाला था। जिस प्रकार नैपाल और चीनपर बौद्ध धर्मका प्रभुत्व स्थापित हुआ था उसी प्रकार तिब्बतपर भी इस भारतीय धर्मकी प्रभुता स्थापित हुई थी। नवीं सदीमें तो वहाँ तारा-प्रज्ञापारमिता और अन्य अनेक बौद्ध देवी-देवताओं तथा अर्हतों-विद्वानोंकी पीतल और काँसेकी मूर्तियाँ बनी थीं। इसी काल भारतीय ब्राह्मी लिपि भी, जो 'कुटिल' स्थितिसे निकलकर 'नागरी' (और बंगाली) रूप धारण कर रही थी, तिब्बत-में प्रचलित हुई। तिब्बतके लिए यह लिपि सर्वथा पहली थी और इसमें अनेक बौद्ध ग्रन्थ तिब्बती भाषामें अनूदित होकर लिखे गये। अनेक बौद्ध ग्रन्थ जिनका भारतसे प्रायः लोप हो गया था इसी तिब्बती लिपिमें मूलमें सुरक्षित हुए। अनुपम दर्शन ग्रन्थ 'प्रमाणवार्त्तिक' और 'वादन्याय,' जिनमें विचक्षण चिन्तकों धर्मकीर्ति और शीलभद्रके दर्शन रूपबद्ध हुए, तिब्बतीमें ही सुरक्षित थे। रूसके चेरवास्की और इटलीके तुचीने जीवनभर इन ग्रन्थोंका उस रहस्यमय और अन्धकारपूर्ण देश तिब्बतसे उद्धार करनेका प्रयत्न किया था पर उसका श्रेय एक भारतीय विद्वान् और अन्वेषक महापण्डित राहुल सांकृत्यायनको मिला। मनों खच्चरों इस कर्मठ पंडितने भारतीय वाङ्मयके तिब्बती रत्न फिरसे स्वदेश लौटाये, अनेक वैयक्तिक असुविधाएँ और विपदाएँ झेलकर।

बारहवीं सदीके अन्तमें जब बख़्तियार ख़िलजीकी चोटसे नालन्द और विक्रमशिलाके बौद्ध विश्वविद्यालय तथा विहार नष्ट-भ्रष्ट हो गये तब वहाँके विद्वान् भिक्षुओंने लंका, नैपालके अतिरिक्त पर्याप्त संख्यामें तिब्बतमें भी शरण ली थी और अपने परिश्रमसे वहाँके साहित्यको भरा-पुरा था। इससे भी भारत और तिब्बतमें परस्पर एक प्रकारका सांस्कृतिक सम्बन्ध दृढ़ हो गया था। भारतमें ब्रिटिश साम्राज्य क़ायम होनेपर भी एक अजीब रहस्यमय रूपमें एक धुँधला सम्बन्ध दोनोंमें रहा था। यद्यपि यह सम्बन्ध

इतना प्रेमका नहीं जितना तिब्बतके पक्षमें भयका रहा था। लार्ड कर्ज़नने उस सम्बन्धपर भयकी छाप और गहरी कर दी थी।

इससे तिब्बतका स्वतन्त्र या परतंत्र हो जाना भारतके लिए विशेष क्षति या लाभकी बात नहीं। वैसे 'मध्यवर्ती राज्य' (बफ़रस्टेट) का अस्तित्व राष्ट्रके लिए लाभदायक होता है। एक ज़मानेसे तिब्बत और भारतमें व्यापारिक सम्बन्ध क़ायम था पर अधिकतर वह चमड़े, चँवर, शिलाजीत आदि तक ही सीमित था जिसका होना न होना भारतके लिए बराबर था। हाँ, यह सम्बन्ध तिब्बतके लिए निश्चय उपादेय हो सकता था यदि वह प्रकाशके लिए तत्पर होता। तिब्बतको वास्तविक प्रकाश दो ही दिशाओंसे मिल सकता था, भारत या चीनकी दिशासे, क्योंकि यूरोपियनोंका वहाँ प्रवेश तो असम्भव था। परन्तु तिब्बतने प्रकाश रूपसे भारत या चीनसे कोई राजनीतिक, या इधर सांस्कृतिक भी, सम्बन्ध नहीं रखा, यद्यपि एक धूमिल रूपसे चीनके साथ उसका आना-जाना बना रहा।

इधर तिब्बत कुछ सालोंसे अपनी स्थितिसे आकुल था। उसकी वर्तमान स्थिति नई सांसारिक व्यवस्थासे अछूती रह भी न सकती थी। धार्मिक ढोंग राजनीतिमें तिब्बतने एक ज़मानेसे रच रक्खा था जो अब वहाँ भी सन्देहका जनन करने लगा था। अनेक तिब्बती प्रगतिशील क्रान्तिकी दिशामें क़दम रखने लगे थे और अपने देशकी खिड़कियाँ प्रकाशके लिए खोल देनेकी आवाज़ लगा रहे थे। वे खिड़कियाँ चीन या भारतकी ओर ही खुल सकती थीं। भारतके पुण्यतम कैलास और मानसरोवर तिब्बतमें ही पड़ते हैं। परन्तु चीनके साथ जो उसका रवैया एक प्रकारसे अछूता बना था तो वह हालकी चीनी क्रान्तिसे प्रभावित हुए बग़ैर न रह सका। उसके नुमायन्दे नई चीनी सरकारसे कुछ समझौता करने भारतकी राह चल भी पड़े थे। पहले तो भारतने उन्हें राह दे भी दी थी परन्तु ब्रिटेनका रुख़ देखकर उसने उस ओरसे अपनी कृपा लौटा ली थी जिससे उन तिब्बती नेताओंको चीनके भारत-दूतके आने तक नई दिल्लीमें ही ठहरना पड़ा था।

अब यह संवाद है कि चीनने तिब्बतमें प्रवेश किया है। चीनमें भारत-का राजदूत है। उससे इस संवादकी पुष्टि भी नहीं हुई है और भारतीय सरकार अभी उसी पुष्टिकी प्रतीक्षामें है। परन्तु मैं नहीं समझता कि उसका उस दिशामें प्रयत्न नैतिक रूपसे भी उचित है। यह सही है कि भारतकी सरकार राजनीति यथातथ्यको क़ायम रखनेके लिए चीनके प्रति अपना असन्तोष प्रकट कर सकती है परन्तु वास्तवमें सब कुछ तो निर्भर करता है तिब्बतकी बस्तुस्थिति और इच्छापर। यदि उसने चीनके साथ अपना यह नया सम्बन्ध स्थापित किया तो उसमें भारतीय या कोई अन्य विदेशी सरकार कैसे हस्तक्षेप कर सकती है ? फिर चीन किसी स्थितिमें उसपर अपनी सत्ता तो स्थापित करेगा नहीं, हाँ, उसकी कमज़ोरीको मिटा उसे राजनीतिक शक्ति प्रदान करनेकी कोशिश ज़रूर करेगा। यह उचित भी इसलिए है कि अमेरिकाका एशियाकी भूमिपर अनेक बहानोंसे पाँव टिकाने-का जो प्रयत्न आज हो रहा है उससे कमज़ोर राष्ट्रोंको अपनी शक्ति, मंत्रणा तथा नेतृत्वसे सत्तान्वित करना शक्तिमन्तोंका अवश्य करणीय है। विपन्न तिब्बतका कमज़ोर बना रहना तिब्बतियोंके लिए ही आपज्जनक नहीं, उनके पड़ोसियोंके लिए भी है। पर क्या भारतीय सरकार इस स्थितिको समझेगी ?

वास्तविक बात तो इस सम्बन्धमें स्वयं तिब्बतियोंकी है। उनकी इस चीनी हस्तक्षेपपर क्या प्रतिक्रिया होती है, यह देखना है। कुछ महीने हुए जब उनके नेताओंने कहा था कि चीनके साथ वे एक नया सम्बन्ध-मित्राश्रितका—क़ायम करना चाहते हैं। यदि यह बात सही है तो निश्चित चीनकी ओरसे वे अपने अन्धगत देशमें प्रकाशकी आशा करते हैं और उन्हें अपनी हानि-लाभ विचारकर करणीय निश्चित करना चाहिए। सबसे मुख्य बात है जनमतकी। यदि वोटों द्वारा तिब्बतमें चीनी व्यवस्थाके सम्बन्धमें जनमत निश्चित हो सका तब उस राष्ट्रको तद्वत् आचरण करनेकी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। और यदि तिब्बत अपने जनमत को चीनके पक्षमें प्रमाणित कर सके तो भारत और अन्य राष्ट्रोंको चुपचाप

और शीघ्र उसे अंगीकार कर लेना चाहिए। कल-परसोंकी इस सम्बन्धमें ख़बरें फिर भी महत्त्वकी होंगी और मैं उनकी उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा करूँगा।

सन्ध्या समय सुना कि श्री जेम्स भी मलेरियासे ग्रस्त हो बिस्तरगामी हुए। यह निश्चय शोचनीय है क्योंकि इनसे रुचिको बड़ा सन्तोष होता था। ये बड़े विनोदी हैं और बीमारीमें भी इनकी बातोंसे समय हँसते-हँसते कट जाता है। भोजनकी मेज़पर जानेपर कप्ताननने पढ़कर रेडियोसे आई समुद्र सम्बन्धी ख़बरें सुनाई। कहा कि हमारा मार्ग छोड़कर अतलान्तिकके प्रायः सारे अन्य भाग विपद्ग्रस्त हैं। कहीं बुरी तरह पानी बरस रहा है, कहीं तूफ़ान आ रहा है। हम स्वयं भी तूफ़ानके ही एक हिस्सेकी ओर बढ़े जा रहे हैं यद्यपि जहाज़की गतिकी दिशा थोड़ी बदल दी है ताकि तूफ़ानका कमसे कम सामना करना पड़े।

—(२६–१०–५०)

कल शामको बड़ी सर्दी हो गई थी, असली सर्दी, यानी कि आगकी ज़रूरत मालूम पड़ने लगी थी। देखा तो 'हीटर' (कमरा गर्म करनेका विद्युद्यन्त्र)में करेण्ट थी और स्विच घुमा दिया था। थोड़ी देरमें कमरा गर्म हो गया था और स्विच फिर यथावत् कर सो गया था। नींद ख़ासी अच्छी लगी थी। आज सुब्रह जो उठा तो लगा कि समुद्रका हाहाकार कुछ कम है। उठकर खिड़कीकी राह जो बाहर देखा तो समुद्रकी लहरें कम उठती पाईं और सवेरा सुखद, कम सर्द जान पड़ा। ज़ाहिर था कि हम रात कमसे कम तूफ़ानसे बचे रहे, शायद उसके क्षेत्रसे दूर हट आये हैं।

मुँह-हाथ धोकर एक सूखा तोश खाया और बिचले डेकपर गया। सवेरा सचमुच बड़ा कमनीय था। समुद्र भी दर्शनीय लगा। उसकी फेनिल लहरियाँ अब मनमें डर नहीं पैदा करती थीं, नयनाभिराम लगती थीं। देर तक उनका उठना-गिरना देखता रहा। सूरजकी किरणें उनपर निरभ्र

आकाशसे उतर-उतर पसर रही थीं जिससे उनका फेनिल प्रसार मनहर लगता था। आकाश जलपर अपनी छाया डाल उसे नीलाभ कर रहा था। मैं देरतक वह आकर्षक दृश्य देखता रहा।

जहाँ तक देख पाता हूँ जल ही जल है—उमड़ता, उलटता, टकराता, टूटता, फेनिल जल। जीवन, गति और रंगभरा, दिशाओं-क्षितिज तक फैलता हुआ यह अर्थहीन जल-प्रसार एकपर एक चढ़ी क्यारियोंसे भरे जुते खेतकी भाँति लगता है और क्यारियाँ, ये उठती हुई अविराम लहरें, एक ही ओर, केवल एक ही ओर, किसी भीषण अलक्ष्य शत्रुसे अविश्वसनीय गतिसे भागी जा रही हैं। गम्भीर और गतिमान, शालीन और अवरुद्ध ये अनन्त लहरें निरन्तर ढुलकती जा रही है—कुछ छोटी कुछ भयानक उठती हुई लहरें एकपर एक टूटती नहीं, सुलगती, उबलती-सी ऐसी ध्वनि उत्पन्न करती हैं जैसे अंगार पानीका स्पर्श कर रहे हों। अद्भुत अविरल समारोह है इनका—ये कहींसे आती नहीं, कहीं को जाती नहीं, परन्तु गौरव और महत्त्व भरा इनका वक्ष स्तम्भित क्षोभसे स्पन्दित हो रहा है, शायद इस कारण कि इनके मार्गमें कुछ भी ऐसा नहीं जिसे ये अपनी शक्तिसे कुचल दें, नष्ट कर दें। नाचता-उछलता अब प्रायः सभी रंगोंको प्रतिबिम्बित कर रहा है—कभी वह गहरा हरा दीखता है, कभी गहरा नीला, और जब बादल सूर्यको क्षण भरमें अपनी आड़में ले लेता है तब मटमैला भूरा। और जब कभी उन्मत्त बावरा पवन इन लहरोंकी चोटीको झकझोर देता है तब उनके चूर्ण मस्तकसे टूट नीहारिकाएँ आकाशमें उछल इस दूसरे डेकपर खड़े मुझे छू लेती हैं। श्वेत फेनसे मण्डित हलकी लहरें उठ-उठ बिखर जाती हैं, फिर दूसरी उठती हैं, उनसे बड़ी, ऊँची, शालीन, और भीषण। दूधसा उनका मस्तक गर्वसे ऊँचा उठता है, क्षणभर मँडराता है फिर गिर जाता है, हास्यास्पद, दर्पहीन। ऊपर आकाशके नीले गुम्बदके पार कुछ बादल असावधान मन्दगतिसे उड़ते जा रहे हैं और कुछ पक्षी अकारण चीखते चक्कर काट

रहे हैं। शक्तिम पवन अपने प्रबल डैनोंपर नीहारवाही उस सैंधव सङ्गीत को लिये जा रहा है।

यन्त्रशक्तिसे चालित यह लौहदानव अपनी तीव्रतम गतिसे हमें अमेरिका लिये जा रहा है। और विद्युत् निरन्तर इन इञ्जनोंको स्पन्दित रखती हैं और जब तब उसकी चिमनीसे दबे क्रोधकी भाँति धुआँ वेगसे फूट पड़ता है। सजीव व्यक्तिके हृदयकी भाँति जहाजके लौह इञ्जन साँस लेते हैं और उनके गतिमान होनेसे यह दानव मरमराता-चरमराता उठता-गिरता है और जैसे तेज़ घूमती चर्खियोंके आदेशसे चुपचाप बढ़ चलता है।

और इस अदम्य असीम जलराशिकी किसी अन्य वस्तुसे तुलना नहीं हो सकती। प्रकृतिका यह अनुपमेय महत्तम दृश्य है। पृथ्वीपर सागर-मात्र ही वह स्थल है जिसे मनुष्य अपनी वितृष्णासे अपावन नहीं कर सका है। अकेला यह जलप्रसार ही आज भी उतना ही स्वच्छ और निर्मल, विशुद्ध और पाधन है जितना यह कल्पों पूर्व विकासके आदिम युगों में था।

अनेक प्रकारके विचार सामनेकी जलराशिकी तरंगोंकी भाँति हृदया-काशमें उठते और निलय होते रहे। सहसा जलपानकी घण्टीसे जाग्रत-स्वप्नका यह तारतम्य टूटा। ब्रेकफ़ास्टके बाद फिर ऊपर आया और देर तक गोल्फ़ खेलता रहा। इससे चित्तको कुछ शान्ति और शरीरको स्फूर्ति मिली। श्री जेम्सने बताया कि भारतीय सरकार अभी पेकिंगसे तिब्बत सम्बन्धी ख़बरकी पुष्टिकी प्रतीक्षा कर रही है।

दोपहरका भोजन काफ़ी चुहलके साथ हुआ। मैं स्वयं कुछ खा न सका परन्तु वार्तालापमें मैंने काफ़ी हिस्सा लिया। कप्तानने बताया कि तूफ़ानके हम सर्वथा पास ही हैं पर उससे अछूते हैं, देखें कल क्या होता है। मैं तूफानसे बड़ा घबड़ा रहा हूँ। उसके ख़तरेसे बिलकुल नहीं, जहाज़ तूफ़ानसे शायद ही ख़तरेमें पड़ता है, इस अपनी समुद्री बीमारीसे। इसने निश्चय

इस स्थितिमें जब इस प्रकार मुझे बेचैन कर रक्खा है तब तूफ़ानमें क्या गति होगी, यही विशेष चिन्ता हो उठी है।

रातमें बड़ा सुन्दर और सुखद चन्द्र निकला। आकाश निरभ्र था और चाँदनी सर्वत्र बिखर रही थी। उसकी एक धारा सी हिलती समुद्र वेलाओं-पर उतर पड़ी थी। देर तक हम सब उस रजनीके आलोकमय प्रसार और सुधाकरके शीतल प्रकाशको देखते रहे। हवामें भी आज नमी कम रही थी और सारा दिन वसन्तकी भाँति स्पृहणीय गरम रहा था। और लोग तो ड्राफ़्ट आदि खेलने लगे, मैं केबिन आकर बिस्तरपर पड़ रहा। आजकी रात आशंकाकी रात थी। डर था कि शायद अपना जहाज़ तूफ़ानकी परिधिमें प्रवेश कर जाय या तूफ़ान बढ़कर इसे अपनी परिधिमें ले ले।

—(२७–१०–५०)

नींद आज जल्दी ही खुल गई। ऐसा लगा कि पानी बरस रहा है पर पानी बरस नहीं रहा था। आधी रातसे ही जहाज़ ज़ोर-ज़ोरसे हिल रहा था। और यह हिलना पहलेकी भाँति दायें-बायें न था, ऊपर-नीचे था। कभी जहाज़का एक सिरा ऊपर जाता कभी दूसरा और बिस्तर सहसा ऊपरको उठ जाता। प्रायः प्रति बीस सेकेंड बाद ऐसा होता और बिस्तरपर पड़ा रहना तक कठिन हो गया।

पहले कुर्सीपर बैठनेसे जब जी मचलाता था तब बिस्तरपर भागता था, अब कहाँ जाऊँ ? किसी प्रकारसे उसे भुलाये पड़ा रहा। पर लगता था कि बाहर तूफ़ान है। शायद जहाज़ तूफ़ानके दायरेमें आ गया है तभी उसका हाहाकार भी कानोंको बहरा कर रहा है, तभी उसकी लहरें इतनी अदम्य हो उठी हैं। उठा, और उठकर देखा। लहरें ऊँची उठ रही थीं। पर तूफ़ान न था।

मुँह-हाथ धोकर कुछ खाने बैठा पर खा न सका। जलपानके समय डाइनिंग रूममें गया पर बीचमें ही उठ आना पड़ा। तिब्बत सम्बन्धी भार-

तीय सरकारकी प्रतिक्रिया जाननेको उत्सुक था इससे दस बजे ऊपर बैठकमें गया। पर कुछ विशेष पता सिवा इसके नहीं चला कि शायद पैकिंगस्थ भारतीय दूतने कहा है कि चीनी दस्तोंको तिब्बतमें प्रवेश करनेकी आज्ञा हो गई है।

नीचे आकर बिस्तरमें पड़ा रहा। फ़ोरेस्टरका लिखा 'परेड' नामका रोडेशिया (दक्षिण अफ्रीका) सम्बन्धी एक उपन्यास उठा लिया और पढ़ने लगा। प्रायः सारा दिन और सारी रात आज मैं बिस्तरपर ही रहा। कलेजा मुँहको आता था। और मन बड़ा दुखी था। मिसेज़ बौमकी दशा मुझसे भी ख़राब है, और बहुत ख़राब है। बेचारी कुछ नहीं खा पातीं।

पड़ा-पड़ा पूरा उपन्यास समाप्त कर गया। अँग्रेज़ी उपनिवेश-निर्माणकी एक हल्की झलक इससे मिल जाती है। रोडेशियाके निर्मम संकुचित अँग्रेज़ी परिवारोंकी कथा सुन्दर रूपसे व्यक्त हुई है। अच्छा होता यदि साथ ही साथ रोडेशियाके अभागे मूल निवासियोंके जीवन-चित्र भी दिये होते। पुस्तक समाप्त कर तूफ़ानकी आशंका करता हुआ सो गया।

—(२८–१०–५०)

कल सारा दिन और सारी रात प्रायः चौबीस घण्टे बिस्तरमें ही काटने पड़े थे। आज भी, लगता है, ऐसा ही होगा। रात नींद नहीं आई। आठ बजे ही सो गया था और प्रायः ग्यारह बजेसे ही घण्टे-घण्टेपर नींद खुलने लगी थी। जहाज़की उछल-कूद कलकी-सी ही है। कल प्रायः सारे दिन आकाशमें बादल थे। आज भी जो उठते ही आकाशकी ओर देखा तो उसे काले बादलोंसे ठसा पाया।

इच्छा न रहते भी सात बजे एक तोश और सन्तरेका रसभरा ग्लास मँगवाया। पर खा-पी न सका। लौटा दिया। लगता है आजका दिन कलसे भी बुरा बीतेगा। जहाज़का रुख़ कप्ताननने रेडियोकी ख़बरसे सन्दिष्ट होकर तूफ़ानकी ओरसे बदल दिया है जिससे यद्यपि कुछ मीलों यात्रा बढ़ जायगी

पर सम्भवत: तूफ़ानसे जान बच जायगी। जो भी हो, इतनी ही क्या कम है जितनी बीत रही है। कमसे कम हैलिफैक्स तक तो स्थिति सम्हलती नहीं दीखती है। हाँ, इतना ज़रूर है कि आखिर आज उन्तीस हो गई, पहली तक हम हैलिफ़ैक्स पहुँच ही जायँगे। कुल प्राय: चार दिनकी और बात है फिर तो हैलिफ़ैक्स पहुँचकर दो दिन शान्ति मिलेगी ही, फिर जो कुछ ताक़त कर लूँगा तो दो-तीन दिनका अगला न्यूयार्कका रास्ता भी तय कर ही लूँगा।

पर हाँ, हैलिफ़ैक्सकी याद आते वीज़ाकी मुसीबतकी भी याद आ गई। बम्बईके अमेरिकन कान्सुल-जेनरलको जेनोआसे ही पत्र लिखा था कि वे हैलिफ़ैक्सके अफ़सरको मेरा वीज़ा सही कर देनेको तार दे दें, देखें क्या होता है। कान्सुल तार देता है या नहीं। और यदि उसने अनुकूल व्यवस्था दे भी दी तो देखें समयपर यानी जहाज़के हैलिफ़ैक्स रहते-रहते उसका तार हैलिफ़ैक्स पहुँच जाता है या नहीं। पद्माने अपने पत्रमें लिखा था कि मेरा दूसरीको पोर्टसैयदमें डाला पत्र ६ को डाकसे वहाँ निकला था और उसे खुर्जेमें १२ को मिला था। कहीं यहाँ भी इसी प्रकार देर न हो जाय यद्यपि हमने पत्र १८ को ही डाल दिया था २५ तक उसे बम्बई हर हालतमें पहुँच जाना चाहिए और यदि वहाँ उत्तर देनेमें देर न हुई तो तार क्या पत्र भी हैलिफ़ैक्स पहली तक पहुँच सकता है। यदि वहाँसे व्यवस्था और सलाह न आई तो इसी जहाज़पर न्यूयार्क जानेका प्रयत्न करूँगा, यद्यपि जैसा जेनोआके अमेरिकन कान्सुल-दफ़्तरके कर्मचारीने कहा था, इस प्रकार न्यूयार्क जानेका अर्थ है वहाँके जेलका दरवाज़ा खटखटाना। कोई और चारा न होनेसे वह दरवाज़ा खटखटाना ही निश्चित कर लिया है। देखूँ क्या होता है।

आज फिर बाहर जानेकी हिम्मत नहीं पड़ रही है, नहीं जा रहा हूँ। बिस्तरपर पड़ा-पड़ा लिख रहा हूँ। पासके डाइनिंग रूममें कुछ समयसे चम्मच और काँटे खड़क रहे हैं और रह-रहकर लोगोंकी हँसीकी ध्वनि

सुन पड़ती है। नौ बज रहे हैं और आसमान पहले-सा ही काला है, बादलोंसे ठसा।

जहाज़का जीवन लिखने-पढ़नेके लिए, यदि यात्री बीमारीसे ग्रस्त न हो, आदर्श है। क्योंकि और कुछ वह कर ही नहीं सकता। दिन लम्बे और नीरस होते हैं, काटे नहीं कटते। कहीं जाना नहीं, सिवा एकरस समुद्रके कुछ देखना नहीं, सिवा कुछ पढ़ने, बात करने, या इधर-उधर बौड़मसे डोलनेके कुछ करना नहीं। हाँ, यदि जहाज़ यात्रियोंसे भरा होता है तब कुछ दिलदार लोगोंको अपनी दिल बस्तगीका मौक़ा मिल जाता है। अधिक संख्या वाले यात्री जहाज़ोंमें सब मिलकर एक कुटुम्बका-सा, जैसा इस जहाज़पर है, आचरण नहीं कर सकते, दो-दो चार-चार यात्रियोंके परिवार बन जाते हैं। तब डेक रोमानी सामान उपस्थित कर देते हैं, क्योंकि केबिनके नीरस एकान्तसे भागकर समवयस्क तरुणों-तरुणियोंके जोड़े तब डेक और उसकी कुर्सियोंकी ही शरण लेते हैं। और तब 'लाइफ़ बोटें' (डूबते जहाज़से यात्रियोंको रक्षा करनेवाली नावें) जीवनकी इतनी रक्षा नहीं करतीं जितनी इज़्जतकी, क्योंकि इन्हींके पीछे अधिकतर लुके-छिपे इक्के-दुक्के 'रोमांस' पनपते हैं।

अस्तु, पड़ा लिख रहा हूँ बिस्तरपर, और केबिनकी दीवारके पारसे समुद्रका गर्जन और उसकी लहरोंका अनवरत टूटना सुन पड़ रहा है। परन्तु उससे कहीं भयानक आवाज़ केबिनके भीतरकी है। चरचर-मरमर बराबर बनी रहती है, दिन-रात जैसे जहाज स्वयं बीमार हो कराह रहा है। और कराहता ही वह अपने मार्गपर बढ़ता भी जा रहा है। जीवनका प्रवाह अद्भुत है, अनवरुद्ध, गतिमान, कष्टमें भी, बीमारीमें भी, उसकी मंज़िलें तय होती रहती हैं। अपना जीवन भी अस्त-व्यस्त हेलिफ़ैक्सकी ओर चलता ही जा रहा है।

—(२६–१०–५०)

आज पहली है, नवम्बरकी पहली। जहाज़के जीवनसे अब ऊब चुका हूँ। १९ सितम्बरको चढ़ा था, आज उसके ४३ दिन हो गये, प्रायः डेढ़ महीना। डेढ़ महीना जहाज़पर कुछ कम नहीं होता, विशेष कर जब जीवनके लिए मुख्यतम पदार्थ भोजनकी असुविधा हो। जो मांसादि खाते हैं उनके लिए, यदि समुद्री बीमारीको सम्हाल लें, जहाज़पर कोई असुविधा नहीं, विशेष कर यदि 'जान बाके' सा जहाज़ और इसके कप्तान-सा कप्तान हो और मेरे सहयात्रियोंका-सा परस्पर कौटुम्बिक व्यवहार हो।

इधर-उधर बीचमें जो देश-देशान्तर देखनेको मिलते रहे हैं उससे निश्चय यात्राको सुख और सुविधा मिली है। परन्तु मांस न खा सकनेसे केवल उन्हीं खाद्य-पदार्थोंपर निर्भर करना पड़ा है जो जहाज़के इस छोटे दायरेमें उपलब्ध हो सके हैं। डबलरोटी है, फल है। पर केवल इन्हींसे गुज़ारा सम्भव नहीं जान पड़ता। लोग हँसते भी हैं कि मैं मछलीको भी मांस मानता हूँ। उनके विचारमें मांस मांस है, मछली मछली और अण्डा अण्डा। मछली और अण्डेको वे बनस्पतिका ही अङ्ग मानते हैं। मेरे लिए यह अन्तर भौंडा और अवैज्ञानिक है। मैं मांस-मांसमें अन्तर नहीं डाल सकता। मेरे लिए, उपादेयताके अतिरिक्त, जीवनके विचारसे गाय और बकरीमें कोई अन्तर नहीं। पर किसी प्रकारका धार्मिक कारण मेरे लिए बाधक न होकर भी मेरा मांस खा सकना कठिन, प्रायः असम्भव है। संस्कारोंने इस सम्बन्धमें मुझे काफ़ी जकड़ लिया है।

मांस-मांसमें अन्तर क्या है भला उसके लिए जो उसे खा सकता है? परहेज़ अवैज्ञानिक और पोंगापन्थी है। हाँ, मुझसे अनेक बार कहा गया है कि मांसका परहेज़ कोई नहीं कर सकता। भला हवाके साथ मुँहमें चले जानेवाले अलक्ष्य जीवोंको खाये बग़ैर कौन रह सकता है? और अतिरिक्त इसके, वे पूछते हैं, क्या वनस्पतिमें जान नहीं? प्रश्न तर्कका आभास प्रस्तुत करता है, बालकी खाल निकालता है, उसका आभास होकर भी वैज्ञानिक नहीं। हवाके साथ जीवोंको अपने अन्दर ले लेना एक ऐसी

असहाय स्थिति है जिसे खाना नहीं कह सकते। उसमें स्वेच्छा या पसन्द, जो भोजनके सम्बन्धमें अनिवार्य है, की कोई बात नहीं। उसे मनुष्य किसी प्रकार अनंगीकार नहीं कर सकता। जैनोंके एक सम्प्रदाय विशेषके-से कुछ उपाय इस दिशामें सर्वथा हास्यास्पद हुए हैं। और इस सम्बन्धमें जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात है वह यह कि कीट या कीटाणु जो वायु या जलके साथ हम अनजाने रूपसे स्वीकार करते हैं अदृश्य हैं, गोचर नहीं, और जो गोचर नहीं, उसकी सत्ता अपनेको विकल नहीं करती।

रही वनस्पति, गेहूँ, फल आदिके सजीव होनेकी बात, तो वह भी प्रायः कीटाणुओंकी ही भाँति हैं। उनमें गति नहीं, इच्छा नहीं और दृश्यतः प्राण नहीं, इससे उनका उपयोग भोजनमें करनेसे आपत्ति नहीं हो सकती। उस दिशामें भ्रम या तर्क कष्टकल्पना या कष्टतर्क है, तथ्य नहीं। वास्तविक बात तो यह है कि मांस खाना न खाना अपने आपमें मेरे लिए विशेष महत्त्वका नहीं। वह मनुष्यकी इच्छा और संस्कारोंकी बात है। अधिकतर लोगोंने इसे धार्मिक दृष्टिकोणसे भी देखा है। मेरे लिए इसमें कोई विशेषता नहीं। मैं मांस नहीं खा सकता इसलिए कि मेरे कुलका संस्कार इसके विपरीत रहा है और उसी व्यवस्थामें पले होनेके कारण वह मेरे लिए असह्य है, यद्यपि उसी मेज़पर जिसपर मैं खाता हूँ उसका खाया जाना मुझे व्यवहारतः सह्य हो गया है। शायद ही मेरा कोई मित्र है जो मांस नहीं खाता। उनमें अनेक पीते भी हैं, सिगरेट पीना तो, ख़ैर, कुछ बात ही नहीं पर, इनमेंसे कोई मुझे आकर्षित न कर सका। और वह कुछ विशेष इन्द्रियनिग्रहकी बात भी नहीं क्योंकि संस्कारोंके हावी हो जानेकी आयु तक मेरा सम्बन्ध प्रायः उसी सामाजिक परिधि तक रहा है जहाँ इनका व्यवहार निषिद्ध या कमसे कम नहीं रहा। वैसे यदि मैं मांस खाता तो मांस-मांसमें अन्तर न डालता।

जो हो, मांस न खा सकने से, मछली और अण्डा तक न छूनेके कारण मेरे भोजनकी परिधि नितान्त छोटी रही है। इसका परिणाम यह हुआ

है कि शरीर कुछ क्षीण हो गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इस कारण शक्तिकी किसी प्रकारकी कमी नहीं जान पड़ती, परन्तु वज़न तो निश्चय काफ़ी कम हो गया है। मैं मोटा तो नहीं परन्तु साधारणतः स्वस्थ रहा हूँ। मैं अपने आजके स्वास्थ्यको देखकर अपनेको सर्वथा स्वस्थ नहीं कह सकता। इधर हालकी अनेक बारकी समुद्री बीमारीने स्वास्थ्यको गिरानेमें काफ़ी हाथ बटाया है। आज जो मैं आईनेके सामने खड़ा हुआ तो शक्ल देखकर कुछ चिन्ता हुई। पर विश्वास है कि अमेरिकामें भोजनकी दुर्व्य-वस्थाका शिकार नहीं होना पड़ेगा। वहाँ भोजन-सामग्रीकी विविधता इतनी होगी कि मैं अपना ग्राह्य आसानीसे चुन सकूँगा। और मेरा स्वास्थ्य भी शीघ्र औचित्यकी मात्रा ग्रहण कर लेगा। केवल इसीसे प्रसन्नता है कि किसी प्रकारकी कमज़ोरी नहीं जान पड़ती और हैलिफ़ैक्समें भी करणीय कर सकूँगा।

दो दिन और बुरी तरह गुज़रे, ३० और ३१, और आज जो बिस्तर से उठा हूँ तो उठा ही मात्र हूँ, कुछ ऐसा नहीं कि कमरेसे बाहर जा सकूँ या समवेत भोजन आदिमें भाग ले सकूँ। भोजन तो करना ही नहीं है। उसकी तो जैसे इच्छा ही मिट गई है। भूख ही नहीं लगती। भूख लगे भी कैसे? खेलना, घूमना या शरीरसे कोई श्रम तो हो नहीं पाता फिर जो भीतर जाता है वह शीघ्र निकल पड़ता है और निकलते कुछ कम वेदना नहीं होती। इससे निरिच्छित भोजनकी हिम्मत नहीं होती।

३० और ३१ दोनों दिन बुरी तरह तूफ़ानके हम शिकार हुए। पानी ज़ोरोंसे बरसा, लहरोंने अपना मस्तक और ऊपर उठाया और जहाज़ ऊपर नीचे उछलने लगा। एक बार ऊपर गया डेकपर, जैसे-तैसे कर खड़ा हुआ पर, लगा, आँधी उठाकर फेंक देगी। अन्दर हट आया। समुद्रके तेवर बुरी तरह चढ़ गये थे। तीसको ही कप्तानने कहा था कि अगला दिन सम्भवतः और बुरा होगा।

देखा तो बैरोमिटरकी सुई भी नीचेकी ओर उतरती जा रही थी।

उसका ऊपर चढ़ना अच्छा होता है, नीचे उतरना बुरा। जी बहुत घबड़ा रहा था क्योंकि पेटकी हालत चिन्ताजनक थी। चुपचाप केबिन चला आया। पिछली रात पानी इस क़दर बरसता था और समुद्रकी लहरें इतनी उछली थीं कि पोर्टहोल (गवाक्ष खिड़की) बन्द रहनेपर भी उधरसे काफ़ी पानीकी बौछारें अन्दर आती रही थीं। बिस्तर दीवारसे सटा हुआ ही है अथवा यों कहिए कि बिस्तरकी दीवार और केबिनकी एक ही है। सो दीवारोंके भीतर बौछारोंका आना बिस्तरपर ही आना था। आधीरातको जो नींद खुली तो देखा कि पानी बिस्तरपर टपक रहा है और पोर्टहोलकी निचली परिधिकी गोलाईमें प्राय: दो इंच पानी भर गया है।

सारा पानी निकाला, उसे पोंछकर सुखाया। और पोर्टहोलका शीशा जोरसे कस दिया। परन्तु कुछ लाभ न हुआ और पानी थोड़ा-थोड़ा कर आता ही रहा। कोई चारा न था, इससे घुसकर चुपचाप उसी बिस्तर पर पड़ा रहा। प्रात: देखा कि आधा बिस्तर और कम्बल भींग गये हैं। स्टीवार्ड्स्ने सुबह गद्दा, चादर, कम्बल सभी बदल दिये। केबिन ठंढा हो गया, सर्दी बढ़ गई थी। हीटर (कमरेको गर्म करनेका यन्त्र) का स्विच घुमाया। अब इधर कई दिनोंसे सर्दी जो बढ़ गई थी तो स्विच घुमा दिया करता था। परन्तु हीटर अलमुनियमका होने और उसपर नया पेंट (रंग) चढ़ा होनेसे स्विच घुमाते ही लोहा जलनेसे बदबू आने लगती है जो तबतक बनी रहती है जब तक कि उसे बन्द न कर दिया जाता। उसके देर बाद तक भी। इससे उसे बन्द ही कर दिया। उस बदबूसे सिर भारी हो जाता है जिससे सर्दीमें कपड़े पहनकर या कम्बल डालकर रहना अधिक भला लगता है।

तीस और इकतीस दोनों दिन बिस्तरमें पड़ा पढ़ता ही रहा। पहले 'मिस्टर राचेस्टर्स वाइफ़' (मिस्टर राचेस्टर्सकी पत्नी) पढ़ा। यह डी. ई. स्टिवेंसनका लिखा सुन्दर उपन्यास है। यूरोपीय बेमेल विवाहोंकी पृष्ठभूमि पर कहानी गढ़ी गई है। नायिकाका पति पागल हो गया है, उसे उसकी

पत्नी चुपचाप अभाग्यकी भाँति बरदाश्त करती है। उनका जीवन, विशेष-कर पत्नीका लेखकने बड़ी खूबीसे खींचा है। पागल एक दिन घरसे चला जाता है और लोगोंको विश्वास हो जाता है कि वह संसारमें न रहा। परन्तु कुछ दिनों बाद वह लौट आता है। उसकी पत्नीका एक प्रणयी है जो राचेस्टरके चले जानेपर उसकी पत्नीसे विवाहके आसरे रुका है। राचेस्टरके लौटनेपर पत्नी, यद्यपि उसे प्यार नहीं करती, और उसके बग़ैर कुछ कहे उसे छोड़कर चले जानेसे क्षुब्ध भी है, उसे स्वीकार कर लेना तै कर लेती है। प्रणयसे अधिक उसे कर्तव्यकी परवाह है। परन्तु इस बीच राचेस्टर स्वयं उसे स्वतन्त्र कर देता है और कहता है कि मेरा विक्षिप्त जीवन तुम्हारे जीवनको रसहीन बना देगा, इससे अच्छा है हम दोनों स्वतन्त्र हो जायँ। उसने अपनी विक्षिप्तावस्थामें शुश्रूषा करनेवाले किसान परिवारकी कन्यासे प्रेमबन्धन भी स्थापित कर लिया है। दोनों स्वतन्त्र हो जाते हैं और नायिका अपने अन्य प्रणयीसे विवाह कर एक नये घरमें जीवनका आरम्भ करती है।

प्लाट अच्छा है और आजकी दुनियामें एक सम्भावित प्रश्न और समस्याका उत्तर भी देता है। समाजमें इस प्रकारकी स्थिति हो सकती है कि पति किसी प्रकार दूर चला जाय और मरा हुआ समझ लिया जाय और पत्नी विवाह कर ले। परन्तु जो वह फिर लौटे तो क्या हो? वह केवल काल्पनिक प्रश्न नहीं है। पिछले युद्धोंमें इस प्रकारकी अनेक घटनाएँ हुई हैं जब पति खोये ऐलान कर दिये गये हैं और उनकी पत्नियोंने अपना पुनर्विवाह कर लिया है। पर जब वे फिर बचकर लौटे हैं, तब एक अजब समस्या खड़ी हो गई है। इस प्रकारकी अनेक घटनाएँ यूरोप और अमेरिकाके घरोंमें हुई हैं।

अपनी हिन्दीमें भी यशपालने जो अपना उपन्यास 'देशद्रोही' लिखा है उसमें इसी स्थितिका वर्णन है। वहाँ भी खोया पति लौट आता है पर तब तक उसकी पत्नी अपना नया विवाह कर चुकी होती है। ऐसी

स्थितिमें क्या हो, इसका उत्तर देना मुझे यहाँ अभीष्ट नहीं पर यह आवश्यक है कि हमारे साहित्यकार इस प्रकारकी समस्याओंको सामने रख उसका हल भी सोचें।

'मिस्टर राचेस्टर्स वाइफ़' समाप्तकर एक दूसरी पुस्तक उठा ली—'दि एक्सक्विज़िट पर्डिटा' (अत्यन्त सुन्दरी पर्डिटा)—ई० बैरिंग्टन-की लिखी। बीमारीमें और कुछ किया नहीं जा सका, नहीं किया जा सकता, विशेषकर जब बैठना तक मुहाल हो, खड़े हो सकनेकी तो बात ही अलग है। इससे चुपचाप कुछ पढ़ा करना ही आरामदेह लगता है। और समयको, विशेषकर बीमारीके समयको, काटनेका उपन्यास पढ़नेसे बढ़कर दूसरा साधन नहीं। इससे एकके बाद एक उपन्यास, जो भी जहाज़के सीमित पुस्तक-संग्रहमें उपलब्ध है, पढ़ता गया और समय—तूफ़ानका समय—भली भाँति कट भी गया।

'पर्डिटा' देखकर उछल पड़ा था। मध्यकालीन अथवा अठारहवीं सदी की अंग्रेज़ी चित्रकलाके इतिहासमें पर्डिटा, सिडन्स आदिका नाम अक्सर आता है। मैंने भी पढ़ा था। विशेषकर उस सदीके सामाजिक इतिहासमें तो पर्डिटा एक असाधारण शक्ति बन गयी थी। प्रिंस ऑफ़ वेल्ज जार्ज, जार्ज तृतीयका पुत्र जो जार्ज चतुर्थके नामसे कालान्तरमें प्रसिद्ध हुआ, इंग्लैंडका प्रधानमन्त्री फ़ाक्स, शेरिडन, प्रसिद्ध चित्रकार गेन्सबरो, सभी पर्डिटाके रूपके पुजारी थे।

इंग्लैंडका अठारहवीं सदीका सामाजिक जीवन अत्यन्त घिनौना था, जिससे कोई बचा न था, न राजा न रंक, न साधु न असाधु। चार्ल्स द्वितीयने जिस सामाजिक घिनौनेपनका आरम्भ अपनी बहन हेनरी हनृएट्टाके साथ अपने शासनकालमें किया था उसका चरम रूप इसी अठारहवीं सदी-में इंग्लैंडकी भूमिपर आ उतरा। उसकी कुछ तुलना दंडीके 'दशकुमार-चरित' में वर्णित तात्कालिक घृणित भारतीय समाजसे की जा सकती है।

इस पुस्तकमें इंग्लैण्डके तत्कालीन समाजका सुन्दर प्रतिबिम्ब लेखकने उपस्थित किया है। पहले तो मैंने इसे जीवनचरित समझा परन्तु कुछ पृष्ठ उलटते ही पता चल गया कि इसमें कल्पनाकी खासी पुट है। हाँ, कल्पना कालोचित और इतिहासोचित है। पर्डिटाका जीवनेतिहास विना विकृत हुए आँखोंके सामने उतर आता है। और पुस्तक बड़ी सुन्दर भाषामें लिखी गई है। जब उसे मैंने पढ़ना शुरू किया और उसकी भाषा की दाद देने लगा तो मिस वाल्टनने पूछा कि लेखक क्या अमेरिकन हैं। मैंने कहा अंग्रेज़ी अमेरिकन नहीं 'इंग्लिश' है। इतनी अभिराम भाषा अमेरिकन नहीं लिखता। मैंने यह पर्ल बक, दोनों सिन्क्लेयरों और फ़ास्टके बावजूद कहा। क्योंकि मेरा विश्वास है कि काफ़ी उन्नति कर जानेपर भी भावना और साहित्यकी शालीनतामें अमेरिका इंग्लैण्डसे बहुत पीछे हैं। परन्तु कुछ देर बाद जो टाइटिल-पृष्ठ उलटा तो पुस्तक न्यूयार्कसे प्रकाशित पाई। पता नहीं बैरिंग्टन अमेरिकन है या अंग्रेज़। फिर भी मैं अपने विश्वासको बदलनेका कोई कारण नहीं समझता।

पुस्तक अच्छी है और भाषाके साहित्यकी दृष्टिसे बहुत सुन्दर पर्डिटा-का एक चित्र गेन्सवरो द्वारा प्रस्तुत कई साल हुए देखा था, वर्णनसे उस चित्रमय आलोकको स्थल मिला। आज प्रातः इसे समाप्त कर पाया हूँ। अठारहवीं सदीका समाज और साहित्य नज़रोंके सामने उठ खड़े हुए हैं। शेरिडन और जानसन, सर जोशुआ रेनाल्ड्स और टॉमस गेन्सवरो, पिट और फ़ाक्स, बर्क और हेस्टिंग्स् एक-एक कर सामने आ गये।

आज पहली है, नवम्बरकी पहली। उठकर लिखता ही रहा हूँ। पेटका बुरा हाल है, लहरोंके बुरे तेवर हैं, बादल आकाशमें ठसे हैं, पानी बरस रहा है। जहाज़ हिंडोलेपर है। एक बार एक सिरा आसमान चूमता है दूसरी बार दूसरा। एक बार एक सिरा टीलेमें सिर और सींग चुभाते साँड़की भाँति उत्ताल लहरोंमें समा जाता है, दूसरी बार दूसरा। और पेट भीतर उमड़-उमड़कर बुरा हाल किये दे रहा है। जहाज़ दायें-बायें

ही नहीं हिलता बल्कि अधिकतर नीचे-ऊपर हिल रहा है। एक पलको नींद न लगी और सुबह बिस्तरसे नीचे नहीं उतरा जाता था।

फिर भी उतरा और मुँह-हाथ धोकर लिखने बैठ गया। दो दिनोंसे कुछ लिखा न था, दिनचर्या लिखनी थी। लिखने बैठ गया। काफ़ी लिखा। लिखकर बक़ाया पूरा कर दिया। पर सिर दुखने लगा तब बिस्तरमें जा घुसा। सर्दी थी, बुरी सर्दी, और केवल दो कम्बलोंसे रातका गुज़ारा होना सम्भव न जान पड़ा। घण्टी बजाकर स्टीवार्डेस्को बुलाया और तीसरा कम्बल लिया। तब जाकर कहीं ठण्ढ गई। बात यह है कि होटरसे जो बू आती है तो उसका स्विच नहीं खोलता और इन कम्बलोंसे ही सर्दी जीतनी है।

—(३०-१०-५०-१-११-५०)

आज दूसरी है। कल ही पता चल गया था कि आज दिन अच्छा होगा और मौसिम बदलेगा। पिछली रात जहाज़ हिला-डुला नहीं। नींद भी अच्छी आई। साढ़े चार बजे जो नींद खुली तो देखा, आसमान साफ़ है और लहरें नहीं हैं। जानमें जान आई। कार्नफ़्लेक्स मँगाकर दूधके साथ चायके बदले लिया और स्नान किया। बाहर धूप निकल आई थी और सूर्यकी किरणें पोर्टहोलके शीशेसे होकर केबिनमें भी उतर पड़ी थीं। ऊपर गया, सूर्यके दर्शन किये।

जलपानके समय कप्तानने बताया कि हम आज तीसरे पहर तक हैलिफ़ैक्स पहुँच जायँगे क्योंकि मौसिम अच्छा है और जहाज़ साढ़े बारह नाट—अपनी अधिकतम गतिसे भी आधा नाट अधिक—प्रति घण्टा जा रहा है। यदि मौसिम इधर खराब न हो गया होता और तूफ़ानका सामना न करना पड़ा होता तो हम मंगलवार यानी ३१ को ही हैलिफ़ैक्स पहुँच गये होते, पर अब आज बृहस्पतिवार दूसरीको तीसरे पहर वहाँ पहुँचेंगे। बन्दरगाह अभी लगभग ८५ मील दूर है।

बादल फिर घिर आये हैं, आकाश धुँधला हो रहा है, सूरज खो गया है। ऊपर गया और रेडियोके पास पहुँचा। सुना कल ट्रूमन साहबके घरमें दो व्यक्ति उन्हें मार डालनेके विचारसे घुस गये थे। उनमेंसे एक तो मार डाला गया पर दूसरा पुलिसकी हिरासतमें है। एकने सन्तरीको मार डाला और खुद गोलीसे घायल हो गया। झगड़े घरके हैं, राजनीतिक।

रेडियोकी ख़बरसे पता लगा कि जार्ज वर्नार्ड शा की ९४ वर्षकी आयुमें आज प्रातः ४–५९ (इंग्लैण्डकी घड़ीसे) पर मृत्यु हो गई। ९४ वर्षकी आयु अच्छी खासी आयु है, यूरोपके लिए भी। भारतके लिए तो निःसन्देह इस आयुमें मृत्यु असाधारण है, और साहित्यिकोंमें तो प्रायः अनजानी। शा उन अनेक आयरिश (आयरलैण्डके निवासी) लेखकोंमें हैं जिन्होंने इंग्लैण्डको अपना घर बना लिया और अंग्रेजीको अपनी साहित्यिक भाषा। अनेक आयरिश लेखकों और कवियोंने अपनी कृतियोंसे अंग्रेज़ी साहित्यको भरापुरा है। गोल्डस्मिथ, फ़िज़जेराल्ड, येट्स, आस्कर वाइल्ड, जेम्स ज्वायस, आदि इन्हींमेंसे थे। आयरिश लेखकोंमें शायद बर्नार्ड शा सबसे प्रतिभावान हुए हैं। अंग्रेज़ी साहित्यमें शेक्सपियरको छोड़ दूसरा नाटककार उनसे बड़ा नहीं। एकांकी नाटकोंके क्षेत्रमें तो कोई इतना महान् हुआ ही नहीं। और न किसीने इतने नाटक ही लिखे। इतने दीर्घकाल तक किसीने साहित्यकी उपासना भी न की। प्रायः सत्तर वर्षसे वे साहित्य के क्षेत्रमें मौलिक निर्माण करते रहे थे। अभी हालमें ही उनके पिछले जन्म-दिनको भारतमें भी (इलाहाबादमें) एक शा संघकी प्रतिष्ठा हुई थी। लोगोंका विश्वास था कि शा सौ वर्ष जीयेंगे। उनकी शरीरयष्टि लगती भी कुछ ऐसी थी कि सौ वर्ष जीना उनके लिए असम्भव न होता। परन्तु पिछली दुर्घटनाने, जिसके कारण उन्हें कुछ सप्ताह अस्पतालमें बिताने पड़े, उनकी आयु समाप्त कर दी।

शा शाकाहारी थे और मांस नहीं छूते थे। साथ ही वे एक प्रकारके

समाजवादी भी थे। उनके स्पष्ट और शक्तिम मौलिक विचार थे। उनकी अनेक कृतियाँ नाटकेतर सर्वथा गद्यात्मक, विचारोंके प्रसार अथवा बोधनके लिए भी प्रकाशित हुईं। उनकी प्रधानता उनकी कृतियोंकी विनोदात्मकता-में है। मनोरंजन उनका विशेष गुण है। इसीसे उनकी रचनाएँ साधारणतः छोटी भी हैं जिससे वे दो-तीन घण्टोंमें ही खेली जा सकें। उनमें हास्य का इतना पुट होता है कि हँसते-हँसते आदमी लोट जाता है। हास्यरसका इतना बड़ा साहित्यकार संसारने दूसरा नहीं उत्पन्न किया। इनके नाटकोंमें साधारण, नित्यके, घरेलू प्रसंग इस स्थितिमें आते हैं कि साधारण होते हुए भी वे अनोखे हो जाते हैं और उनकी नाट्यता रोचक, परन्तु नाटकोंका वस्तु-तथ्य हास्यमय होता हुआ भी निरा मनोरंजक ही नहीं विचार्य भी होता है। नाटकोंके प्लाटोंसे कहीं महत्त्वकी उनकी प्रस्तावनाएँ होती हैं जो उनकी उद्देश्य परकता प्रमाणित करती है।

शाका जीवन अत्यन्त सादा था, परन्तु विनोदसे भरा। सैकड़ों-हज़ारों कथाएँ इनके सम्बन्धमें प्रचलित हैं। कोई उनसे ऐसा न मिला जिसने मिल कर उनकी किसी विनोदात्मक उक्तिका प्रचार न किया हो। उन्होंने बहुत लिखा है और वे अभी हाल तक लिखते रहे हैं। और उनको साहित्यने कुछ कम समृद्ध न किया। शा उन साहित्यकारोंमेंसे थे जिनपर सरस्वती के साथ ही लक्ष्मी भी प्रसन्न थीं। संसारके कम साहित्यिक हुए हैं जिनकी लेखनीने इतना धन अर्जित किया है जितना शाकी लेखनीने। मैं जिन साहित्यिकोंसे इस यात्रामें इन्टरव्यू करना चाहता हूँ उनमें इंग्लैडके साहि-त्यिकोंमें शाका नाम सूचीमें सबसे ऊपर था। उनकी मृत्युकी ख़बरने मनको बड़ा दुःखी कर दिया। पर सन्तोष बस इस बातका है कि इस असाधारण साहित्यिक महारथीकी कीर्ति अक्षय है और उसका सुख उसे सदेह मिला।

आज सुबहसे ही मन चिन्तित हो उठा था—वीज़ाका क्या होगा ? बम्बईसे कोई ख़बर आई होगी या नहीं। यदि वीज़ा नये सिरेसे पास न कर दिया गया तो बड़े उपद्रव हो सकते हैं। मैं साधारणतः कायर नहीं हूँ।

जीवनमें अनेक असुविधाओंका मैंने सामना किया है, और मैं कुछ विशेष दूरदर्शी भी नहीं हूँ। लापरवाही मेरे स्वभावका एक विशिष्ट अंग है यद्यपि मैं बराबर कर्तव्यकी ओरसे उससे लड़ता और उसे दबाता रहा हूँ। अपनी लापरवाहीसे मुझे कुछ बल भी मिला है।

बात यह है कि जिसने कष्टका जीवन देखा है और सिद्धान्तोंकी आन पर खेला है वह जानता है कि उसका जीवन आसान नहीं। सबसे कठिन जीवन ईमानदारीका जीवन है जिससे उसका कठिनाइयोंके कारण ही साधारणतः निभाना कष्टकर हो जाता है। इसीसे भरसक कोई ईमानदारीका जीवन नहीं बिताता। और जो बिताना चाहता है उसे असिधाराव्रतका आचरण करना पड़ता है। वह समाजमें झगड़ालू, बात-बातपर अड़ जाने वाला, सुविधाओं और सादगीसे कोई काम न कर सकनेवाला कहलाता है। यद्यपि वास्तविक तथ्य यह है कि उसे अपनी ईमानदारीका जीवन बितानेके लिए अपने चतुर्दिक् एक ईमानदार वातावरण प्रस्तुत करना पड़ता है और ऐसा करते समय उसे छोटेसे बड़े तक सभीसे लोहा लेना पड़ता है।

तो कष्टके जीवनमें कर्तव्यका पालन साधारण कार्य नहीं और उसके तीखे कोनोंसे बचनेके लिए कुछ लापरवाही लाभकी वस्तु हो जाती है। वह उस जीवनको निभाने और कठिनाइयोंसे बचनेके लिए आत्मरक्षाका एक ज़रिया बन जाती है। यह लापरवाही किसी न किसी मात्रामें मुझमें है और मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि मेरे लिए यह अनेक बार बरदान हो गई है। यह मुझे अपने भविष्यके विषयमें नहीं सोचने देती, जिससे मैं वर्तमानमें विना आगेके बनने विगड़ने वाले जीवनकी ओर देखे अनौचित्यसे लड़ लेता हूँ।

इसीसे चिन्ताका आधार होता हुआ भी हृदय आशंकाके डंकसे बचा रहता है। जेनोआके अमरीकी दौत्य विभागके कर्मचारीने जब मुझसे कहा कि यदि जहाज़ छोड़कर मैं जेनोआमें रुक जाऊँ और मेरे ही दामों दिये बम्बईके अमरीकी कानसुलेटको तारके जवाबका इन्तज़ार करूँ वरना

यदि मैं वीज़ा विना फिरसे पास कराये न्यूयार्क चला गया तो अव्वल तो वहाँ जहाज़को हज़ार डालर (पौने पाँच हज़ार रुपये) जुरमाना देना होगा, फिर शायद जेल भी जाना पड़े तब कुछ चिन्तित होकर भी मैं घबड़ाया बिलकुल नहीं, कारण कि मैंने निश्चित स्थिर कर लिया था।

अस्तु, लापरवाहीने मेरा साथ दिया और मेरे भयके पक्षको इतना कुण्ठित कर दिया कि उसकी नोक बेकार हो गई। जहाजपर मैं चुपचाप लौट आया था यह निश्चयकर कि आगे जो होगा देखा जायगा। यदि मार्को पोलो आदि साधनहीन घुमक्कड़ उस पुरानी भयकी दुनियामें संसार लाँघकर भी जीवित रह सके तो मुझमें तो, मेरा विश्वास है, उनसे कहीं बुद्धिबल है। मैंने बम्बईके अमेरिकन कानसुल जेनरल श्री टिम्बरलेकको इस आशयका पत्र डाल दिया कि वे तार द्वारा हैलिफ़ैक्स स्थित अमेरिकी कान्सुलेटको मेरा वीज़ा पास कर देनेकी सलाह दे दे। और परिस्थितिको भूल चला था। मेरी लापरवाहीने मुझे आगेकी आशंकाग्निमें तपने न दिया यद्यपि जब तब मुझे उसकी आँच सजग कर देती थी।

अब जो तीसरे पहर हैलिफ़ैक्स पहुँचनेकी बात कप्तानने मुझसे कही तो मुझे अपने वीज़ाकी बात याद आ गई और मैं आगतविपद्की आशंकासे कुछ व्यग्र हो उठा। यदि पत्र देरमें बम्बई पहुँचा हो तो ? यदि टिम्बरलेक छुट्टीसे वापस न आये हों तो ? और यदि स्थानापन्न कानसुलेटने किसी प्रकारकी राजनीतिक पूछताछ और जाँचमें देरकर दी हो तो ? गरज कि अगर समयपर वीज़ाके सम्बन्धमें वहाँसे सूचना न आई तो क्या होगा ? ये विचार मेरी लापरवाहीको दबा उमड़-उमड़ मुझसे पूछने लगे।

सोचा, यदि कोई सूचना स्वदेशसे न आई हो तो हैलिफैक्ससे ही जवाबी तार दूँगा और बम्बईसे उत्तर आ जानेपर वीज़ा दुरुस्त कराकर न्यूयार्क जाऊँगा। जहाज़ तीन-चार दिन यहाँ रुकने वाला है इससे कोई चिन्ताकी बात नहीं और फिर भी यदि उत्तर न आये तो चुपचाप न्यूयार्ककी राह लूँगा। और वहाँ जैसा होगा भुगत लूँगा। एक ही दिक्कत हो सकती है।

यदि इस जहाज़के एजेण्टको मेरी विपत्तिका सुराग लग गया और उसने आपत्ति की और जहाज़ मुझे न्यूयार्क ले जानेको तैयार न हुआ तो? तो अनेक दिक्क़तें हो सकती हैं—रुककर तार और चिट्ठियों द्वारा भारतीय सरकार और अमेरिकी कानसुलेटसे वीज़ा सही करानेका प्रयत्न करना, 'नहीं' तो रुकनेपर संयुक्त राष्ट्र जानेका लोभ संवरण कर लेना; दूसरे किसी देशके लिए वीज़ाके लिए हैलिफ़ैक्समें ही प्रयत्न करना।

कहा, पहले हैलिफ़ैक्समें पता लगाओ, क्या हुआ, और अपनेको नियति-की राहपर छोड़ दो। चार बजते-बजते जहाज़ हैलिफ़ैक्सके बन्दरके सामने दोनों तटोंके बीच जा खड़ा हुआ। पाइलट बन्दरमें ले जानेके लिए आ पहुँचा। डाक्टर आया, उसने हमारे चेचकके टीके और हैज़ेकी सुई आदिके प्रमाणपत्र देखे और चला गया।

धीरे-धीरे जहाज़ पाँच बजेतक जेटीसे आ लगा। पाइलटके चले जानेपर पुलिस और कस्टम वाले आये। किसीने हमारे पासपोर्ट न देखे। परन्तु यहाँ एक नई बात हुई—कस्टमवालोंने जहाज़, उसके अफ़सरों, ख़लासिओं आदिकी रेडियो और ऐसी ही अनेक चीज़ें जिनका बाहरसे आना मना था एक कमरेमें बन्दकर ताला लगा उसपर मुहर कर दी और वह मुहर जहाज़के शामको बन्दरसे बाहर निकल जानेपर टूटी। कनाडाके कस्टम विभागने यह कार्य बड़ी बेमुरव्वतीसे किया। ख़बरें बिलकुल न सुन सके। भला जहाज़से छोटी चीज़ें कौन बेचने जाता, विशेषकर जब ये चीज़ें कनाडामें और जगहोंसे सस्ती हैं? जहाज़की बैठकका रेडियो तक उन्होंने बन्द कर दिया था।

जहाज़को खाद्य सामग्री देनेवाला ठेकेदार, जो देरसे प्लैटफ़ार्मपर खड़ा था, ऊपर आया। आवश्यकीय वस्तुओंके लिए पहले ही तार द्वारा उसे कह दिया गया था और उसके आते ही सैकड़ों खानेकी चीज़ें जहाज़में भरी जाने लगीं—फल, दूध, तरकारियाँ, रोटी, सभी कुछ। आज पहले-पहल हिन्दुस्तान छोड़नेके बाद दूध मिला। दूध, जैसा जीवनमें कभी न

पिया था। ऐसा नहीं कि स्वदेशमें अच्छा दूध न मिला हो पर जो भोजन हमारी गायोंको मिलता है उससे दूध न तो अधिक मात्रामें ही हो सकता है न इतना अच्छा ही। गौमाताके नामपर शालाएँ चलानेवाले और सभाएँ करनेवाले हमारे श्रद्धालु गोहत्याके नामपर नारे तो लगाते हैं पर इसे नहीं देखते कि उनको रखनेवाले कसाईके सारे साधन उनके लिए उपस्थित कर देते हैं। गाय खाने वाले यूरोपीय और अमेरिकन देशोंकी गाएँ दर्शनीय होती हैं। उनकी चिकनाहटपर मक्खी नहीं बैठ पाती और उनका दूध एक समय बीस-बीस सेर निकलता है, मन-मन भर तक।

दूध पीकर दंग रह गया। शुद्ध गाढ़ा सुस्वादु मीठा दूध जैसे उसमें चीनी मिली हो। मैं दूध अपने देशमें बराबर चीनी डालकर पिया करता हूँ पर इस दूधमें चीनी डालनेकी आवश्यकता नहीं पड़ी। खानेकी मेज़पर सभीने काफ़ी दूध पिया। और दूध जहाजपर इतना आ गया है कि ठेलम ठेल है। सुबह, दोपहरको, शाम-रातको जब चाहें तब मिल सकता है। दूधको तैयारकर बाहरसे ही शुद्ध कर लेते हैं जिससे बीमारीके कीटाणु न प्रवेश कर जायँ। इसीसे जहाज़ सर्वत्र दूध नहीं लेता, केवल आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, हालैंड, डेनमार्क, स्वीडेन, नारवे, कनाडा, संयुक्तराज्य आदिसे लेता है। यहाँ दूध तीन-चार दिनोंके लिए ले लिया गया था।

कप्तानने बताया कि न्यूयार्कसे ख़बर आई है। जहाज़के मालिकोंने जहाज़ जल्द माँगा है, इससे यहाँ केवल रात भरमें सामान उतारकर सुबह आठ बजे जहाज़ न्यूयार्कके लिए रवाना हो जायगा। यह ख़बर मेरे लिए माफ़िक न पड़ी। हैलिफ़ैक्समें वीज़ाके लिए बहुत कुछ करना था, बम्बईसे उसे सही करनेकी अनुमति आई या नहीं यह देखना था। क्या पता जहाज़ छोड़ कर यहीं रुक जाना पड़ता और यदि सुबह ही जाना पड़ा तब तो कुछ भी नहीं कर पाऊँगा। क्योंकि इस समय ६ बज गये थे और शहरके दफ़्तर, सोचा, बन्द हो गये होंगे, और कल आठ बजेके पहले खुल भी न सकेंगे। जहाज़ पहले हैलिफ़ैक्समें तीन-चार दिन ठहरने वाला था और इसी विचारसे

कुछ करना-धरना निश्चित किया था। इस नई व्यवस्थाने मनमें बड़ी झल्लाहट पैदा कर दी।

जल्द तैयार हो रेवरेंड जेम्सको ले जहाज़से नीचे उतरा और पुलिसके दफ़्तरमें पहुँचा। पुलिसका दफ़्तर बन्दरगाहमें ही जहाज़से दो क़दमपर था। वहाँ केवल फ़ोन करनेके इरादेसे गये थे। अमेरिकन कानसुलेटको फ़ोन किया, घरपर, क्योंकि दफ़्तर कबका बन्द हो चुका था। उसने कहा कि उसे तो ख़बर नहीं है पर उसने उस दफ़्तरके अधिकारीका नाम और फ़ोनका नम्बर बता दिया जो वीज़ाका काम देखता है। हमने उसे फ़ोन किया। उसने बताया कि जहाँ तक मुझे मालूम है किसी प्रकारकी वीज़ा सम्बन्धी सलाह बम्बईसे नहीं आई है पर ठीक तौरसे कल आफ़िस खुलने पर ही बता सकूँगा और आफ़िस सुबह साढ़े नौ बजे खुलेगा। कुछ चारा न था। चुपचाप जहाज़पर लौट आये।

इस दौड़-धूपमें एक बात देखी—पुलिसकी जनताके प्रति सद्भावना। पुलिस आफ़िस एक छोटेसे कमरेमें था जो बाहरकी ठंढसे भीतरके हीटर द्वारा रक्षित था और गरम हो रहा था। जब हम कमरेमें पहुँचे तब वहाँ कोई न था। डाइरेक्टरी निकालकर फोन करने लगे और कुछ मिल नहीं रहा था कि इतनेमें अफ़सर आ गया। तत्काल उसने हमें बैठाकर फोन अपने हाथमें लिया और अपने बड़े आफ़िस, सूचना-विभाग, आदिसे पूछकर कानसुलका नाम, उसका और आफिसका फोन नम्बर, आदि क्षणभरमें सब बता दिया। उसकी बातोंका ढंग इतना सुन्दर, स्नेहातुर और सहायता-सूचक था कि भारतकी पुलिसकी याद आ गई। हमारी पुलिस तो साहबका बच्चा है। उससे सहायता कभी नहीं मिलती, डर लगता है और नागरिक उससे इस प्रकार बचकर रहते हैं जैसे यमदूतकी छायासे। इटली, कनाडा सर्वत्र जहाँ अबतक हम गये हैं पुलिसको हमने सहायक पाया है।

जहाजपर लौटा तो देखा सहयात्री, कप्तान आदि, भोजन समाप्त कर रहे हैं। हमने भी भोजन किया और चिन्ताके बावजूद बाहर जाना

निश्चित किया। बाहर जानेको सभी तैयार थे। सर्दी काफ़ी थी। जहाज़ जेटीपर लगते ही देखा कि सभी प्लैटफ़ार्मपर ओवरकोट और फेल्ट कैप पहने खड़े हैं। बादल घिर आये थे, कुहासा-सा छाया हुआ था और सर्दी जैसे बरस रही थी। उत्तर अमेरिकाका मौसिम बड़ा अनिश्चित है। दोपहर-में ही रेडियोसे सुना गया है कि हैलिफ़ैक्समें एक घंटेके अन्दर दस डिग्रीका अन्तर पड़ गया। और ऐलान करने वालेने विनोद पूर्वक कहा कि जो मौसिमकी इस अनिश्चिन्ततासे झल्ला रहे हों वे कुछ बुरा न मानें क्योंकि पन्द्रह मिनटमें फिर उसका रूप काफ़ी बदलने वाला है। अब मैंने समझा कि इन देशोंमें मौसिम सम्बन्धी सूचनाएँ कितनी आवश्यक हैं और कितनी तत्परतासे सुनी जाती हैं। भारतके अखबारोंमें मौसिमकी रिपोर्ट मैं कभी नहीं पढ़ता था, इधर जहाज़पर बराबर उसे जाननेको उत्सुक रहने लगा था क्योंकि उससे विदित हो जाता था कि सर्दीका क्या रुख़ होगा, विशेषकर हवा का, जिसपर लहरों और परिणामतः मेरी समुद्री बीमारीका दारमदार था।

आज, पहले पहल अपना ओवरकोट निकाला और पहन कर बाहर शहर गया। मित्र लोग साथ थे। अमेरिकाकी ज़मीनपर घरसे प्रायः दस हज़ार मील दूर पैर रखते अजीब भावना हुई। बचपनमें जब भूगोल पढ़ा था और जाना कि पृथ्वी गोल है तब एक अनोखी भावना कुछ इस प्रकारकी बन आई थी कि अमेरिका अपने देशके ठीक नीचे है, यानी कि अगर कीलसे सुराख़ किया जा सके तो वह अमेरिकामें आ पहुँचेगी। यह स्वप्निल विचार तो बहुत दिनों तक न टिक सका कि वहाँ लोग बजाय पैरसे चलनेके सिरसे टिके-टिके अधरसे लटके होंगे—जो एक मित्रका बहुत दिनों तक विचार बना रहा था, जो साथ ही यह भी कहा करते थे कि आख़िर हम भी तो अपना एक सिरा इस ज़मीनपर दूसरा आसमानमें रखते हैं, न सही सिरसे पर पैरसे तो आसमानमें सिरके बल लटके ही हुए है—पर कुछ ऐसा फिर भी जैसे तैसे बराबर लगता रहा कि अमेरिका हमारे ठीक नीचे है। हैलिफ़ैक्सकी भूमिपर उतरकर मुझे उस भावना और इलाहाबादकी याद आई।

हम क़रीब दो घंटे शहरमें घूमे। जेनोआमें इस समय मुख्य सड़कों-पर बड़ी भीड़ रहा करती थी क्योंकि वहाँका मौसिम अभी गर्म सुहावना था। पर यहाँ तो पतझड़ शुरू हो जानेसे सर्दी काफ़ी पड़ने लगी है और थोड़ी ही रात गये लोग घरोंको लौट जाते हैं। सड़कें काफ़ी चल रही थीं और दुकानें भी अभी खुली थीं, परन्तु भीड़ कहीं न थी। दुकानें बिजलीमें भभकती रही थीं। यूरोप-अमेरिकाकी दुकानें अद्भुत हैं। उनकी साज़-सम्हाल-सफ़ाई, दिखावट ख़रीदारको बरबस अपनी ओर खींचती है और साधारण दर्शक भी जो क्रयकी इच्छासे नहीं आया है आकृष्ट होकर कुछ ख़रीदने लगता है। फिर दूकानदारोंका व्यवहार, उनकी वस्तुओंकी पैंकिगस भी इतने आकर्षक होते हैं कि मैं देखकर चमत्कृत हो जाता हूँ।

मेरे एक मित्रने लखनऊमें मिठाई ख़रीदते समय पैंकिगके भोंड़ेपनसे झल्लाकर कहा था कि हमारा देश व्यापारमें महान् नहीं हो सकता क्योंकि उसे पैंकिग नहीं आती। मैं समझता हूँ इस वक्तव्यमें पर्याप्त सत्यता है। पैंकिग व्यापारका अलंकरण और सौन्दर्य है। भीतरकी चीज़ कितनी सुन्दर है यह और बातें हैं। मैं उनमेंसे हूँ जो भारतीय मिठाईको सर्वत्रकी मिठाइयोंसे सुन्दर और अच्छी मानते हैं परन्तु उनकी पैंकिगका भोंडापन मुझे भी खल जाता है। और यहाँ जो मैंने उनकी सुन्दरतापर ग़ौर किया तो लगा कि हमारा तरीक़ा अत्यन्त बर्बर है। जो भी हो, हमारे व्या-पारियोंको, विशेषकर फुटकल बेचनेवालेको, इस दिशामें विदेशोंसे बहुत कुछ सीखना है।

बाज़ार घूमकर कुछ खा-पीकर लौटे। हैलिफ़ैक्स काफ़ी बड़ा नगर है, रातमें बिजलीसे चमकता और जुआ तथा सिनेमाघरों या विज्ञापनोंकी ज्वालासे दमकता। परन्तु बम्बई आदिसे बहुत छोटा है, बम्बईसे तो प्रायः चतुर्थांश। पर उसकी पत्थरकी इमारतें इतनी ऊँची और भारी भरकम है कि नगर जैसे बम्बईसे भी बड़ा लगता है। सड़कें परस्पर समा-

नान्तर हैं और एक दूसरेको काटती हैं। यूरोप और अमेरिकामें प्रायः सर्वत्र मोटरें दायेंको चलती हैं।

हैलिफ़ैक्सकी जनसंख्या पिछली गणनाके मुताबिक़ लगभग पचासी हज़ार है परन्तु कुछ लोगोंका विचार है कि अब बढ़कर वह एक लाखकी हो गई है। यह नगर कनाडाके मुख्य बन्दरगाहोंमेंसे है, और उस राष्ट्रके नोवा, स्कोशिया प्रान्तकी राजधानी है। कनाडा अभी अंग्रेज़ी साम्राज्य या वस्तुतः अंग्रेज़ी राष्ट्रमण्डलके अन्तर्गत ही है यद्यपि अपनी राजनीतिमें वह सर्वथा स्वतन्त्र है। उसके पास ही प्रायः ७५ मील दूर न्यूफ़ाउण्डलैण्डका विशाल टापू अभी हाल तक अँग्रेज़ी अमलदारीमें था परन्तु अब वह भी कनाडाको मिल गया है। नोवास्कोशिया प्रायद्वीप है और तीन ओरसे समुद्रसे घिरा है। जिब्राल्टरसे हैलिफ़ैक्स ३१८७ मील पश्चिम है।

जहाज़ लौटनेपर थकान सी मालूम हुई। दिमाग़ भी वीज़ाकी अनिश्चिन्तताके कारण थक चला था और कपड़े उतार सीधा बिस्तरपर जा लेटा। तत्काल नींद फिर भी न आई। उस तरुणकी याद आने लगी जो बिना पासपोर्ट या वीज़ाके जेनोआमें छिपकर जहाज़पर चला आया था, और कप्तानके लिए एक समस्या बन रहा था। उसकी याद मुझे विशेषकर इसलिए आई कि मेरी स्थिति बहुत कुछ सही वीज़ाके अभावमें उसीकी-सी थी। शामको जहाज़के जेटीसे लगते ही कस्टम पुलिसवाले उस ग़रीबको पकड़ ले गये और जहाज़ खुलने तक उसे अपनी हिरासतमें रखा। न्यूयार्कमें उसका क्या होगा, पता नहीं। शायद वह तब तक वहाँ जेलमें रक्खा जायगा जब तक यह या कोई दूसरा जहाज़ उसे फिर इटली न लौटा ले जाय। उसकी सज़ा भी हो सकती है और इटलीमें तो सज़ा निश्चित ही है। राष्ट्र एक दूसरेसे इतने सन्त्रस्त हैं कि क़ानूनके नामपर घृणित दुर्व्यवस्था कर बैठते हैं। अधिकसे अधिक यह तरुण जो अपने देशकी ग़रीबीसे घबड़ाकर धनी देश अमेरिका भागा था वहाँ कुछ कामकर

पेट पालता पर इसके बदले उसे जेल भुगतनी पड़ेगी ! और भला मेरा क्या होगा ?

—(२-११-५०)

उठते ही स्नानादिसे निवृत्त हो कुछ लिखा और बाहर जानेको तैयार हो गया । नौ बजे तक चाय आदि समाप्त कर शहर गया । राहमें मिस्टर जेम्सने एक दुकानदार सज्जनसे डाकखानेका रास्ता पूछा । दूरके गुम्बज और उसपर फहराते झण्डेको दिखाकर उसने बताया—वही है, पर अगर जल्दीमें हों तो कुछ दूर ही है । फिर हमको कुछ परेशान-सा देख कहा—यदि टिकटकी ज़रूरत हो तो मैं यहीं दे दूँ, वहाँ जानेका कष्ट न करें । उस सज्जनताने मुझे बड़ा प्रभावित किया । संस्कृति इसे कहते हैं, कि आदमी जहाँ तक हो सके विना कहे अपने आप सहायताके लिए उत्कण्ठित हो जाय, कछुएकी तरह अपने हाथ-पैर न सिकोड़ ले ।

हम उस सज्जनको धन्यवाद दे डाकखाने जा पहुँचे । हवा सुहावनी थी यद्यपि कुहरा छाया-सा था, हल्की फुहारें भी छूट रही थीं, शीतसे सड़क भींग चुकी थी । तेज़ चलता भला मालूम हुआ । कुछ लिफ़ाफ़े लिये और वहीं एक अख़बार बेचनेवालेसे 'दि हैलिफ़ैक्स क्रानिकल हेरल्ड' अख़बार ख़रीदा । बेचनेवाला तो बाहर चला गया था पर अख़बार रक्खे थे । हमने एक उठाकर पाँच सेटका एक निकल (क़रीब चार आने) रख दिया और चले आये । वहाँ सभी ऐसा ही करते है, चुपकेसे आँख बचा जानेकी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती । चार आनेमें २६ पृष्ठोंका बड़ा-सा अख़-बार । कैसे सम्भव है ? हिन्दुस्तानमें ८ पृष्ठोंका अख़बार दो आनेमें आता है । इसलिए कि इसमें विज्ञापन भरे हैं और विज्ञापनोंसे ख़ासी आमदनी हो जाती है । पढ़नेकी सामग्री कम है, अपने पत्रोंसे काफ़ी कम ।

पोस्टआफ़िससे निकलकर ईटन्स नामक विशाल दुकानमें गया जहाँ सार्वजनिक टेलीफ़ोन था । वहाँसे अमेरिकन कान्सुलेटको फोन किया ।

बम्बईसे मेरे वीज़ाके सम्बन्धमें कोई ख़बर नहीं आई है। वीज़ाके कर्मचारी-ने बताया कि न्यूयार्क पहुँचनेपर गिरफ़्तार हो जानेका ख़तरा ज़रूर है पर मेरे लिए कोई अन्य उपाय न था सिवा इसके कि न्यूयार्क चुपचाप इसी जहाज़से चला चलूँ और वहाँ जो सामने आये उसे झेल लूँ।

दस बज चुके थे। साढ़े दस बजे, सुना था, जहाज़ खुलेगा पर इंजीनि-यरने बता दिया था कि वस्तुतः साढ़े ग्यारह तक उसके खुलनेकी आशा नहीं। फिर धीरे-धीरे घूमते हुए लौट पड़े। अनेक नीग्रो (हब्शी) नर-नारियोंको पहले-पहल इस अमेरिकन भूमिपर देखा। पहले कभी अंग्रेज़ों, स्पेनियों, पुर्तगालियों द्वारा इनके पूर्वज अफ्रीकासे डाके और चोरीसे लाकर दास बनाकर अमेरिकाके नये यूरोपीय निवासियोंको बेचे गये थे। कनाडाकी भूमिपर उन्हें साधारण श्वेत नागरिकोंकी सी स्वतन्त्रता और अधिकार प्राप्त हैं। कारण यह है कि उन्नीसवीं सदीमें ही इंग्लैंडने दासताको क़ानून द्वारा नाजायज क़रार दिया था और कनाडाके ब्रिटिश साम्राज्यमें होनेके कारण उसके हबशियोंको भी दासतासे मुक्ति मिली। संयुक्त राज्य उस दिशामें अभी बहुत पीछे है।

राहमें एक मकानके पाससे होकर निकले। घृणित मकान है यह, जैसे बन्दरगाहोंमें सर्वत्र होते हैं, इन्द्रियतृप्ति और कामलोलुपताका आवास। बन्दरगाहोंमें इस प्रकारके भवनोंकी कभी नहीं होती। नाविकोंका जीवन बड़ा कठिन है, घरसे दूर-दूर, महीनों-सालों बिछुड़ा। इससे उनका प्रकृतिस्थ रह सकना कठिन होता है और इसीसे उनमेंसे अनेक कामातुर हो उठते हैं। उनकी अभितृप्तिके इन बन्दरगाहोंमें जो अनेक साधन हैं उन्हींमेंसे एक यह भी है। इस भवनमें श्वेत-श्याम नारियोंका अन्तरंग बिकता है। इसमें जाने वालोंके लिए उसके अतिरिक्त आपान, जुए आदिका भी प्रबन्ध रहता है, परन्तु अनेक बार उन्हें द्रव्यके साथ-साथ अपने जीवनसे भी हाथ धोना पड़ता है। पुलिस बराबर इनपर छापे मारती रहती है। अभी पिछली रात ही उस भवनपर छापा मारकर पुलिसने आठ व्यक्तियोंको गिरफ़्तार कर लिया था।

जहाज़पर आनेपर मालूम हुआ कि कुछ जल्दी नहीं क्योंकि वह तीन बजेसे पहले नहीं खुल सकता। अख़बारकी मोटे अक्षरों वाली ख़बरें पढ़कर उसे अलग रख दिया, कल पढ़नेके लिए। जहाज़पर ख़बरें रहते भी कभी बासी नहीं होतीं। पत्र लिखने बैठा। एक पद्माको हिन्दुस्तान लिखा, दूसरा शशिचन्द्रको न्यूयार्क, यह बतानेके लिए कि सोमवारको पहुँच रहे हैं।

इसी बीच मिस वण्डेवण्डने संयुक्तराज्यकी कुछ रेज़कारी लेकर मुझे उसे पहचाननेमें अभ्यस्त करा दिया। डालरमें सौ सेण्ट होते हैं, आधा डालर टू बिट या हैफ़ डालर कहलाता है, चौथाई डालर पचीस सेण्ट या क्वार्टर, दस सेंट डाइम कहलाता है। और पाँच सेण्ट निकल और एक सेण्ट या पेनी। संयुक्तराज्य और कनाडाके डालरमें ४–६ सेण्टका अन्तर होता है। साधारणतः समझ गया, विशेषतः व्यवहारतः ही समझ पाऊँगा यद्यपि अन्दाज़ा बराबर डालरका रुपया बनाकर ही लगेगा। इक्कीस सेण्टमें एक रुपया होता है और एक डालरमें प्रायः चार रुपये बारह आने।

देखा, जेनोआ वाला भगोड़ा जहाज़पर फिर आ गया है। हैलिफ़ैक्सकी कैनेडियन पुलिसने उसे लौटा दिया है क्योंकि उसके विरुद्ध कार्रवाई वह तभी कर सकती थी जब लड़केको वहीं उतारना अभीष्ट होता। अब तो अच्छे-बुरेका यश-अपयश संयुक्तराज्यको ही लेना है। देखें क्या होता है।

सभीको देखा अपनी चीज़ें बक्सोंमें भर रहे हैं। मेरी भी सारी चीज़ें अस्त-व्यस्त कमरेमें पड़ी थीं, ऊपर ही। मैंने भी यह सोचकर उन्हें बक्समें रखना शुरू किया कि शायद मौसिम ख़राब होनेसे बीमार हो जाऊँ और कुछ कर न सकूँ। आख़िर न्यूयार्क सोमवार-मंगल तक ही पहुँचना है। सोचा था कि पैकिंगमें देर नहीं लगेगी, आध घण्टेमें कर लूँगा। पर देर लगी। पूरे ढाई घण्टे लग गये और रीढ़ दुख गई। पैकिंग आसान नहीं। ख़ैर, सब कुछ भीतर रख लिया। एकमें कपड़े भरे, दूसरेमें किताबें, तीसरेमें जूते, टोप और काग़ज़-पत्तर लिखनेका सामान।

और एक सूटकेस विशेष प्रकारसे भरा। उसमें ऐसी चीज़ें रक्खीं जिनकी जेलमें आवश्यकता हो सकती थी —एकाध सूट, दो-तीन कमीज़ें, दो तौलिये, चप्पल, मोजे, रूमाल, पुस्तकें और लिखनेका सामान। सोचा, आख़िर अवसरवादिताके चक्करमें क्यों पड़ूँ? यदि जेलकी व्यवस्था अनिवार्य है तो क्यों न पहलेसे ही उसके लिए तैयार रहूँ? ऐसा सोचकर मैंने साधारणतः आवश्यक वस्तुएँ एकत्र कर उस सूटकेसमें रख लीं। तै किया कि शशिचन्द्रके साथ, यदि वे बन्दरमें समयसे आ गये, बाक़ी सामान भेज दूँगा और स्वयं जेल तबतकके लिए चला जाऊँगा जबतक कि मेरे सम्बन्धमें संयुक्त राज्य अमेरिकाका वैदेशिक विभाग कुछ निश्चय न कर ले।

— ६ —

हैलिफ़ैक्स और न्यूयार्कके बीच

पाँच बजे केबिन सही हो गया, सारी चीज़ें मुनासिब तौरसे अपने-अपने स्थानपर पहुँच गईं, बक्स ठीकसे बन्द हो गये। मिसेज़ जेम्स 'मित्रजी ! मित्रजी !' की आवाज़ बुलन्द कर रही थीं। समझ गया कि जहाज़ छूटने ही वाला है। ऊपर डेकपर गया। पाइलट आ गया था, दो बोट जहाज़को बन्दरसे बाहर खींच ले जानेके लिए उससे बाँधे जा रहे थे और जेटीके खूँटोंसे जहाज़की रस्सियाँ खोली जा रही थीं, लंगर उठाया जा रहा था। हवा तेज़ थी।

जहाज़ने लंगर उठा लिया, सीटी दी और चल पड़ा। दोनों बोट उसे बाहर खुले समुद्रकी ओर खींच ले चले। सर्दी काफ़ी थी और चारों ओर कुहरा छाया हुआ था। हवा इतने ज़ोरसे चल रही थी कि डेकपर खड़ा नहीं हुआ जाता था, बैठकमें चला गया।

भोजनके समय कप्तानने बताया कि यदि मौसिम ऐसा ही रहा, यानी अनुकूल वायु रही और समुद्र सही रहा तो बजाय मंगलकी सुबह या सोमवारकी शामके सम्भवतः सोमवारकी सुबह ही न्यूयार्क पहुँच जायँ। शशीको सोमवारकी शाम या मंगलकी सुबहकी सूचना दी है। सोमवारकी रात तो वे बन्दरमें क्या आयँगे और उतरेगा ही तब कौन ? पर मंगलकी सुबहकी बात अगर उन्होंने सोची और हमारा जहाज़ सोमवारको ही सुबह पहुँचा तो शायद उनसे मुलाक़ात भी न हो, क्योंकि कुछ अजब नहीं कि उससे पहले ही इस प्रबल राष्ट्रकी पुलिस मुझे अपनी छत्रछायामें ले ले। पर अब कोई चारा नहीं सिवा भविष्यको यथागत भुगत लेनेके, यद्यपि

कप्तानके कहने और जलवायुके विधानमें अनेक बार काफ़ी अन्तर पड़ता गया है। क्या ठीक जहाज़ न्यूयार्क मंगलकी ही सुबह पहुँचे। आख़िर हैलिफैक्समें तो वह बारह घण्टे बाद ही छूटने वाला था, पर छूटते-छूटते छूटा अन्तमें पूरे चौबीस घण्टे बाद।

पता चला, जहाज़ न्यूयार्कमें ब्रुकलिन नं० ६ डाक दक्षिणमें रुकेगा। यदि समय होता तो इसकी सूचना भी शशीको दे दिया होता पर अब यह सब उनके ऊपर ही छोड़ता हूँ। उचित होता है जहाज़के एजेण्टका पता दे देना और दिया है मैंने अपने यात्रा एजेण्ट टामस कूकका पता। पर टामस कूकके दफ़्तरको आने-जानेवाले सभी जहाज़ोंका पता रहता है, इससे उसकी कुछ चिन्ता नहीं, वहाँ जानेपर पता चल जायगा।

भोजनकर कमरेमें आया। कुछ लिखा भी, पर अधिक न लिख सका। क्योंकि ढाई घण्टेकी पैकिंगने रीढ़ टेढ़ी कर दी थी और बड़ी थकान मालूम हो रही थी। बिस्तरमें जा घुसा। बिस्तर ठंढा था, क्योंकि हीटर बदबूके डरसे खोलता नहीं, पर थोड़ी देरमें गर्म हो गया। सुबह जल्द उठनेका इरादा कर सिरहानेकी रोशनी बुझाई और सो गया।

—(३–११–५०)

सुबह जल्द उठ भी गया, क़रीब सवा चार ही बजे। पर कुछ देर और पड़ा रहा। पाँच बजेसे पहले ही बिस्तर छोड़ कुछ लिखा। फिर मुँह-हाथ धो दूध पिया और दूध मिला कार्नफ़्लेक्स (एक प्रकारका जौका बना 'चिप' नुमा खाद्य) खाया। कुछ छोटे-छोटे—जाँघिये, बनयान, रूमाल, मोज़े आदि—कपड़े गन्दे पड़े थे। उन्हें साबुन लगाकर धोया और स्नान किया।

फिर कलका अख़बार पढ़ने बैठा। मालूम हुआ कि प्रेसिडेण्ट ट्रूमनपर जो वार हुआ था वह डाके-चोरीके लिए न था वरन् राजनीतिक था। पोर्टो रीका स्पेनियों द्वारा आबाद संयुक्तराज्य अमेरिकाके पूर्वी तट-

पर एक द्वीप है जिसका शासन संयुक्तराज्यके ही हाथमें है। अब वे स्वतन्त्र हो जाना चाहते हैं और उनके साथ अमेरिका वही व्यवहार कर रहा है जो साम्राज्यवादी राष्ट्र किया करते हैं। रेवरेण्ड जेम्सका भी यही मत है कि अभी वहाँ वाले स्वतन्त्रताके योग्य नहीं हैं। युक्ति वही है जो अंग्रेज़ भारतकी दासताके सम्बन्धमें दिया करते थे। यह एक ईश्वर-वादी मिशनरीका सत्यदर्शन है। मैंने बार-बार देखा है कि मेरे मित्र 'रेवरेण्ड' अमेरिकन पहले हैं और सब कुछ पीछे। अमेरिका उचित-अनुचित जो भी करे वे उसकी दाद देकर ही रहेंगे। कहते हैं, भारतीय भी कमसे कम ललितपुर—जहाँ वे पाँच वर्ष मिशनका काम करते रहे हैं—के ग्रामीण, चाहते हैं कि सावधि सरकार कुछ नहीं कर पाती इससे अंग्रेज़ लौट आये। यानी स्थानीय सरकारके कुछ कर न पानेसे विदेशी सत्ताका जमा रहना अधिक उत्तम है। निश्चय इस महामना अमेरिकन ईश्वरवादी ईसाई पण्डितको अपने इतिहास और अपने पूर्वजोंके स्वतन्त्रतासम्बन्धी संघर्षकी भी याद नहीं।

आज घना कुहरा है। आकाश और समुद्र दोनों उससे ढक गये हैं जिससे क्षितिज बहुत पास सरक आया है। जहाज़के लिए आगे देखनेमें कठिनाई हो रही है, इसीसे व्यस्त होनेके कारण कप्तानसे न तो नाश्ते पर मुलाक़ात हुई न साढ़े दस बजेकी चायपर। सचमुच उनका उत्तर-दायित्व बड़ा है और देख-देखकर सतर्कतासे राह पानी पड़ रही है। इधर-उधर छोटे-मोटे टापू हैं और जहाज़ोंका भी भय हो सकता है। इसी से कुहरेको भेदकर दूसरे-तीसरे मिनटपर जहाज़का कर्णकटु भोंपू गूँज उठता है। और जब-जब वह गूँजता है तब-तब श्रीबौमकी दो सालकी बच्ची सेसिल (जिसे मैं 'शशी' कहता हूँ) डरकर चीख़ उठती है, घण्टेमें तीस बार।

लञ्चके बाद केबिनमें ज़रा झपकी लेने लौटा। सोचा तीसरे पहर उठकर लिखूँगा। तीन बजे उठकर लिखने बैठा, तब तक भीतर हलचल

मच गई। समुद्र फिर ऊँची साँस लेने और जहाज़ बुरी तरह ऊपर-नीचे हिलने लगा था। पहलेकी बीमारी लौट आई। स्थिति वही हो गई। दो-तीन बारमें जो कुछ खाया था सब निकल गया। अबकी आशा करता था कि पहलेकी दशा नहीं लौटेगी पर वह भ्रम निकला।

कुर्सीसे हटकर बिस्तरपर ही आ गया। दो दिनका समय और था और मैं चाहता न था कि दिनचर्याका कोई भाग बाक़ी रह जाय जो बादमें लिखना पड़े। इससे बिस्तरपर ही बैठा लिखने लगा। पर भीतरकी स्थिति डावाँडोल थी। अनेक बार उठना पड़ा फिर भी लिखता गया और बक़ाया पूरा कर लिया।

तीसरे पहरकी चायके लिए ऊपर बैठकमें नहीं गया। स्टीवार्डेस् पूछने आई, शामके डिनरपर क्या खाऊँगा। उसे स्थिति समझा दी। भला खाया किस तरह जा सकता था? न ही खाया, और न केबिनसे बाहर ही निकला। आज सोचा था कि जहाज़का कुछ हिसाब-किताब करना है वह सब साफ़ कर दूँ। चाहता था कि लेने-देनेका बखेड़ा बजाय डालरके पाउण्डमें तय कर दूँ। क्योंकि फ़िलहाल मुझे पाउण्डकी आवश्यकता नहीं है और डालर मेरे पास कम है। फिर डालरके बदले पाउण्ड आसानीसे मिल सकते हैं पर पाउण्डके बदले डालर नहीं मिल सकते। टामस कूक जेनोआके दफ़्तरमें पाउण्ड-चेकके पाउण्ड नोट लेने चाहते थे पर नहीं मिले। पाउण्ड-चेकके कूक बैंक लीरा (इटलीके नोट) देनेको तैयार था पर पाउण्ड नहीं। केवल पाँच पाउण्ड वहाँसे मिले थे जो इस समय भी मेरे पास हैं। कप्तानको बीस पाउण्डके कूकवाले चेक दिये थे पर दूसरे दिन उसने यह कहकर लौटा दिये थे कि 'कैश' मुझे ही कराने पड़ेंगे और फिर जो कूकके दफ़्तर गया तो उसने कह दिया था कि चूँकि पीछे स्विटज़रलैण्डका उल्लेख है इससे वे वहीं कैश हो सकेंगे। अब लगता है, हिसाब चुकता डालरोंमें ही करना पड़ेगा। पासमें फुटकल डालर इतने नहीं हैं कि हिसाब चुकाया जा सके। कुछ साथ भी तो रहना चाहिए।

अब लगता है कि जहाज़से उतरकर कूकके दफ़्तरमें चेक तुड़ाकर ही भुगतान करना पड़ेगा, परन्तु उतरकर पुलिसके दफ़्तरमें जाना होगा या कूकके दफ़्तरमें जा सकूँगा, नहीं जानता। यदि शशी आ जाते तो सब काम बन जाता पर उन्हें तो सूचना मैंने मंगलवारकी दे रक्खी है और हमारा जहाज़ परसों सोमवारको प्रातः ही पहुँच रहा है। ख़ैर, अब तो जैसा न्यूयार्क पहुँचनेपर होगा, देखा जायगा। अब लेटता हूँ, तबीयत और ख़राब हो चली है।

—(४–११–५०)

आज पाँच है। रात जल्दी ही सोनेकी कोशिश की थी पर नींद आई नहीं, इससे कुछ पढ़ने लगा था और दस बजे तक पढ़ता रहा था। फिर सो गया था। रातमें सर्दी अधिक न थी। रोज़ तीन कम्बल ओढ़ता था, रात भी ओढ़े हुए था, परन्तु दो बजे जो नींद खुली तो देखता हूँ कि बनयान पसीनेसे भींग गई है। एक कम्बल हटा दिया और सोनेके उपक्रम करने लगा पर नींद अच्छी तरह नहीं आई। फिर भी उठा नहीं, पड़ा ही रहा।

रातमें ही समुद्र और ऊँचा उठने लगा था और जहाज़ अधिकाधिक ऊँचा-नीचा हिल रहा था। ६ बजे उठकर जो खिड़कीसे बाहर देखा तो क्षितिजको बल्लियों ऊपर-नीचे होते पाया। फ़र्शपर पाँव नहीं टिकते थे। पर मुँह-हाथ धोना तो था ही। मुँह-हाथ धोया तब तक पेट फिर उमड़ने लगा। बुरी गति हो गई। जैसे-तैसे बिस्तरपर बैठा। कुछ लिखकर मन भरमाने लगा। इस समय भी लिख ही रहा हूँ परन्तु अब लिखना असम्भव हो रहा है। लेटकर ही किसी तरह यह कष्ट काटा जा सकता है, इससे लेटने ही जा रहा हूँ। चौबीस घण्टे जैसे-तैसे करके बिताने होंगे। सुना है, जहाज़ आज रविवारकी ही आधीरात न्यूयार्क पहुँच जायेगा।

अतलान्तिक महासागरकी यात्रा कष्टकर रही। अधिकतर बिस्तरमें ही

रहना पड़ा यद्यपि कप्तानका कहना है कि जितना शान्त यह समुद्र उसकी इस यात्रामें रहा है उतना उसके जीवनमें कभी न रहा। इसका अर्थ केवल इतना है कि यह सागर साधारणतः तूफ़ानी उपद्रवोंसे भरा रहता है। जो भी हो, इतना भी मेरे लिए कुछ कम कष्टदायक न रहा था। इसीसे इधरकी यात्रामें अधिक लिख न सका। हाँ, पढ़ा निश्चय पर्याप्त। बात यह है कि बीमारीके कारण जो बराबर पड़ा रहना पड़ा है उससे लिखना काफ़ी न हो सका। पर पड़े-पड़े भी आख़िर कोई कब तक रह सकता है! मन भुलानेके लिए कोई न कोई साधन तो चाहिए ही। इससे पढ़ता रहा हूँ और जब-जब अवसर मिला है तब-तब लिख भी लेता रहा हूँ। यात्रा सम्बन्धी पहली पोथी प्रस्तुत हो गई है। कल भरका रवैया और देना है। न्यूयार्क पहुँचनेके बाद तो मेरी यात्राका दूसरा भाग शुरू होगा—मेरी अमरीकी डायरी।

आज तीसरे पहर स्टीवार्डेस्ने कहा कि चीफ़ इंजीनियरने कहलाया है कि जितना क्षुब्ध सागर इस समय है यदि इतना ही आगे भी रहा तो आठ मील फ़ी घण्टेसे अधिक जहाज़की गति नहीं हो सकती और इससे वह आजकी रात न्यूयार्क नहीं पहुँच सकेगा, सम्भवतः कल तीसरे पहर पहुँचेगा। यह संवाद पाकर प्रसन्न हुआ कि कल शाम तक यदि जहाज न्यूयार्य पहुँचा तो इम्मीग्रेशन अफ़सर पाँच बजे तक शामके बाद और सात बजे सुबहके पहले आयगा नहीं और हमें जहाज़से उतरनेकी इजाज़त मिलेगी नहीं; यानी हम तब मंगलवारको प्रातः जहाज़ छोड़ सकेंगे। इससे आशा है कि शशिको समयसे पत्र मिल जाय और वे जहाज़पर मुझे लेने आ जायँ। हाँ, कष्ट अवश्य एक दिन और बढ़ जायगा, पर कुछ बात नहीं, समुद्री रोग का तो आदी हो गया हूँ, एक दिन और किसी तरह झेल लूँगा।

शाम हो गई है। प्रायः दिन भर लेटा रहा हूँ, फिर लेटना है। अब पढ़नेमें भी जी नहीं लग रहा है। अपने पास जो पुस्तकें हैं वे पढ़ी हुई हैं, साथ ही बोझिल हैं और ऐसे समयमें मन हल्की चीज़ोंमें लगता है। जहाज़का सीमित पुस्तक-संग्रह प्रायः समाप्त कर चुका हूँ, जो शेष

है वह कूड़ा-करकट है। अच्छा होता तो शतरंज, बेकर आदि खेलकर या घूम या गपशप कर विताता, पर इस स्थितिमें चुपचाप लेटकर चौबीस घण्टे और किसी तरह काट लेनेके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं।

अभी शामको ही सोनेकी तैयारी कर ही रहा था कि रेवरेण्ड जेम्स और कप्तान आये। कप्तानने कहा, क्या दो मिनटके लिए डाइनिंग रूममें नहीं आ सकेंगे! उठना खतरेसे खाली न था पर कुछ देर बाद, तबतक खाना ख़तम हो चुका था, गया। कप्तान यात्राके सम्बन्धमें कह रहे थे—अपने जीवन भरमें कभी मुझे इतने भले यात्रियोंका साथ न रहा। मेरे सम्बन्धमें उन्होंने विशेष स्नेहसे कुछ अच्छे वाक्य कहे जिनका मैंने समुचित आभार स्वीकार किया। यह हम सबका अन्तिम समवेत सान्ध्य भोजन था। सबने प्रत्येक जनके नैपकिन-लिफ़ाफ़ेपर स्मरणार्थ अपना नाम लिख दिया। स्नेहपूर्वक सब अलग हुए।

—(५–११–५०)

आज नवम्बरकी छठी तारीख़ है। जहाज़का हिलना-डुलना रातसे ही कम हो गया है। 'जिससे लगता है, समुद्र शान्त है। सुबह सोकर उठते ही जो खिड़कीसे बाहर देखा तो सागरको शान्त पाया। स्नानादिसे निवृत्त हो कॉफ़ी पी। स्टीवार्डेसने बताया कि जहाज़ बन्दरमें साढ़े नौ बजे दाखिल हो जायगा।

मैं अपनी ऊपर पड़ी चीज़ें छाँट-छाँट रखने लगा। सन्दूक़ोंको फिरसे देखा और सम्हालकर सब चीज़ें रख लीं। उस छोटे सूटकेसमें अपनी आवश्यक चीज़ें फिर सम्हाल लीं जिसे लेकर पुलिस 'लाक-अप' में शायद ज़ाना हो।

जलपानकी घंटी बजी और नाश्ताकी मेज़पर जा पहुँचा। वहाँ सभी आ गये थे। पतोंके फेरबदल हुए और 'आप अच्छे और आप बड़े अच्छे!' से डाइनिंग रूमका वातावरण गूँज चला। नाश्ता कर ऊपर पहुँचा तो देखा अनेक जहाज़ आगे-पीछे बायें-दायें दूर खड़े आ जा रहे थे। दूर

बायें धुँधला-सा अमेरिकाका भूमितट दिखाई पड़ रहा था। इसी भूमिको अन्यत्र जब महीनोंके तूफ़ान और सामुद्रिक ख़तरोंके बाद १४९२ में क्रिस्टोफ़र कोलंबस्के नाविकोंने देखा था तब 'भूमि-भूमि! कह चिल्ला उठे थे। हमारे अमेरिकन सहयात्री विशेषकर रेवरेण्ड जेम्स भी बालवत् उस भूमिको देख विभोर हो रहे थे और उछल कूद रदे थे। और मुझे उस धूमिल भू-तट पर भारतकी भूमि छाई-छाई चमक रही थी, बम्बई और इलाहाबादकी भूमि, दूर उँजियार की!

सामने न्यूयार्कका बन्दर है—ब्रुकलीनकी डाक, पियर नं० ६, दक्षिण—जहाँ हमारा जहाज़ 'जान बाके' लंगर डालेगा। अमेरिकाकी भूमि कभी आज़ादीकी भूमि थी। पहले-पहल इस आधुनिक युगमें इसी देशने मानव स्वतन्त्रता और अधिकारोंकी आवाज़ उठाई थी, फ्रांसकी राज्य-क्रान्तिसे भी पहले। आज़ादीके स्मारकस्वरूप सामने बाहर समुद्रमें वह 'स्वतन्त्रताकी मूर्ति' खड़ी है, विशाल, गगनचुम्बी। इसी अमेरिकाने अफ्रीकाके अभागे हबशियोंका व्यापार भी किया, ग़ुलामीका व्यापार, जिसका अन्त करनेके लिए, वह व्यापार और ग़ुलामी दोनोंका, महामना अब्राहम लिङ्कनने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया, जिसका भयानक रूप आज भी यहाँ क़ायम है और समय-असमय खुलेआम मारपीट या क़त्लका रूप धारण कर लेता है। यहीके विल्सनने राष्ट्रबन्धुत्वकी योजना पहले-पहल राष्ट्रोंके सम्मुख रक्खी। यहींका डालर आज दुनियांके दिलपर हावी है और राज-नीतिक तथा आर्थिक संसारपर शासन कर रहा है। इसी अमेरिकाकी भयातुर विज्ञप्तिने अनेक विदेशियोंको उनकी यात्राके बीच सहसा किंकर्तव्य-विमूढ़ कर दिया है। उन्हींमें से एक मैं भी हूँ, भारतीय।

देखना है दूर घरसे, दस हज़ार मीलसे सात समुद्र पार चलकर आये मुझ भारतीयके साथ इस वाशिंग्टन, फ्रेंकलिन, लिंकन और विल्सनके अमेरिकाका कैसा व्यवहार होता है। वैसे मैं स्वयं हर स्थितिके लिए तैयार हूँ। आवश्यकीय वस्तुओंसे भरा एक सूटकेस तैयार है, जिसे लेकर

हिरासतमें चला जाऊँगा और तब बाज़ार गरम होगा तारों और टेलीफोनों का, पत्रों और मुलाक़ातोंका। सामनेकी अट्टालिकाएँ, मानहटन (न्यूयार्क) की विशाल एम्पायर स्टेट बिल्डिंग अपनी हज़ारों-लाखों बिजलीकी आखोंसे घूर रही है और हमारा जहाज़ ब्रुकलिन डाककी ओर निस्पन्द चला जा रहा है। जेबमें पासपोर्ट और वीज़ा हैं, क़सी कमरपर दोनो हाथ हैं, आँखें आज़ादीकी मूरतकी बुलन्दीपर टिकी हैं। देखूँ, आगे यह डायरी अब क्या रूप लेती है। हो सकता है इसे अमरीकाकी हिरासत या जेलमें बैठकर लिखना पड़े !